क्रम संख्या ८८

वकील रिपोर्ट संख्या १५४

आश्विन वद ४, संवत १७६६

॥ श्री गोपाल जी सहाय छै: जी

॥ श्री महाराजाधिराज महाराजा जी
श्री मिरजा राजा जयसिंहजी

सिद्धी श्री महाराजाधिराज महाराजा जी श्री चरण कमलाय नूं खानाजाद खाकपाय पंचोली जगजीवनदास लिखतम तसलीम वन्दगी अवधार जो जी। अठा का समाचार श्री महाराजाजी का तेज परताप कर भला है। श्री महाराजा जी का सीघ्र समाचार सासता प्रसाद करावयजो जी। श्री महाराजा जो माईत है, धनी है, श्री परमेस्वरजी की जायगा है। म्है श्री महाराजा जी का खानांजाद वन्दा हां। श्री पातसाहजी श्री महाराजाजी मुं मिहरवांन है। श्री महाराजा जी सुख पावजोजी पांन गंगाजल आरोगवा का घणा जतन फरमावजो जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। परवानो खानाजाद नवाजी को इनायत हुवो। तसलीमात वजाय लाय सर चढाय जीयो। तमाम सरफराजी व खानाजाद हुई। हुकम आयो जूं एक पैलवी में समाचार लिखा था मू मालूम हुआ। इह वात मूं खातर जमां राख जो असो वसवास कदेई मत करो। श्री जी सलामत। खानाजाद की तो ई वात सूं भांत भांत का खातर जमां है। पण अेठै सोहरत[1] उठी थी तिमुं अरज लिखनी पड़ी है।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। हुकम आयो जुं ओर समाचार साह नैन सुख का लिखना मूं जाहर होसी सूं सारा मुकदमा साहजी का लिख्या सूं जाहर हुआ जी।

---

1. सोहरत (शोहरत)—कीर्ति।

।। श्री महाराजा जी सलामत । जागीरां ईजारै लेवा के वासते साह नैन सुख जी लिख्यो थो सू श्री जी का हुकम माफक ऐ जागीर तो ईजारै ली सूं तिकी नकल श्री जी हजूर भेजी है । सु नजर मुबारक गुजर सी जी । ये तो पट्टो कबूलियत अवार[1] लिख देता था पण जामनी विना पट्टो दियो नही तिसुं जामन मातबर की जामनी आवै जीही दिन पट्टो लिखाय लां । अर जामिनी सोपां पण सराफां मैं पानीपथयां की दुकान है तिकी जामनी मांगै है ।[2]

।। श्री महाराजा जी सलामत । खोहरी वगैरह महाल आजम खां की जागीर की लाला हरदे राम वांका दीवान सु रदबदल अब तांई तो अमरसिंगपुरा को मुतसदो करै थो अब अमरसिंघ खानांजाद नै साफ जवाब दीयो जु हरदेराम सूं रदबदल घणी ही करी पण आजम खां मानै नही कहै है, ईजारै न दूं, खाहमखाह अमल ही करूं सूं इतरा मैं खानाजाद ने हुकम आयो जु ईजारे ले जो । तिसूं अब खानाजाद रुबरु[3] खानजहां बहादुर सुं ही रदबदल ईतरी करै है ।

सहजादा अयजुदी की जागीर
उर का पेरोजपुर वगेहर मेवात
का महाल होय सु दे ।
आजम खां की जागीर खोहरी
वगेरह मै है सुं दे ।

खांनाजहा बहादर की जागीर
पाटोधी वगैरह होय सु दे ।
खांनदौरा बहादर की जागीर ।
जहां होय तहा ईजारे दे ।

।। श्री महाराजा जी सलामत । खानजहां बहादुर नीम रजामंद सो हुवो हे पण साहूकार मातवर पाणी पथयां की दूकान जामन मांगै है तिसूं श्री जी जामन मातवर भेज जै जू यांसु[4] भी ठहरावां यांका मुतसदयां नै भी रजामन्द किया है नीम माहो[5] खर्च देनो कियो है जी ।

।। श्री महाराजा जी सलामत । हामद खां बाहादर[6] गाजुदी खां[7] को छोटो भाई बाहादरसाह का अमल मैं वीजापुर को सूवेदार होय गयो थो । फेर बागी हुवो थो । अब मुदत सुं हजुर मै है । ती खानांखाद नै बुलाय कही जु दोनु राजो की सुलह म्हारी मारफत करो, तो खानजहां बहादुर ने समझाय थांका मुकदमा सब

---

1. अभी ।
2. गोविन्दराम पानीरथिया री दुकान की जमानत मांगते है ।
3. उपस्थिति मे ।
4. इनसे भी ।
5. नीम माहो—अर्धमासा ।
6. हमीद खा बहादुर ।
7. गाजीउद्दीन खा फीरोज जंग ।

फैसल करां अर वहोत अपनायत इखलास जाहर कीयो। तव खानांजाद कही ज हमारी वातो मैं अमीरल उमराव है। अव खानजहां वहादुर कुं हम वातो मैं डालै अर अमीरल उमराव मुदई होय तो खानजहां वहादुर सू क्या होयती, पर वां कही—मतालव होय मुं लिख दो मैं खानजहां वाहादुर सुं कहूंगा अमीरल उमराव मुदई होयगा जो कुवत रखो हो जू हम करैंगे सुं होयगा तो वात मैं पड़ो न मतलव हजूर सू लिख्या आया था सो लिख दिया। या सिवाय ईजाफा माकूल होय श्री जी नैं उज्जैण की सूबैदारी होय महाराजा नैं गुजरात को सूवो होय नं अव हामद खां खांनजहां वहादुर नै मतलव दिखा सी जो कवूल करसी। तव खानांजाद लिखवत मैं रदवदल करसी जो पकी निसां कर देसी तो हजूर नै अरजदासत कर सुं। हजुर मै श्री जी की खातर मुवारक मैं पसन्द आसी तो मुकदमां वांनू रजू करस्यां अर जो खानाजाद की ही खातर जमां न हुई तो वैसी ही अरजदासत कर सूं जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। रायं घासीराम हीदायत केस खां वाका तोगार कुल को पेसदसती......मोजपुर सरकार अकवरावाद मै ३,५५,००० दाम है। सो आगै तो किसनसिंघ नरूका कै ईजारै थो सो वैंकी कवूलीयत की नकल हजूर भेजी है। सो नजर मुवारक गुजारसी अवै खानाजाद सी म्हाने[1] सरकार मैं इजारे लियो है सो कसवा मजकूर मै सरकार को अमल ही है। उमीदवार हु जु वैंकी नीसां इनायत होय जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। गाजी को थानो सरकार मै ईजारे लीयो है। ये गोवन्दराम सराफ पाणीपथयां की जामनी मागै है सु उमैदवार हु जु गोवन्दराय की जामनी इनायत होय जी जुं पट्टो लिखायलां जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। परवानो खानाजाद नवाजी को पांच सावान को लिखो मिती भादवा सुदी १० मै इनायत हुवो। तमाम सरफराजी व खानांजाद नवाजी हुई जी तसलीमात वजाय लाय सीर चढ़ाय लिया जी। हुकम आयो जुं पुरा जात[2] की सनद अव तक तैयार कराय हजुर न भेजी सुं अवै तैयार कर हजुर भेजजो। सुं श्री महाराजा जी सलामत। पुरा जात का परवाना दफतर सूं तयार कराया पण राजा सभा चंद अटकाया है कहे है तुम सांभर सूं थाणो उठावोगे तब परवाना देंगे सुं अव तो यांमूं सांभर का ईजारा की रदवदल डाली है जो या रदवदल ठहरो तो परवाना सीताव हजुर भेजु हूं जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। राह खानाजाद नवाजी कै हुंडी रुपया दोय हजार की इनायत हुई थी सूं पहुंची। तमाम सरफराजी व खानाजादनवाजी हुई

1. तीन माह को जमा पर।
2. मन्सूनें बीरादरी।

Vakil Reports Maharajgan

(1693-1712 A.D.)

G. D. Sharma



RĀDHĀ KRISHNA

1986
©
Dr. G.D. Sharma
Baroda

The publication of this book was financially supported by the Indian Council of Historical Research, and the responsibility for the facts stated, opinions expressed or conclusions reached, is entirely that of the author and the Indian Council of Historical Research accepts no responsibility for them.

First Edition
1987

Published by
Radha Krishna Prakashan Pvt. Ltd.,
2/38, Ansari Road, Daryaganj,
New Delhi-110002

Printed by
Kaushik Printing Press,
Subhash Park, Naveen Shahdara,
Delhi-110032

FOREWORD

The history of medieval India which has been made available to the students today is primarily based on the accounts of Court chroniclers or those available in the official records in Persian. The indigenous records in Rajasthani available in the Rajasthan State Archives have opened an additional vista of contemporary source material which is of first-hand nature.

Since the Rajput rulers were invariably posted far away from the Mughal Court or from their Watan, it was rather imperative on their part to have a Vakil (personal representative) posted at the Mughal Court to watch the developments and safeguard their interests. These Vakils, at times, developed such an intimacy with the high officials or even with the Emperor that at times their words carried weight and they could even make or mar the image of their masters.

The State archives has been publishing descriptive lists of such source material during the last one decade or so, so that researchers of medieval Indian history may make use of this hitherto little known material in their research work. This volume on Vakil Reports Maharajgan (1693—1712 A.D.) captured the imagination of Dr. Sharma as this contained documents which are simply fascinating both in term of their details and description. As the edited documents of the present volume would show, besides, giving a lot of political information on the kaldeidoscopic changes at the court, they provide useful details on the economic decadance, rampant corruption even in the higher echelon of the Mughal officials; and which infact had been eating up the vital sap of the empire in a rather unnoticed manner.

ACKNOWLEDGEMENTS

The completion of the present volume of the Vakil Reports is a denouement of the encouragement and help I received from my teachers, friends and research organizations. It was during my tenure as a Research Assistant at the Jawaharlal Nehru University, New Delhi (Nov. 1970 to Nov. 1974) that my teacher Professor Satish Chandra drew attention to the **Vakil Reports Maharajgan** as an important indigenous source for Mughal history, particularly that of Rajasthan. His guidance and suggestions in course of editing this volume have been of immense value to me, for which I am indebted to him. I am also grateful to Professor S. Nurul Hasan and the late Professor S.C. Misra for providing me valuable suggestions for the editing of this volume.

My thanks are due to my colleague Dr. S. Hasan Mahmud and my friend Dr. Rafaqat Ali Khan of Jamia Millia Islamia, New Delhi for their suggestions in finalizing the text and the introduction. I must also thank my friend Dr. Dilbagh Singh of Jawaharlal Nehru University, New Delhi who worked hard in getting this book published in time.

I am grateful to Shri J.K. Jain, Director Rajasthan State Archives, Bikaner and his staff for providing me all possible facilities for publishing these reports in the present form. It is Mr. Jain's personal interest in promoting the research based on original archival material that has gone into the making of this volume. I am greatful to him for this as also for acceeding to my request for a Foreword.

I take this opportunity to thank the authorities of the Indian Council of Historical Research, New Delhi for providing me financial assistance for this project and also for the publication of the present volume.

G. D. Sharma

26 February, 1986

॥१॥ ~ श्रीआदिश्रीलछमकरणजीकट आइनेमाहाराज
धिराजमाहाराजाश्रीश्रीश्रीश्रीश्रीजीजीचनीवरणकमल
नपातसाहीलसकरघाआगाआरीसदासेवगजासीस
सीलिमर्तसेनामुजरीअवधारजोजीअगरासमानाख
जरितेजपरतापअरजलोछैजीश्रीमाहाराजजीराघडीघ
डीपलपलरासरात्रारोछैमाहाजैजी
अप्रंचश्रीमाहाराजाजीव डछैजीश्रीमाहाराजाजीसाहि
बछैजीनीसुमदाकेरवानगीपुरसावेछैतीणथायस्तेमजुर
मासजीजीश्रीमाहाराजजीराडीलारापानमजुरगागलअर
जणराघणानतनपुरमासजीजी
अप्रंचश्रीजीसलोमनपेहला गजुपकडीयारीसबरआ
ईथीसीवावालथीलाधफरीगजुगेहमदआमीमाकुसलम
दीलसांकुबेढकरसीरजोरघरोनीसरगयोपछेआगेजा
गुरीराजाआरोआयोसोलणसुपीणवेढऊरीराजाघायल
ऊवोसैआदमीघणाकांमआयाहमेगजुरीसबरछैपाछेउ
गरीमोकोंआस्टरआरासवीरचोऊमफमेसुअरजलीसुनी
गेहमदआमीसीकुसलमदीलमाऊगजुपाणपरीयानदीन
नीचघ्रआगाबुणीसेछैअगसुपागलाहजीपीलआमा लसु
द१० नदीजीहदवालपारऊथाछैसोदेखीजैदीलनमपूजाह
अमेडावणीम्हेसोईलडीसांवुजरजलीसुनी ——
अप्रंचश्रीजीसलांमत ओरखमानारतपर्ण लबारजाई
कुघमाघनै संमपुवीमेलीसीयाछैसोमसुमजरसीजी
०णमाइअसहावीनारणेणडौलोआवनदीनाइगाइन
ग्रजीजी ——
।मासउतापरवं कान दरीणा
रामसीथर्म नको।११२०

Introduction

The documents presented in this volume have been preserved and classified as *Vakil Reports Maharajgan* in the Archival collection of the Historical Records at the Rajasthan State Archives, Bikaner. They are in the form of *arzdasht* written in *hindvi* incorporating the Rajasthani and Persian dialects. These reports include the *arzdashts* addressed to the Maharajas of Amber by the vakils as well as the *diwans* of Amber and Jodhpur posted at the court of the Mughal emperors. It is noteworthy that during the reigns of Bahadur Shah and Jahandar Shah, both Maharaja Jai Singh and Ajit Singh had kept their *diwans* at the emperor's court. Besides the vukil, the *diwans* also sent their *arzdashts* to Maharaja Jai Singh informing him about the various developments at the court. As the matter contained in the *diwans' arzdashts* is either complimentory or provides additional information on the subjects recorded in the *arzdashts* of the vakils, they have also been incorporated in the present volume.

It was a common practice among the nobles and the princes to keep accredited representatives at the imperial court. The Mughal *umara* were obliged to serve in any part of the vast empire and were periodically transferred from one region to another, quite often, along with their *jagirs*. The practice of periodic transfers kept the *umara* away from the imperial court—the nerve centre of the empire where the scribe of destiny played with the fortune of the highest and the lowest of the officers, where the powerful ministers fell like autumn leaves and the adventurists made their fortunes. The *umara* had to depend upon the imperial court

for the grant of *mansab,* fixation of salary, assignment of *jagir,* postings and increment in *masab,* etc. The functional politics, rat race for power at the imperial court and, of course, the imperial orders had such an immense bearing on their career that it was only natural for them to keep a watchful eye on the developments at the court. For this purpose they appointed an official represenatative known as *vakil* at the court who was fully authorised to represent his patron at the court. The necessity of appointing the *vakil* by the Rajput Rajas was all the more important because they had not only to safeguard their interests like *mansabdars* but they had also to protect their previleges as *watandars,* a position so unique and distinctive that they became an object of envy among the *mansabdars* holding similar ranks.

In fact, the vakil served as a hot line link between the Rajput Raja and the Mughal Emperor or the court. Being the representative of his Raja he was directly responsible to him and therefore worked in consultation with him in all matters affecting his interests directly or indirectly. It was in the process of getting the Raja's advice on the matters relating to the court that he dispatched his detailed reports on the affairs of the Mughal court.

The vakils of the Rajput rulers were obliged to uphold the integrity and honour of their Rajas at Mughal court. They worked hard to maintain their high reputation at the court. However, while doing their best for their Rajas, they had also to humour the confidence of the Mughal Emperor. It was the latter part of their endeavour that required the vakils to keep cordial relations and seek the confidence of the influential *umara* of the Mughal court. The vakils of Rajput Rajas enjoyed high position at the Mughal court but they could be subjected to punishment if they made false representation or misguided the emperor.

The *arzdashts* included in this volume cover the period from A.D. 1692 to 1712, a phase which witnessed to the fast deterioration in the administration and finance, the sharpening of the inherent contradictions in the Mughal institutions and the multiplicity of interests which ultimately culminated

in the total disintegration of the Mughal empire. Unfortunately, the present collection does not contain *arzdashts* between May 1707 and February 1710 due to the war of succession among the sons of Aurangzeb and the conflict between Emperor Bahadur Shah and the Rajas of Amber and Jodhpur. It was only after Bahadur Shah had successfully eliminated his rivals and made a triumphant entry into the North that these Rajas appointed their vakils or *diwans* at the Mughal court, who started their regular correspondence with Maharaja Jai Singh of Amber. The details contained in the *arzdashts* presented here cover a wide spectrum of informations on the Mughal-Rajput relations, affairs pertaining to the military operations, the Jat affairs, Bahadur Shah's relations with the Sikhs, the court intrigues and politics, the *watan* rights and the *jagir* system, the *ijara* system, *mansabdari*, the working of *hundi*, etc. A few scholars working on Rajput history have utilized information available in these *arzdashts* in the recent years in a limited manner.[1] However, the information contained in these reports is so rich in its scope and covers such variety of subjects that its availability to researchers in printed form shall help in initiating fresh studies and examining problems which have hitherto remained unsolved.

The *arzdashts* (Nos. 1 to 12) belong to the last few years of Aurangzeb's reign and the accession of Prince Azam in Deccan (Janaury 1692-April 1707). They contain valuable information on the position and role of Maharaja Bishan Singh and Jai Singh at the Mughal court during the reign of Aurangzeb. Maharaja Bishan Singh continued his efforts to secure the confidence of the Emperor and high rank and assignment in the Mughal empire, kept himself engaged

1. See, Satish Cnandra, *Parties and Politics at the Mughal Court*, (2nd ed., New Delhi, 1972), 291-98; V.S. Bhargava, *Life and Times of Sawai Jai Singh* (Delhi, 1974), 350; G.D. Sharma, *Rajput Polity* (New Delhi, 1977); V.S. Bhargava, *The Rise of the Kachhawas in Dhundhar* (Ajmer, 1979), 214.

mostly in the Jat affairs during his tenure as the Raja of Amber and a Mughal *mansabdar* except for the last years of his life when he was appointed with Prince Muazzam in *suba* Kabul (1698-99). The *arzdashts* (1 to 6) acquaint us with the activities and assessment of Maharaja Bishan Singh in respect to his achievements and failure against the Jats and the court politics. *Arzdasht* dated *Magha Vadi* 13, 1748 (January 6, 1692) informs that when Aurangzeb came to know about Maharaja Bishan Singh's initiative to rehabilitate the Jats in the Mathura region, he got so annoyed that he ordered a reduction of 500 *zat* (unconditional) and 500 *sawar* (conditional) from the Maharaja's *mansab* and also that of 65 *lakhs dams* of the *inam.*

Consequently the *parganas* of Toda Bhim and Chatsu were taken away from Maharaja Bishan Singh and assigned to other *mansabdars.* However, the vakil of the Maharaja succeeded in the restoration of former rank as well as the *inam* to the Maharaja. The Maharaja's success in capturing the fort of Baroda (Mewat) had helped him to re-establish his loyalty and devotion to the Emperor[1] and enabled him (Bishan Singh) to secure Bayana and the dispatch of the order of the assignment of the *parganas* of Hindaun, Toda Bhim, Udai, etc. to the Maharaja.[2] The details furnished in these reports reveal that although the vakil of Maharaja Bishan Singh visualized a great deal of opportunity for advancement and favour in terms of the bestowal of the *faujdari* of Mathura and Agra as well as good *jagirs* if Bishan Singh attended the Emperor in Deccan and met the Amirul Umara in order to clarify his position.[3]

The contents of these *arzdashts* also throw valuable light on the Mughal court politics as it developed during the last few years of Aurangzeb's reign and the policy adopted by

---

1. *Arzdasht* dated Vaishakha Sudi 8, 1750 (May 3, 1693).
2. *Arzdasht* dated Ashada Vadi 8, 1750 (June 16, 1693).
3. *Arzdashts* dated Jyeshtha Vadi 5, 1753 (May 11, 1696) and Bhadrapada Sudi 6, 1753 (August 23, 1696).

Prince Azam and *wazir* Asad Khan just after the death of Aurangzeb. It is evident that due to the deterioration in the health of Aurangzeb, the attendants and petty officials such as Khwaja Mehran Khan, Hafiz Ambar and Masood Khan had acquired considerable influence in the affairs of the Empire.[1] It is said that Khwaja Ambar had a great say in the grant of *mansab* and *jagirs* as well as other favours to the nobles on behalf of the Emperor. The increasing influence of these officials had reduced the importance of the office of the *diwan* and *bakhshi*.[2] In this situation the vakil of Maharaja Jai Singh made efforts to establish cordial relations with Khwaja Ambar and others in order to get favour for his Maharaja from Aurangzeb.

The death of Aurangzeb on February 20, 1707 opened a new dimension at Mughal court and the Rajput rulers got an opportunity to get their long cherished desires fulfilled. The contending princes were eager to secure the Rajput supporr in the forthcoming struggle for succession. It was just aftet the death of Aurangzeb that the Amirul Umara Asad Khan helped in securing from Prince Muhammad Azam the title of Mirza Raja and the *mansab* of 7000/7000 to Maharaja Jai Singh. Maharaja Ajit Singh and his son, Abhai Singh were granted the *mansab* of 7000/7000 and 5000/5000 respectively.[3]

As mentioned above, we do not have the recording of the *arzdashts* after April 11, 1707 till March 26, 1710. The *arzdashts* recorded in this volume from March 27, 1710 till the defeat of Jahandar Shah (January 2, 1713) are more informative and throw fresh light on the Mughal-Rajput relations. The *arzdashts* reveal that both Maharaja Jai Singh and Maharaja Ajit Singh continued to plead their cases jointly through their high *diwans* and the vakils at the Mughal court. Both *wazir* Munim Khan and Mahabat Khan were fully aware of the fundamental differences in the positions of

1. *Arzdashts* dated Phalguna Vadi 9, 1761 (Feb. 7, 1705) and Shravana Vadi 5, 1762 (June 30, 1705).
2. *ibid.*
3. *Arzdasht* dated Vaishakha Sudi 10, 1764 (April 11, 1707).

the two Maharajas in their relations with the Mughal court based on the traditional relations and the geographical location of their respective states.[1] The Rathor *sardars* stationed at the court and Bhandari Khivsi made no secret of their feelings about their strength and the position of their Raja, Ajit Singh.[2]

An important aspect of the Mughal-Rajput relations which continued to cause concern at the Mughal court was the delay made by the Rajput Rajas to attend the Mughal court; the *arzdashts* throw valuable light on the factors responsible for this delay. The explanations extended by the vakil of Maharaja Jai Singh or the *diwans* of Maharaja Ajit Singh and Jai Singh regarding the delay or pre-condition of the attendance set by these Rajas were the withdrawal of the order of the appointment of Maharaja Jai Singh at Kabul[3] and assignment of the *jagirs* as well as their postings in the regions of their choice.[4] However, *wazir* Munim Khan and Mahabat Khan continued to impress upon the vakils for the urgency of their presence at the court promising to the fulfilment of their demands. The *arzdashts* contain in details the arguments and counter-arguments exchanged among the representatives of Rajput Rajas and the *wazirs* as well as the *diwans* of the Mughal court on the above subject.[5] The details furnished by an *arzdasht* reveal that Maharaja Jai Singh and Ajit Singh did not have full trust in Bahadur Shah. The Emperor himself tried to assure these Rajas through their representative at the court that they should not have any fear in presenting themselves at the court and if they

1. *Arzdasht* dated Magha Vadi 8, 1767 (January 1, 1711).
2. *Arzdasht* dated Phalguna Sudi 2, 1767 (February 2, 1711).
3. *Arzdashts* dated Magha Sudi 7, 1767 (January 15, 1711) and Magha Sudi 11 (January 19, 1711).
4. *Arzdasht* dated Phalguna Vadi 4, 1767 (January 27, 1711).
5. e.g. *Arzdashts* dated Magha Sudi 7, 1767 (January 15, 1711) and Phalguna Sudi 2, 1767 (February 8, 1711).

do so they would be treated with all favours.[1] As it would be shown later, the Rajput Rajas could ignore the imperial demand of their presence at the court as they knew it well that the emperor would not be able to take any serious action against them as long as he was involved against Banda Bahadur.

The group affiliations and power politics also played a significant role in determining the relations between the Mughal Emperors and the Rajput rulers. The contents recorded in these *arzdashts* make it clear that after Aurangzeb's death each powerful group at the court was eager to get prominence at the court by securing the support of the Rajput rulers promising in return the favour of the Emperor and fulfilment of their demand of *mansab*, *jagirs*, exemption from *Khurakh-i-dwwab* and *subedari* of Malwa for Jai Singh and Gujarat for Ajit Singh.[2]

The details recorded in the *arzdashts* exhibit that during the *wizarat* of Khan-i-Khanan Munim Khan (1708 to Feb. 1711 A D.) the Rajput rulers kept their loyalty intact towards him and his son Mahabat Khan under the patronage of Prince Azimush Shan who was the nephew of Maharaja Jai Singh.[3] No doubt, the support of Prince Azimush Shan, Khan-i-Khanan Munim Khan and Mahabat Khan to the Rajput rulers had made their position strong at the court. However, it was made clear to the representatives of the Rajput rulers that unless they attended the Emperor in person nothing could be achieved for them.[4] The vakils and the *diwans* of the Rajput Rajas continued to assure the arrival of the Rajas at the court but the urgency of the political situa-

1. *Arzdasht* dated Kartika Vadi 9, 1768 (October 24, 1711).
2. e.g. *Arzdasht* dated Vaishakha Sudi 1, 1768 (April 7, 1711).
3. *Arzdashts* dated Shravana Vadi 5, 1768 (June 24, 1711), Shravana Sudi 13, 1768 (July 16, 1711) and Bhadrapada Vadi 5, 1768 (July 23, 1711).
4. *Arzdahst* dated Phalguna Sudi 12, 1767 (February 19, 1711).

tions had worried Khan-i-Khanan so much so that a fresh undertaking was secured from Bhandari Khivsi and Diwan Bhikharidas by Mahabat Khan about their arrival.[1]

The illness of Khan-i-Khanan provided an opportunity to Rustam Dil Khan to poison the ears of Emperor against the Rajas. Rustam Dil Khan who was in favour of taking stern action against the Rajput rulers got an order issued for the grant of Sambhar, Didwana and Meta in his name.[2] When Khan-i-Khanan and Mahabat Khan came to know about this they made their position clear to Diwan Bhikharidas and Bhandari Khivsi stating that as they (Khan-i-Khanan and Mahabat Khan due to former's illness) were unable to attend the Emperor Rustam Dil Khan got the said order of the Emperor issued and started preparation to march against the Rajput rulers along with Shah Nawaz Khan, the *faujdar* of Mewar. Rustam Dil Khan also issued a *farman* in the name of Rathor Durgadas granting him Idar as *jagir* and an amount of Rs. 50,000/- as an advance.[3] Apparently the group opposed to Munim Khan was trying to convince the Emperor to take serious action against the Rajput Rajas. However, such an extreme action was not possible in wake of the Sikh problem and on account of the influence of prince Azimush Shan.

The death of Khan-i-Khanan *wazir* Munim Khan on 18th June, 1711, infused new dimension at the Mughal court's politics which forced the Rajput Rajas to consider their group affiliations. It is known that the tussle for the office of the *wizarat* had started once again after the death of Munim Khan.[4] The *arzdasht* of *Chaitra Vadi* 8, 1767 (March 1, 1711) confirms that Asad Khan had revived his claim for the *wizarat* with the support of three princes (excluding Azimush Shan). Azimush Shan supported Mahabat Khan for the office of *wizarat* and at one stage he even succeeded in getting the order issued in

1. *ibid.*
2. *Arzdasht* dated Phalguna Sudi 5, 1767 (Feb. 11, 1711).
3. *Arzdasht* dated Phalguna Sudi 12, 1767 (Feb. 19, 1711).
4. *Parties and Politics*, 53-54.

favour of Mahabat Khan. But the combined opposition of the three princes was so violent that the decision made in favour of Mahabat Khan had to be kept in abeyance. In fact, on the basis of understanding of the situation prevalent at the court vakil Jagjiwandas had predicted that Hidayatullah Khan would look after the affairs of the *wizarat.*

The *arzdashts*[1] mention that Hidayatullah Khan (Sadullah Khan), who was *diwan-i-tan-o-khalisa*, and was in-charge of the office of *wizarat*, had great deal of influence at the court, Citing the example of Mahabat Khan's act of betraying the Raja of Nahan, Hidayatullah Khan tried to convince the vakil of Jai Singh to get away with Mahabat Khan with whom the Rajput Rajas had a long association, Keeping in view the power and position enjoyed by Hidayatullah Khan and his keen interest in settling the affairs of the Rajput rulers at the court, the vakil of Amber, Jagjiwandas offered the suggestion to Maharaja Jai Singh that they (Jai Singh and Ajit Singh) should establish some understanding with Hidayatullah Khan without disturbing their realations with Mahabat Khan. The *arzdashts* make it clear that Maharaja Jai Singh did not endorse the suggestion of entering a secret pact with Hidayatullah Khan and continued depending upon Mahabat Khan under the patronage of prince Azimush Shan. However, Maharaja Jai Singh did not discourage his vakil to seek the help of Hidayatullah Khan in matters of securing *jagirs* and *ijaras* for himself and Ajit Singh, the ruler of Jodhpur.

The developments at the Mughal court during July 1711 were of great significance regarding Bahadur Shah's relation with Rajput Rajas. The vakil reports[2] make it clear that the three princes looked with apprehension the forthcoming visit

1. *Arzdashts* dated Vaishakha Sudi 1, 1768 (April 7, 1711), Vaishakha Sudi 11, 1768 (April 18, 1711), Shravana Vadi 5, 1768 (June 24, 1711) and Sharvana Sudi 13, 1768 (July 16, 1711).

2. *Arzdashts* dated Shravana Sudi 3, 1768 (July 7, 1711), and Bhadrapada Vadi 11, 1768 (July 29, 1711).

of the Rajput Rajas with a contingent of 3000 horsemen and convinced the Emperor of the inadvisability to their coming to the court.

The Emperor in the beginning of July (1711) asked the Rajas to proceed to reach Sadhaura directly without attending the court. This decision of the Emperor made Rajput Rajas comfortable particularly Ajit Singh who was not at all interested in attending the court. The arrival of the Maharajas and their attending the service at Sadhaura provided better footing for Raja's vakil to get pending matters cleared, such as issuing *sanads* for the *jagir* of *biradari*, future posting of the Rajput Rajas, etc.

By the beginning of August 1711 Bahadur Shah made it clear that he would not entertain any request of the Rajas for appointment in the Deccan or some other place until they reached Sadhaura and terminated the affairs of Banda Bahadur to the imperial satisfaction.[1] After the arrival of the Rajas at Sadhuara on October 7, 1711 the matter of their appointment was once again initiated at the court [2] There was a significant change in the attitude of Bahadur Shah towards the Rajput rulers. The *arzdasht*[3] makes it explicit that both the Rajas and the Emperor (he himself) had lack of trust in one another and therefore, Bahadur Shah assured the Rajas through Azimush Shah and Mahabat Khan about his confidence in them. Secondly, Bahadur Shah on his own had no objection to the appointment of these Rajas to the *suba* of their choice. The question of their postings had became the vital issue due to the group politics at the court. Azimush Shan recommended that the *suba* of Barar be granted to Ajit Singh and one *suba* of the East to Jai Singh. It was on the question of assigning them *subedari* that the conflicting views between Azimush Shan and Zulfiqar Khan came to the surface.

---

1. *Arzdasht* dated Bhadrapada Sudi 9, 1768 (August 11, 1711) and Bhadrapada Sudi 11, 1768 (August 13, 1711).
2. *Arzdasht* dated Kartika Vadi 9, 1768 (Oct. 24, 1711).
3. *ibid.*

The latter objected vehemently to the appointment of Ajit Singh as a *subedar* of Barar although he favoured the appointment of Jai Singh for this post. Amirul Umara offered a counter proposal recommending the appointment of Ajit Singh to the East and Jai Singh to Barar which was inspite of the vehment opposition of Azimush Shan was upheld by the Emperor. The exchange of hot words between the Emperor and the prince further spoiled the case of the Rajas.

However, irrespective of the heated atmosphere Bhandari Khivsi, the representative of Jodhpur was persistant in his demand of getting a region from amongst the regions of Gujarat, Malwa or Khandesh, Barar or Baba Pyara. Later, Bhandari Khivsi suggested one more option of Saurath to Shah Qudratullah and made explicit that Maharaja Ajit Singh would accept none except one of the above five places.[1] Bhandari Khivsi even shouldered the responsibility of representing Maharaja Jai Singh's case and submitted that Jai Singh be granted the *subedari* of Allahabad.[2] In order to settle the problem Bhandari Khivsi submitted their petition afresh before Prince Azimush Shan. The Prince entertained their request but declined to grant Nagaur to Indra Singh instead of Mahkham Singh on the ground that the Rajput nobles had no right to represent others. The prince also expressed his unwillingness to accede to the request of granting the title of Mirza Raja to Maharaja Jai Singh on the ground that first he should perform his duty to the State.

The Emperor ultimately accepted the requests of the Rajput Rajas, made through their representatives, of the grant of *faujadaris* of Saurath to Ajit Singh and that of Ahmedabad Khora, near Allahabad, to Jai Singh on October 30, 1711. The other demands such as *izafa*, *talab* of the *biradari*, etc. were kept in abeyance.[3] However, the question of their appoint-

---

1. *Arzdasht* dated Kartika Vadi 14, 1768 (October 29, 1711).
2. *ibid. Arzdasht* dated Kartika Sudi 1, 1768 (October 31, 1711).
3. *ibid.*

ment was settled by the Emperor according to the proposal submitted by Bhandari Khivsi.

It is noteworthy that these appointments were far below the expectations of these Rajas particularly Jai Singh to which Jagjiwandas had already registered his reservations.[1] This was an important cause which led Maharaja Jai Singh to delay his march to Ahmedabad Khora.[2]

While the demands of Rajput Rajas awaited final sanction and they had not till then joined their duties as *faujdar* of Saurath and Ahmedabad Khora, the news of the death of Bahadur Shah (Feruary 17, 1712) kept the matter unresolved as a result of a fresh struggle for succession amongst his four sons out of which Jahandar Shah emerged as victorious after killing his three brothers. The information furnished by the *arzdasht* exhibits that the Rajput nobles stationed in the imperial camp at Lahore at the time of Bahadur Shah's death had opined in favour of Azimush Shan.[3] However, the death of Azimush Shan on March 8, 1712 had caused considerable financial inconvenience as the local *mahajans* refused to lend money on credit to Jagjiwandas on the ground that they were not sure whether the *puras* of Lahore would be kept with them under the new regime.[4] The Rajput officials Diwan Bhikharidas and Bhandari Khivsi had left imperial camp for their respective states leaving Jagjiwandas at Lahore.[5]

However, it was just after the defeat and death of Azimush Shan that the victorious prince Jahandar Shah showed his favour to Maharaja Jai Singh who was granted the title of Miza Raja and the *mansab* of 7000/7000 on March 15, 1712.[6] The new Emperor was so keen to win over Jai Singh

1. *ibid.*
2. *Arzdasht* dated Pausa Sudi 10, 1768 (January 7, 1712).
3. *Arzdasht* dated Phalguna Vadi 6, 1768 (February 17, 1712).
4. *Arzdasht* dated Phalguna Sudi 11, 1768 (March 8, 1712).
5. *Arzdasht* dated Chaitra Vadi 9, 1768 (March 20, 1712).
6. *ibid.*

to his side that after accession Jahandar Shah reaffirmed the grant of the title and the *mansab* on March 20, 1712 and again on April 8, 1712.[1] Issuing *farman* thrice by Emperor Jahandar Shah on the request of the Amirul Umara as desired by vakil Jagjiwandas was very interesting particularly in the light of the fact that Maharaja Jai Singh was not in a hurry to join the bandwagon of Jahandar Shah ; he had not sent his *arzdasht* of congratulations and even letters to Sabha Chand or to Amirul Umara Zulfiqar Khan till May 3, 1712. It was only in *arzdasht* of *Jyeshtha Vadi* 1, 1769 (May 10, 1712) that Jagjiwandas recorded the receipt of Maharaja Jai Singh's *arzdasht* and *nazr* to the Emperor and letter of congratulations to the Amirul Umara, Khan-i-Jahan Bahadur and Raja Sabha Chand.

From the *arzdasht* dated *Jyeshtha Vadi* 1, 1769 (May 10, 1712) it is clear that vakil Jagjiwandas wanted to secure as much favours as possible from Jahandar Shah as he found this situation of political uncertainty most favourable. He knew it well that Emperor Jahandar Shah would need the help of the Rajput rulers against the future conflict with Farrukh Siyar. However Rajput rulers viewed the situation differently. Both Jai Singh and Ajit Singh took considerable time to openly display their loyalty to Jahandar Shah. Maharaja Ajit Singh was more careful about the result of the forthcoming conflict for the kingship and he did not even send his vakil to the court till the arrival of Jahandar Shah at Shahjahanabad. Shah Nainsukh, the *diwan* of Maharaja Jai Singh, had even instructed Jagjiwandas that he should also get the *parwana* of *jagirs* issued for Maharaja Ajit Singh along with that of Maharaja Jai Singh.[2]

As it has been mentioned earlier that Jahandar Shah had issued a fresh *farman* to Maharaja Jai Singh affirming the *mansab* and title of the *Mirza Raja* after the defeat and murder of Rafiush Shan. The *parwana* regarding the assign-

1. *Arzdasht* dated Chaitra Vadi 9, 1768 (March 20, 1712); Chaitra Sudi 13, 1769 (April 8, 1712).
2. *Arzdasht* dated Chaitra Sudi 6, 1769 (April 1, 1712).

ment of *qadeem jagir* (traditionally held *watan*) was also signed by the Emperor, although these could be issued only after the payment of the *durbar kharch.*[1] Meanwhile, Emperor Jahandar Shah had instructed the newly appointed *daroga* of the *kotwal-kachadi diwani* to collect the money from those who got it from Prince Azimush Shan. Since both Diwan Bhikharidas and Bhandari Khivsi had received money amounting to Rs. 5,000 and 20,000 respectively from Azimush Shan, Jagjiwandas requested Maharaja Jai Singh to defray the amount received by the former.[2]

The *arzdashts* referred to the reminders sent by Jagjiwandas in this regard and their contents make it clear that the court was very particular about the payment of this amount. Of course, it was a general instruction aimed at collecting the money from those who had been obliged by Azimush Shan. However, the policy adopted by Jahandar Shah during the course of his conflict with his brothers continued till his accession at Shahjahanabad. He showed highly liberal attitude towards the Rajput rulers in spite of the fact that both Jai Singh and Ajit Singh maintained neutrality till Jahandar Shah declared his succession at Shahjahanabad. Both Maharaja Jai Singh and Ajit Singh did not even attend the court at the time of Jahandar Shah's coronation.[3] Moreover, there had been an increase in the activities of encroachments on the *jagirs* held by other *mansabdars.*[4] Thus the reservation of the Rajput Rajas to attend the court and their involvement in causing disturbances on the imperial *jagirs* might have touched the prerogative of the Emperor. Hence, immediately after his accession Jahandar Shah appointed Fakruddin Khan as *diwan* of Ajmer and *faujdar* of Sambhar dislodging Nusrat Yar Khan.[5]

1. *ibid.*
2. *Arzdasht* dated Chaitra Sudi 13, 1769 (April 8, 1712).
3. *Arzdasht* dated Ashadha Sudi 5, 1769 (June 28, 1712).
4. *ibid.*
5. *Arzdasht* dated Vaishakha Vadi 13, 1769 (April 22, 1712).

Further as per entries made in the *arzdasht* dated July 9, 1712[1] Raja Sabha Chand summoned the vakil of Amber, Jagjiwandas and charged that Maharaja Jai Singh had not yet removed his *thana* from Sambhar, and was not allowing the imperial *jagirdars* to secure their control over their *jagirs* situated in Mewat, Akbarabad and Ajmer. Explaining that Jai Singh was granted favour due to the old relationship with Amirul Umara Zulfiqar Khan, Sabha Chand warned the vakil of Amber that his Raja should not under-estimate the position of the Emperor and over-estimate his own by comparing himself with Ajit Singh as the latter had few political and topographical advantages whereas he had none. Sabha Chand also instructed Jagjiwandas to inform his Raja to obey the imperial orders and also to advise Ajit Singh to pursue the ways of a ruler and not that of a dacoit. Sabha Chand made his position clear that he could extend help to the Rajput Rajas only if they subject themselves to imperial orders. Further, it was made clear to the vakil that the *yaddashta* of *izafa* to Jai Singh and the *sanad* to Ajit Singh would be issued only after evacuating their possessions over Sambhar, Didwana, etc.[2] By then Mayaram, the vakil of the Maharana of Mewar had reached the court and had started negotiating for the grant of the *parganas* of Pur, Mandal, etc. through Sabha Chand.[3] It is noteworthy that the move of the Maharana was independent and was not in accordance with those of Maharaja Jai Singh and Ajit Singh. The attitude of Sabha Chand is an expression of Emperor Jahandar Shah's policy towards the Rajput rulers.

The report that all the Rajput rulers were going to meet at Pushkar to decide about the future course of action caused great concern at the court to the extent that Zulfiqar Khan himself enquired about it from the vakil of Jai Singh. Vakil Jagjiwandas took special care to remove this misunderstanding

---

1. *Arzdasht* dated Shravana Vadi 2, 1769 (July 9, 1712).
2. *ibid.*; also see, *Rajput Polity.*
3. *Arzdasht* dated Shravan Vadi 10, 1769 (July 17, 1712).

from the mind of the *wazir* and requested Maharaja Jai Singh to ask Shah Beg, who was staying at Amber to write to the court about the unfoundedness of this news.[1]

It is noteworthy that the news of the meeting of the Rajput rulers was not totally unfounded as it is well-known that Maharaja Ajit Singh had asked Jai Singh to reach Merta in order to attend the meeting at Pushkar. However, Jai Singh was reluctant to attend any such meeting as the situation at the court was still uncertain. The demand of evacuating of Sambhar and Didwana was getting serious considerations at the court but, it seems, Ajit Singh was in no mood to evacuate his possessions over there. The favour granted to Jai Singh was apparently very tempting. However, the questions of assigning *jagirs* in the *watan* territories and appointing them at the *subedars* of Malwa and Gujarat were still unresolved. What appears from the report is that the Emperor and the *wazir* were ready to consider these demands of the Rajput Rajas if they attended the court at the earliest. Rajput rulers, on the other hand, insisted that their demand be fulfilled before they present themselves at the court.[2]

The growing differences between the groups led by *wazir* Zulfiqar Khan and Khan-i-Jahan Bahadur (Kokaltash) on the question of Hindaun made the matter more complicated.[3] The vakil of Jai Singh succeeded in seeking the favour of Amirul Umara Zulfiqar Khan and Queen Imtiaz Mahal on this issue. He also secretly met Azam Khan[4] who belonged to the group led by Kokaltash Khan-i-Jahan Bahadur.[5]

No doubt, each of the group wanted to oblige the Rajput Rajas by securing maximum favour for them in order to win-over their support. Even Azam Khan, who was deprived of the Emperor's favour on the question of Hindaun showed his will-

1. *ibid.*
2. *Arzdasht* dated Kartika Vadi 4, 1769 (October 7, 1712).
3. *Arzdasht* dated Kartika Sudi 13, 1769 (October 31, 1712).
4. *ibid.*
5. *Parties and Politics*, 69.

ingness to help the Rajas if they transferred their loyalty to his patron.[1] Interestingly enough Jai Singh had the support of Amirul Umara and Imtiaz Mahal on the question of Hindaun.

The information recorded in the *arzdasht*[2] reveal that both Zulfiqar Khan and Sabha Chand openly supported the cause of the Rajas and the way the Rajput *sardars* (representatives of the Rajput Rajas), Diwan Bhikharidas and Bhandari Raghunath, etc. were received by Sabha Chand goes a long way to prove it. However, it is to be kept in mind that the Rajput *sardars* had reached the court when the preparation of campaign against Farrukh Siyar was at its final stage. It was at this juncture that they were asked by Amirul Umara and Sabha Chand to present their demand with an assurance that the same would be granted. Meanwhile they were asked to proceed along with the Emperor towards Delhi. Regarding Amirul Umara's demand that the Rajput Rajas accompanying Prince Azzuddin in the forth-coming conflict with Farrukh Siyar, the Rajput *sardars* asssured that the Rajas would accompany the prince if the orders granting *subedaris* of Malwa and Gujarat were issued in advance.[3] It seems, that the order issued for the grant of the *subedari* of Malwa to Jai Singh and of Gujarat to Maharaja Ajit Singh was a part of desperate efforts of the Amiral Umara to mobilise the military support against Farrukh Siyar. He asked the Rajas to send their contingents immediately to join Prince Azzuddin. The testimony of the *arzdasht*[4] makes it apparent that Jahandar Shah made all these concessions to Jai Singh and Ajit Singh considering the importance of their coopertion in the fight against Farrukh Siyar. Apparently the fulfilment of the demand of the Rajput Rajas was so tempting that Jagjiwandas advised Maharaja Jai Singh to join the Emperor directly.

---

1. *Arzdasht* dated Kartika Vadi 11, 1769 (October 15, 1712).
2. *Arzdasht* dated Kartika Sudi 7, 1769 (October 25, 1712) ; Kartika Sudi 13, 1769 (October 31, 1712) and Margashirsha Vadi 5, 1769 (November 7, 1712).
3. *Arzdasht* dated Kartika Sudi 7, 1769 (October 25, 1712).
4. *ibid.*

The *arzdashts* contain frequent references to the activities of Banda Bahadur (referred to as the Guru), the role of the Mughal commanders, the attitude of Bahadur Shah towards the Sikhs and his subsequent movements in the Punjab, and the effect of imperial movements in the Sikh affairs on Mughal Emperor's attitude towards Maharaja Jai Singh and Ajit Singh. Since the possibility of military action against these Rajas depended upon the nature and magnitude of the Sikh rebellion, Vakil Jagjiwandas, Diwan Bhikharidas and Bhandari Khivsi kept Maharaja Jai Singh fully informed about the developments regarding the Sikh affairs.

The contents given in the *arzdashts* make it clear that soon after the submission of Ajit Singh and Jai Singh to Emperor Bahadur Shah (at Deorai near Ajmer in June 1710), Wazir Munim Khan and his son Mahabat Khan, the third *Bakhshi* had started reminding the Rajput rulers repeatedly to appear at the court to finalize *mansab*, *jagirs* and the postings. Bahadur Shah had insisted upon their personal appearance along with their contingents not only because, he was suspicious about their intentions, but also because and it was perhaps more important for him, to employ their services to crush the Sikh rebellion.[1]

It is noteworthy that Bahadur Shah was still in process of consolidating his position, when he reached river Govindwala on June 25, 1710 to meet the threat caused by Banda Bahadur in the *suba* of Lahore.[2] Earlier in an open battle fought in the middle of June, the Mughal commander though defeated him but was unable to capture him. It was reported that his escape was possibly because of the sympathy for him amongst the local *zamindars*. Emperor Bahadur Shah made all efforts to capture the Guru. He sent *hasbul hukm* to the *zamindars* of hills to capture and deliver him to the Emperor if he was found in their territories.[3] Relying on the report received from the Rajas of hills that Banda Bahadur had found

---

1. *Arzdasht* dated Chaitra Sudi 1, 1767 (March 20, 1710).
2. *Arzdasht* dated Asadha Sudi 11, 1767 (June 26, 1710).
3. *Arzdasht* dated Magha Sudi 3, 1767 (January 10, 1711).

shelter in the territory of the Raja of Nahan, Bahadur Shah, issued an order to the Khan-i-Khanan to imprison the Raja of Nahan in order to force him to present the Guru to the Mughal court.[1] The Raja of Nahan pleaded ignorance about the whereabouts of the Guru in vain. He was imprisoned. The imprisonment of the Raja of Nahan worried his mother about his life and therefore she assured the Emperor to capture and present the Guru to him.[2]

The imprisonment of the Raja of Nahan and the promise made by his mother raised the hopes of capture of the Guru. Perhaps, this was the reason that the various rumours got credence at Badshah's court. An imperial messenger coveyed the report on January 21, 1711 at the court that the mother of the Raja of Nahan along with the Guru was camping at the distance of 12 *kos* from the Mughal camp and she had made a request that Mahabat Khan should reach there to receive the Guru.[3] The Emperor was jubilant enough to call Mahabat Khan and asked him to bring the Guru, confining him in the iron case made for this purpose, and the two ladies imprisoned with him in the chariot.[4] Such rumours were always followed with contradiction. The *arzdasht* dated *Phalguna Vadi* 13, 1767 (February 4, 1711) informed Maharaja Jai Singh that Banda Bahadur would be captured within a couple of days. Another rumour spread at the court was that although the Guru was stying in the hills of Nahan where it was difficult to capture him due to heavy snowfall. The mother of the Raja of Nahan had assured the Emperor that her followers had surrounded the Guru and he would be captured. Meanwhile it was also stated that the Guru had with him an army of 80,000 *sawars* and footmen and was ready for a battle which discouraged the followers of the Raja of Nahan to approach the Guru. The vakil records another news that the Guru had escaped to

1. *Arzdasht* dated Magha Sudi 11, 1767 (January 19, 1711).
2. *ibid.*
3. *Arzdasht* dated Phalguna Vadi 4, 1767 (January 27, 1711)
4. *ibid.*

another place and that only his followers were staying there due to the snowfall. However, the followers of the Raja of Nahan failed to capture the Guru who escaped from his territory to Bhutenta after giving a fight to them. The Emperor after getting this information also moved his camp towards Bhutenta.[1] *Arzdasht* dated *Chaitra Sudi* 5, 1768 (March 13, 1711) mentions about a fresh attack of Banda Bahadur in the neighbourhood of Lahore. In an encounter with the Mughal army, Guru Banda Bahadur escaped successfully after giving a fight to the Mughal commanders Samad Khan and Wazir Khan in which one of them was killed. The revival of the fresh incursions by the Sikhs alarmed the Emperor who determined to crush the Sikh power with a heavy hand. In order to teach a lesson to the *zamindars* of that region, the Emperor issued an order to Mahabat Khan to put Bhavpati, the Raja of Nahan, in the cage of iron originally made for the Guru. Lather the Raja of Nahan was sent to Delhi where he was kept in Salimgadh.[2] Bahadar Shah also founded *a chhawani* (military camp) and named it Jahangirpur in order to have an effective check on the passages of valley so that the move of the Guru to enter the hills and the possibility of the help to him by the *zamindars* of hills could be checked. The attack of the Guru on Lahore was so strong that the city would have been sacked if it had not been guarded properly by Afghan Khan and his son, etc.[3] The *arzdasht* of May 28, 1711 informs that Hamid Khan Bahadur made an unsuccessful attempt to capture the Guru after crossing river Sutlaj. Bahadur Shah was very unhapy on his failure and he refused to give him audience until he brought Banda Bahadur as prisoner.[4] Later the armies commanded by Muhammad Amin Khan, Gaziuddin Khan and Hamid Khan marched against the Guru whose whereabouts were uncertain. It was reported that after an

1. *Arzdasht* dated Phalguna Sudi 2, 1767 (Februry 8, 1711).
2. *Arzdasht* dated Chaitra Sudi 9, 1768 (March 17, 1711) and Vaishakha Sudi 11, 1768 (April 18, 1711).
3. *Arzdasht* dated Jyeshtha Vadi 5, 1768 (April 26, 1711).
4. *Arzdasht* dated Asadha Vadi 8, 1768 (May 28, 1711).

encounter with the Mughal commanders he made his escape good.[1] It was stated that the Guru had gone towards Sadhaura.[2] The *arzdasht* dated *Bhadrapada Vadi* 9, 1768 (July 27, 1711) records that Rustam Dil Khan was sent against the Guru along with 10,000 *sawars*. Amin Khan was also sent separately. The Mughal commanders sacked and ruined those villages and towns which were suspected to have extended help to the Guru. The Guru came out of the hills and marched towards Dabar but no encounter took place with either Gaziuddin Khan or Amin Khan. It was believed that Gaziuddin Khan had avoided the fight with Banda Bahadur. This annoyed the Emperor so much that he ordered the imprisonment of Gaziuddin Khan who was confined in the fort of Lahore. His wealth and estate were confiscated and his family was sent to Suhagpura.[3] Mention is also made that Muhammad Amin Khan remained in pursuit of the Guru who had gone towards Sadhaura.[4]

It is apparent that Banda Bahadur's increasing incursions in the region around Lahore and his reoccupation of Sadhaura had revived the urgency of the presence of the Rajput rulers at the court and their joining the imperial compaign against Banda Bahadur. As early as March 1711 Bhikharidas had brought to the notice of Maharaja Jai Singh the fact that the revival of the Sikh incursions had provided a good opportunity to the Rajput Rajas to display their mettle against the Sikhs and win over the confidence of the Emperor and gain his favour.[5] As stated above the Rajput rulers could no longer resist the pressure requiring their presence at the court particularly after the death of Munim Khan. Finding this

1. *Arzdasht* dated Shravana Vadi 5, 1768 (June 24, 1711) and Shravana Sudi 3, 1768 (July 7, 1711).
2. *Arzdasht* dated Bhadrapada Vadi 5, 1768 (July 23, 1711).
3. *Arzdasht* dated Bhadrapada Sudi 9, 1768 (August 10, 1711).
4. *ibid.*; *Arzdasht* dated Bhadrapada Sudi 11, 1768 (August 13, 1711).
5. *Arzdasht* dated Chaitra Sudi 15, 1768 (March 23, 1711).

opportunity favourable they ultimately started to attend upon the Emperor. However, the development of July 1711 forbid their presence at the court and the Emperor allowed them to proceed directly to Sadhaura to meet the Sikh challenge posed to the Mughal authority.[1] The Rajput rulers reached Sadhaura on October 7, 1711 and thus joined the duty, although their demand was yet to be fulfilled.

The *arzdashts* contain the evidences to substantiate the argument that the Guru enjoyed the active support of the local Rajas (*zamindars*) and populace of the hilly regions of Punjab and therefore he could offer successful resistance in spite of the formidable pressure from the Mughal army. The Raiput rulers knowing well that the Emperor was pre-occupied with the Sikh problem delayed their presence at the Mughal court. They knew it well that as long as Bahadur Shah was engaged against the Guru, they were in a position to gain maximum favour from the Emperor.

Mansabdari and Khurak-i-Dawwab

The *arzdashts* furnish interesting information on the practice and methods of the collection of *dawwab*, a term used to signify the *khurak-i-dawwab*. It is known that under Akbar the *mansabadars* had an obligation to maintain and feed certain number of elephants, horses, camels and carts belonging to the Emperor's establishment. As per the rules of Emperor Akbar, established in 1575 A.D., the *mansabdars* were paid the allowance for these animals over and above their sanctioned personal salary. However, this practice was modified in the later years and it was made obligatory on the part of *mansabdars* to maintain certain number of Emperor's animals according to their ranks for which they were not paid any allowance. By the time of Shahjahan, it had became the practice to deduct the cost of *Khurak* or *rasad-i-khurak* from the *talab* (salary claim) of the *mansabdars*. It is said that during Aurangzeb's reign there was the practice of assigning the *jagirs* for the full salary and

1. e.g. *Arzdasht* dated Bhadrapada Vadi 11, 1768 (July 29, 1711).

then demanding the *khurak* in kind or cash, for which *sozavals* or imperial messengers used to be sent to exact it from the *jagirdars*.[1] However, taking into consideration the nobles' resentment, Aurangzeb in his 46th R.Y. consented to abolish the system in respect of the *khurak* for elephants. Under the changed practice, the charge of *khurak-i-dawwab* was to be converted into *dams*, and the *jagirs* of equivalent *jama* were to be taken away from the *jagirdars*, exempting them from the obligation of supplying provisions or paying in cash for the imperial animals. In the "next reign" the measures were extended to cover the whole of *khurak-i-dawwab* to the great relief to all the *mansabdars*.[2] During the *wizarat* of Munim Khan, an attempt was made to deduct the amount of the claim of *dawwab* from the total salary of a *mansabdar* and the balance was paid to him as *tankhwah*.[3]

It is in this light of above discussion that the data available in the *arzdashts* furnish valuable information which helps us in understanding the working of this institution during the last few years of Aurangzeb's reign and the reigns of Bahadur Shah and Jahandar Shah with particular reference to its effects on the Mughal economy and the nobility.

The *arzdasht* dated March 3, 1711 informs that as soon as Hidayatullah Khan, the *diwan-i-tan-o-khalisa* assumed the office of the *wizarat* an attempt was made to review the practice of *dawwab* in order to strengthen its management and collection. Hidayatullah Khan made it clear that there was no land available in *khalisa* nor there was any money left in the treasury and in such circumstances it was requested that the payment be made as it was done earlier.[4] He had issued order to the *mutsaddis* of the office of the *dawwab* to collect the amount of *dawwab* from the vakils of all the *umara*. Taking into consideration the firm determination of

1. M. Athar Ali, *The Mughal Nobility under Aurangzeb*, 51.
2. *ibid.*
3. *Parties and Politics*, 59.
4. *Arzdasht* dated Chaitra Vadi 11, 1767 (March 4, 1711).

Hidayatullah Khan to collect the *dawwab*, vakil Jagjiwandas requested Maharaja Jai Singh to send the order of payment to the *vohras* to deposit the amount of the *dawwab* every month at the state treasury.[1]

The vakil informed the Maharaja that the vakils of the *umara* were facing all sort of harassment due to delay in paying the amount of the *dawwab*.[2] When the matter was reported to Hidayatullah Khan, he ordered the *kotwal* to get the amount realized by force from the vakils. Accordingly the *kotwal* in the beginning instructed the vakils to station their camps behind the *chotra kotwali* and later on April 18, 1711 warned them to pay the dues of *dawwab* otherwise they would be imprisoned and humiliated.[3]

The action taken by the *diwan* compelled the nobles like Amirul Umara Asifuddaullah, Daud Khan, Rustam Dil Khan, Mahabat Khan and others to accept the obligation of payment of the *dawwab*. On behalf of Maharaja Ajit Singh, Bhandari Khivsi agreed to pay the dues. Regarding Maharaja Jai Singh the instructions were yet to be received from him, although the amount had been deducted from his *talab*.[4] *Arzdasht* dated, April 18, 1711 mentions that Mahabat Khan had agreed to pay the amount of *dawwab* provided the *jagir* of an equivalent amount was assigned to him. Other *umara* also endorsed his view. Maharaja Jai Singh had asked his *diwan* Bhikharidas to acquire the *jagir* in the *parganas* of Mauzabad and Bhatri whose *jama* was 34,60,000 *dams* since this amount was dedutced from his salary. Diwan Bhikharidas apprehended that there was no *jagir* left under *khalisa* which could be granted against the claim of *dawwab*.

It seems that the leading nobles at the court had accepted in principle the payment of the *dawwab*, but the real problem was whether the amount of *dawwab* was to be deducted in advance, or the *jagirdars* were to pay the *dawwab*

---

1. *ibid.*
2. *Arzdasht* dated Vaishakha Sudi 1, 1768 (April 7, 1711).
3. *ibid.*
4. *ibid.*

after getting their *talab* cleared.

In fact the deduction of an amount of *dawwab* in advance had no meaning to the state finance as the *mansabdars'* *talab* could hardly be met by the *diwan's* office in view of the *jagirdari* crises. On the other hand, payment of *dawwab* in cash required the assignment of *jagir* to the *mansabdar*, which was equally impossible.

The details given in the *arzdashts* make it clear that the office of the *diwan* used to make deduction in the name of *dawwab* at the time of drawing up the salary claim of each *mansabdar*. Thus the explanation given by Mahabat Khan to the *daroga* of the office of *dawwab* that since the amount of *dawwab* had been deducted from the salary claim of the Rajput Rajas, they would pay the *dawwab* provided they were issued the *parwana* of *jagir*[1], was similar to the principle to which the nobles had agreed upon. However, the order issued by the Emperor on the *tauji* of Muzaffar Jang left no alternative before the nobles but to pay the amount of *dawwab*.[2] It was decided that in case any noble refrained from paying the *dawwab* the office of the *mutalba tasurruf* would make a deduction of one-fourth (1/4th) of the *talab* of the *jagirdar* from the revenue of his *mahals*. As a result of this order of the Emperor,, the *umara* did not insist upon their earlier demand and started paying the *dawwab*. Maharaja Jai Singh was also advised to pay the dues of *dawwab* through the *sahukars* who could pay the amount every month according to the number of the *barawurdi*.[3]

In a state of "*jagirdari* crises", the other obligations of *mansabdars* continued to attract the attention of the Mughal government.

It seems that the *mansabdar's* obligation to present horses for *dagh* and verification was observed during the time of Bahadur Shah with all strictness. Jagjiwandas in one of

---

1. *Arzdasht* dated Jyeshtha Vadi 5, 1768 (April 26, 1711) : also Asadha Vadi 8, 1768 (May 28, 1711).
2. *Arzdasht* dated Shravana Vadi 5, 1768 (June 24, 1711).
3. *ibid.*

his *arzdashts* has stated that one-fourth of his (Jai Singh) *talab* had been kept in pending until the *daghnama* was submitted to the *diwan* office.[1] It appears that Maharaja Jai Singh was obliged to maintain a contingent during his posting as a *faujdar* of Ahmedabad Khora and for that he wanted some concession. However, when the request was made to prince Azimush Shan through his vakil Jagjiwandas, the Prince clearly said that there was no tradition of granting any exemption to Maharaja Jai Singh regarding the *dagh* of the *biradari* (*mansbadars* belonging to his clan) and thus they were to present their horses for *dagh*.[2] Apparently, while Maharaja Jai Singh had agreed to fulfil his own obligation of presenting his horses for *dagh*, he pleaded for exempting his *biradari* from this obligation. The office of the *diwan* could refuse to entertain the issue of the *daghnama* in normal circumstances but considering group politics, Maharaja Jai Singh was granted exemption for *dagh* to the horses of his *biradari* for a year[3]

There are frequent references in the *arzdashts* which throw light on the nature of *watan jagirs*, and the *ijara* practices.

Being the *watan* holder, the Rajput Rajas enjoyed a special position and consideration at the Mughal court. By now, it is clear that with the extension of recognition as a successor to the ancestor's *gaddi* by the Mughal Emperor, the right of the successor (Raja) over his ancestral dominion was recognized in principle. However, following the concept of "Paramountcy" it was the prerogative of the Mughal Emperor whether all the *parganas* belonging to the ancestoral dominion be assigned to the Raja at the time of accession or only a part of it. Further, it is also clear that for the imperial purpose the *watan* territory was assigned against the claim

1. *Arzdasht* dated Kartika Sudi 14, 1768 (November 13, 1711).
2. *Arzdasht* dated Margashirsha Sudi 6, 1768 (December 4, 1711).
3. *Arzdasht* dated Pausha Sudi 9, 1768 (January 6, 1712).

of salary (*talab*) of the Raja who was entitled for this after his enrolment in the Mughal service as a *mansabdar*.[1] The *arzdashts* strengthen this understanding on a more wider scale. In case of Amber, it is revealed that the extent of the claim of *watan jagir* was very limited as most of the *parganas* were treated as the imperial *jagir*. It appears that at the time of accession (2nd May, 1689), Maharaja Bishan Singh held *mahal* Amber along with the *parganas* of Chatsu and Toda Bhim. In 1691 A.D. Chatsu and Toda Bhim were resumed and were later on assigned to Kamaluddin Khan and Muhammad Ali Khan.[2] However, the Maharaja continued his efforts to acquire Chatsu, Toda Bhim and other *parganas* as a part of his *watan* territory. When the *dol*[3] of Maharaja Bishan Singh was presented before Emperor Aurangzeb, he issued the order to assign Hindoun, Bayana, Toda Bhim and Udai to the Maharaja.[4] On another occasion when the vakil of Amber was asked to justify Maharaja's claim over Chatsu he represented that the families of the clan (*ulus*) of the Maharaja were settled in the villages of *pargana* Chatsu and therefore if this *pargana* was granted, it would enable the Maharaja to recruit the additional footmen.[5] These instances if seen in the context of the claim of the Raja of Amber over his *watan* jagir, it would become obvious that even the *parganas* adjoining to Amber were not assigned at the time of his accession. An examination of the details given in the *arzdashts* regarding the *jagirs* assigned to the Kachhawah nobles (*biradari*) suggests that these assignments were made against the *talab* of their *mansab* and in the territories on which the ruler of Amber could have claimed their *watan*

---

1. G.D. Sharma, *Rajput Polity*, (New Delhi, 1977) and Satish Chandra, General Presidential Address to the Rajasthan History Congress, Ajmer Session, 1976.
2. *Arzdasht* dated Magha Vadi 13, 1748 (January 6, 1692).
3. Dol or Daul—A statement of the particulars of the assessed revenue of various *parganas* of Amber.
4. *Arzdasht* dated Asadha Vadi 8. 1750 (June 16, 1693).
5. *Arzdasht* dated Magha Vadi 4, 1750 (January 5, 1694).

rights. The *arzdasht* explains that the claim for *mansab* and *jagir* made by the Amber nobles was routed through the Maharaja and therefore their request was enlisted in the *arzdasht* submitted by the vakil on behalf of his Raja to the Emperor. Any request submitted by a Amber noble directly to the Emperor for the grant of *mansab* and *jagir* was considered as a defiance by the Maharaja.

The *arzdashts* also throw sufficient light on the working of *ijara* system and its impact on the Mughal economy. It is well known that the acquisition of *jagirs* on *ijrara* had helped Jai Singh to expand his *watan* or the territories of the Amber state. However, the practice of assigning *jagirs* on *ijara* was attributed to the weakening of central control over the administration and unstable political situation. Perhaps, Maharaja Jai Singh took the maximum advantage of the situation and got a number of *parganas* on *ijara* by offering a handsome amount to the high Mughal officials in the name of *muhamsazi*. The *arzdashts* confirm that a considerable part of the neighbouring *parganas* of Amber was held by Mughal *mansabdars* in *jagirs*, while his own *talab* either remained uncleared or met out by granting him *parganas* outside his *watan*.[1] Maharaja Jai Singh made a successful attempt to aquire *parganas* on *ijara* which were not granted to him as *watan jagir*. He gradually extended his *ijara* right on the *jagirs* such as Mauzabad, Malpura, Khohri, Toda Bhim, Bairath, Gazi-ka-Thana, Tonk, Jaitpur, Lalsot, Firozpur, Bahatri, Hindoun, Patodi, Maujpur, Udai and Bayana, which were attached to *sarkars* of Mathura, Shahjahanabad, Akbarabad and Ajmer.[2]

The *arzdashts* provide information on the situation which

---

1. e.g. *Arzdashts* dated Magha Sudi 3, 1767 (January 10, 1711) ; Phalguna Vadi 4, 1767 (January 27, 1711) ; Phalguna Sudi 2, 1767 (February 8, 1711) ; Ashwina Vadi 8, 1768 (September 24, 1711) ; Shravana Sudi 15, 1769 (August 5, 1712).

2. *ibid.*

the *mansabdars* were confronted with in their *jagirs* situated in the neighbourhood of Amber state. Many of these *parganas* were dominated by the *zamindars* who belonged to the Kachhawah ruling family or the Raja of Amber was in a btter position to execise his control over these areas. This special position of Maharaja Jai Singh made the imperial authority feel that the regular collection of the revenue and maintenance of peace and order was only possible if these *jagirs* were either granted in *ijara* or *jagir* to Maharaja Jai Singh. It is worth mentioning that Maharaja Jai Singh did not spare any Mughal *mansabdar* including those who were supporting his case at the Mughal court[1] if they impeded his ambition on the extension of his state through *jagir* or *ijara*.

The contents of *arzdashts* would suggest that the aggressive activities of the Rajput rulers had become more frequent and effective during the time of Jahandar Shah. The complaints lodged at the Mughal court and the instructions issued by Sabha Chand speak about the extent of involvement of the Rajput Rajas, particularly Maharaja Jai Singh, in the practice of unauthorized collections of the revenue in the *ijaras* held by the Mughal *mansabdars*.[2]

The *arzdashts* speak about the considerations which determined the amount on which *ijara* was to be acquired. It has been noted that the contender (*ijaradar*) used to keep in mind the *jama* and the "month scale" on which the *paragana* was assigned in *jagir*.[3] Mention is made that Maharaja Jai Singh had taken note of discrepancy on the scale of *jama* fixed to the grant of Merta to Ajit Singh and Bhahtri to himself on *ijara* and thus wrote to his vakil that Merta had been given to Maharaja Ajit Singh on an amount of 4½ months *jama* while Bhahtri was given to him at 6 monthly *jama*.

1. e.g. *Arzdasht* dated Chaitra Sudi 8, 1767 (March 1, 1711) and Ashwina Vadi 14, 1768 (September 30, 1711).
2. *Arzdashts* dated Pausha Vadi 1, 1768 (December 15, 1711); Asadha Sudi 5, 1769 (June 28, 1712); and Shravana Vadi 15, 1769 (August 5, 1712).
3. *Arzdasht* dated Vaishakha Sudi 11, 1768 (April 18, 1711).

from the *ijaradar*. However, the practice of providing surety by the bankers for a year was quite common; although there are examples of extending surety for particular crop (*kharif*) only. The involvement of the *sahukar* or *mahajan* (banker) in this practice kept the banker in a state of great risk and therefore besides the original amount he used to charge interest and commission on the money he transmitted to the *jagirdar* on behalf of the *ijaradar*. Although it is difficult for us to determine the number of bankers involved in this practice during this period, the frequent references made about the *gumashtas* suggest that a large number of them were employed by the bankers to operate their working of payment and collection of money both at the place of *ijara* land as well as at the Mughal court. It is noteworhty that due to the fall in the *hasil* of the *ijara* land to which the banker had furnished the surety, he was free to withdraw it for another crop and in this situation the *ijaradar* had no alternative but to furnish surety from another banker. The *arzdasht* dated, *Ashwina Vadi* 4, 1769 (September 8, 1712) suggesets that one Govindram Sarraf, whose firm was known as Panipatia, had acquired high reputation and therefore the court insisted upon to avail the surety of that firm.

The bankers used to keep themselves away from the court politics. The process of getting the documents of *ijara* cleared from the court was the responsibility of the *ijaradar* or the *jagirdar*. Hence, the representative of the *ijaradar* had to work hard at the court to acquire the land on *ijara* and for that he had to satisfy both the high officers and *mutsaddis* by paying them money to their satisfaction. This, in fact, had widened the scope of bribery at the Mughal court.

The ever increasing ambition of the Rajput rulers to acquire high *mansabs*, remunerative *jagirs*, *ijaras*, and appointments as *subedars* or *faujdars* in the regions of their choice could only be achieved if they win over the support of the powerful officials (*mansabdars*) posted at the Mughal court. Joining a powerful group at the court was, undoubtedly, a powerful instrument to secure the favour. But in a situation which had created uncertainty in the position of the

high officers and lower strata of the officials working in the administration, it was the power of money which ultimately proved a more effective instrument.

The details given in the *arzdashts* make it explicit that offering of a present by a subordinate to the Emperor or to the high officials or even to the officers of equal rank had been considered a part of the court protocol.[1] This practice which was considered a court protocol opened a way to the bribery in a period of political crises following the death of Aurangzeb.

With regards to Rajput rulers, the contents furnished in the *arzdashts* demonstrate a trend of getting favour of the high officers of the court by offering them huge amount of money. The Rajput vakils were quite efficient in establishing their rapport with persons of power and influence at the court by keeping an eye on the functional and power politics going on over there. Thus we notice that just after the death of Aurangzeb the vakil of Maharaja Jai Singh had approached Amirul Umara Asad Khan and through him secured the title of Mirza Raja and the *mansab* of 7000/7000 for Maharaja Jai Singh after paying him Rupees 50,000 in cash along with 21 *mohars*. The vakil of Maharaja Ajit Singh had also paid rupees one *lakh* to the Amirul Umara for the title of the Maharaja and the *mansab* of 7000/7000 for Ajit Singh and the *mansab* of 5000/5000 for his son Abhai Singh.[2] For the later period, after the reoccupation of Amber and Jodhpur by Maharaja Jai Singh and Maharaja Ajit Singh respectively during the reigns of Bahadur Shah and Jahandar Shah the practice of paying money for getting the work done to the high officers of the court, had become quite common.

The *arzdasht* dated *Magha Sudi* 3, 1767 (January 10, 1711) records that vakil Jagjiwandas had agreed to pay Rupees 75,000 to Mahabat Khan (*mir-bakhshi*) and therefore he requested the Maharaja to send a *hundi* amounting to Rupees

1. Cf. *Arzdasht* dated Magha Vadi 4, 1750 (January 5, 1694).
2. *Arzdasht* dated Vaishakha Sudi 10, 1764 (April 11, 1707).

25,000 – a payment to be made in advance, in order to get the signature of Mahabat Khan on the *yaddasht*. Gulabchand, the vakil of Maharaja Ajit Singh had already paid the money of *muhamsazi* to Rai Bhagwant, the Diwan of Mahabat Khan, for securing favour for his Maharaja. Jagjiwandas also informs the Maharaja that although Rupees 500 had been given to the official of Mahabat Khan through Rai Bhagwant, they were demanding more. Jagjiwandas has made it clear that although the signature of the Amirul Umara had been procured for issuing of the *sanads* for the Maharaja and the *biradari* affecting the grant of *jagirs*, these would be issued only after the payment of *durbar kharch*.[1]

The details recorded in the *arzdashts* exhibit that the Rajput rulers were getting the favours from the powerful group at the Mughal court during the time of Bahadur Shah and Jahandar Shah. However, irrespective of their group alliances, they used to pay handsome amount to the *wazir*, *diwan*, *mir-bakhshi* and their personal *diwans* to secure the grant of their favourite *jagirs* and *parganas* on *ijara*. Even, one could notice the involvement of Lal Kunwar (Imtiaz Mahal) in getting the *faujdari* of Bayana transferred to Maharaja Jai Singh from Azam Khan on a token payment of Rs. 10,000. This was in addition to what was already paid to Sabha Chand for himself and for *wazir* Zulfiqar Khan in the name of *muhamsazi*.[2] The details would show that for seeking each favour a separate amount was paid and the fixation of amount depended on the importance of work. In his dealings of payment made in the name of *muhamsazi*, Maharaja Ajit Singh enjoyed better credibility than Maharaja Jai Singh.[3] The latter was always slow in clearing his dues and this slackness sometimes saved good amount to the treasury of Amber.

---

1. *Arzdasht* dated Phalguna Sudi 2, 1767 (February 8, 1711).
2. *Arzdashts* dated Shravana Vadi 2, 1769 (July 9, 1712) and Ashwina Sudi 11, 1769 (October 2, 1712).
3. *Arzdasht* dated Phalguna Sudi 4, 1767 (February 10, 1711).

However, it would be wrong to presume that the task of getting favour was over after the payment of *muhamsazi* was made. The more crucial phase was the implementation of the order issued by the *diwan* and *mir-bakhshi*. Thus the role of the *mutsaddis* working in the office of the *diwan* could hardly be under-estimated. *Arzdasht* dated *Chaitra Sudi* 9, 1768 (March 17, 1711) records that Bhandari Khivsi had paid Rupees 100 as *nyota* (present) to Indra Mani, the *munshi* of Hakimul Mulk, the chief adviser of Prince Jahan Shah. Bhandari had advised Bhikharidas, the *diwan* of Amber to pay the same amount as present to Indra Mani. He also told that he (Bhikharidas) should pay Rupees 300 to the *peshkar* of the office of *diwan* so that the *sanad* affecting the grant of Bhahtri on *ijara* could be issued. Similarly the payment was to be made for the *durbar kharch* so that the *sanads* affecting the grant of *mansab*, *izafa* and *ijara* could be issued in time.[1]

Interestingly enough the importance of the payment made to the officials of the various offices of the Mughal court has been very well argued by vakil Jagjiwandas.[2] In relation to the payment made in favour of the *navisandas* (scribe) of the office of *waqai-navis*, he represented the case before the Maharaja arguing that their services to the Maharaja were very signficant and if they were not paid their customary dues, the interest of the Maharaja would suffer. He emphasized that *navisandas* and *chobdars* of the court were paid the customary dues since the time of Maharaja Man Singh. Even during the early years of present reign they were paid regularly and if this was discontinued now, it would go against the interest of the state. Jagjiwandas futher said that he could maintain his prestige before the *umara* of the court only if he paid some *inam* to the *chobdar*, *khidmatgar*, etc. of the court.[3]

These references suggest that the practice of paying

1. *Arzdasht* dated Bhadrapada Vadi 5, 1768 (July 23, 1711).
2. *Arzdasht* dated Bhadrapada Sudi 11, 1768 (August 13, 1711).
3. *Ibid.*

money as *inam* to the officials (clerks)] was, of course, a recognized custom and possibly no new dimension was introduced expcept that the amount of money was increased. However, it was the payment made to the high officials which ultimately took the shape of bribery. It played a significant role in determining the policy and assignment of the lucrative *jagirs* and *ijaras* to the Rajput rulers. A period in which the Mughal state was facing a tremendous pressure on the *jagir* the Rajput rulers got assigned in their favour high *mansabs* and *jagirs* and also the *jagir* land on *ijara* which might have contributed greatly to the *jagirdari* and financial crises.

The involvement of the Rajput rulers in the Mughal military compaigns at the distant areas, postings of the Rajput *diwans* and vakils at the Mughal court, necessity of payment of money to Mughal officials to acquire favour, the practice of furnishing surety from the *mahajans* for acquiring *ijara*, etc., necessitated a system of money transmission, advancing credit on interest and its repayment on an organized pattern. The most favourable and accepted instrument used for the funding and transmission of money was *hundi*, the references to which are cited frequently in our *arzdashts*.

The *arzdashts*[1] contain details on the *hundis* issued to Aurangabad, Lahore and Shahjahanabad which furnish interesting information about the working of this system. The contents suggest that whenever the Amber rulers sent the money to their establishment at distant places they used to contact a local banker and after depositing the money at his firm the *hundi* was issued stating the amount of payment, name of the place where the payment was to be made along with the name of banker or *arhatia*. The information reveal that the Amber bankers either had their banches or *arhatias* or credit in the firm situated at Jahanabad, Lahore and

1. e.g. *Arzdashts* dated Vaishakha Sudi 10, 1764 (April 11, 1707), Vaishakha Vadi 13, 1769 (April 22, 1712); Vaishakha Sudi 8 (May 3, 1712); Jyeshtha Vadi 1 (May 10, 1712); Ashadha Sudi 5 (June 28, 1712). Bhadrapada Vadi 7 (August 12, 1712).

Aurangabad. In case of Lahore our data suggests that atleast three bankers of Amber namely Prohit Syamram, Dhansukh Gujarati, Khadagsen Hathisen, had either their *gumashtas* or *arhats* at the *sarrafa* of Lahore. These *gumashtas* or firms were liable to encash the *hundis* issued by their bankers from Amber. Prohit Syamram has been mentioned as a banker who had his network of credit at Aurangabad, Lahore and Shahjahanabad.

It seems that the transaction of money in normal circumstances was carried out smoothly, but there arose problems whenever the bankers who had issued *hundis* terminated their transaction with the *sarrafs* from other cities. In such cases the *hundis* were not honoured by the *sarraf* and even they refused to purchase the same. However, in doubtful cases, the *sarraf* in whose name *hundi* was issued would make the payment only after getting the credibility confirmed from their representative working at the place from where *hundi* was issued. If the amount of *hundi* remained unpaid, the Rajput vakil used to request the Maharaja to get the *hundi* issued from another *sahukar* who had his credibility at the place where the *hundi* was to be encashed. The *arzdasht* dated *Paush Vadi* 1, 1768 (December 15, 1711) records that the *hundawal* (commission) was charged at the rate of Rupees 13 *annas* 8 on every hundred over and above the interest of the original amount.

The delay caused due to the dishonouring of the *hundis* some times caused serious problems for the vakil of the Maharaja. In the absence of ready money he was unable to pay money to various officials who were responsible for issuing the *sanads* of the assignment of *jagirs*.

—G.D. SHARMA

क्रम संख्या १

वकील रिपोर्ट संख्या २

माघ वदी १३, संवत् १७४८

॥ स्वस्ति श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री चरण कमलांनु लसकर सूं सदां सेवग आग्याकारी पं० मेघराज लिखाईत तसलीम वंदगी अवधारिजो जी। अठा का समाचार श्री महाराजाजी रा प्रताप करी भला छै। श्री महाराजा जी रा समाचार घड़ी घड़ी पल पल का सदा आरोग्य चाहीजै जी। अपरंच महाराज म्हांके धंणी छै, श्री परमेसर जी री जायगा छै श्री महाराज ने म्हांका सिर पर घणां सलामत राखै जी।

महाराज सलामत। आगे तो तफसीलवार समाचार लिख चलाया छै वादसाहजी नै अजरईन का ये अरज हुई जु राजाजी जाटां नै आवादांन कीया है अर मीरकलीच[1] गुरजवरदार[2] नैं जाहर कीया जु ईन के आवादान करनै कूं हुकम नही है, जद राजाजी नै जाहर कीया जु ईनके आवादान करनै की अरजदासत करी है। तिस उपर वादशाह जी नैं फरमाया था तिसकी हकीकत लिख चलाई है। जिस पीछे नवाब वहरमंदखां[3] नै ईतखाब अरजदासत वामता लिख वाजबुल अरज वजनिसदसत मुवारिक मै दीया। तमाम मतलब यकबयक मुताले खास मैलायैं अर फरमाया जुं ईन अरजदासती यह नहीं लिखा है जु मै जाटों कूं आवादान कूं करुंहुं अर वगैर हुकम के आवाद कीये ईम पर वीगैत तैंस कीया, अर मालूंम होई गायसत खांजी[4] तौं जो अरजदासत व खत लिखे थे सु तमाम अजसरतायासिकवे सू ही पुर लिखैं थैं। तावहदैक किवले आलंम जद तक चसमनुमाई न होयगी जद तक राजा नही समझनैं का। अर तिस सिवाई अब अरजदासत आई थी सु वादशाह जी पास वजनिस गई है वाहर नही निकली तिस पर वादशाह जी नैं

1 मीर कलीच=चीन कुलीच खाँ—गाजीउद्दीन फीरोज जंग का पुत्र जो आगे चलकर निजामुल मुल्क के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

2. गुरजबरदार=संदेशवाहक।

3. बहरामंद खाँ=मीर-बख्शी।

4. अमीर-उल उमरा शाइस्ता खाँ

महाराजा जी को तोजीह[1] मगाई अर फरमाया देखो हमनै सरत ईसतीसाल जांटां मनसब दीया है यह खबर नही अर वदं न हुकुम खिलाफ मरजी का रवादार होई आबादान कीयै है तोजीह पर दसखत कीयै, पांच सदी जात वीलासरत व पाच से सवार सरती व पैसठ लाख दाम इनाम कम कीयां । अर ईकी कमी मै टोडा भीव का दाम ती कमालुदीखां नै देन का दसखत कीया । अर चटसू पर महमत की खां नै दसखत कीया अर अब अरज्या पर दसखत कीया जु जो कोई चाहे जिसै दो । अर और महाल का तलबदार होई जिसै अर तित मै तलब मोकूफ राख आया अर दसखत कीया । जुकाबुल सूं व ईसलामाबाद सूं मुचलको भेजो है सु नजर-गुजरां नै अर बहरमंद खां सू फरमाया, राजा नै मुचलका जु दीया हे सु मालुम असा होई हजुर उसका मजमून फरामोस कीया । जद बहरामदखां दरबार कर निकला जद खानाजाद सूं नवाब नै कहा जु यह राजाजी नै क्या कीया जु जाटौ कूं बगेर हुकम आबाद कीया, अर वाके दाखल हे जु राजाजी ही नै कहा जु हम अरजदासत करी हे तुम वाकै दाखल करो । सु अरजदासत मै यह लिखा हे जु कसत घोड़ी व सलाह हवाले करनै का रखै है जो मिले है तो बिहतर, नही कतल करुंगा, तिस पर बहोत तेस कीया जु अरजदासत व इस मजमून करी अर जाटौ कूं बगैर हुकम आबादान कीये । जद खानाजाद नै जाहर कीया जु राजाजी नै वाके दाखल कराया हे अर अे अरजदासत मतालिब की आई है । ईस मै भी महाराजा जी नै लिखा हे जु कसत मिलनै का रखै है सु अगलब हे जु राजाजी अजराह सलाह मुलकी अपनी काबू मै बाकी रहे मुकसदौ कूं लाये होहगे अर अरजदासत की होईगी माकनलवे मै तो अरजदासत आंवनै का हुकम नहीं । इस सबब राह मै देर हुई होईगी । अर नवांब कु मालुम होई जु राजाजी पचास लाख रुपइये घर के खरच कर इस सवा तीस लाख रुपइये के करजदार होई ईस जांफिसानी सुं वघर के मशाले सूं ईसतीसाल जाटौ का कीया, आज उमेदवार नतीजे के थे । तिस पर बगेर जसबूत अेतराजी मै आये हे अर महाराजा जी कूं उमेद थी जु नवाब से मुसफक हमारे हजूर मै हे मतालिब[2] सरंजाम होईगे सु बेतकसीर पाई अेतराजी मै आये है, उमेदवार है जु नवाब या ईरोप अरज करै ? जद नवाब ने कहा जु हम तो मतालिब सरजाम कुं ही इंतखाब अरजदासत का ले गये थे अर जु कुछ हम सूं जोरा हुवा सु कीया । अमां बादशाहजी बोहोत तेस में थे अब रात कुं खीलवत मै आवो इलतमास[3] लिख दो फेर अरज करूं । जद खानाजाद ईस ही मजमुन ईलतमास लिख दी । जद नवाब कूं

---

1. तोजीह=महाराजा के पद एवं मंसब से संबंधित रजिस्टर ।
2. मतालिब=मांग ।
3. इलतमास=प्रार्थना अथवा प्रार्थनापत्र ।

खीलवत मैं बुलाया तब अजखुद तेस कर फरमाया पांच सदी जात पांच से सवार कम कीये है। अर पांच से सवार मसरत मरातव[1] सू जीयादे होई सु भी कम करो । पांच सदी जात पांचसे सवार वरावुरद[2] सो दु आसपीलो जद नवाव नै ईलतमास खांनांजाद की अरज करी—जु वकील अरज करता है जु राजा वेतकसीर[3] है, अर वांके दाखल हे जु मैं दरगाह कूं मारूज कीया हे तुम भी वाके दाखल करो, सु अरजदासत मुसाफत राह कर नहीं पौहची है। राजा नै अगलव हे सुलाह मुलकी सूं कावू मैं लाया होईगा अर अरजदासत की होईगी हुकम होई कतल करूं उमेदवार हूं जु वेतकसीर पाई एतराजी मैं न आवे, फरमाया खुव, पैंसठ लाख दाम ईनआम[4] वहाल करो अर ईन पांचसे सवार की अेवज पेंतीस लाख दाम ईनाम मैं ओर दो, जुमले अेक किरोर दाम ईनांम दीया।

सु महाराज सलामत। सवार[5] का दीवांन मैं तो या कमी हुई थी अर रात की खीलवत मैं अेक करोर दाम लीये। नवाव वोहोत कुछ वादसाहजी नैं कहो अर महाराज सूं वहोत सरमिदा छै। फरमयानैं लागे—हम जानते थे जु अेक दोई मतलव सरंजांम देंगे वादसाहजी भी सरे ईनायत होई इतखाव अरजदासत का अरज करने कुं हमे सौंपा है यह न जानते थे जुगेव सूं यह नगमा आइ पड़ेगा अर फरमाया, वहां वाके नवीसौ सुं कुछ सलूकया नहीं राखते है। सु महाराजा सलामति। अठे या सूरत रूईदी हे। अर सेवग चाटसू का व टोडा का दांमां के वासतें लगाई है जु यांको कोई तलवदार नहीं कमालुदी खां के तलव नहीं जुंदीजे आखर पायवाकी[6] में राखीये तो राजा ही कूं दीजे सूं जो वन आवे है सूं पीछे सू अरजदासत करूला। महाराज सलामत। दरवार का मामला वहोत नाजुक ईस तैस मे नवाव हरमदखां जी नैं अरज कर करोर दाम लीये सु मुदारात कर नीजर रहे अर ईनकी मुदारात दोई चार सीवाई मालूम अर हमेस काम हे, पीछैं मुं जु हकीकत होईगी सु लिखीयेगा जी।

महाराज सलांमत। तिस पीछैं सलावत खां कूं वादशाहजी नैं ईरसाद फरमाया जु तुम राजाजी कुं लिखो गुरजवरदार साथ हसवुल हुकंम सलावत खां

---

1. मरातव (मरातिव)=पदप्रतिष्ठा।
2. वरावुरदी=सामान्य सवार पद (एक अस्पा)।
3. वेतकसीर=बेगुनाह।
4. इनाम
5. सवार (सवारे)=प्रात:काल।
6. पायवाकी=मुगल साम्राज्य का वह क्षेत्र जो जागीर के अन्तर्गत आता था किन्तु किसी मनसबदार को न दिये जाने की स्थिति में कुछ समय के लिए राज्य के नियंत्रण में रख लिया जाता था।

जी नै अपनै अपनै दसखती लिख चलाया हे, सूं गुरजबरदार जलद पौहचेगा। नवाब सायसतखां कूं भी हसबुल हुकम है, नवाब आकिलखां जी कूं हसबुल हुकम कामबकश की जागीर कुं खालसे करने का हे सूं महाराजा जी कूं हसबुल हुकंम पहुचेगा तिस पीछे नवाव सलाबत खांजी ने सेवग कूं खीलवत मैं बुलाई कर कहा जु देखीयो यह कहां ही जाहर न होई अर तुम राजाजी कूं लिखो। अर खांनांजाद सूं पूछा जु बादसाहजी राजाजी कूं हजूर बुलानै की खाहस[1] राखै है राजाजी यहां के आवने पर रंजामंद है। जद खानाजाद ने कहा जु बादसाहजी जहा मेहरवांनगी फरमाई खीदमत फुरमांवै तिस ही मै अपनी बिहबूद सआदत जानै हे, जद नवाब नै फरमाया जु बादसाहजी मेरे तांई फरमाया है हम रीयायत भी राजा सूं करैगे अर मथुरा की खीदमत व हीडोन बयाने की खीदमत राजा पर ही रखेगे। जु राजा आधी जमीयत कूं अपनै नायब साथ वहां रखे अर आधी जमीयत सूं हजूर आन पहुंचै, अर नबाब नै फरमाया जो तुम कंवर चिमनै के वास्तै मुकरर अरज पौहचाई है अर सई मै है जो हजूर आवनै का जवाब मुझै लिखै अर कवंर चिमनै कै वासतै मुझै लिखै तो मैं मनसब सूं सरफराज करवाई मथुरा की खीदमत नयाबत कंवर पर रखांवु। अर ओर मतलब जु लिखै सु संरजांम देवूं सु तुम भी ईस हकीकत कूं सीताब लिख चलाई जू सिताब पौहचे।

महाराज सलामत। यहां की यह हकीकत है जु ईस मौहम का मामला बोहोत अबतर हुवो हे पातसाहजादा कांमबकस बागी होई चींजी के किले कूं जाया चाहे था सु नवाब असदखांजी दसतगीर कीया चीजी का मामला बरहंम हुवा। आज आजमसाह सगर की गढ़ी कुं लगा था सु खोजा याकूत कूं भेजा जु सीताव चींजी पौहचावै। असदखां जी व कामबकस कूं हजुर बुलाया सु हजुर ले आवे। बादसाह जी कूं दखंन की मौहम मै हर चार तरफ सु फोजो की अेसी दरकार आन लगी हे अब हजूर मैं आठ सात हजार सुवार मोजुद नही, सगर की मौहंम मै आजंमसाह की जाईगा अेसा कोई नहीं जिसे भेजै। खानजहा बाहादर कु हजुर तलब कीया अर हीदुसतांन की फौज मै महाराजा जी सारसा साहब तमब साहिव अलूस बुलायो चाहै छै।

महाराज सलांमत। खांनांजाद कूं भी यहा फीतरद देख अरजदासत करनी जरूर है तीसू अरजदासत करी है जू इस अरजदासत मे जु हरफ खातर में पसंद आवे सूं हसबुल हुकंम का जवाब मै लिखेला जी, जु खांनांजाद कुं तो ईब्रतदाई काबुल के आंवनै के सू यही आरजूई थी जु बह कौन साअत[2] होईगी जो मुझे हजुर आंवनै का ईरसाद होईगा। अर खांनांजाद कदम मुबारक देख अ सादत-

1. खाहस=ख्वाहिश—इच्छा।
2. साअत=घड़ी।

बहरैन[1] हासिल करेगा अर ईन दिनो मै तो खांनांजाद कु यही आरजूई थी जु मै अज खुद अरजदासत करूं हजरत जिलसुवहानी[2] जाहर करामात है जु पेस अज अरजदासत खानाजाद के करनै सु खानाजाद की ऐन मुराद थी सु ईरसाद हुवा। अर खांनांजाद नै जु तरुदुद कीया अर तह खरच आई चालीस लाख रुपइये का करजदार सीवाई अमवाल आवा व अजदा[3] के खाई हुवो अन गरजगो लोगो के लिए सुं जुहर चाहर तरफ सुं लिखा है। अर लिखी हे सु न तो खांनांजाद का तरुदुद[4] जाहर हुवा न खांनांजाद की परेसानी ही जाहर हुई अव खानाजाद कु हजूर तलव का हुकम हुवो है तो उमेदवार हुं ति सवक तकदम देखूंगा अर जो खीदमत फरमाई येगी अर तरुदुद करुंगा। तो नतीजा भी नेक पावूंगा जिस भांत पकां खांनांजाद का तरुदुद पाई माल गया हे जो ईस भांत हजूर मै आई तरुदुद करुंगा तो उमेदवार हुं तरुदुद पाई माल जानै का नही, अर नतीजा नेक ही पावूंगा अर खांनांजाद कु ईरसाद हुवा जु वह भी खीदमत तुम पर ही वहाल रखै हे। आधी जमीयत ले हजुर आवे अर आधी जमीयत सुं ईस खीदमत पर अपना नायव छोडे हजरत कुं मालुम होई जु यहां की फोजदारी व राहदारी व थांनैवंदी व तवी हम कहुरी कुं किस कदर जमीयत चाहीये। अर आधी जमीयत कुं हुकम हुवा हे हजुर लेआवसी खांनांजाद कूं हजरत नै काम कुं हजुर तलव कीया हे तो काम ऊपर नजर कर चार हजार सवार सु तो कंम न लांवूं अर खांनांजाद अव मथुरा की फौजदारी पर है तो यहां के थानैवंदी व राहदारी व तंवी हम कहुरी की पर वारह हजार सवार मोजूद है। इस जमीयत पर नजर फुरमाई खांनांजाद की परदाखत होई व तनखाह परगने चाटसू वगेर मुतसल महाल वतन के होई; अर कंवर कु मनसव मवाफक दसतूर व अठाईस मवईजा का मसरुत फोजदारी सु सरफराज होई व कवर छोटे कुं पीघोर की जीमीदारी व मनसव मवाफक दसतूर कीरतसंघ के सरफराज होई तो मुफसिद जाटो कुं नेसतनावूद कीये है। अर कर रजपुतो कुं आवादांन करे।

सु महाराज सलामत। ऐक तो यह सलाह हे जी और दूसरी यह हे जु महाराज उस फौजदारी में वहोत तह खरच आया हे और अमीरुलउमराव सू सोहवत ना दुरसत है तो ई भांत लिख जे जु हजरत के अकवाल सू गनीमो[5] की

1. सादत बहरैन (सआदत-ए-बहरैन)=शुभकार्य।
2. जिल्ल-ए-सुबहानी=ईश्वर का प्रतिबिम्ब—बादशाह के लिए प्रयुक्त।
3. सीवाए अमवाल-ए-आबा व अजदाद=बाप-दादाओं की मिल्कियत के अतिरिक्त।
4. तरद्दुद (तरद्दुद)=प्रयत्न अथवा श्रम।
5. गनीम=अरबी के ग़निम शब्द से विकसित जिसका अर्थ लूटेरा या डाकेती होता है। यह शब्द मुगल अमीर वर्ग व एवं जनसाधारण (उत्तर भारत) में मराठों के लिए प्रयुक्त होता था। इंग्लिश कम्पनी के दस्तावेजों में भी इस शब्द को प्रयुक्त किया गया है।

तंबीह बवाकई करी अर चंदा ऐसा कुछ ईस जिले मैं काम नहीं रहा तिस बंदे कु यह खीदमत फरमावेगे सू सरबराई करेगा। उमेदवार हूं जू तमाम जमीयत सूं ही हजुर में खीदमत करु अर उमेदवार हुं जिस कदर जमीयत लावूं अर उस ही कदर खांनांजाद कुं रीयायत होई अर सरती मनसब बहाल होई बीलासरत होई तनखाह चाट्सू वगैरह मैलातुं तो तो जमीयत मुतफरक न होई व कवंर मंनसब सु सरफराज होई जुं आबेर वगैरह जिले सु खबरदार होई।

महाराज सलामत—यामै जु खातर मुबारिक में पसंद आवे सु अरजदासत करैला। फारसी अरजदासत सीताबी के सबब नही करी हे जु नवाब सलामत खां जी नै फरमाया जु जलद जोड़ी चले जु जलद समाचारों की अरजदासत करी हे अर घणी कांई अरज लिखां जोड़ी बोहोत मोडी आवे है सीताब भेज जे जुं मतलबो सु खबरदार होजे। मीती माह बदि १३, संवत् १७४८ ; मुकाम गलमला।

क्रम संख्या २

वकील रिपोर्ट संख्या ३

वैसाख सुदी ८, संवत् १७५०

॥ : ॥ स्वस्ति श्री महाराजाधिराजि श्री........चरणकमलानु लसकर सूं सदा सेवग आग्याकारी खांनांजाद बंदे पं० मेघराज लिखाईतं तसलीम बंदगी अवधारिजो जी। अठा का समाचार श्री महाराजाजी रा तेज प्रताप करी भला छै। श्री महाराजा जी रा सीख समाचार घड़ी घड़ी पल पल रा सदा आरोग्य चाहीजै जी।

महाराज सलामती। महाराज म्हांके धंणी छै श्री परमेसर जी की जाईगा छै। श्री महाराजा जी नै श्री परमेसर जी खांनांजाद गुलामां का सीर पर हजार साल सलांमत राखे जी।

महाराज सलामत। और समाचार दरबार का मुफसल[1] फारसी वं हीदवी अरजदासत मै आरजू करी हे। खांनांजाद बंदो नलवाखां मै था जु अंजरुई वकाये[2] खबर पीहुची जु ठाकुर हरीसंघ बरोदा किला फते कीया, वादसाह् जी पास अरजी गई हजरत नै श्री महाराजा जी की व हरीसंघ[3] के बंदवसत की खूब तारीफ करी; फरमाया पेसकार हम चु मे वायद सद रहुमत[4] अर फरमाया यह राजाजी ही कै पेसकार नै व फोज नै काम कीया हे व ईलाहीनदार की रामखानी कुं भी खीदमत थी उनंही नै कु न लीया, सिपहदार खां सुं भी कुछ न हुवा अर पेसकार राजा के नै फते कीया। यार अली सुं फरमांवनै लगे तैं कहता था किला फते न कीया सुं हम फरमावते थे किला फते कीया सुं फते कीया अर हमें मालुम है जु वो सवार कलासरगरोह मुकसदा वूद हम चुनीये सकार व फौजे मुसरा कल

---

1. मुफसल (मुफस्सल)=विस्तृत विवरण।
2. अजरुई वकाये (अज़रु-ए-वकाये)=वकाये के अनुसार।
3. हरीसिंह खंगारोत।
4. पेसकार हम चु मी वायद सद रहमत= ऐसा पेशकार (हरीसिंह) सैकड़ों रहमतो वाला होना है।

मे वापद क फते व कुनद।[1] महाराज सलामत—अेसा तरुदुद वादसाहजी की खातर मैं महाराजा जी का नकस हुवा सु महाराजा जी नै मुवारिक होह।

महाराजि सलामत—हजारां हजार सुकर हे जु बादसाह जी की खातर मैं महाराज को मुजरो ववाक ईनकस खातर हुवो वादसाह जी नै यह जानां जु जाटो कुं भी अगर वसाया होईगा तो भी वरामदकार सरकार के कुं कीया होईगा।

महाराज सलामत—या खीदमत भी जु महाराजा जी नै सरफराज हुई छै सु महामिद खां की साथ तरदुद मरजी मुकदस मवाफक हुवो अर वादसाह जी की खातर मैं नकस हुवो ई तरकीव कर हुई हे। अर जद वहरमद खां नै अरज करी जु किवले आलम रा जे वीस हजार सवार मौजूद दारद[2] वादसाह जी नै फरमाया है, पेसकार साहिव तदवीर असत क जमैदासते।[3]

महाराज सलामत—महाराजा जी अब भी तरुदुद सु व दीलवरी रजपूतां की सु व नवाव सायसत खां का ईखलास पर मुतवजह होईला तो तमाम मेवात्त का जिला ओर फोजदारी महाराज ही नै होईगी जी ओर घणी काई अरज लिखा खानाजाद नै तो वंदगी दुवाई दोलत सु काम छै ओर घणी काई अरज लिखु। मीती वैसाख सुद ८, संवत, १७५०।

---

1. बे सवार किला सरगिरोह-ए-मुफसिदां बूद हम चुनां-ए-सरकार व फौज-ए- मुकाबिल मी बायद कि फतह व कुनद=सवारों के बिना किला फिसादियों का गढ़ था। इतनी अच्छी सरकार और सुदृढ़ फौज के सामने उसको फतह होना ही था।
2. बीस हज़ार सवार अपने साथ रखता है।
3. पेशकार साहिब-ए-तदबीर अस्त कि जमियत दारद=पेशकार साधन-सम्पन्न व्यक्ति है, क्योंकि वह जमियत रखता है।

क्रम संख्या २

वकील रिपोर्ट संख्या ४

अषाढ़ वदी ८, संवत् १७५०

॥ : ॥ श्री गोपाल जी सहाई छै जी
महाराजाधिराज महाराजा श्री बीसनसंघ जी

॥ : ॥ स्वस्ति श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री श्री श्री श्री श्री चरण कमलानु लसकर सुं सदा सेवग आग्याकारी खानाजाद पं० मेघराज लिखाईतं तसलीम वंदगी अवधारिजो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी रा तेज प्रताप करी भला छै श्री महाराजा जी रा सीख समाचार घड़ी घड़ी पल पल रा सदा आरोग्य चाहीजै जी। अपरंच महाराजि म्हां के धणी छै श्री परमेसर जी की जाईगा छै सेवग खानाजाद वंदा ई दरवार का छै। श्री महाराज नै श्री परमेस्वर जी खानाजादां का सिर ऊपर हजार साल सलामत राखे जी।

अपरंच महाराज सलामत—परवानां सरफराजी का १९ रमजान का लिखा १५ सवाल नै खांनांजाद कनै आया सरफराजी व सरवुलंदी हासिल हुई। श्री महाराजा जी नै खुसखबर सरफराज होनी खीदमत हीडोन वयाना वगेरे महाल की व वहाल होनो पांच सदी पांच से सवार दु असपा की खबर खांनांजाद की अरजदासत सूं पोहची तिस पर अजरूईत कजुल व करम दरवाव खांनांजाद निगारश फरमाया था जु दरवाव सरंजाम मतालिव तेरा मुजरा हुवा ईस सुं अजरुई महरवानगी खिल्लत खासा ईनायत फरमाया है व वादजर सीदंन सनद व परवांनै के अंार जो रीयायत मरकुज खातर हे सुं फरमावैगे।

महाराज सलामत—सरफवरूद फरमावने परवाने के सुकर मराहम वजाइलाई तसलीमात अदाव अवुदीयत वजाई ईलाया। महाराज सलामत। खांनांजाद नकसीर अकल कुं क्या जुरअत हे जु इसकी सई सुं काम होई यह श्री महाराजाजी का तेज प्रताप है अर खानाजादो कुं दुवाई दौलत वजाई नाव नांव हृतसम कदूर दौडना।

सु महाराजा सलामत—फौजदारी महालौ कि सनद तो अजुरूई ईहतीयातन फरद तफसील तफरीक महालौ[1] की फरमान मै व हसबुल हुकम बहरमद खां के लिखे मै डाल भेजी है सु हजुर पौहची होईगी व जागीर का परवानां पेश अजवरूद होनै परवानै हजुर के जद डोल[2] जागीर महाराजा जी का हजूर गया अर रदबदल दरमीयांन आई बादसाहजी नै फरमाया हीडौन, बयाना, दोडा, उदेही, सब दो; अर महाराजाजी का महाल वतंन अेक आबेर है ईस सिवाई जिस महाल का जो तलवदार होई जिसै दो फेर खानाजाद नै नवाब सु कह डोल लिखवाया ईसकी हकीकत मुकसल आगे अरजदासत करी हे ति सूं मालूम फरमावै ला जी, सु डोल की भी नकल आगै हजूर के जगंजूर के भेजी है तिस मवाफिक जु हजरत जिल सुबहानी के खास दसखत होई आये थे तिस मवाफक परवांनां जागीर का मुरतब कर हजूर भेजा हे सु महाराज हजूर पौहचेगा । अर अब हुकम आया है जु भुसावर जागीर मैलीजो सु ईसके खांनांजाद तलास मे है हाल तक तो भुसावर के वासते अमीर खां के तजबीजीयौ की जागीर कुं हुकम हुवा है सु परवानगी नहीं लाये है याददासतै भी तईयार नहीं कराई है अर खांनांजाद तलास मे हे पीछे सु जु हकीकत होई सु आरुज करुंगा जी ।

अपरंच महाराज सलामत । दरबार का समाचार मालुंम फरमावैला जी जु नवाब आकिलखां जी ने हसबुल हुकम महाराजाजी का खीदमत तफतीज हौन का मुकदमा मै गयो थो अर ऐक हरफ बोहोत नाजुक लिखो थों अर वहरमंदखां नै ताकीद व तकीयदमाम सुं फरमायो थो जुं कठे हि जाहर न होई, नवाव मुनसी नै ताकीद लिखीण मै करी थी जु कठे ही जाहर न होई सु महाराज की तरफ सुं मुनसी पावे भी छै अर उमेदवार महीना को कीयो छै ई वासते जु मुकदमौ नाजुक होई हे सु भी कहे हे अर यो मुकदमौ नवाव महाराजा जी नै भी न लिखो होई जो हजरत नवाबनै लिखो थो जु कधी अमीरुल उभरा मरजाई तो राजाजी कुं तुम अभी लिखियो मथुरा की भी फोजदारी तुम्हें अर आगरे की भी फोजदारी तुम्हें तुम खबरदार रहीयो; इसका जवाव नवाव नै लिखा है जु अभी राजाजी कुं यह लिखना मनासिब नहीं हे अगर खांनांजाद की हयात वाकी है तो लिखुंगा, वादसाहजीं नै वजनस खत पढ़ा । पढ़तवसु कर खत वहरमंद खां कु दीया ।

सु महाराज सलामत । कहांई जाहर न हौ पावे या वात । अमीरुल अमरा का खत दर जवाव तकवीज खिदमत के हसवुल हुकम का आया तिसमै लिखा था वमूजव हुकम के मै जमीयत अपने फोजदारी मै भेजी व राजाजी कु खत सरगरम हौने खीदमत अपने लिखा हे सु वमूजव हुकम के सरगंरम खीदमत होईगा ।

1. तफसील तफरीक महाल=परगनों के अनुसार राजस्व का विवरण ।
2. डोल=मसवदार के पद, वेतन, जागीर का विवरण आदि का उल्लेख इस दस्तावेज में होता था ।

महाराज सलामत । महाराजि नै खांनांजाद कुं लिखा था जु नवाव अमीरुल उमरा नैं हृमे खत भेजा से मालुम होता है जु यारे मुतवजह हे अर वजनस खत की नकल खांनांजाद पास भेजी थी। सु महाराज सलामत । नवाव खूब भांत ईतहाद मोरुसी मु लिखा हे अर महाराज जी कुं कुंन लिखे अर अजराह मानवी वोहोत चाहे हे अर महाराजाजी कुं देखा चाहि हे सुं खांनांजाद नै मरजी मुकदस[1] देख जु फरमाया मारा जरूर सुद कवाराजे व अमीरुल उमराई खत लातपेदा कुनम ईस पर ईलत मास गुजरान हुकंम लीया ईस पर नवाव कुं भी वोहोत वोझ पड़ा है वकील ने भी नवाव कुं लिखा है अर अेक हसवुल हुकम ईसतगासे के मुकदमै मै गया है जु राजाजी के मुकदमै मै वतेहकीक वेसवूत आयंदे ईस भात न लिखा की जो ईस मुकदमै की तफसील मुकसल आगै अरजदासत करी हे सो उस सु भी वोहोत दरखासत व मुलाहिजा मरजी मुकदस का हुआ है । अब महाराजाजी भी नवाव सुं मिल सिलसिले ईतहाद मोरुसी कुं मुतहरक करै तो विहतर व मनसव हे वडा अमीर है वादसाहजी कु वड़ीयारा खातर है जो महाराजा जी नवाव कु मिल वई नापत ईलाही तरुदुद करै अर हकीकत खीसारत की व महाराज कंवार के मनसव कुं लिखावैं तो सीताव सरंजाम मतलव होहाते सु महाराजाजी सवसु विहतर सलाह मिलन की व ईरत वात करनै की व हुजुर कुं लिखावनै की करैला ; फेर जु सलाह दोलत होई सु अजहमै विहतर मनसव ।

नवाव वहादुर खां जी[2] कुं दोई खत आये, अेक तो आग्र आया सु ईस ही मतलव का जु वकील जाहर करे तिसमे तवजह करैगे अेक और खत हाल आया हे सु नवाव कु पहले तो हुकम गया था जु जदतक साहजादे का महल आवे जद तक ओरंगावाद मै रहै वादज आवनै के हजूर आवे, फेर हुकम हुवा जद सताम कहर पर नालेगढ़ पर जुतु पर आया जद नालेगढ़ जांसु हुकम तो वही हे अर संताम कु हुर टाला देसी । तारेगढ़ छावनी कुं गया लोग चिजीं से टुटे आये थे संता[3] तो कहता था चलो मारखड़े रहे फेर ओर सरदार थे उनै ने कहा अवा चंजी सुं भरे आये है अर घोड़े टटु रहे हे चार महीनै आराम पकड़े फेर जहां कहोगे जहां दोड़ेगे । संता नै[3] कहा न माना कमै अैसा नमछरा कहां पावुंगा मारखड़ा रहता हु फेर अकवाल वादसाही सुं पांच छै हजार सवार संता पास सु अठ गया ईस ही भांति अठै जाने लगे जद आप भी सितारे गढ़ की तरफ छावनी कुं गया ।

सु महाराज सलामत । देखीये खानजहां वहादुर हजुर आवे या परनाले पर

---

1. मरजी मुकदस (मर्ज़ी मुक़द्दस)=पवित्र इच्छा—वादशाह की ।
2. वहादुर खाँ कोकालतश—औरंगजेब के शासन के उतरार्द्ध में वादशाह का विश्वसनीय मंसबदार जो राजपूतों से सम्बन्धित नीति में परामर्शदाता के रूप में कार्य करता था।
3. सन्ताजी घोरपाडे ।

जाई ? रमजान की अरजदासत आई थी वकील कुं परवाना आया था जु अकलुज तक तो आवै है अर अरजादासत करैगे फेर जु हुकम होईगा सु बजाई लावैंगे । सु महाराज सलामत । हजूर आवते है खानाजाद मुकई पद है अर नवाब जुमद तुलमुलक कु खत आया था सुं ईनकी तो बाजी ही बरहम होई गई इन्हें अरज की कहाँ ताव ताकत रही है ईन पर जु इताब खिआग्राब या सुं आगे मुकसल लिख अरजदासत करी है अब ईय मुतलबखां[1] कु भेजा ईन्हें सगर सगर ले जाई सु सगर कु गये अर कामबकस ता: १९ सवाल चौकी आन दाखल हुवे ता: २० सवाल पंजसवह कु मुलाजमत है बहरमद खां[2] पेसवाजाई महमद अजीम[3] पेसवा जाईव ता: १९ सवाल साहजादे जी की मां चोकी पर मिलने कुं गई। ऐक खबर है ईनकी मुलाजमत न होई ईनकी कारसाजी भी साहजादे साहआलम नै की हे सु साह की मुलाजमत कर दोलतखां ने दाखल होई अर साह कहे सु कबूल करे फेर दरामद लैन के लसकर हुवे जु हकीकत होई है सु अरजदासत करुंगा जी ।

महाराज सलामत । बादशाहजी कु मुलतबखां कहते थे जु अरज हुई राजाओं की फौज हीडौन, बयानै एई व कमालुदी खां के लोग उठै और चकले[4] मथुरा के वकाये सूं अरज हुई जु सायसतखां जी नै साहराह कुं थाने भेखे थे सु ऊनसु थानै न सधे[5] वे थानै ऊठे गये अब और थाने आवैगे, बादशाह सुन चुप होई रहे और जो खुफिये वकाये की रुअरज हुई है उसकी खजाने सहजुर भेजी है सु कार-परदा जान हजुर अरज करैगे जी । नोसेरी खां बहादुर खां जी का बेटा पहलै नवाब के आवनै के हजुर आया सु बोहोत बुरे अहवास सुं आया मुखतीयार खां नै अरज करी जुं खांनजहांबहादुर का बेटा नोसेरी खां आया हे अरज करी हे मेरे पास कपड़ा नहीं है उमेदवार हुं जु दोई जोड़े सरकार सुं पांवु मुलाजमत करुं । बादसाहजी नै फरमाया मारा चिअकता दे असतक माबिद हम पदर ओ खुदाहदाद ।

महाराज सलामत । आज तक दरबार की ताजी ऐ खबर है पीछे सु जु रुईदाद होई है सु आरजु करुंगा जी ओर जीयादे अर हदजर अत कुद नदीद आफताव दोलत तांवां बदुर खसावाद । ता: २० हशर शवाला सं० ३७, मीती आसाढ़ वदि ८ सं० १७५० ।

---

1. मुतलब खाँ ।
2. बहरमद खाँ ।
3. मुहम्मद अमीन खाँ ।
4. चकला=परगार के समकक्ष इकाई ।
5. नियन्त्रण न हुआ ।

क्रम संख्या ४

वकील रिपोर्ट संख्या ५

माघ वदी ४, संवत् १७५०

श्री रामजी

सिध: श्री महाराजाधिराज महाराजा साहिब जी सलांमत। खत १ नवाब कों मथुरा आय का आया था व खत १ वदी २ बुधवार घड़ी ६ रात गया सुं मेवे की रसीद का मि० माह वदी ३ ब्रहस्पतवार घड़ी ६ दिन चढ़ें खिलवत मैं दोनों खत गुजरांने सु आप पढ़े कर बंदे सौं पूछा कि चाटसू किसकी जागीर है। तब मैं अरज करी कि मुतफरकात[1] लोगों की जागीर है। फेर पूछा कुछ खालसा भी है तब अरज करी खालसा नही। फ़ेर फ़रमाया कि राजा ने चाटसू के वासत लिखा है तब मैं अरज करी कि लोगों का कबीला अकसर चाटसू व चाटसू के गांवों मैं है सु जो चाटसू राजाजी की जागीर मैं होई तौ उलूस[3] के लोगों की खातर जमा होइ। तब सेखहिदायत यार सौ पूछा कि चाटसू की हकीकत आगैं लिखी थी या नही सु सेख की जु आगैं समझाय छोड़ी थी कि यौं अरज मत कीजौ जौ आगैं लिखी थी सु सेख नैं यौं ही अरज करी कि मुझे याद नही। तब नवाब नैं फरमाया कि जौ आगैं लिखी होई तौ तकरार काहे की लिखी यैं तब सेख नैं कही कि जो चाटसू के राजाजी की होई तो उनके लोगों की खातर जमा होई। इसी बीच मैं मुकल्ला खां[3] बोलै कि आंबेर के राजा के चाटसू व धौसा व बसूवर मअजमां-बाद होई तब राजा की खातर जमां होई सु ई बलफैल[1] चाटसू तौ उन्हैं तरीक धर ही है; तब फरमाया कि खूब, हम हजूर को लिखैंगे, तब मुझैं पूछा कि

1. मुतफरकात=विविध।
2. उलूस=बिरादरी के लोग।
3. मुकुल्ला ख़ां।
4. बिलफेर=असल।

आंबैर सौ चाटसू केते कोस है ? तब मैं कहा कोस १२ है, सीत्र काकाड़ एक ही है । फेर फरमाया कि हम हजूर को लिखैंगे । तब मैं तसलीम करी, मुजे फरमाया कि हम राजा को मेवा क्या भेझै ? तब मैं अरज करी कि जु ईनायत होइगा सु राजाजी को तवुर्क[1] है । तब नासपाती बलखी १०० व अनार १०० व सेव १०० के पिटारे ४ सर व मुहुरबंदे के हवाले किए वखत लिखाय हवाले कीया । तब मैं अरज करी कि राजाजी ने मेवेदारों कौ सरोपाव १ व रुपये ५० भेझे है, तब नवाब नै फरमाया कि यह रसमीयात क्या है ? आगै तुम्हारै कहै लिया था अब न लैंहगे । तब मै फेर कही कि इहां क्या परवाह है निहायत स्य राजाजी की खातर दीस्त है । इसी बीच मैं सुकरुल्लाह खां व सेख नै कही कि राजा नवाब सो निसखत फरजंदी की राखै है बेदिल होईगा, तब फरमाया कि हवाले करौ जु बांट दे सु खानसामा के हवाले करे उनकु उसी वक्त दारोगा मुसरफ तहवीलदार कौ बाट दीए । फिर आप उठे सुकरूल्ला खां बाहर निकसै तब मै सुकरूल्ला खां जी सौ महाराजा जी की द्वा कही, तई खां नै दोनौ हाथों सौं सलाम करी । फेर मैं कंही कि तुम जांनते हौ जु आगै ही उन पर केती उसरत है, तिस पर यह खिदमत फरमाय है वे ता ही मसालह इहां को दरकार है तिस्ते तुम नवाब सौ कहि इनकी परदाख्त[2] के वास्ते हजूर कौ लिखवावौ । तब खां नै कहा करार पकड़ा है हजूर कौ नवाब मुवाफिक तुम्हार कहे के खूब तरह लिखैंगे लिखना क्या कि हुकमी बादसाहजी इनके लिखने पर राजाजी सौं खूब रयायत करैगे । तब में बहुत मनोहार करी । सकरूल्लाह खां जी बहुत भला मांना व कहा मेरी सलामी लिखौ व लिखौ कि हम भी सिताब तुमसो मिलैंगे । हमारा बहुत सौक है जु राजाजी कौं देखैं सु सुकरुलाह खां जी खजाने के साथ आवैगे सु अलबतह महाराजाजी इन सौ मुदारात[3] करैंहीगे और नवाब ने अगली हकीकत हजूर कौ बहुत खूब तरह लिखी है और आज के खत में जु मतलब लिखा है सु भी सुबह परसौं तक हजूर कौ मवाफिक मतलब लिखवैंगे । नवाब बहुत मतवैज है और सेख की तारीफ कहांताई लिखियै ज्यौ समझाय कहीये है त्यौही नवाब की निसा करै है और सकरुल्लाह खां जी भी तरूदिली सौ महाराजजी के मतलबौ कौ अपना ही मतलब जानते है जब मजकूर होय है तब बहुत खूब तरह अदा करते है और बंदा जु अपनी अरज करन का बयान लिखैं तौ दाखल खुद नुमाई होता है । सु बंदौ कौ तो यह यह काम ही है कि जिसमें दौलतखांही सरकार की देखें सु काम करै

1. तबर्रुख=प्रशाद ।
2. परदाख्त=प्रगति ।
3. मुदारात=ख़ातिरदारी ।

ही और बंदे को जु परवाने २ इनाइत हुवे थे सु पहुंचे। वंदा सरीफराज होय मुवाफिक इरसाद आली के अमल किया। उमेदवार है जु परवाने सआदत निसांनै सौ सरबुलंद हुवा करै व उहां की हकीकत कलमी फरमाया कीजै तो नवाव पूछै तव निसा कीजै और खत १सकरुल्लाह जी को हसवल का लिख भेजना जु फलाने ने तुम्हारी तवजहो का सुकर लिखा था। मिति माह वदी ४ संवत्, १७५० ।

क्रम संख्या ५

वकील रिपोर्ट संख्या ६

जेठ वदी ५, संवत १७५३

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा साहिब जी सलांमत। वंदो की कुरनिश वदगी कदमबोसी मालूमबाद। श्री महाराजा साहिब जी को तेज प्रताप दिन दिन अधिक होयुजी। अप्रांच परवांना अिनायत हुवा था सु पहुंचा। नवाब जी को खत थाम गुजराना व जबाब का खत हासल कर भेजा है व हकीकत मुनासब देखी सु जुबानी अरज करी व यह हकीकत भी मालूम करी जु महाराज नै सुवारी करी. पूछा कहां को? तब अरज करी कि सोरो वगैरह परगनों की तरफ मुफसदो[1] ने कजरवी करी तिस्ते तंबीह करने को सुवार हुवे। तव फरमाया खूब कीया व नवाब पूछते थे कि कुवर कहां तक पहुंचे है तब वंदे नै अरज करी जु इन दिनों मै बंदे को खबर नही आई आगै धोलपुर पहुंचे की खबर आई थी अब तौ दूरगय हौहिगे। सु वंद.परवर सलामत। महाराजाजी नै ताकीद फरमाई ही होइगी जु कूच दर कूच चले जाहि वरासात पहले पहुंचै सिताव तौ मुजरा वादशाह जी सौ होई व तरवक्की होई व सेख हिदायतूयार कौ सरोपाव की रु० १७५ विला कसूर का दीया है व कांम खिदमत होई सू फरमाया करोगे। इस वात मै बंदे सर बुलन्द होते हौ। मिती जेठ वदी ५, संवत् १७५३।

1. मुफसदो (मुफसिदो)=फ़िसादियों।

क्रम संख्या ६

वकील रिपोर्ट संख्या ७

भादौ सुदी ६, संवत १७५३

श्री रामजी

॥ साहिब फैज बखश श्री महाराजा जी सलामत ॥

॥ मिती भादौं सुदी ६ आदितवार नवाब आकिल खां पूछते थे कि राजाजी का कूच कब होयगा । तब अरज करी कि हजूर का हुकम यौ है कि जब इतकाद खां की जमैयत थानों सौ खबरदार होय तब तुम अपनी जमीयत थानों सो बुलाय ले बादशाहजादे की हजूर को चलीयौ सु इतकाद खां का बेटा मथरा आया है सु राजाजी का असबाब कोट सों निकलता है सु अब कोट खाली कर उनके हवाले करेंगे और जब उनके लोग सब थानों सो खबरदार होय रसीद देंहगे तब राजाजी के लोग थानों सो उठ आवेंगे और राजाजी का डेरा बाहर खड़ा हुवा है व देससों स्वार बरदारी मगाई है व किराए की मंगाई है और चलने ही के फिकर मैं है व बहुत मुतरदिद है कि हजार स्वार तो कंवर जी[1] के साथ हजूर गई है, व जमैयत साहस्तै सों शाह की रिकाबजाया चाहियै जु खिदमत सरबराह कर सकीयै । तब नवाब नैं कहा कि बिलफअल तौ यही सलाह दौलत है कि कोट उनको खाली कर देह व आप आय बाहर डेर मैं रहै और जब उनके लोग आय थाने वगैरह जायगा हों सो खबरदार हा हि तब रसीद ले राजाजी उहां सो कूच करैं जु वाकैनिवीस लिखे कि राजाजी ने कूच किया और जो वाकेनिवीस या इतकाद खां हजूर को लिखेगा कि मेरा बेटा व जमैयत मथुरा गई है सु राजाजी कोट खाली देते नाहीं नु जो यो अरज पहुंचैगी तो म व कहे, तब मैं कही कि राजा जी को वे सब महालों व थानों की रसीद देह तभी राजाजी उठ चलै । तब नवाब नैं फेर कही कि यह तो यकीन है कि इतकाद सो यह खिदमत सरबराह होनी

1. बीना साहीब—जयसिंह

नाही, फिसाद होयहीगा लेकिन अब राजाजी के उहां होते फसाद होयगा तौ इतकादखां हजूर को लिखाय भेजैगा कि राजाजी नै मुफसदों को सनकार दीया तिस्तै फसाद हुवा सु दस तरह की अरज पहुंचनी भी खिलाफ मरजी होयगी और जौ राजाजी के चले पीछे राहो का मामिला और तरफ हुवा अरज पहुंचैगा तौ राजाजी का मुजरा होयगा तिस्तें अब तौ यही मसलहत है कि सीताव चलै। तब मैं अरज करी कि जिस भांत हुकम होता है त्योंही लिखौगा। तब फरमावने लागै कि यह बात राजाजी को खुश न आयैगी तिस्तै हमारी जुवानी मत लिखौ। तब मै फेर कही जि ज्यौ अपने दस्तगिरीफ्तों कौ[1] नसीहत किजै त्यौ नवाब साहिब मिहरवानी फरमावै है और उनकौ जु उम्मेदे है सु नवाब साहिब ही की मिहर-वानी कदरदानीयौ पर है। तब फेर कहन लागे कि हम जानै है कि उनका मन चलनै को नाही तिस्तै उनकी अनसुहाती[2] बात हमन कहै सु तुम हरगिज हमारी तरफ सों मत लिखौ।

सो श्री महाराज जी सलामत। जदि य नवाव नै मुझे मनै कीया कि हमारी तरफ सो मत लिखो तथापि बदां को लाजिम है जिस बात मै दौलतखांही देखै व दौलतखांही की वात सुने सो अरजदासत कीया चाहै जौ सरंजाम के या हजूर के सवाल जवाव के सबव तवफक कीजै तो इस फौजदारी की हद सो बाहर आय जहा खातर मुबारिक पर पसंद आवै वहीं मुकाम कीजै। परंतु अपनी फौजदारी की हद में रहना जु मालुम है आगे यह बात अरजदासत करतै मुलाहजा भी हुवा कि मवादा ना पसंद होय तो वंदे तखसीरवार हो हि सु ज्यौ खातर मुवारिक मै पसंद आवैगी सु अेन मसलहत होयगी सो ईयि जीराई पावैगी। ज्यादै अरज हद अदब नदीद। मिती भादौ सुदी ६, अैतवार रात, संवत् १७५३।

1. दस्तगिरीफ्तों कौ=पालकों को।
2. अनसुहाती=वुरी लगने वाली।

क्रम संख्या ७

वकील रिपोर्ट संख्या ८

फागुण वदी ७, संवत १७६१

॥ : ॥ श्री गोपालजी सहाय

॥ श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा जैसंघजी

॥ : ॥ स्वसि श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री........चरण कमलानु खानांजाद खाक पाय पं० जगजीवनदास लिखतं तसलीम वंदगी अवधार जो जी। अठा का समाचार श्री महाराजाजी रा तेजप्रताप थे भला छै श्री महाराजाजी रा सीख समाचार सासता प्रसाद करावजो जी। श्री महाराजाजी माईत छै धणी छै श्री परमेसुर जी री जायगा छै म्हे श्री महाराजाजी रा खानांजाद वंदा छा जी श्री पातसाह जी श्री महाराजाजी थे महरवांन छै। श्री महाराजाजी सुख पावजो जी पान गंगाजल आरोगण रा जतन फुरमाव जो जी।

। अप्रंच खांनांजाद वाजी रा परवानां आयां वोहत दीन हुवा सु वंदनवाजी रा परवांनां सासता ईनायत फरमावजो जी। महाराज सलामत। जो खांनांजादा रात दीन दरसन कीयो होय अर चरन सेवा की होय जे वंदा दरसनीक होय अर जो खांनांजाद ने वरसाही याद न कीजै सो वंदा की भांत जीवता रहै। तीसुं वंदनवाजी कर खांनांजाद परवरी रा परवानां पे दर पे ईनायत कीजो जी।

। महाराजा सलामत। नोवत लेण को अव तांई श्री महाराजाजी भली भांत तलास न फुरमायो सु अजव वात है अर श्री महाराजाजी तो ऐक दोय वार जतन भी भला भलाकर भेजा पण केसोराय[1] का दीन तो पुरा हुवा अेतो वडो तरदद कुंकर पेस ले जाय सके। वेको वेटो[2] तो लड़को है दरवार मे कोण पुछे अव भी श्री महाराजाजी मतलव सरंजाम रो तलास करण रो खांनांजाद नै

1. केसोराय=मुगल दरबार में आम्बेर के राजा का वकील।
2. पंचितराय (केसोराय का पुत्र) को कुछ समय के लिए महाराजा जयसिंह ने मुगल दरबार में अपना वकील नियुक्त किया था।

फुरमावे तो श्री महाराजाजी रा तेज प्रताप थे भला भला मुजरा कर बताउजी। अर गुलाम खांकवरदासता तो है ही पीण गुलामी की बंदगी बजायलाय जन्म सुफल करुं। श्री पातसाहजादा कामवगसजी[1] रोज मुजरो करु हुं। श्री महाराजा जी रो खानांजाद जाण नवाजस फुरमावे है अर वकसयल मुल्क[2] मीरजा सदरुदी म्हंमद खां जी सु व म्हरम खां जी भी ओरंगाबाद मे सुफीलखानो ले हजुर आया है। सु खानांजाद आठ पहर हाजर रहे हे तीसु श्री महाराजा जी को मचकुर चले हे सु मीरजा सदरुदी म्हमद खां जी वकसयल मुलक श्री महाराजा जी री हुजुर आपको खत भेजो है अर खांनांजाद की भांत भांत नीसां वाजे मतालव उमदा अरज भली भांत कर सरंजाम देणो कबुल कीयो है; जो अबार[3] श्री महाराजा जी पचास हजार असवारां को मुकाबलो कीया बीराजमांन हे ई स्मयामे तो जेमो तलास कीजे सो श्री महाराजाजी रा प्रताप थे सिध होय। सु हीसावी काम को सरंजाम होणो हीसावी ही हे। अद श्री जी की खातर मुबारक मे आवै तब ही तलास फुरमावेला जी। खांनाजाद ने दरबार मे तो श्री जी को गुलाम जाण हर कोई म्हरवानगी करै है।

। पातसाहजादा कामवकसजी श्री जी को खांनांजाद जाण तीन सदी को मनसव करे था सु खांनांजाद विचार कियो जु पातसाहजादा की चाकरी मे अटकाया छै सरकार का काम ने फुरसत पावनी मुसकल तीसू खानाजाद मनसव कबुल न कीयो अर मुजरो सलाम सहज मे करुं हुंजी।

। श्री महाराजा जी सलामत। खुसहालचंद मीरजा सदरुंदी महमदखां जी के पेसदत श्री महाराजा श्री हजूर अरजदासत करी है सु नजर गुजरसी जी अर वेको जवाब ईनायत होसी।

। महाराजा सलामत। आज श्री पातसाहजी की हजूर खोजा को अधकार घणो है, दीवान तो महीना मैं एक दोय ही करे हे अर रात दीन खोजा ही हजूर मे रहे है। सु आज अखतीयार खोजा महरम खां जी व हाफज अंबर व मसउद को है। सु यां कने खानाजाद हमेसा हाजर रहे है। ये बोहत मीहरबानगी करे हे, यां कहो है जु श्री. जी थांने काम फरमावै तो थे कहो सु मतालब अरज कर सरंजाम कराईदा। अर दवाव[4] का काम मे किफायत कर देंगे।

मीती फागुन बदि ७, संवत् १७६१।

---

1. शाहजादा कामबख्श।
2. बख्शी-उल-मुल्क।
3. अबार=इस समय।
4. दाब=खूराक-ए-दव्वाब।

क्रम संख्या ८

वकील रिपोर्ट संख्या ६

फागुण वदी ६, संवत १७६१

॥ श्री गोपालजी सहाय छै

॥ श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री
॥ महाराजा जैसिंघ जी

॥ : ॥ स्वस्ति श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री चरण कमलानु खानाजाद खाक पाय पं० जगजीवनदास लिखतं तसलीम वंदगी अवधार जी जी। अठा का समाचार श्री जी रा तेज प्रताप थे भला है। श्री महाराजा जी रा सीख समाचार सासता प्रसाद करावजो जी। श्री महाराजा जी माईत है धणी है श्री परमेसुर जी री जायगा है म्हे श्री महाराजा जी रा खांनांजाद वंदा हां जी श्री पातिसाह जी श्री महाराजा जी थे म्हरवान है। श्री महाराजा जी सुख पाव जो जी पान गंगाजल आरोगण रा जतन फुरमावजो जी।

। अप्रंच खांनांजाद नवाजी रो परवानां आयो वहोत दीन हुवा सु सरफराजी रा परवांनां सासता प्रसाद करावजो जी।

। महाराजा सलामत। मीरजा यार अली वेग जी श्री महाराजा जी हजुर आपको खत भेजो है सु नजर मुवारक गुजरसी जी। महाराजा सलांमत। मीरजा यार अली वेग जी सदा सरकार कां कांमां ने मुनवजह रहे हे। अर श्री महाराजा जी श्री वैकुठवासी जी का मतालव भी सदा मीरजा जी ही अरज करता अर अब भी सरकार दोलतमदार का मतालव सदा मीरजा जी ही अरज करे है। श्री महाराजा जी थे वोहत ईखलास राखे है तीसुं श्री महाराजा हजुर खत वरामद कार को समे देख खत लिखो हे सु खातर मुवारक मे पसंद आवे गु फुरमाजो जी।

। महाराजा सलामत। यां दीनां मे महरम खां जी व हाफज अवर जी व मीयां मसउदये सव म्हली हे अर पातिसाहजी री हजुर वोहत अरज मारु जमे

गुसताख हे अर सब उमरावां का मतालब अरज करे हे । अर जो ये अरज करे हे सु मंजुर होय है । अर खांनांजाद हमेस यांकी हजुर रहे हे सु अकसर वकत सरकार को मजकुर चले हे तो कहे हे तुम कोई काम सरकार का ल्यावों जु सरंजाम कर दे । तीसु श्री महाराजा जी री खातर मुबारक मे आवे तो जे उमंदा काम होय सु यांने भी लिख भेज जो जी जु खांनांजाद मतालब सरंजाम कर जन्म सुफल करे जी ।

। मीरजा सदरुदी खां वकसीयलमुलक[1] श्री महाराजा जी ने खत भेजो हे अर खुसालचंद ये सदसत अरजदासत श्री महाराजा जी हजुर भेजी हे सु नजर गुजरी होसी जी । अर जवाब ईनाइत कीयो होसी जीसु ये सारां का जवाब खांनांजाद ने ही ईनायत होसी जी ।

। महाराजा सलामत । पातिसाह जी वागनगीरे[2] आया है गनीम ने चारु तरफ से मारगट मे दीया चीकलीच खां[3] व म्हमद अमीखां[4] रुकसत कीयो ज तंवीह करे सु तंवीह की अर हजरत भी अब आय पोहचा मोरचा लगाया ।

। अबार श्री म्हराजा जी पचास हजार आदमी गनीम को मुकावलो करी वीराजे हे ई स्मया मे कांमा को तरदह न कीजे हे सु अजब हे । खांनांजाद सुणी ज केसोराय व बेके बेटे श्री म्हाराजा जी सु अरजदासत कर नागोर की मोहम-साजी मंगाय ली अर नौबत हुई लिखी तो उपर श्री महाराजाजी हुंडी भेजी सु तो रुपया घर मैं धरा अर नोबत की मोहमसाजी तो भली भांत करी न थी तीसु वे समे अरज करी थी सु जब ही जवाब हुवो थो, अर केसोराय सायद मंजूर हुवो लिखो सु असो झूठ लिखणो मनासव न थो सु ये लसकर का लोग हयांने ई बात की कोण सरम हे । टका मंगावासु काम थो सु मगाय घर मे धरवें का वाप का तो ये फ़ेल था अर ईको वेटो तो लड़को हे दरवार में कोण पुछे ।

। चिमना साहवजी को ईजाफो बहादर साहजी का लिखा थे हुवो तीकी सनद अब तांई लिन्ही जाहीर ली न्ही ।

। सं० १७६१, फागुण वदि ९, भोमवार ।

---

1. वख्शी-उल-मुल्क मिर्जा सद्रुद्दीन मुहम्मद खां—प्रारम्भ में तृतीय एवं बाद में द्वितीय वख्शी के पद पर दक्षिण में कार्यरत । इसे 3000 जात एवं 1500 सवार का मंसब प्राप्त था ।
2. वागिनगेरा : देखिए—सरकार, हिस्ट्री ऑफ़ औरंगजेब, भाग 5, पृष्ट 169
3. चीकलीच खां—चिनकिलिच खां (गाजिउद्दीन फीरोज जंग का पुत्र), इस समय इसका मंसब 5000 जात तथा 5000 सवार था ।

क्रम संख्या ६

वकील रिपोर्ट संख्या १०

श्रावण बदी ५, संवत १७६२

॥ : ॥ श्री गोपालजी सहाय छै

॥ श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा जी
श्री महाराजा जैसिघ जी

॥ : ॥ स्वसि महाराजाधिराज श्री महाराजा जी श्री......चरण कमलानु खानांजाद खाक पाय पं० राय जगजीवनदास लिखतं तसलीम वंदगी अवधारजी जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी का तेज प्रताप थे भला छै श्री महाराजा जी का सीख समाचार सासता प्रसाद कराव जो जी। श्री महाराजा जी माईत है, धणी है, श्री परमेसुरजीं री जायगा है, म्हे श्री महाराजा जी रा खानांजाद वंदा हां। श्री पातिसाहजी श्री महाराजा जी थे महरवान हे। श्री महाराजा जी सुख पावजी जी पान गंगाजल आरोगण रा जतन फुरमावजौ जी।

। अप्रंच श्री महाराजा जी रा परवानां ईनायत खानजाद नवाजी रा आया घणां दीन हुवा सु वंदनवाजी रा परवांनां सासता ईनायत कीजौ जी।

। श्री महाराजा सलामत—चार वरस हुवा खांनांजाद सुं वकालात तगीर कर[1] गरजमंदा री अरज सुं केसोराय ने फुरमाई थी सु उस सुं ऐक काम न हुवा

---

1. महाराजा जयसिंह के गद्दी पर वैठने के वाद जगजीवनदास को वकील-पद से हटाकर केसोदास को वकील-पद पर नियुक्त किया गया था, किन्तु कुछ समय वाद ही वादशाह ने उसे निष्कासित कर दिया जिससे लगभग चार वर्ष तक वकालत का कार्य उसके पुत्र, पक्षितराय, ने किया।

यदि डॉ० वी० एस० भटनागर के विवरण को ठीक माना जाये तो यह मालूम पड़ता है कि 1692 ई० में मेघराय को वकील-पद से हटाकर पंचोली जगजीवनदास को वकील का पद दिया गया जो इस पद पर सवाई जयसिंह के 1700 ई० में गद्दी पर वैठते समय कार्यरत रहा।

नोबत की अरज करायई ही न्ही अर झूठ ही हजुर ने लिखो ज मे अरज कराई सु मंजुर हुई, खरची तो नगोरो भेज दुं—फेर अरज गई ता पर नामंजुर भई तब हु झूठ हजुर को लिखीज अरज मंजुर हुई है, खरची आवे तो नगारो भेजुं ती उपर श्री जी खरची नोबत की भेजी सु घर में थे लयां घर बैठ रहो फेर वाही पायते मर गयो । श्री जी आप संसार की भलाई मे हे तीससुं आप नवाजस कर उसके बेटे उपर ही वहाल राखी छहसात महीने ईसको भी हुवे ये ऐक काम ईस सुं भी सरंजाम न पाया सु साच है, या छोकरे कौ दरबार में कोन पुछे हे । सु खांनांजाद कौ तो ईसकी हकीकत लिखणा सुं मतलब नहीं पण श्री महाराजा जी की सरकार का सब काम बंद पड़ा हे तीस की भी थोड़ी फीकर हे पण नोबत को तलास मुतलक श्री जी छोड़ बैठे हे अर श्री महाराजा के तलास मे तो कमी न्ही पे दर पे साहजादा के नीसांन[1] भेजे हे पण श्री महाराजा जाणै हे ई लड़का सु अठे तदबीर कुछ बणे न्ही, ईको कोण मांने अेतवार मुखन्माने तब और बात कोण मांने । सु यो खांनांजाद ने बडो दुख हे ज अब तांई नौवत न लीजे हे सु कोण तदबीर हे चार वरस तो ई लड़का के भरोसे रह सब काम बरहम कीयो अर कीजे हे अर नोबत कौ बरहम कीजे हे सु ई स्मया मे तो नोबत हर कही ने मीले है । रामसिंघ हाडो कोटा को घणी तीने नोबत मीली...को घणी तीने नोबत है । सु श्री महाराजा तो हींदुवा सुरज हौ । आबेर दरबार हे सु श्री महाराजा ने अब तांई नोबत न होय सु अजब हे । सु श्री महाराजा तो प्रभु हे परवाह नही अर हजुर मे बडा बडा ठाकुर हे बड़ा बड़ा मुतसदी हे सु वाने नीद भुख कौ कर आवे हे पण वे भी कांई करे वे उठा सु जतन तलास घणां ही कर भेजे हे पण अठे दरबार मे पेस लेजाणवालौ कोई न होय तो वे ठाकुर भी हजुर का कांई करे। श्री महाराजा जी को लुण[2] खायो हे ती सुं खांनांजाद की छाती जले हे काम बीगड़ता देख देख हर बार अरजदासत करुं हु । आगे भी श्री जी दरबार की खबरदारी फुरमावे तो भला हे पछे जो खातर मुबारक मे आवे सु सही ।

। केताक दीनां सु पातिसाहजी की हजुर में दीवान, बकसीयां को अखतयार कुछ न्ही । खोजां को अखतयार हे जो दरबार रोज कर बैठे तो दीवान, बकसी आवे सु तो दरबार करे न्ही । महीना मे पांच चार दरबार होय—दोय चार घड़ी बैठे ईतरा मे कही अरज की कोई करतो ही रहो । अर दरबार उठ खडो रहो अर खोजे तो खाबगाह[3] मे आठ पहर हाजर ही रहे तीसु खांनांजाद अरज

1. निशान=वह पत्र जो शाहजादा अपने हस्ताक्षरों के साथ शाही मंसबदारों को भेजता था ।
2. लुण=नमक ।
3. ख्वाबगाह=विश्रामगृह ।

राजा उदोतसिंघजी की तरफ सु कराईज । खांनांजाद का मतालवा हाफज अंवर अरज करो करे अर वकील भी हाफज हे कहवाले होय तापर मंजुर फुरमाई सु नव मतलव राजा के हाफाज जी ने सरंजाम कर दीया । अर खांनांजाद रात दीन दांनु ही लगो रहे हे वोहत महरवानगी राखै है । आठ पहर पातिसाहजी ने उठावे वैठावे है, सुवावे है, हाथ पाव धुवावे है । हजरत का तो पाव केती मुदत नु रहा सु उठा वैठी सूं रह गये, चलन हलन सुं रह गये, सु श्री जी जांणे ही है । सु अव खोजां के वस है ईतनां में ही सव समझ जाणोजी । सु अव हाफज अवर ने खिदमतगार खां को खीता० दीयो, दोढ़ी को नाजर कीयो, नीपट महरवानी है । यां वरसां मे केतां ही ने ईजाफा मनसव नोवतां दीवाई । अवार रामसिंघ हाडा ने पांच सदी को ईजाफो वांही दीवाये[1] अर राजा उदोतसिंह जी सु ईखलास राखै हे तीसु राव दलपत ने ईजाफा हजरत देता था सु वरहम कर दीयो अरज की सव वुंदेला का सरदार राजा उदौतसिंघ है सो तीन हजारी हे सो ही तीन हजारी यह हे अव ईजाफा ईसकौ दीजेगा तो राजा कौ भी देना जरूर होयगा या ईसको भी न दीजे । पातिसाहजी फुरमाई पहली राजा कौ देंगे तो उसको भी देंगे न्ही तो न दे । जुलफकारखां वागनगीरो फते कर आय राव दलपत का ईजाफा के वासते अरज की तव हुकम हुवो—कटारी दो, ईजाफा तो इनके ओड छे के राजा कौ दे तव ईसको दे तिस पर राव मनसव छोड़ वैठो, कटारी न ली । सु जुलफकार खां वोहतेरी वार अरज की पण मजुर न हुई । सु आज खोजा को असो कावु हे । सु वकालत तो श्री महाराज वेही का वेटा उपर राखणी खातर मे पसंद आई है तो वेही पर वहाल राखजे पण नोवत को कांम वेसे ही तो जाण जे हे तो मुवारक हे । ओर भी महीना दोय चार देख लीजे अर नौवत तुरत ही लेणी हे तो खांनांजाद ने ऐक नोवत के वासते ही फुरमाय देखजे, पहली हुंडी मांगु नहुं ऐक दोय खलीता कीमखाव का अर येक परवानो खानाजाद के नाव खुफ्या आवे अर सहजादा को निसान खिदमतगार खां के नाव आवे अर खिदमतगार खां के नाव न लिखे तो महरम खां के नाव आवे अर खरच साहुकारा की टीप आवे तो छाने छाने ही वकील ने खवर भी न होय, जद नगारो ले ही चुको तव खवर होय । सु ऐक छह सात महीनां खांनांजाद को भी कीयो देख जे वकालत तो श्री जी की हे ही । खानाजाद न्मक पर वरदा हु । अर श्री जी के प्रताप से अर श्री जी के नांव से रोटी कपड़ो मील रहे हे । ये छाती जले हे ज खांनांजाद दरवार मे वेठो अर यह सरवोपर काम नोवत कोसु पड़ रहो हे, सु अजव हे, कहे अर दरवार का लोग खांनांजाद ने वेस दरके हे ज सायद श्री महा-

1. इसी ने दिलाया है ।

सु नजर मुबारक गुजरसी जी। मीरजा ने हुकम हुवो है, खत कै पाछे मोहर होय तो अरज कीया करां तीपर मीरजा जी खांनांजाद सु कही श्री महाराजा को मेरी जुबानी लिखौ जद खत भेज्या करो तब खत की पुसत उपर मोहर कर लीफाफे उपर भी मोहर करा करै। सु श्री महाराजाजी की खातर मुबारक मे आये तो पांच सात वंद की पुसत उपर मोहर कर भेज जे सो स्मे देख सांते सौखत लिखा मीरजा नै गुजरानसी। अर कोरा वंदा उपर मोहर करणी खातर मे पसंद न आवे तो दस वीस लीफाफा उपर मोहर कर ईनायत फुरमाव जौ जी। मीरजा का खत उपर लीफाफा तो खाहनाखाह कर देणो होरी जी।

। मीरजा सदरुदी खां जी नै खत दीयो तब पढ करकही जो अबके ऐक बेर साहजादा बेदार बखत[1] कौ नीसांन आवे तो खाहमखाह हजरत नगारा ईनायत करेगे तीसु श्री जी तलास कर साहजादा जी कौ नीसांन ईनायत फुरमाव जौ जी अर खांनांजाद तो तलास नै लगौ ही है जी।

। दरबार रा समाचार वाकारी फरदां[2] सुं मालुम होसी जी।

। महाराजा सलामत। पातिसाहजी हुकम कीयो हे ज दोय हजार सुवार नकदी का चाकर राख गुजरात भेजौ छ सदी सुंले दुखी सदी तांई अर तीमे सदरुदीखां हजार सुवार राख भेजे, चार से सुवार सफवीखां राख भेजे, ये ही तजवीज कर तसदीक दे अरज मुकरर मे नजर गुजरेला। सो रोज तजवीजी राख जे हे सु ईही बात उपर खानाजाद नजर करी। अर अरज पोहुची है जे गनीम गुजरात गयो ती पर चाटसु मअजाबाद कौ मनसुबो सरत नीगाहदासत ज्मयत कौ कीयो है जे अर अज्मेर का सुबा की पायबाकी लेणा उपर श्री महाराजाजी को हुकम आयो ज सरत नीगाहदासत ज्मयत के लीजो सु श्री महाराजा जी रा प्रताप थे पायबाकी सरत नीगाहदासत ज्मयत के ले सुं जी। यो काम अमीरल उमराव सुं लगायो है जी। दीन दस पांच मे यो मजकुर अमीरल उमराव सुं मुसकम होय चुकसी तब अरजदासत कर सू।

। छोटा साहबजी[3] के वासते तोडो भीम कौ कै राजा रायसिंघ कौ वगेरह महाल मे सु ऐक महाल वतन तरीक लु हुं जी।

। ओर जे मतलब लिख्या है सु हुकुम मवाफक सब मतलब ठीक करां हां जी।

। सं० १७६३, संगसर सुदि ७, सुक्रवार

---

1. शाहजादा बेदार बख्त=मुहम्मद आजम का पुत्र।
2. वाकारी फरदां=घटनाओं से सम्बन्धित पत्र जो महाराजा को अलग से भेजे जाते थे।
3. विजयसिंह, महाराजा बिशनसिंह का द्वितीय पुत्र।

क्रम संख्या ११

वकील रिपोर्ट सं० १२

फागुण बदी १, संवत १७६३

॥ श्री महाराजाधिराजा महाराजा
॥ श्री राजा जैसिंघ जी

॥ : ॥ स्वसि श्री महाराजाधिराज म्हाराजा श्री......चरण कमलांनु खानांजाद खाक पाय पं० जगजीवन दास लिखतं तसलीम वंदगी अवधार जी जी। अठा का स्माचार श्री जी रा तेज प्रताप थे भला छै। श्री महाराजा जी रा सीख स्माचार सासता प्रसाद कराये जी जी। श्री महाराजा जी माईत है, धणी है, श्री परमेसुरजी री जायगा है। म्है श्री जी रा खानाजाद वंदा हां जी।

। फागुण सुदि १ सुकरवार गजर वाजतां श्री पातिसाह जी को वाको हुवो तीपर वेगम, आजमसाह ने वाद ऽऽ पहर रात गयां खवर दौड़ाई तीपर अमीरल उमराव[1] नै चीकलीचखांने फुरमान आयो ज लसकर की खवरदारी राखजो हु भी आउ। तीपर सुद १ पहर दीन चढ़ता अमीरल उमराव व चीकलीचखां आतसखां नो खड़ो कर गुलाल वाड़ में जाय वेठा। वेगम की दीलासा की, हीदायत केसखां कामवखस का वकील ने गुलालवाड़ में नजरवंद कर वेठाय राखो। सुद १ तीसरा पहर ने सुलतान नजर संदल का तखतातावुत के वासतै ले आयो सु वणाये हे वकसीयां ने आजमासाह[2] को हुकम आयो फोजवंदी तयार करो सु तुमार[3] तयार होय हे। आज रात तांई आजमासाह भी आसी और स्माचार होसी सु पाछां सु अरजदासत कर सुं।

। जीणदास साह कासीदां ने भी खरची दे न्ही यां दीनां ने चाहजे दीन्ये दोय

---

1. अमीर-उल उमरा, असद खाँ को 1701 ई० में इस पदवी से विभूषित किया गया था।
2. शाहजादा आजमशाह ने औरंगजेब की मृत्योपरान्त दक्षिण में रहते हुए ही अपने को बादशाह घोषित कर दिया था।
3. रूपो।

जोड़ी चलै सु खरची को हुकम आये खानांजाद ने खरची देन्ही तीसं इस्में खरची की मदत होय, नजर की हुंडी आई थी सु जीणदास आपकी दसतगरदां सवाल की मे भर ली।

: खानांजाद की सरम श्री जी ने हे अब कुच दीन पाच सात मे होसी, सामान कुछ न्हौ तीसु स्व सरन श्री जी नै है। सं० १७६३, फागुण सुद १ शुक्र सांझ नै चलै।

। अंक पली ठहराय भेजौ जी जीमैं स्माचार लिखी करु स्माचार जाहर लिखणां मनासब न्हीं।

क्रम संख्या १२

वकील रिपोर्ट संख्या १३

वैसाख सुदी १०, संवत १७६४

॥ श्री गोपालजी सहाय छै जी

॥ श्री महाराजाधिराज महाराजा जी
॥ श्री मीरजा राजा जैसिंघ जी

॥ : ॥ स्वसि महाराजाधिराज महाराजा श्री......चरण कमलांनु खानाजाद खाकपाय पं० जगजीवन दास लिखतं तसलीम वंदगी अवधार जौ जी । अठा का स्माचार श्री महाराजा जी रा तेज प्रताप थे भला छै । श्री महाराजा जी रा सुख स्माचार सासता प्रसाद कराय जौ जी । श्री महाराजा जी माईत है, धणी है, श्री परमेसुरजी री जायगा है । म्हे श्री महाराजा जी रा खानाजाद वंदा हां । श्री पातिसाहजी श्री महाराजा जी थे महरवान है । श्री महाराजा जी सुख पाव जौ जी पान गंगाजल आरोगण रा जतन फुरमाव जौ जी ।

। अप्रंच खांन नुसरत जंग आया सु खांनाजाद यासुं मीलो सु स्माचार तो आगे अरजदासत कीया है । अव अमीरल उमराव व नुसरत जंग नैं ईलतमास दी वींकी नकल भेजी है अर अमीरल उमराव ने पचास हजार रुपया देणा कर मीरजा राजा रो खीताव व हफत हजारी जात हफत हजार सुवार[1] को मनसव लीयो सु मुवारक होय जी । ईकीस मौहर नजर खीताव की व मनसव की खांनाजाद की तरफ की मंजुर होय । अर मनसव व खीताव व नोवत की मुवारकवादी की तसलीमात हजारां वजाय आयो हुं जी । अव श्री जी भी घणां आणद उछाह कीजो जी । अव वतन का परगनां की अरजी हे सु भी दीन दोय मैं अरज कराउ हुं जी । अर श्री जी खरची की मदत कीजो जी । जीणदास साह सुं अठै दमड़ी की गरज सरे न्ही रोकड़ आये के संतोखराम ईने मातवर[2] हुंडी भेजे तव काम

1. सात हजार जात तथा सात हजार सवार ।
2. मातबर (मोतबर)=विश्वसनीय ।

करे । खांनाजाद आपकी परेसानी की कहां तांई लिखे लसकर मे खानाजाद उपरांत परेसान कोई न्होसी तीसुं अब खानांजाद की परतपाल श्री जी ने करणी है। अब अमीरल उमराव ने आधा परधा तो दीजे आधा फेर दीजे ला अर सनद की तयारी ने परवांनां खरच नै खरची भैज जौ जी ।

। जरूर की खबर मुबारकबादी की के वास्ते अरजदासत दौड़ाई है पाछां सुं अरजदासत तफसीलवार भेज सुं जी । सं० १७६४, बैसाख सुद १० ।

। नुसरत जंग[1] बेदारबखत[2] पासने रुकसत हुवो । अजीतसिंघ महाराजा का बेटा[3] ने पंज हजारी जात पंज हजार सुवार कीयो थो, सु लाख रुपया अमीरल उमराव ने देणा कीया तब महाराजा को खीताब दीयो हफत हजारी जात हफत हजार सुवार कीयो ।[4]

लस्कर में दूसेरो नाज है । फुरमान मीरजा राजा का खीताब कौ व हफत हजारी जात हफत हजार सुधार को म्हाराज ने हुवो है । सु बेदारबखत पास भेजो हे । आगे भी फुरमान यां पास ही भेजो हे ।

---

1. नुसरत जंग—वज़ीर असद ख़ाँ का पुत्र इतिकाद खाँ जिसे जुल्फिकार ख़ाँ बहादुर तथा नुसरत जंग का खिताब औरंगजेब द्वारा प्रदान किया गया था । नुसरत जंग का खिताब जुल्फिकार खाँ को जिंजी पर अधिकार (1797 ई०) के समय दिया गया था ।
2. शाहजादा बेदार बख्श—औरंगजेब के पुत्र शाहजादा आजम का पुत्र ।
3. कुंवर बखतसिंह ।
4. महाराजा अजीतसिंह को 7000 जात एवं 7000 सवार का मनसब तथा महाराजा का खिताब प्रदान किया । तुलनीय—अखबारात 6 सफर, 1119 हि० (अप्रैल 18,1707) ।

क्रम संख्या १३

वकील रिपोर्ट संख्या १५

चैत्र सुदो १, संवत १७६७

॥ श्री परमेश्वर जी सत्य है

॥ : ॥..........॥ स्वरूप श्री लसकर विजैकट का तुं महाराजधिराज महाराजा जी श्री श्री श्री श्री श्री जैसिघ जी चरण कमलांन पातसाहि लसकर थी आग्याकारी सदा सेवग भां० खीवसी[1] लिखतुं सेवा मुजरो अवधार जो जी। अठा रा समाचार श्री जी रै तेज परताप कर भला छै श्री महाराजा जी रा घड़ी घड़ी रा पल पल रा सदा आरोग चाहीजै जी। अप्रचि महाराजा वडा छै जी। श्री महाराजा साहिब छै जी। मोसु[2] सदा सु निजर महरवानगी फरमावे छै तिण थां वसेख[3] फुरमाव जो जी। श्री महाराजा जी रे डीलां[4] रा पान, कपूर, गंगाजल आरोगण रा घणा जतन फुरमाव जो जी।

। अप्रचि श्री जी सलांमत। अठारी हकीकत री अरजदासतां आगे खीजमत मैं मैली छै सो मालुम हुई होसी जी। श्री जी अठा री तरफ सु भांत भांत खातर खुसाली फुरमावै। श्री साहजादाजी रो कवल पांजो मैं हीदवी, फारसी दोनु नीसाणा साह वेणीराम साथे हजुर मैलीया छै सो पहचसी जी। श्री महाराजा जी से हजुर पीण रा० लालसिघ गोपीनाथोत साथे हजुर मैलीया छै सो श्री महाराजाजी हमैं दर कुच पधारसी अवे ढील मत जांणै, ईतरा दीन ढील हुई तीण सु सामो वात भड़ार मैं छै दुजु आप काई मत वीचारै। पातसाहजी मान सुध चाहै छै सो दोनू महाराज सामल थका पधार जो जी। हजुर पधारीया सारो काम श्री जी री मरजी माफक होसी। अप्रचि श्री जी सलामत। वेणीराम अठे सरकार

---

1. भण्डारी खीवसी—मुगल दरबार में महाराजा अजीतसिंह का वकील।
2. मुझसे।
3. विशेष।
4. शरीर।

री चाकरी भली भांत करी छै । श्री महाराज रो खानाजाद छै ओर अठारी सारी तपसीलवार हकीकत वेणी राम जबानी सु मालुम करसी जी ।

। वाउड़ता परवानां सदा ईनाइत कराव जो जी । सांवत १७६७, चैत सुद १

। श्री जी सलामत । सरकार री तरफ सु असवार हजार चार सु कम मत लीराजो पेहलो मुकदमो छै । सो ईतरी जमीत जरूर लावण रो हुकम हुवै जी ।

क्रम संख्या १४

वकील रिपोर्ट संख्या १४

चैत सुदी ८, संवत १७६७

॥:॥ श्री गोपालजी सहाय छै जी

॥ श्री महाराजाधिराज महाराजा जी
श्री जैसिघ जी

॥ : ॥ सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा जी श्री......चरण कमलानु खानांजाद खाक पाय पंचोली जगजीवन दास लिखतं तसलीम बंदगी अवधार जो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी का तेज प्रताप कर भला है। श्री महाराजा जी का सीख समाचार सासता प्रसाद कराव जो जी। श्री महाराजा जी माईत है, धणी है, श्री परमेसुर जी री जायगा है। म्हे श्री महाराजा जी रा खानाजाद वंदा हां जी श्री पातिसाह जी श्री महाराजा जी सै महरवान है। श्री महाराजा जी सुख पाव जो जी पान गंगाजल आरोगण रा घणा जतन फरमाव जो जी।

। श्री महाराजाजी सलांमत। हीदायतूला खां[1] मीती चेत्र वदि ११ आदीतवार दीवानी कचैहड़ी मै आण वैठो कीफायत खां जी कै दसतुर मोहर दसखत कीया अर दवाव के वासतै अरजी करी थी ज़ दोय लाख रुपीया को दरमाहो लागै हे मु आज तांई तो सरवराह[2] हुई, अवै खालसो न्ही, खजानो न्ही, सु खुलदमकां[3] कै अमल उमराव व मनसवदार सरवराह करै था जी ही भात सरवरा करै। सु वै अरजी उपर साद मुवारक हुवो जु उमरांवा सु सरवराह करावो। सु वा अरजी भी चेत्र वदि १२ हीदायतूला खां जी कनै आई। सु यां

1. हिदायतुल्ला खाँ (सादुल्ला खाँ), दीवान-ए-तन तथा खालिसा।
2. सरवराह=वसूल हुई।
3. खुलदमकां (खुल्दमकां)=स्वर्गवामी—औरंगजेब के सन्दर्भ में।

आगै तो दवाब का मुतसदा सै ताकीद करी ही थी अर अरजी आयां बसेख ताकीद करी अर आपकी मोहर सै परवानगी दी जु उमरावां कनै सरबराह करावो सु दवाब का मुतसदां नकीब मोकल सारा वकीला नै खबर करी जु गुररा सफर नै सरबराही की चीठां होसी ।

। श्री महाराजा जी सलांमत । खानाजाद की हकीकत तो रोसन है जु अढ़ाई तीन बरस तो हैदराबाद की तरफ बंदगी करी अर दस महीना अबै बंदगी करतां हुवा सु खानाजाद का ही अया मांफी है जु न पावै है सु भांत भांत का तसदीया गुजरै है तांको बयान कठां ताई अरज लिखु इ भांती कोई अदना चाकर भी ई सरकार के न रही होसी ऐक ऐक दीन म्हाराजाजी का तेज परताप कर ही गुजरै है। अर अबै दवाब हुई है सु दवाब की मुतसदी जो कोई जी भात भला बुरां सरबराह करसी जीही भांत सरबराह करा सी ।

। तीसु श्री महाराजाजी सलामत । आगली अरजदासत नजर गुजरत सवां दवाब का दरमाहा की सरबराही कही बोहरा उपर लिखाय मोकली होसी जी अबै अरजदासत पोहचत सवां फेर बोहरा को लिखो आवै जी जु दबाब मै लागै सु माह दरमाहा दीयां जाय जो दवाब का दरमाहा आबा की ढील हुई तो खानाजाद उपर घणो तसदीयो होसी तीसु सीताब ईनायत फरमावजो जी ओर दीवान भीखारी दासजी[1] भी अरजदासत करी है तीसु सारी अरज पोहचसी जी ।

। श्री महाराजा जी सलांमत । वादसाहजादा अजीमुसां जी को फारसी नीसान तो दीवान भीखारी दास जी अरजदासत की लार आगै मोकलो है अबै हीदवी नीसान खास दसखतां को व केसर को पंजो व कोल श्री महाराजाजी नै व अजीतसिघ जी नै ईनायत कीया व बोहोत दीलासा करी सु श्री महाराजाजी को नीसान व पंजो तो बेणी राम, साहनैणसुख को सालो तीकी साथ मोकलो हे सु नजर मुबारक मै गुजरसी अर भंडारी खीवसी महाराजाजी श्री अजीतसिघ जी का नाब को लालसिघ राठोड़ की साथ मोकलो है । सु श्री महाराजा जी सलामत । अबै पधारवा की घणी ताकीद फरमावजो जी ढील करणी सलाह दोलत न है तीसु सीताब पधार जो जी ।

। श्री महाराजाजी सलामत । महाबत खां[2] जी अरज करी जु खानखाना[3] का वाका पाछै श्री राणाजी का व श्री महाराजा जी का व महाराज श्री अजीतसिघ जी का लोग उदास है यांकी दीलासा होय ती उपर हुकम हुवो थे दीलासा करो

1. आम्बेर का दीवान, जो कि इस समय बादशाह के दरबार में उपस्थित था ।
2. महाबत खां—वजीर अमीन खां का पुत्र जिसे तृतीय बख्शी का पद प्राप्त था ।
3. मूनिम खां, जिसे बहादुरशाह ने बादशाह बनने के पश्चात वजीर का पद, 8000/8000 मंसब तथा खान-ए-खाना की पदवी प्रदान की थी ।

अर सरपाव दो, सु नवाव वोहोत दीलासा करी अर साहो आपकी मोहर सै खलअतखाना का दारोगा नै पोहचायो है सु दीवान भीखारी दास जी व कान्हजी झाला नै व खीवसी नै व दोदराज मुनसी व गुलालचंद नै सरपाव होसी जी ।

। श्री महाराजा जी सलामत । दीवान भीखारी दास जी नै परवानो आयो तीमै औरंगावाद का पुरा कै वासतै लिखो है जु खानखाना की मोहर से तो हसबुल हुकम व अमीरुल उमराव को खत दाउद खां कै नाव भीजवाजो जु हवेली खाली करै व पुरा मै अमल दे सु वो परवानो दीवान जी खानाजाद नै दीयो तद अमीरुल उमराव नै ईलतमास दी अर परवानो पढ़ायो तद नवाव कहो महाराज को खत आयै लो ती मवाफक दाउद खां नै खत लीखदां ला । श्री महाराजा जी सलामत । अमीरुल उमराव नै पुरा कै वासतै खत ईनायत होय तीमै खानाजाद कै वासतै भी लीखावै जु पंचोली सरकार का काम कै वासतै नवावसाहव की खीदमत मै हाजर रहै है जी काम कै वासतै अरज करै तीमै खसमानो फरमाव जो जी ।

। श्री महाराजा जी सलामत । महावत खां वहादर नै जफरजंग को खीताव हुवो अर दोय हजार सुवार व तीस लाख दाम को ईजाफो हुवो, खानजमा खां[1] वहादर नै गालवजंग को खीताव दीयो अर हजारी जात डोढ़ हजार सुवार को ईजाफो ईनायत कीयो, तीकी मुवारक वादी को खत दोना भायां नै ईनायत फरावजे जी ।

। श्री महाराजा जी सलामत । महमद ज्मा व महमद अमां पातिसाही मनसवदार है त्यां कचहड़ी का दरोगा उपर हुकम लाया जु परगना जलालपुर सरकार अलवर का चार गांव छीयालीस हजार दाम का म्हांकी जागीर मै है सु साह अमरपाल श्री म्हाराजा जी को चाकर है ती म्हांका गुमासता कनै सु चोथो हसो लीखाय लीयो है, अर आप लिख दीयो है, सु वैको लीखो काजी की मोहर सै व कानुगो भगवंत का दसखता सै दीखायो, अर कहो हासल लीयो है सु फेर दो अर आगा सै अमल दीरावो तद डोढ़ महीना को मुचलको लीख दीयो जु यांका गुमासता को राजीनामो मंगायदा । सु अवै अमरपाल नै हुकम जाय जु सितावी यांको राजीनामो मोकलै अर अमरपाल का लीखा की नकल हजुर मोकली है सू नजर गुजरसी जी ।

। श्री महाराजाजी सलांमत । ठोड़ ठोड़ का हवालदारां नै हुकम जाय जु कही की जागीर मै दखल न करै अर ई भात का लिखा न कर दे अठै मुतसदां नै वे

---

1. खान-ए-जमां—मुनीम खां का द्वितीय पुत्र।

लीखा बजनस दीखावै है ईमै सरकार की बदनामी है अर रुपीया अफुटा देणा पडै है जी तीसु ई काम की घणी ताकीद होय जी ।

श्री महाराजा जी सलांमत। हीदायतूला खां की अरजी की नकल हजुर मोकली है सु नजर मुबारक मै गुजरसी जी ।

तारीख उसपुर, चैत सुदी ८, सुकरवार दोय पहर आय पहुची, बद ३ ।

क्रम संख्या १५

वकील रिपोर्ट संख्या १६

अषाढ़ वदी १४, संवत १७६७

॥ श्री परमेसर जी सत्य छै

॥ : ॥......॥ स्वारुप श्री लसकर विजै कटकाइते महाराजाधिराज महाराजा श्री श्री श्री श्री श्री जैसिंघ जी चरण कमलांन पातसाही लसकर था आग्याकारी भा० खीवसी लिखतु सेवा तसलीम अवधारजो जी। अठा रा समाचार श्री जी रै तेज परताप कर भला छै जी। श्री महाराजा जी रा घड़ी घड़ी रा पल पल रा स्दा आरोग चाहीजै जी।

। अप्रचि श्री महाराजा जी वडा छै जी श्री महाराजा जी साहिव छै जी मोसु सदा म्हैरवानगी फुरमावै छै तीण थी वसेख फुरमाव जो जी। श्री महाराजा जी रा डीलां रा पान, कपुर, गंगाजल आरोगण रा घणा जतन फुरमाव जो जी।

। अप्रचि श्री जी सलामत। अठा री हकीकत री अरजदासत आगे खीजमत मैं मेली छै सो मालुम हुई होसी जी। हमैं श्री महाराजा जी पधारीया छै सो आप पधारण री ढील मत करै। सल्हा ठेहराय नै दरकूच पधारी जै ढील करण री सल्हा न छै। सो तो आगे सारी अरज लीखी छै वीजैसिंघजी री तरफ री कोणी वातदीसा खातर मैं न ल्यावै अठे श्री महाराज जी रो वडो वोहार[1] छै। और श्री जी सलामत। अठे ईसी खवर सुणी जै छै आप खांडेले, नराईणे असवार मेलीया छै वुलावण रै वासतै सो या काहु हकीकत छै। अठे नराईणा वाला दरवार मैं अरज करै छै म्हारै असवार आया छै सो आप असवार मीलाया होइ तो मोकुफ फुरमाव जो जी। ईण वात सु पातिसाहजी रा मान मै गीरां आवसी जीन नु जी कोई रजामंदी सु आवै सो तो भली वांत छै नै ताकीद कर वुलावण री सल्हा नही।

---

1. व्यवहार।

। अप्रंचि श्री जी सलामत—असाढ़ वद १२ रै दीन श्री महाराजा जी[1] रो प्रवांनो मानै आयो छै तीण मैं हुकम छै म्हे तो नवीसराइ पधारीया छां हमैं महाराज श्री जैसिघजी पधारै छै तरे दर कुच कीयां पधारां छा। पीण श्री राजा जी रे वीजैसिंवजी री तरफ सु खातर नीसां न छै नै ऐक मालपुरा वावत कहै छै सो वीजैंसिघजी री अरज तो आगे लीखी छै जो पातसाहजी री सीख सु के पातसाहजी री मरजी सु आया हुवै तो जी का अरज लीखां ना दांन थका उठ आया छै सो सवारे खवार होसी। जागीर तो खालसे होई चुकी। प्रवांना तयार हुवा छै; सो दीन दोई च्यार जै चालसी आप यांरी तरफ रो अवैसास कीसी मसलत उप्र वीचारै छै यारो वोहार काहु जमीत काहु जीण उपईतरी वीचारै जो दुजी वावत देखता तो ईतरी अरज कीउ लीखता; महे तो दोलत खवाह चाकर छां जीण वात मैं सरकार रो फाइदो देख सां सोहीज अरज लीखसां। सो आप यांरी तरफ रो फोतीथार जीतरो अवैसास मत लावै उठे यांरी काई वावत न छै नै माल मुरा दीसा फुरमावै सो आप वीचार देखे। राजसिघ जी नै तीन च्यार वरस हुवा जागीर हुवां। सो खांगारोत ठाकुर मुल अमल न देवै। च्यार लाख रुपीया रो प्रगनो तीण रा तीस चालीस हजार रुपीया नीठ सेवा रै हाथ लागे सो ईण भांत सु कठा इकतांई आधो काढै छै जो आटे लुणा रो वोहार राखीयो होत तो राजसिघ जी न वोलता सो ये ठाकुर मुल नगीणे जद जागीर मै अमल तो कीयो चाहै आप न कर सके तरे दुआं कनै करावै; सो ईण वातरी फेर साहजादा जी सु अरज करनै सलुक करावां छा ईण वात दीसा श्री जी कुछ खातर मैं राख नै ढील मत करै। अठा आगै ढील हुई तो दोनुं सरकार री घणी खरावी छै। ढील होण मे कांई खतसीर न रही छै। अवे सीरे चढ़ायां काम मैं ढील कीजे। सो कीसे वास्ते म्हाने तो भरोसो थो, श्री महाराज जी पधारां पाछे आपरे काहो ढील न हुसी सोविगर मतलव ढ़ील कीजे छै पछे ही श्री जी फुरमावसी अरज न लिखी, जो म्हारा लिखो इतवार माने छै तो ढील मत करो।

ज्यादा अरज काहु लीखु अठा री तरफ री भांत भांत खुमाणी फुरमावै श्री जी वीचार सी वीजैसिघजी नैं सरफराजी हुई तीण री काहु हकीकत सो गुमनम दील खां रा डोढ़ दोई लाख रुपीया करज रा छै सो उण अरज कर फरद गुज़-रान नैं तखसीर माफी रा दसकत कराय मेलीया नैं सीरपाव री तो म्हे नेहकी-कात कीवी सो तोसाखाना सु तो नीसरीयो नीजर नावै पछै तो परमेसर आपै ईतरी ही दीलासा ईण आपरा रुपीया रै वासते कराई छै। हुइ पातसाहजी री काई म्हैरवानगी न छै। नुसरतयार खां दीसा पीण साहु सु अरज कर सांद लीयां सु ईतरे नुसरतयार खां रा दीवान नो लीखीयो मीनायो छै सो मालुम हुसी।

---

2. महाराजा अजीतसिंह।

ईण रो दीवान पं० दीपचंद अठे छै सो सारो ईखतयार ईण रो छै। ईण रा लीखीया माफक चाले छै। सो मैं ईण ने बुलाय कहो श्री दोनु माहाराज हजुर पधारै छै थे पाछै फीसाद उठावो छो सो हमे पधारण में ढील हुई तीण रो थानै ओलांभो छै। तद ईण कहो तुम कहो सो करां। तरे म्है कहो मालपुरा री वात में मत आवो, जद ईण आपरा नावा रो खत भली भांत लीख दीयो छै तुम उस तरफ हरगीज मत जाव जो सो खत हजुर मेलीयो छै आप उणानै सीताव पहचतो कराजो यो खत पहतां सु आधो नाव सी ईण वातरी खुसाली फुरमाइ। कुच सीताब कराई जै। ज्यादा अरज काहु लिखु।

वाहुड़ना प्रवाना सदा ईनाइत कराव जो जी। संवत १७६७ रा अषाढ़ वद १४।

क्रम संख्या १६

वकील रिपोर्ट संख्या १७

अपाढ़ सुदी ११, संवत १७६७

॥ श्री परमेश्वरजी सत छै

॥ : ॥......॥ स्वरूगि श्री लसकर विजैकटकाइते माहाराजाधिराज महाराजा श्री श्री श्री श्री श्री जैसिघजी चरण कमलांन पातसाही लसकर था आग्याकारी सदा सेवग भा० खीवसी लिखतं सेवा मुजरो अवधार जो जी। अठा रा समाचार श्री जी रै तेज प्रताप कर भला छै जी श्री महाराज जी रा घड़ी घड़ी पल पल रा सदा आरोग्य चाहीजै जी।

। अप्रंचि श्री महाराजा जी वडा छै जी, श्री महाराजा जी साहिव छै जी, मोसु सदा म्हैरवानगी फुरमावै छै तीण था वसेख फुरमाव जो जी श्री महाराजाजी रा डीलां रा पान कपुर गंगाजल आरोगण रा घणा जतन फुरमाव जो जी।

। अप्रंचि श्री जी सलामत। पेहला गुर[1] पकड़ीयां री खबर आई थी सो वा वात खीलाफ हुई। गरु, मेहमद अमी खां[2] रुसतम दील खाँ सु वेढ़कर सीर जोर थको नीसर गयो पछै आमै जावु[3] रो राजा आडो आयो सो उण सु पीण बेढ़ करी। राजा घायल हुवो नै आदमी घणा काम आया। हमै गुरु री खवर छै पाछो उतरीयो सो डावर आवसी फेर चोकस हुवा सु अरज लीख सुं जी मेहमद अमीखां रुसतम दील खां उठा सु पाछा फीरीया नदी रावी उप्र आया सुणी जै छै अठी सु पातसाहजी पीण आषाढ़ सुद १० नदी गोइदवाल पार हुवा छै सो देखी जै कीण तरफ जाइके, कठे छावणी करै, सो नीवड़ीयां सु अरज लीख सुं जी।

---

1. गुरु वंदा बहादुर।
2. मुहम्मद अमीन खाँ।
3. झाबू।

। अग्रचि श्री जी सलामत। ओर समाचार तपसीलवार भाई रुघनाथ नै अंग्रफुली मे लीखीया छै सो मालुम करसी जी, उण माफक सल्हा बीचार नै पाछी हकीकत ईनाइत करावजो जी। वाहुड़ता परवाना सदा ईनाइत करावजो जी। सं० १७६७ रा असाढ़ सुद ११, सुक्र।

क्रम संख्या १७,

वकील रिपोर्ट संख्या १६

माघ बदी ८, संवत १७६७

॥ श्री रामजी

श्री महाराजाधिराज सलामति

॥ आगै अरज दासति मिती माह बदी ऽऽ की भेजी है तिसौ सगली हकीकति अरज पहुचैली जी। श्री महाराजा जी सलामति—मिती माह बदी ५ सुक्रवार नवाव महावत खां जी, नवाब खानखानाजी के डेरे थे तव कान्हजी झाला[1] वा बंदा उहां गए तब नवाब खिलवती मै बुलाया तब कान्ही को सिरोपाव दीया वंदा नै खत श्री......जी का वा प्रवांना आपने नाव का वा अरजदासति की नकल गुजरांनी तब नवाब जी खत पढ़या महावति खां जी के हाथ दीया। तव दोनौ नवाब आपस मै बतलाय। कान्हजी के आगे बंदै को फुरमाया जो अरज-दासति पातसाहजी को क्या कहि गुजरानै, तुम तो हमारा पातसाहजी के हजुरी वदनकस[2] किया, लोगौ तौ कावु पाय कुछ सौ कुछ अरज पहुंचाई, अव हमारा झूठ पेस नहीं जाता। रुसतम दिल खां चाहै है जो फेरोज खां कों राजौ पर भेजा जावै अर अम सौ वह कन्ना है अर ईन दिनौ मौ फेरोज खां के सवव सौ गुरु कीराड़ी पहैली करी अर फते पाई सो पेस है सो जानता है सो ई अरज करै है—राजौ हमको वड़ा दगा दीया, हमको ईनका या भरोसा न था। तव वंदै अरज करी जो राजा जैस्यंघ जी तौ आऐ तब नवाब फुरमाया जो मेरा मामला तौ तुम्हारे कहने ही कहने मौ वरहम हुवा, राजा अजीतस्यंघ आंवने का नहीं अर तुमहारा रांजा भी अजीतस्यंघ विना न आवै। नवाव खांनखांना जी फुरमाया—जो राजा जैस्यंघ जी के वाप दादेय राजा अजीतस्यंघ जी के वाप दादे के साथ कव

---

1. मेवाड़ का वकील।
2. वदनकस (वदनक्श)=वुरी तसवीर।

कव लागे लागे फिरे थे, अव जो राजा ईनके साथ आवैगा तो क्या वढ़ाई पावैगा। कान्ही जो झाला भांति भांति अरज पहुंचाई नवाव मानी नही। फेरि नवाव वंदे सौ फुरमाया तुम हमसौ रुखसति होय आपने राजा पै जाव आछा लागै सो करो, तुम्हारे तो अैसे दिन बुरे है जो राना अमरस्यंघ ईस वकत मै मरि गया, अव हिंदुसतांन का कुछ मरम रह्या नहीं; तेरे तांई मै हाथ पकरि राख्या था जै पातसाह यातराज होय तुझ पर कुछ और हेतराजी फुरमावै तो मेरे हाथ पकर राखने को त्यार है। तव नवाव महावत खां जी वा कान्हजी झालै कही—जो ईन्हौ तो लिखने मै कमी न करी अर राजा जैस्यंघ अलवतै आवैगा। तब नवाव खांनखाना गुसे होय महावत खां सो कह्या—तुम लरकै हो, तुम जानते नही पातसाहजी सिताव ईन पर मुहम करैंगा, भिखारी दास नै राखने मोक्या फायदा है, पातसाहजी की यातराजी मौ आय जायगा ईनकों जांने दोह। तव महावत खां जी मेरे तांई पूछा—जो भंडारी दरवार कव तांई आवैगा? तव नवाव खांनखांना महावत खां सो कहा जो भंडारी आंनि क्या कहैगा? आज अैसा कौन है जो राजौ की अरज करि सकै? तव नवाव महावत खां नवाव सौ अरज करी, भंडारी मुलाजमति करै तव ताई भिखारीदास को रुखसति न करै, तव नवाव सुनि चुप होय रह्या। घड़ी ऐक पीछे महावत खां जी को फुरमाया जो तुम भंडारी को बुलावो जो वै कहै सो सुनो अर सितव जुवाव दोह। घड़ी चारि ताई वंदा वा कान्हजी खिलवति मौ वैठे रहे। नवाव ठंढे परे तव वंदै अरज करी, जो खत का जुवाव ईनायत होय, तव नवाव कह्या अव हमारे लिखने की कुछ रही नही। तव मैंने अरज करी—जो राजा जैस्यंघजी तो सिवाई मरजी नवाव की और भांति करना न्ही। तव महावत खां जी कु फरमायो तुम लिखी दोह, हम तौ अव न लिखैंगे। तव महावत खां जी कही अव के तौ खत लिखि दें, हमै भी जो लिखना है सो लिखी दयौगा। तव पहैर राति गया वंदा कौ वा कान्हजी को विदा किया अर खत लिखी दीया।

श्री महाराजा सलामति। पातसाही का रंग अव और ही हो गया, ये दोनौ नवाव वड़े सायक[1] थे सो इनकी भी तरह और ही होय गये, पातसाहजी की हजुरी छुटे पड़े। श्री महाराजा जी सलामति। मी० माह वदी ५ के दिन खीवसी भंडारी का जोड़ी आई सो भंडारी नै मेरे ताइ कह्या जो महाराजा अजीतस्यंघ जी मेड़तै आए दिन दस सौ सांभरि आंवैगा।

श्री महाराजा जी सलामति। जै महाराजा अजीतस्यंघजी सांभरि पधारै होय तौ आप ताकीदि लिखोज्यो जो सिताव पधारै अर जो महाराजा अजीत-स्यंघजी का आया की ढील होय तो आप भली भांति खान्न मुवारक मौ विचार

1. महावर।

करण होय सौ करैंगे जी। ईहां का रंग अबकी घड़ी तक तौ ऐही है जो वंदै अरज पहुंचाई है। अब भंडारी भी मुलाजमति करैगा सो जो हकीकति होयगी सो अरज लिखी पहुंचाउगा जी और जो महाराजा अजीतस्यंघ जी सांभरि पधारे तो आप सांभरि मती पधारेगे जी। श्री महाराजा जी सलामति। अब दो नवावौ को खत लिखौ सो विचारी लिखी ज्यौ जी। मीती माह वदी ८, सोमवार, सं० १७६७।

क्रम संख्या १८

वकील रिपोर्ट संख्या २१

माघ सुदी ३, संवत् १७६७

॥ श्री राम जी

श्री महारांजाधिराज सलामती

मीती माह वदी ४ वीसपतीवार नवाव महावत खां जी राव भगवत को कान्हजी झाला कै डेरै बुलावणे को भेज्यां सो भगवत राव कान्हजी कै डेरै आवे अर पंदा को कहाय भेज्यां जोन वाव नै कहा है जो तुम कान्हजी को ले चलो, तब वंदा भि साथी गयां सो कान्हजी वा कीसोरदास उकील कों सीरोपाव दीयां अर वहोत दीलासां करी। तव कान्हजी मुझै कहां जो तुम नवाव सौ अरज करी राणा सगरांमस्यंघ जी को खत लीखावो। तब वंदै नवाव सै अरज करि। तव नवाव खास दसकता खत लिख्या तीहकी नकल हजुरि भेजी छै सो नजरि गुजरैली जी।

। श्री महाराजा जी सलांमती। नवाव नै भंडारी कि हकीकती वंदा सौ पुछी जो भंडारी का क्या हाल है, तव वंदे तपसीलवार अरज करि तव गुलालचंद भी हजुरि वैठा था सो गुलालचंद को फुरमावां जो भंडारी को सीताव ले आवो। तव गुलालचंद अरज करि, जो दीन व्यारी तथा पाच मै हजुरि आवैगां।

श्री महाराजा जी सलामती। माफीक कहे कान्हजी कै नवाव अंदर चले तव वंदै अरज करि जो नवाब खानखाना जी कै डैरे कान्हजी को जीसौ हुकम होय सो ही ले चलै। तव नवाब फुरमायां जो तुम कान्हजी को वड़े नवाव कै ले चलो अर दीवानखाने वैठो नवाव पातसाहजी की हजुरि सो आवैगे तव मै भी साथी आऊंगा।

श्री महाराजा जी सलामती। अरज दासती करार मिती माह वदी ८ वार सोमवार मि० लिखी हजुरि भेजी पछै सो सारी हकिकती अरज पहुंची होसी जी। परवान फारसी वा हीदुई करार मीती पोस सुदी १५ का लिख्या ईनाइत हुवा था सो मि० माह वदी ८ सोमवार आय पहुंचा जी, माथे चढ़ाय लिये, खांनजाद

सरफराज हुवां। अरजदासति साहिजादा ने वा खत दोन्यो नवावा ने वा खत हकीम सलेम नै इनायत हुवा था सो पहुचता जी। सो माफीक हुकम अरजदासती साहीजादा जी नै हकीम सलेम की मारफती गुजरानी जी। सो साहीजादे जी कान्हजी की वा कीसोरदास कि बहोत दीलासा करी वा खत दोन्यो नवावों का गुजरान्यां सो नवाबों भी राणा संगरामस्यंघ जी को खत लिखा कान्हजी वा कीसोरदास कै हवालै कीया तीह को नकल हजुरि भेजी छै सो नजरी गुजरैली जी।

श्री महाराजा जी सलामती। जो जो काम वेई कान्हजी वा कीसोरदासजी वंदा सो कहे है जी ही जायगा जाव अर ईनकी बहोत दीलासा कराउ हुजी।

श्री महाराजा जी सलामती। वंदे तलास किया जो फुरमान वा नवाजसी राणाजी कै ताई कढ़ाई। सो साहीजादेजी वा दोन्यां नवावों या फुरमाई जो पहैली अरजदासती वा पेसकस माफिक सदामंदी राणो जी पातीसाहजी नै भेजैलो तव फुरमान वा नवाजसी पातसाहो की होयलि। श्री महाराजाजी सलामती। आप राणा संगरामस्यंघ जी नै ताकीद लिखी अर अरजदासती वा पेसकस माफिक सदामंदी सीताव भीजवाज्यो जी ज्यो अैसे वकत में ईनका काम करी लीजे जी अर राणाजी का परवाना कान्हजी कै वा कीसोरदास उकील कै नाव मगावैगे क्यों जेवे वाकीफ हाल छै अर नंवा आवैला तो कोई दीन वाकिफ होता लागै लां अर साहीजादो जी, वो दोन्यों नवाव कान्हजी वा किसोरदास सौ निपट व्यार करै छै जी।

श्री महाराजा जी सलामती। परगना मोजावादी का ईजारा की स्यालु की तो कीसती संतोखराम गुमासतै प्रौहीत स्यामरामजी कौ नीसा करि अर उन्हालु की कीसती कै वासतै नटी गया, तव केसरीस्यंघ जी का गुमासता वंदा पासी आया जो वे उन्हालु का जामीन[1] कोई होय नहीं। तव वंदे संतोखराम को बुलाय भेज्यां तव संतोखराम नौ च्यारो कह्यो तव संतोखराम कही, ज्यो स्यालु मै हमारे रुपया ६५० आवे है हम जामीन किस भांति होई, रुपया हमारे हाथी आवै नही। श्री महाराजा जी सलामती संतोख राम जामीन उनालु को होव नहीं सौ प्रौहित स्यामराम जी को लिख्यो संतोख राम नै उनालु की जामनी कै वासतै आवै तो जामीन होय जो नही त्र परगना मजकूर मै आमील साहीजादा रफील स्याह[2] का आवैला जी सो जवाब सीताब ईनाइत होय जी, जी माफीक केसरी स्यंघ जी का गुमासता की नीसा कीजे।

श्री जी महाराजा जी सलामती। भंडारी खीवसी मीती माह वदी ११ वार वीसपतीवार घड़ी च्यारी राती गया नवाब महावत खां जी की मुलाजमती करी।

---

1. जामीन=ज़ामिन, ज़मानत।
2. शाहज़ादा रफ़िउश्शान।

नवाब बगलगीरी करी वहोत म्हेरवानगी सौं वैसया अर ठाकर लोगा को मुजरो हुवो। नवाब वहोत महरबान होय सीरोपाव दीयां फेरी पान दे अर वीदा कीया: अर फुरमाया जो कान्ही जी तुम नवाब खानखाना की मुलाजमती करो। तव भंडारी अरज करि जो १४ सनीसरवार का मुरत आछ्या है सो परसौ मुलाजमती करुंगा। तव महावत खां जी फुरमाया जो तुम हम सो तो आछे महुरत मैं मीले अवै सवान खानखाना सौ खानखा मीलो, वड़े नवावकै वहोत ताकीद है। तव भंडारी अरज करी जो नव नवाव फुरमावै तव ही तयार हु। सो राती कै तांई महै लांगा सौ च्यारी पहरै राती वा चार पहेर दीन मौ उघाड़ घड़ी ऐक कीया नही, तीस सौ मुलाजमती नवाव की न हुई जी। मीती माह वदी १४ वार सनीसर-वार नवाब खानखाना कै डेरै नवाव महावत खां जी जाय अर भंडारी को वुलाय भेज्यां तव भंडारी असवार होय नवाव खानखाना कै डेरै गया अर नवाव खानखाना की मुलाजमती करि, नजरी गुजरानी सो राखी। मुलाजमती करता ई नवाव खानखाना फुरमायां जो दोन्यो राजो हमारी वुरि फाकती करी। फरोज खा मेवाती तो रुसतम दील खां की असी रफावती करै अव तुम तो अैसे मौसर मैं भी हम पासी आवे नही। तव भंडारी अरज करी जो महाराजा अजीतस्यंघ जी नै तीन महीना ताव[1] आई तीसौ ढील हुई अर अवै सीताव हजुरि पहुचैगे। तव नवाव फुरमाई जो कहा तक आवे होयगे? तव भंडारी अरज करी जो पोहो-करजी[2] आये पहुचे होयगे, सो अवै सीताव हजुरी पहुचैगे। तव नवाव महावत खांजी नवाव सौं अरज करी जो अवार तो भंडारी को रुखसद होय काल्ही[3] जो कुछ फुरमावण होय सो फुरमावै। तव भंडारी को सीरोपाव दे नवाव वीदा कीया अर फुरमाया, जो काल्ही तुम साहीजादा अंजीमसान की मुलाजमति करो, अर अनार पातसाहजी कै वासतै वा साहीजादाजी कै वासतै ल्याया छो सो मगाय भेजो ज्यों, पातसाहजी के अनार गुजरानी तुम्हारे आये की अरज कीजै। मीती माह वदी ऽऽ वार दीतवार भंडारी जी नवाव महावत खां जी कै डैरे गया अर गुलावराय खानसामा की मारफती अनार वा कपड़ो गुजराती जो उठा सौ ल्याया था सौ गुजरां न्यो जी।

श्री महाराजा जी सलामती। खत नवाव महावत खां जी को वा अरज-दासती महैमदयार खां की वंदा न सौंपी थी सो हजुरी भेजी है सो नीजरी गुजरै लो जी।

श्री महाराजा जी सलामती। मीती माह वदि ८ सोमवार कै दीन वीजैस्यंघ

---

1. दुवार।
2. पुष्कर जी।
3. कल।

जी दयारांम दीवान[1] कै मीजमानी खावा जनाना सुधा पधार्‌या सो दयाराम नौ ईनाम हुई ।

खसजरी तास को सीरोपाव	गवयेक वकस्यौ तन रुपया ५००० को	पहुची को जोड़ो १
		घोड़ो खासा १

अर दयाराम नीजरी करी हाथी १ वा घोड़ा दोय, महोर १०० ऽऽ, खंजर जड़ाऊ १, घुगघगी १, पहुची ऐक, बीजैस्यंघजी की नीजरां की, पावा कपड़ा का दाम तोरा २ मा० १८ नीजरी कीया जी अर जो जनानो आयो छो त्याकी पहैरावणी करी जी ।

श्री महाराजा जी सलामती । बीरादरी का काम चलवा कै वास्तै बंदै रुपया ५००० टीप खानाजाद की महोर सौ राव भगवंत नै लीख दीई छै तीहकी नकल हजुरी भेजी छै सौ नजरी गुजरैला जी । वंदो उमेदवार छै जो पंजीराई ईनायत होय जी ।

श्री महाराजा जी सलामती । नवाब महाबत खां जी नौ रुपया ७५००० को खत नवाब नै लीख दीयो छौ तीकी नकल आगै हजुरी भेजी छै सो नजरि गुजरी होयली जी । अर रुपया २५००० की हुंडी की नवाब की बंदा सौ बहोत ताकीद छै सो वंदौ उमेदवार छै जो या भी हुंडी सीताब ईनायत होय जी । ज्यौ नवाब यादीदास्ती परी महोर करै जी । अर अजीतस्यंघ जी की बीरादरी को काम चल्यौ छै तीण तांई सरकार की भी बीरादरी को काम सरु होय जी । अर राय भगवंत भी पईसा लीया ही काम करैलो जी, गुलालचंद भी पईसा दे अर यादी-दासती तयार कराई छै जी । अर दफत्र नवाब महाबत खां जी का तोस्यंदा का खरच कौ वास्तै रुपया ५०० राय भगवंत की मारफती भेज्या छै जी पणी वे बहोत मांगै छै जी पणी वेता तो हाल दीया छै जी, अर वै या कहै छै जो गुलाल-चंद दीया छै ती माफीक थे भी दयौह सो जो हुकम आवै ती माफक अमल करू जी ।

श्री महाराजा जी सलामती । पातसाहजी का हसबल हुकम वा गुरजरबरदार पहाड़ों के राजों पौ गया जो तुम्हारी धरति मै जहा गरु होय जीहा सौ पकड़ी हजुरी भेजी ज्यौ । तब पहाड़ों के राजो की अरजदासती पातसाहजी नै आई अर नजरी गुजरी जो गरू हमारी धरती मै आया नही नाहणीही का राजा का पहाड़ मै छै । सो पातसाहजी खानखाना कौ फुरमाया जो तुम नाहणी का राजा को

1. महाराजा जयसिंह के छोटे भाई बिजयसिंह का दीवान ।

बुलाय कैंदी करो जो गरू को पैदा करि देह। तव खानखाना नाहणी का राजा को बुलाया अर ताकीद करी तव नाहणी कै राजा अरज करी जो मेरी जाणी मैं गरू नहीं अर मेरा दीवान गरू का सीख[1] है सो इसकी जाणी मै कहि होयगा, सो दीवान को औसा मार्‌या जो वसका जीवणा कठणी छै जी। अर दूसरे दिन पातसाहजी खांनखाना को फुरमाया जो दीवान के मार्‌यो क्या होता है तुम राजा को कैंदी करो वेंह गरू को पैदा करी देहगा तत्र मैं मारी डालुगा अर ईसका मुलक खाक स्यांह् करुंगा। तव नवाव खानखाना ईसको वुलाय क़ैदी किया अर लोग ईसका सव भागी गया अर वैं उसकी मा की अरजदासती आई छै जो मेरे वेटे को वेईजती मती करो मै गरू का तलास मै हुं सो पैदाकरि भेजुगी। सो जो ठाहरै ली सै पाछा थे अरज लीखौलो जी।

श्री महाराजा जी सलामती। वंदा हमेसा भंडारि खीवसी की लार दरवारी जाय है अर जीहा वै सलाह करि छोड़ी जाय छै जब वहाकी जो हकीकती वै आय कहै छै ती माफीक अरज लीखैं छा जी अर साहीजादा जी की मी मुलाजमती दीन येक तथा दोय मै करैला जी, म्हे[2] कै सवव ढील हुई छै जी।

श्री महाराजा जी सलामती। पंचोली जगजीवनदासजी नीपट परेसान छो सो अरज पहुचावा मै आवै नही जी, जै ईह वकत मैं क्यौ खरची ईनायत होय तो सलाह दोलती छै व वाका की फरद हजुरी भेजी छै सो दरवार की हकीकती मालुम होयली जी। मीती माह सुदी ३, संवत १७६७।

---

1. सिख्य।
2. बरसात।

क्रम संख्या १९

वकील रिपोर्ट संख्या २२

माघ सुदी ७, संवत् १७६७

॥ श्री राम जी

जैस्यंघजी

॥ सिधि श्री सरवबोपमा वीराजमान महाराजाधीरांज महाराजा जी श्री... जी देव चरण कमलान वंदा खानाजाद पीर गुलाम भीखारीदास कैनी पावा धोक अवधारि ज्यौ जी। अैठा का समाचार श्री महारांजाजी का तेज प्रताप थे भला छै जी श्री महाराजा जी का घड़ी घड़ी पल पल का सदा आरोग्य चाहिजे जी। अप्रंची परगना मालपुरां वा सरवाड़ कै वासतै नीसाण पातसाहजादा अजीमसानजी का बाद त हकीम सलेम जी का श्री जी के नाव ईनायत हुवा छै वा महाराजा अजीतस्यंघ जी कै नाव ईनायत हुआ छै अर हकीम सलेमजी हसबल हुकम दोन्यौ राजा कै नाव भेज्या छै अर पातसाहजादै अजीमसानजी भंडारी सौ वा खानाजाद सौ रुबरुह ताकीद फुरमाई तीसौ खानाजाद अरज पहुंचावै छौ जो माफीक हुकम साहीजांदा जी कै मुतसदी हजुरी का नै हुकम होय ज्यौ माफीक हुकम अमल करै जी। अर राजा राजस्यंघ[1] जी का मुतसद्या को रांजीनामौ बंदा कनै आवै जी ज्यो साहीजादा जी की नीजरी गुजरानो जी। मीती माह सुदी ७, सं० १७६७।

1. राजा राजसिंह = रूपनगर (किशनगढ़) का शासक।

क्रम संख्या २०

वकील रिपोर्ट संख्या ३५

माघ सुदी ७, संवत् १७६७

श्री परमेश्वर जी सत्य छै

स्वरुपि श्री लसकर वीजैकट कातुं महाराजाधराज श्री श्री श्री श्री श्री जैसिंघजी चरणकमलांन पातसाही लसकर था आग्याकारी भां० खीवसी लीखतुं सेवा मुजरो अवधारजो जी। अठारा समाचार श्री जी रे तेज परताप कर भला छै जी। श्री महाराजा जी रा घड़ी घड़ी रा पल पल रा सदा आरोग चाहीजै जी। महाराजा जी वडा छै जी, महाराजा जी साहिव छै जी, मोसु सदा म्हैरवांनगीं फुरमावे छ तीण था वसेख फुरमाव जो जी। श्री महाराज जी रा डीलां रा पांन कपुर गंगाजल आरोगणरा घणा जतन फुरमाव जो जी।

अप्रंचि श्री जी सलांमत। नवाव खांनखांना जी महावत खाँ जी सु मुजरो कीया री तो आगे अरज लीखी छै सो मालुम हुई होसी जी। तठा पछै माह सुद ५ रे दीन साहजादा श्री अजीमसं जी री मुलाजमत करी सो नवाव महावत खां जी साथे ले जाइ मुलाजमत कराई साहजादा जी तसवाख ने वीराजया था तठे जाई मुजरो कीयो, घणी दीलासा फुरमाई, नजीक आई उभो रहा नै दोनु अरजदासतां गुजराणी पछै अरज करी, दोनु राजां ने वंदगी फुरनस मालुम करी है, तरे साहजादे जी फुरमायो चांगेह तद अरज करी जहांपना का इकवाल म्हैरवांनगी सु चांगे हे, पछै फुरमायो—आवण की क्या खवर हे? तरे मे अरज करी—ढील कीस वासते करेगे ईसी जनाव के चाकर हे। पछै महावत खां जी वोलीया—कीतनेक दीनां मे आवेगे? तरे अरज करी—सीताव आवते हे पीण आगु जहांपन्हा से अरज करी हे तीसकी अरज हे। तरे साहजादे जी फुरमायो—कावल की खातर अरज करते हो, तरे अरज करी-जहांपन्हा सलांमत, यही अरज हे। तद फुरमायो—कावल माफ करेगे। जद महावत खां जी वोलीया—कावल माफ करावां तो कीतनेक दीनां मे हजुर आवै। जद अरज करी—पांच पांच, सात सात कोस री मंजल

करता सीताव आय पहुचसी, तीण सु श्री जी रे खीजमत मे अरज लीखा छै। श्री जी अठा री तरफ सु भांत भांत खुसाली फुरमावे, कीणी वात दीसा खातर मे न लावै ने घणी मुसवखती सु वीराजीया रेहजो जी ओर कीणी रा लीखाया पढाया उपर नीजर मत राखे। सारो कांम हुकम माफक ठीक लगाई नै अरज लीखु छु। श्री महाराजा जी रा कांम मेने श्री महाराज रा कांम मे तफावत राखु तो मने श्री महाराज जीरी आंण दै। ज्यादा अरज काऊ लीखु ओर वाजै हकीकत छै सो लीखण जु न छै। तीणरी पाछा सु अरज लीखु छु।

वऊड़ता परवाना सदा ईनायत कराव जो जी। सांवत १७६७, रा माह सुद ७ रव।

क्रम संख्या २१

वकील रिपोर्ट संख्या ३६

माघ सुदी ११, संवत् १७६७

श्रीरामजी

श्री महारांजाधीरांज सलामती

परवाना करांर मीती माह वदी ५ वा वदी ६ का लीख्या ईनायत हुवा था सो मीती मांह सुदी ३ बीसपती (बुधवार) वार आप पहुता जी। खानाजाद सरफराज हुवा माथे चढाय लीया जी। हुकम हुवो जो भंडारी खीवसी हजुरी पहुतो होसी सो जो रदबलदल हुई होय सो अरज लीखज्यौ, अर बीरादरी का काम कै वासतै हुकम आयां सो भगवंत राय की भाती भाती नीसा करी काम चलायो छै जी अर दरबार खरच का पईसा वेई भी उनही परी नाखी छै जो महारांजा अजीत स्यंघ जी कै दीया छै ती माफीक म्हे भी नीसा करांलां। हुकम आया जो रुपया ७५०००) को तमसुख जीह व्यापारी नै नवाब लीखाय देह तीनै लीख दीज्यौ सो माफीक हुकम तमसुख तो लीख दीयो, तीकी नकल आगै हजुरी भेजी छी सो नजरी गुजरी होयली जी। अर नकद रु० २५०००) की नीपट ताकीद छै सो उमेदवार हु जो व्यापारया की तसलै करी अर हुड़ी सीताब ईनायत होय जी। हुकम आया जो भगवंत राय अरज राखौ छौ जो चैनरांम भतीजा म्हांरां नै सरकार मै चाकर राखजे सो हकीकती अरज पहुची, ई वात को काई मुजायको छै म्हे भी पातसाहजी की हजुरी सीताब ही आवां छां सो भगवंत राय को भतीजो चाकर रांखणी सलाह दोलती छै जी सो चाकर राखी श्री जी परवानो ईनायत करै जी। ईनसे ती कांम काज वहोत है जी। अर खत उमीरल उमराव को ईनायत हुवा थां सो पहुता जी सो खत पंचोली जगजीवनदास नै सोप्या है सो जवाब आवैलो सो हजुरी भेजोलो जी।

श्री महांरांजा जी सलांमती। महावत खां जी की हुडी रुपया २५०००) की ईनायत होय तीहीकी साथी भगवंत राय की हुड़ी ईनायत होय जी, ज्यौ काम बीरादरी को चलै जी। रुपया कै वासते काम वंद छै जी।

श्री महारांजा जी सलांमती। हजुरी मै या ठाहरी छै जो जै हजुरी आवो तो काबील की मुहेम मोकुफ होय सो रदबदल दरम्यान छै सो जो ठींक पड़ैलो सो पाछा थे अरज लीखौलो जी।

श्री महारांजा जी सलांमती। परवानो फारसी करार ता २६ जीलहेद को लीखो ईनायत हुवो थो तारीख ७ जीलहेज आय पहुतो जी माथै चढ़ाय लीयो। खांनाजाद सरफरांज हुवो। हुकम आया जो हकीकती दरबार की तो जुदां बंद मै लीखबो करज्यो अर मुकदमा मालीत का जुदा बंद मै लीखबोकीज्यो सो माफीक हुकम बंदा अमल करैगां जी।

श्री महांरांजा जी सलामती। गरू पकड्या आवैगां अर सब नीजरीवानी सार गुजरांनैगां तो बंदा भी अरजदासती वैही थेली मै माफीक सलाह दोन्यों नवाबा की अरजदासती लीखी गुजरानोगा जी। हुकम आया जो रूपया २५०००) की हुडी का जवाब हीदुई परवाना सो जाणोलां सो परवाना हीदुई बंदा पासी ईही मै आया नही सो अबै ईनायत होय जी माफीक नवाब सो रदबदल करू जी अर हुकम आया जो तुम्हांरै नाव परवाना फारसी सादर होयला अर नकल दसतुर सावीक अरजदासती हीदुई करबो कीज्यौ सो माफीक हुकम अमल करूगा जी।

मीती माह सुदी ११, संवत १७६७, मु० साढोरो।

क्रम संख्या २२

वकील रिपोर्ट संख्या २३

माघ सुदी १२, संवत् १७६७

॥ श्री राम जी

श्री महाराजाधीराज सलामती

अरजदासती करारि मीती माह सुदी ३ वार वुधवार की लीखी हजुरी भेजी छै तीसौ सारी हकीकती अरज पहुची होयली जी। श्री महाराजाधीराज सलामती। आगै तो धायभाई रूपराम कै साथी वीजैस्यंघजी को महैल[1] सोलखणी जी हीडोणी गई थी अर अवै रा-ोड़ी रतलाम वालि की वेटी ओर भी हीडोणी को चलाई जी अर रुघनाथ स्यंघ चत्रभुजवत वागे० लार दीया[2] जो ईने भी ले जावो। तव राणी कही जो हु हीडोणी कोई जाउ नही न रतलाम जाई आवैरी जाउगी, महाराजा जी मुनै खावानै देहलां अर तीन दीन ताई मुखी रही अर वहोत हठ किया। सो जाणी ये तो वो है जो वैर रजपुत हीडोणी ले जाईलां अर जै कदाची आवैरी आवै तो श्री जी म्हेरवानगी फुरमावैला जी। श्री महाराजाजी सलामती। महीनो सवा हुवो सो म्हे राती दिन लागो रहै, घड़ी येक उघाड़ करै नही सो ऊट, वैल वा घोड़ा वा आदमी वहुत मुवा[3] सो अरज पहुचावा मै आवै नही जी अर नाज[4] की भी रसत पहुचै सो जुदी उरक सौ नीरख की अरज पहुचैली जी।

श्री महाराजा जी सलामति। गरु की खवरी लसकर मै यह है जो नाहणी का राजा की हद सौ तो नीकसी अर नाहणी का रांजा परै और राजो की हद छै सो उठै गयो। अर नाहणी का राजा की मा उस रांजा की वहैण थी सो वा उन राजा कै गई अर उसको कहा—जो मेरा वेटा को पातसाहजी नो रोक्या

1. महैल=रानी तथा उसके साथ की स्त्रियां एवं सेवक।
2. साथ किये।
3. मर गये।
4. धनाज।

सो मुवाही छुटैगा सो मैं तुम उपरी मरुगी। तब नाहणी का राजा का लोग वा उस राजा का लोगां मीली अर तलास कीया सो गरु येक खोहले मैं पाया सो दोन्यौ राजा की फौज सौ उस खोहले मैं लड़ाई होय है अर पीढी पीछे बरफ का डुंगर है सो माजी जावा नै जायगा[1] नहीं; अर पातसाही फौज बरफ कै सवब जाय सकै नही। सो दोन्यो रांजों सौ पातसाहजी की नीपट ताकीद छै। सो कोई तो कहै है जो पकड़या वा कोई कहै जो अबै पकडेगा। सो ठीक पड़ैलो सो पाछा थे अरज लीखो लो जी।

श्री महाराजा जी सलामती। आजी ईस पातसाही मैं रुसतम दील का मामला बहोत तेजी है अर पातसाहजी नीपट म्हेरवान है अर ईसका सुभाव श्री महा-राजाजी नै मालुम छै पांच हजार असवारां की फौज सौ सीहनंद की त्रफ नै जाय छै सो पण मे सुरजी करै सीताब[2] लसकर बारै नीकसो। सो श्री महाराजा जी सलामती। राजा राजस्यंघ रुपनगर वालै साहीजादा अजीमसानजी का दोय नीसाण—येक तो महाराजा अजीतस्यंघ जी कै नाव वा येक श्री जी कै नाव, वा दोय हसबल अमर हकीम सलेम जी की महोर सौ जो मालपुरा का गावां मैं सौ खंगारवता की गढ़ी ढहाई, देवासर वाड़ का गांवां मौ सो गोड़ा की गढ़ी ढ़हाय काढ़ी दे है सो ये करांवा छै जी। सो भंडारी जी सरवाड़ का गावां कै वासतै महारांजा अजीतस्यंघ जी नै अरजदासती करी छै तब राजस्यंघ जी दोन्यौ नीसाण वा हसबल अमर वा भंडारी जी की अरजदासती की नकल बंदा पासी भेजी जो ई माफीक थे भी महाराजाजी नै लीखी द्यौह सो बंदा की अरजदासती लीखाय वाका मुतसदी ले गया छै सो हकीकती अरज पहुचै जी।

श्री महाराजा जी सलामती। महैमदसाय व हाजरी जलेवु मुनसबदार पातसाही की, जागीर प्रगना मौजाबादी मै दाम येक लाख सात हजार पावै छै सो ईनकै वासतै आगै भी बंदै फुरमावै नवाब खानखाना वां महाबत खां जी के अरजदासती दोय च्यारी आगै करी छी सो जवाब ईनायत न हुवो। अबै नवाब खानखाना वा महाबत खां बंदा सौ फुरमावै है जो जागीर अवु महैमद कीलादार की ईजारै लीई छै ती माफीक ईनके पइसौ की नीसा करो, अर जे ईनकी जागीर ईनका मुतसद्या नै सोपीछै तो राजीनामा मगावो ये पातसाही खास जलेव मै चाकर है, अर बार बार अरज पहुचावै है।

श्री महाराजा जी सलामती। मुतसदी हजुरी कानै हुकम होय जो मुतसदी मजकुर कां नै जागीर मैं अमल दीयो होय तो वाको राजीनामो लीखाय बंदा कनै भेजेज्यो, नवाब की नीजरी गुवरानो जी। अर जै सरर मैं लीई होय तो पईसा

1. जगह।
2. शीघ्र।

यनायत होय जी, ईन को वासतै बंदा सो वा पचोली जगजीवनदास नै नीपट कसावलो छै जी अर साग होयला जी । नवाव खानखाना पचोली जगजीवनदास नै फुरमाई जो मै तुमको आगै फरमाया था सो तुम्हारे का जवाव आया ? तव जगजीवनदास अरज करी जो मेरै तो कुछ जवाव आया नहीं, तव फुरमाया जो तुम दोन्यो मीली सीताव जवाव मगावो, सो अरज लीखी छै जी; सो जवाव सीताव ईनायत होय जी ।

श्री महाराजा जी सलामती । नवाव खानजीहां वहादर मीती माह सुदी ६ नै बंगाला की सुबादारी हुई जी सो जीही दीन कुच करी गया जी अर बंदा सौ फुरमावै थे जो राजाजी का ईन दीनो मै आवणा होता तो हमारा मीलणा होता सो हमारी दुवां लीखवो कीज्यो । अर बंदा रांजा राजस्यंघजी कै गया था अर रांजा राजस्यंघ जी या कहो थे जो नाहणी का राजा की हद सो गरु वाहरी गयां अर नाहणी का रांजा की हद परै कोस ८०) पहाड़ मै है सो हाथी आवणा कठणी है अर पातसाही मै या खवरी है जो आंजी सवा मै पकड़या आवैगा सो आया अरज लिखोलो जी ।

श्री महाराजा जी सलामती । नवाव खांनखांना कै गुजरात सो जोड़ी कासीदा की आई तव नवाव कासीदा ने वुलाय पुछ्या जो राजा कहा है तव कासीदा अरज करी जो हम आवैरी होय आये सो राजाजी आवैरी सो कुच कीया अर भांभरा कै मुतसली डेरा छै अर आवैरी मे होली खेलवा की तयारी कराई छे । तब नवाव कासीद महावत खां जी पासी भेज्या सो नवाव महावत खां जी सो भी कासीदा ईही भाती अरज करी । तव महावत खां जी पीर महैमद खजान्ची को बंदा पासी भेज्या जो या क्या खवरी है तब बंदा कै नाव परवानो फारसी ईनायत हुवा था सो वजनसी दीखाया जो हमारै तो या खवरी आई है जो महाराजा सीताव हजुरी आवै है अर कासीद खीलाफ अरज पहुंचावै छै । तव नवाव फुरमाये जो तुम राजाजी को फेरी नाकीद लीख द्योह सो माफीक हुकम नवाव कौ अरज पहुंचाई छै जी सो आवैरी जाणा मनासव नही जी फरद वाका की अरजदासती मै भेजी छै सो दरवार की हकीकती मालुम होयली जी । मीती माह सुदी ११, सं० १७६७ ।

क्रम संख्या २३

वकील रिपोर्ट संख्या २४

माघ सुद १५, संवत् १७६७

॥ श्री परमेश्वरजी सत्य छैं

॥:॥......॥ सवारुप श्री लसकर विजैकट कानु महाराजाधिराज महाराजा जी श्री श्री श्री श्री श्री जैंसिघ जी चरण कमलान पातिसाहि लसकर था आग्याकारी भां० खीवसी लिखतं सेवा मुजरो अवधार जो जी। अठा रा समाचार श्री जी रे तेज परताप कर भला छै जी। श्री महाराजा जी रा घड़ी घड़ी रा पल पल रा सदा आरोग चाहीजै जी।

। अप्रचि श्री महाराजा जी बडा छै जी, साहिब छै जी, मोसु सदां म्हैरवानगी फुरमावै छै तीण था वसेख फुरमाव जो जी। श्री महाराजा जी रे डीलां रा पांन, कपुर, गंगाजल आरोगण रा घणा जतन फुरामवजो जी।

। अप्रचि श्री जी सलांमत—अठा री हकीकती अरजदासतां आगे खीजमत मैं मैली छै सो मालुम हुई होसी जी। तठा पछै फेर तीन दीन म्है री झड़ी हुई तीण सु दरबार जाइ सकीयो नही नै माह सुद १२ रे दीन उबरेडो[1] हुवो तरे पातसाहजी रे ईद रो जलुस हुवो, ईग्यारस रे दीन तो म्है रै सबब जलुस न हुवो नै माह सुद १३ रे दीन ईदरी ममारखी[2] देण सारु दोनु नवाबां रे डेरे गया। पछै नवाब खांनखांनाजी फुरमायो आज तुम पातसाहजी की मुलाजमत करो जद म्हे मुलाजमत करी। पातसाह जी घणी महरवानगी फरमाई। मुलाजमत कर उभो थो तठा सु हुं कांम कर नजीक जठे हजारी दोढ़ हजारी उमराव उभा रहै तठै उभो राखीयो नै तुरत सीरपाव रो हुकांम कीयो। सीरपाव पहरण गयो तेरे पाछा सु हुकम आयो सीरपाव लाल खासा पेहरावो, जद हुकाम माफक

---

1. उघाड़।
2. मुबारक।

भारी सीरपाव ईनाइत हुवो—सीरपाव १ राईया दोद राज नै ईनायत हुवो। पातसाहजी फरमायाँ राजा कै आवण की क्या ढील है तरे नवाव खांनखांना जी अरज करी सीताव आवते है भंडारी कुं आगे इसीज खातर भेजीया है, ईहां हज- रत सै कीणी नै अरज करी है राजा नही आवैगे जीससै अरज कराई है सीताव आवतै है।

। अप्रंचि श्री जी सलामत—कावलरी मुहम मोकुफ रखाई छै पातसाहजादे अजीमसांजी, नवाव खानखाना जी, माहावात खां जी फरमाय चुका छै, कावल मोकुफ रखी। सो अवे पातसाहजादाजी री नीसांण नै दोनु नवावां रा खत पाछा सु मीलाउ कु। आप अठा री तरफ सु सारी वातां खुसाली फुरमावजो जी, हमे तलास कर दुसरी जायगा रो तजवीज कर लेवां छां जी।

। अप्रंचि अठे नवाव खांनखांना जी ने श्री महाराज खत मेलीयो छै तीण मै लीखीयो छै म्हारै तो तयारी छै कुछ ढील नही पीण महाराज अजीतसिघजी के ढील है तीससे म्है वांरी ढील वेठा हां, तीणसुं आपनै अरज लिखु छु ईण भांत आपनै लीखणो मनासव नही ईण वात सु ईतफाक मे कुछ तफावत नीजर पड़ै। श्री महाराजा जी ईतरो हीज लीगणो पहुचैसी—सीताव आवा छा, श्री महाराजा पीण दर कुच पधारै छै; हमे साजादाजी सु कोल पंज्यो पिण लिखाय वेगी मेलां छा जी ने श्री महाराजा जी सु पीण अरज लीखी जैसु वैगा पधारसी नै परमेसुर गारै छै तो परवादिरी खीजमत लु छु जी।

। वाहूटता परवानां सदा भया कराव जो जी। सं० १७६७, माह सुद १५, भोमवार।

क्रम संख्या २४

वकील रिपोर्ट संख्या २५

फाल्गुन वदी ४, संवत् १७६७

॥ श्री राम जी

श्री महाराजाधिराज सलामती

अरज दासती करार मीती माह सुदी ११ सुकरवार की लीखी हजुरी भेजी छै तीसौ सारी हकीकती अरज पहुची होयली जी। श्री महाराजा जी सलामती। मीती माह सुदी १० वीसपतीवार नै सांझ ही सो मैह असो लागो जो डेरा सब फाटी गया अर आदमी वा घोड़ा, ऊट, बैल वागौ०[1] जो आगीला म्हे सौ बच्या छा सो ईह मेह सो वहोत मुवा जी सौ क्यो अरज पहुचावा मैं आवै नही जी। चोदा पहैर ताई म्हे वरस्यौ—सनीसरवार कै ताई ऊघाड़ हुवो, सुरज दीखाई दीई पणी म्हे लागो हि रहयो जी। श्री महाराजा जी सलामती। ईद की मुबारकवाद कै वास्तै खवास खां ऊरफ मीयां मारुफ नवाब खांनखांना कै डैरे आया थां अर बंदा वा भंडारी जी दीवान खानै बैठा था सौ खवास खां अंदर सौ नीकस्यां तब बंदा सौ मिल्यां बहोत म्हेरवानी का गीला कियां। अर भंडारी जी कै सुणता या कही जो तुम्हारै राजाको आपणे बाप दादा की रीत छोड़णी मुनासब नही थां अर जो कीया अर करो हो सो बुरा करौ हो। तब बंदे कही जो मै साहीब कै डेरै आऊगां, तब कही जो तुम्हारां मिलणा मुसकलि है।

श्री महाराजा जी सलामती। मीती माह सुदी १४ सोमवार हरकारां पातसाहजी सौ अरज पहुंचाई जो नाहणी का राजा की मां गरु कों लिया आवै है, अर लसकर सौ कोस बारा परी डेरा कीया है। अर वा अरज करै है जो महावत खां बकसी को हुकम होय जो अगाऊ आय गरु को लेजाय। तब चेलो को हुकम हुवां जो महावत खां सो ताकीद करी चलावो अर गरु को लोह का पीजरां तयार खारदार कीया है, तीसमै बैठाय अर ले आवो। अर इसके साथ दोय लुगाई

---

1. वगैहरा—इत्यादि।

पकड़ी गई है तीने को रथ मै वैठाय ले आवो। तव तीसरै पहैरी महावत खां जी दरवारी गया अर खानखाना भी दरवारी आये तव पातसाहजी फुरमाया जो तुम फोज ले जाय गरु को ले आवो। तव खानखाना अरज करि जो मेरे हरकारे आये है सो गरु पकड़या है सो नजदीक ल्यावे नही है। नजदीक आवैगा तव महावत खां जाय ले आवैगा। तव पातसाहजी फुरमाई जो तुम ओर हरकारे भेजो अर ताकीद करो जो सीताव ले आवै। श्री महाराजा जी सलामती। मीती फागण वदी १ पेसखानो पातसाही साढ़ोरां का ऊरा सौ चाल्यौ सो साढ़ोरा परै कोस येक जाय खड़ो हुवो जी।

श्री महाराजा जी सलामती। महाराजा अजीतस्यंघ जी की विरादरी की सनदी दरवार खरच का नोस्यंदा वागी० नै दे अर गुलाल चंद ऊकील तयार कराई थी सो वंदे आगै अरजदासती मै अरज लीखी छी सो अरज पहुची ही होयली जी। भंडारी जी आय नवाव अमीरल उमराव कै दरवार खरच वा नोस्यंदो का खरच दे अर सनदी वीरादरी की मसली लगाई है। सो दीन पाच सात मै सनदी तयार होयलि। श्री महाराजा जी सलामती। सरकार की वीरादरी की सनदी रुपया ७५००० को तससुख नवाव महावत खां जी लीखाय लीया, पाछै दसकत करी दीया; सो दफत्र का खरच वीनां सनदी चलै नहे अर नवाव या कहै है जो मेरे भी रुपया २५००० द्योह तव तसदी कोपरी मुहोर करो अर भगवतराय कहै है जो मेरी पाछीली वाकी वा हाल का रुपया द्यौह तो हु सनदी चलाई। सो वहा कोई वहोरा जुड़े नहीं तीसयो सौ ऊधारा ले अर काम चलाउ। सो हजुरि सौ खरची ईनायत होय जी तो भंडारी वा गुलाल चंद की सलाह सौ जो वादीयो होय सो तीनो वकस्यौ[1] के दे अर सनदी तयार करा जे जी। नत्र[2] ऊनकी सनदी तयार होय ली अर सरकार की सनदी वंद रहैली जी। अर नवाव महावत खां जी रुपया २५००० की सनदी अवादाकी वंदा पासी लीखाय लीई छै सो हुंडी सीताव ईनायत होय जी।

श्री महाराजा जी सलामती। परगना मोजावादी कै वासतै वंदे आगै तपसीलवार अरज लीखी छै सो अरज पहुंची होयली जी सो तीसका जवाव वंदा नै ईनायत हुवा आवै। साहीजादा रफील कदर का आमील वीदा होय है जी। सो जै परगना मजकुर सरकार मै ईजारो राखण होय तो मुतसदी हजुरी का नै हुकम होय जो प्रोहित स्यामराम की चीठी गुमासतां संतोखराम नै आवै ज्यों वाकी नीसा करै जी। श्री महाराजा जी सलामती। महैमदसायव खास जलेव मनसबदार पातसाही की जागीर प्रगना मोजावादि मै छै तीकै वासतै वंदे आगै अरज लीखी

1. तीनों वकिलों को।
2. नहीं तो।

छी सो अवै जै ऊसका जवाब ईनायत न होय लो तो नवाब खानखाना बंदा सौ फुरमाया है जो मै तुमकौ बैठाय रुपया की नीसा कराऊगा सो जगजीवन दास पचोली का लीख्या सौ सारी तपसीलवार अरज पहुची होयली जी। श्री महाराजा जी सलामती। ईद की नीजरी नवाब खांनखांना वा महाबत खां जी की करी माफीक तपसील जैल :

नवाब खानखाना जी की — १)) ६)

नवाब महाबत खां जी की — १)) ६)

दरबार की हकीकती सारी पंचोली जगजीवनदास का लिख्या सौ अरज पहुंचैली जी। फरद वकाया की हजुरी भेजी छै तीसौ सारी हकीकती अरज पहुचैली जी। और श्री महाराजा जी सलामती। नाहणी का राजा की मां के वासतै गहोणो रुपया लाख को पातसाहजी अलाहीदो करायो छै सो ठीक पड़या सारी अरज लीखौ लो जी। मीती फागण वदी ४, सं० १७६७।

अर पातसाहजी जीठै पैसखान लाय खड़ो हुवौ छौ तीठौ मी० फागण वदी ३ नै दाखील हुवा जी।

क्रम संख्या २५

वकील रिपोर्ट संख्या २६

फाल्गुन वदी ४, संवत १७६७

॥ श्री राम जी

श्री महाराजाधिराज सलामती

मीती माह सुदी १२ नैं पातसाहजी ईद करी सो मेह वहोत वरस्यौ सो कोई उमराव नोजरी करणं न आयां अर दूसरे दिन मेह रह्यो[1] तव सव ऊमरांव नोजरी करणं आये तव भंडारी खीवसी वा वंदा भी नवाव खांनखाना की जा अ नजरी कीई तपसील जैल—

भंडारी नजरी करी		वंदो नजरी करी	
खानखाना की	महावत खांजी की	नवाव खानखाना की	महावत खां जी की
२))	२))	१)) ६)	१)) ६)

तव नवाव खांनखांना वंदा सौ फुरमाई जो तुम्हांरा रांजा कदी आवैगे अर हमारे खतों का क्या जवाव आया? तव वंदे अरज करि जो अव तक क्यो जवाव आया नहीं है। तव नवाव हसी करि येनी फुरमाई जो तुम्हारै जवाव आवण नही, अर भंडारी सौ फुरमाई जो तुम हमारै दीवानखानै वैठो अर आजी तुम पातसाहजी की मुलाजमती करो। तव भंडारी जी तो वहा ही वैठा अर वंदा डेरै आया। जी घड़ी चार दिन पाछीलो वाकी रहया भंडारी पातसाही जी की मुलाजमती करि। पातसाहजी सीरोपाव वकस्यौ। दूसरै दीन सीरोपाव पहैरी साहीजादा अजीमसानजी कै मुजरै गया तव साहीजादै जी भी सीरोपाव दीया जी।

श्री महाराजा जी सलामती। भंडारी जी वंदा सौ कही जो तुम श्रीमहांरांजाजी नैं अरजदासती करो जो महांरांजा जी वहोत खुस्याल रहे हु सारा काम

1. रुक गयो।

भली भांती सरंजाम देस्यौ । तव बंदै कहि जो कावील[1] की मुहीम की मोकुफा खत के दसकत करावो अर साहीजांदाजी का वां नवाब खांनखांना का कोल पंजा ल्यौह । तव जवाव दीयो जो कावील तो म्हे येक दीन मैं मोकुफ करस्यां पणी काम घणा करणां छै सो वा मनसुवा को वंद कीया छै सो बंदा नै वचायां[2] सो मसोदा[3] सारी पातसाही का वंदवसत का कीया छै । तीममै महाराजा अजीतस्यंघ जी नै तो गुजरात को सुवो वा श्री जी कै नाव मालवा का थाणा वांध्यारा का घटताई राहचलावणां सो अरज पहुता पाछै जो ठाहरै ली सौ अरज लीखौ लो जी ।

श्री महाराजा जी सलामती । भंडारी जी बंदा सो कही जो महाराजा जी नै या लीखणा मुनासिब नही थां जो या खांनखाना को लीखै जो मै अजीत स्यंघ जी कै वासतै वैठा हु । तव वंदे कही जो अैसा तो महरांजाजी कदे लीखै नही अर जै लीख्या होयगा तो ईस भाती लीख्या होयगा जो महाराजाजी अर म्हे साथी आवा छा अर जवसै तुम आये तव सौ नवाव खानखाना वा महावत खां नै खत कोई आया नही । तव कही जो मेरे ताई तहकीक खवरी पहुची है जो महाराजा जी ईस भाती ही लीख्या है; अर वंदा जव भंडारीजी सौ रदवदल करै छै जव भंडारी जी याही कहै छै जो थे नचीत[4] वैठा रहो हु थाका मुढा आगै दौड़ो सारां काम करी लेस्यौ अर थे लीखौ सो माहारी अरजदासती परि मोकुफ राखौ, हु भी अरज दासती करवो करु छु । तव वंदै कही जो हु भी चाकर छु अर मुनै भी हुकम आयो छै जो भंडारी जी का ईतफाक सौ काम कीज्यौ सो मुनै भी जीठौ[5] थे जावो जीठै लार ले चाल्या करो । तव भंडारी जी कही जो जीठै जरुरी जाणलां जीठौ म्हे अर थे साथी चलालां अवार तो मुनै ही रदवदल करवा द्यौह ।

मीती फागण वदी १ बुधवार माफीक फुरमाये नवाव महावत खां जी कै रांव भगवंत भंडारी जी कै डेरै आयां अर पईसा लेणे के वासतै वहोत रदवदल करि । तव दोपहैरां को भंडारी वा राय भगवंत असवार होय नवाव महावत खां जी कै डेरै गया, महावत खां जी वहोत दीलासा करी फुरमाया—जो तुम लाख रुपये ल्याये हो सो हमको द्यौह हम तुम्हारे सव काम करोंगे । तव भंडारी अरज करि जो मेरे पासी सौ नवाव टीप मड़ायले अर जो जो अरज करु सो करी देह । तव नवाव जवाव न दीया, नाह्न को भंडारी डेरै आया । श्री महाराजा जी सलामती ।

1. काबुल ।
2. पढ़वाया ।
3. मसविदा ।
4. निश्चित ।
5. जी ठोड़—जिस जगह ।

नवाव खांनखांना कै भंडारी कमी जाय छै जो नवाव खांनखांना जवाव साफ दे है जो राजा तुम्हांरा आवैगे तो तुम्हारे सव काम होयगें नहीं त्र गरु का काम हुवां पाछै पातसाह वजमेरी जाते ही हैं।

श्री महाराजा जी सलामती। मीती फागण वदी २ बीसपतीवार सवारा ही भंटारी असवारी की तयारी कराई तव वंदा भी तयार होय कहाय भेज्या जो मै भी तयार हू हुम तुम साथी ही चलै तव भंडारी कहाय भेज्या जो आजी मुनै नवाव महावत खां जी सौ रदवदल करणी है तुम डेरे ही रहो। तव असवार होय हकीम सलेम के डेरै गया साहीजादाजी सौ मीलया, दो पहरा डेरै आयां, तव वंदे को वुलाय भेज्या अर कही जो अरजी मै साहीजादाजी सौ मीली आया अर साही-जादैजी मेरी भाती भाती तसलै करी अर फुरमाया जो कावील की मुहम रांजों सौ हम मोफुक राखी, अवै दोन्यौ रांजां सीताव हजुरी आवै तव वंदै भंडारी सो कही जो कावील की मोफुक राखणै का नीसाण सीताव कराय लीजे तो भला है, या वड़ी सनधी है। तब भंडारी जवाव दीया जो मै नीसाण की अरज करी आया हु सो साहीजादे जी फुरमाया है जो मै-येकवार पातसाहजी सौ फेरी पकी नीसां करी ल्योह, तव नीसाण दोन्यों राजों को कराय दयोहगां, सो जो हकीकती होयलि सो पाछा थे अरज पहुचाई लो जी।

श्री महाराजा जी सलामती। भंडारी की तवीयत श्री महाराजाजी नै रोसन छै सो दवाव तो सो क्यो कहयो जाय नही अर कीसु के डेरै जुदा भी गया जाय नही, अर साथी ले जाणे की हकीकती मालुम तीसौ भंडारी कहै है सो अरज लीखौ छु जी अर ये समाचार जै कोई और सुणैलो अर भंडारी कै ताई लीखैलो तो भंडारी जी वंदा सौ वहौत वुरा मानैगा जी। सो खानाजाद उमेदवार है जो या हकीकती श्री महाराजा जी ही पढ़ी वंद अरज-दासती का फाडी डालै जी। श्री महाराजा जी सलामती। सारी पातसाही का तो रंग है सो श्री जी सौ मालुम है जी अर वंदै भी आगै यै दर पै अरज पहुंचाई छै अर भंडारी जी येती हमगीर वात करै है सो क्यो अरज पहचावा मै न आवै जी परमेसुरजी करै जो भंडारी का कह्या माफीक काम सव होय, वंदा भी ईही वात का उमेदवार है जी, ओर सारी हकीकती दरवार की रदवदल जो ठांहरै ली सो पाछा थे अरज लीखौलो जी। मीती फागुण वदी ४, संवत १७६७।

क्रम संख्या २६

वकील रिपोर्ट संख्या २७

फाल्गुन वदी १३, संवत् १७६७

॥ श्री रामजी
श्री महाराजाधिराज सलामती

अरज दासती करार मीती फागण वदी ४ सनीसरवार कि लिखी हजुरि भेजी छै तीसौ सारी हकीकती अरज पहुचि होसी जी । श्री महाराजा जी सलामती । मीती फागण वदि ५ दीतवार नै पातसाहजी जसन कीया जी । मीती फागण वदी ६ मंगलवार ने पातसाहजी को पैसखानों सहारणपुर बुड़िया करे चाल्यो जी अर खबरि साहजीहानावाद की गरम है जी । श्री महाराजा जी सलामती । अमीर खां सौ खीजमति में की तगीर हुई अर उसकी जायगा स्याह नीवाज खां वकसी कर फोजदारी मुकर्रर हुई जी । श्री महाराजा जी सलामती । नवाव खांनखांना के दिन तीन हुवा जो नाक के भीतरि गुमड़ी[1] हुई सो नाक सुजी गई जी सो दीन तीन हुवा सो दरवारि न जाय छै जी अर महावत खां जी कै खांसी हुई सो खासी का जोर सौ गल सुवे हुवे है जी सौ वैभि दरवार न करै छै जी ।

श्री महारांजांधीराज सलामती । गुलालचंद सव दरवारी मैं खरच दे अर सनधि विरादरी की सव तयार करावै है जी अर सरकार की सनधी विरादरी की तव तैयार होयगी जव रुपया २५००० नवाव महावत खां जी नै वा रुपया ५००० राय भगवंत नै दीजेला वा दरवार खरच की हुंडी आवैलि । सो वंदे आगै भी अरजदासती करी है सो हकीकती अरज पहुची होयलि जी । अर हुकम आयौ जो परवानो हिंदुई ईनायत हुवो छौ तीसैं हुंडी की हकीकती जाणौला सो दोन्यों जोड़या नै परवानो हीदुई कोई पहुतो नहि जी ।

श्री महाराजा जी सलामती । केसरिस्यंघ राठौड़ मोजावादी ईजारा कै वासतै पईसा कै गुमासता ऊनका ताकीद करै है अर स्याम राम प्रोहित को लीख्यो

1. फुन्सी ।

साह संतोख राम नै आयो जो स्यालु मै रूपिया २२०० म्हाकै हाथी आया छा सो थे ऊघालु की कीसती मौ दाम येक यानै द्यौह मती अर जामिनी आपणी भागी ली ज्यी। सो परगना मजकुर नै आमील साहिजादा रफीलस्याह का आवै है जो सो जै ईजारा सरकार मै राखणाँ होय तो उनकी पहसा की नीसा कराजे जी अर ज इजारा न राखणा होय तो वंदा को हुकम आवै तो ऊनको जवाव साफ दीजे जी। मीती चैत वदी ५ नै रुपया ५०००) उनालु कि कीसती का लागैला जी अर यहां संतोपराम गुमासता प्रोहित स्यामरांम का जवाव साफ दे है सो उमेदवार हु जो इस का जवाव सीताव इनायत होय जी। श्री महाराजा जी सलांमती। पुरा साहजीहानावाद की कोतवाली कै वासतै वंदै आगै अरज लिखी छी सो वंदनिवाज-सी सो हजुरि मै मंजूर हुई थी अवै खांनाजाद उमेदवार है जो सनधि वहा की लाल वीहारि कै नाव ईनायत होय जी। लाल वीहारी साहजीहानावाद सौ खूव वाकिफ है जी अर आगै नवाव स्या (आ) सफदोला के दरवार की हकीकती सव दीली सौ ये ही लीखैं थे सो वहोत दीन सौ उमेदवार है जी अर जव सौ वंदा यहा आया है तवसी वंदा की लार ही है जी। श्री महाराजा जी सलामती— मेह-वादल वोत का सवव सौ खांनाजाद की देही[1] इन दिनों में वहोत जबुन होय गई है सो वोखद तो वंदे वैदा की वहोत खाई सो फायदा न हुवां। सो अवै वैद मिरगा वतावे है सो लसकर मै तो वैद नहितीस सौ खानाजाद उमेदवार है जो सरकार सौ ईनायत होय जी।

श्री महाराजा जी सलामती। गुरु कि खवरि पहैलि तो या थी जो गरु दीन दोय तीन मै पकड़्या आवैगा सो अरजदासती मै आगै अरज लिखी छी तो सौ मालुम हुई होयलि जी। अर अवे या खवरी छै जो वरफ वहोत पड़ी, दरा वंद होय गये सो नाहणी का राजा की मा की अरजदासती पातसाहजी नै आई छी, तीमै लीखी थी जो गरु हमारे पहाड़ मै है अर हमारे लोगों घेरिया है, सो वरफ कै आगै दाव पकड़णै का लगता नहीं सो वरफ पगल्या[2] पकड़ि हजुरि ल्याउली। सो गुरु का आवण केतेक दीन वरी पड़्या है। अर यह भी खवरि है जो ऊसपै[3] लोग, असवार, पयादा हजार आठ छै अर लड़ाई को तयार वैठा है सो नाहणी का राजा कुछ वल लगता नही। अर केतेक ईस भाती कहते है जो गरु तो निकसि गया अर केतेक लोग उसके वरफ के सवव सो रहे है। सो जो समाचार होयला सो पाछा थे अरज लिखीलो जी।

श्री महाराजा जी सलामती—ईस पातसाही की हकीकती कुछ लिखी जाय नही घड़ी मै तो पातसाहीजी कहुठिनै जावा को कुच फरमावै अर पेसखानो

1. देह—शरीर।
2. पिघलने।
3. उसके पास।

कहुठिनै जाय । पहेली तो खबरि छी जो लुधियाणा की त्रफ की खबरी थी जो वहाँ जाय गरु के सीखो को तबीह करे अर गरु के चक उठाय देह । अर अबै कुच सहारणपुर बुड़ी वाकी किया सो या खबरी है जो म्यान दवाब कि राहहोय साहजी- हानाबादजाय को जाय तिसौ पातसाहजी की हकीकती औ अरज पहुचावा मौ आवै नही जी ।

श्री महाराजा जी सलामती— वंदा तो वहां भंडारी कै साथी जो दरबार मै रदबदल होय है सो करै ही है जी । अर जी महारांजा जी अजीतस्यंघ जी की त्रफ सौ भंडारी जी की लार[1] बड़ा बड़ा ठाकर लोग आयै है सो जै सरकार की त्रफ सौ कोई बड़ा ठाकर लोग वा मुतसदी येक आवै तो सलाह दोलत है जी ज्यो वेभि दरबार में दरबदल करी अरज लिखबौ करैजी । श्री महाराजा या वात खत्री मुवारक मै न ल आवैगे जो बंदा आजुरदा होय या अरज लिखी है, सालाह दौलती है जो बंदा की अरज मुजर होय जी ।

श्री महाराजा जी सलामती । हुकम आया जो वीध्याधर माफीक लिखे नायब आपणै कै जाहरी करी, जो बीजैस्यंघजी का लोग जो आगै पुरा वाणारस[2] वा वंकुटपुर कामैथे सौ सनधी पहुचा भी हांसील मास ६ को अगाऊ मुतसरफ हुवे अर पथर वागौ० मसालो हवैलि को बेची दीयो । तीस वासतै तीन हसबल हुकम वा खत लीखे नवाब खानखानां के येक फोजदार वणारस के को वा दीवान ईलाहा- बाद के को वा दीवान पटणे के लीखाय भेजीयो, सो वंदा नवाब सौ अरज करि अर हसबल हुकम तथां खत नवाब के माफीक हुकम हासील करी भेजो ला जी ।

श्री महाराजा जी सलामती—घासीराम दीवान पीरांननाथ का बेटा को वाग वा जमी कदीम सौ कसवां आबैरि मे है अर अबै आबैरि वा वामण जोरा- वरी धरती वा कुवां दबावे है सो वां बाग वा जमी खांनाजाद को दिइ है । सो खांनाजाद चाहै है जो वहां बाग करै तीसौ बंदा कि या अरज है जो परवानो येक दिवान रामचंद्र वा चुहड़स्यंघ रांजावत कै नाव ईनायत होय जो माफीक सदांमदि कै वामण अमल करै जी ।

श्री महाराजा जी सलामती—मीती फागण वदी ८ वार वुधवार नै पात- साहजी को कुच हुवो सो घड़ी पाच राती गया डेरा दाखील हुआ जी । मीती फागण वदी ११ बीसपतीवार पेसखानो पातसाही चाल्यौ सौ कोस अढ़ाई जरिवी सहारणपुर कै मुतसलि जाय खड़ो हुवो छै ।

जी श्री महाराजा जी सलामति । नान्हुराम भाणीजो खानाजाद को है अर हजुरि चाकरि करे है सो उनने जागीर असी पाई तीहमै ईक माहो पैदा[3] न हुवो

1. साथ ।
2. वनारस ।
3. एक माह की अनुमानित आय ।

तोसो बंदा ऊमेदवार है सो मुतसदि हजुरि का नै हुकम होय तो माफीक पंचा के उनको भी जागीर देह जी जो खान्न जमा सौ हजुरि मौ चाकरी करवो करै जी।
श्री महाराजा जी सलामती—पातसाहजी फुरमाई जो सहारणपुर सौ पेसखानां मुक मलसपुर मै चलावौ, वहा हम सिकार खेलैगे ओर दरबार की हकीकती पंचोली जगजीवनराम का लीख्यौ सौ वां वाका की फरद सौ अरज पहुंचैली जी। मीती फागण वदि १३, दीतवार, संवत १७६७।

क्रम संख्या २७

वकील रिपोर्ट संख्या २६

फाल्गुन सुद २, संवत १७६७

श्री राम जी
श्री महारांजाधीराज सलामती।

अरजदासती करार मीती फागण वदि १३ दीतवार की लीखी हजुरी भेजी छँ तीसौ सारी हकीकती अरज पहुची होयली जी। मीती फागुण बदी १४ सोमवार साहीजादै जीहादार स्याह बहादर पातसाहजी सौ अरज करि जो कसवा ईदरी कै पासी नाहर मेरां करोलां नै रोक्या है सो हुकम होय तो नाहर की सीकार खेली आई। तब पातसाहजी रूखसद कीया सो हैलवा लसकर समेती साहीजादै जी कुच करी गया जी। अर लसकर मैं यह खबरी है जो कोकलतास खा[1] की जागीर पाणीपथ मैं है अर वहा उनके घर है सो उहा उनके मीजमानी खाणै जाहीगे।

श्री महारांजा जी सलामती। मीती फागुण बदी १४ नै पातसाहजी को कुच हुवो बुडीया कै डैरे कोस दोय पेसखानो खडो हुवो छौ तीठै दाखील हुवा जी। अर नवाब खानखाना कै नाक मै आजार ज्यादां सो नाक मै राधी पड़ै छै अर जोक तो लगाई थी पणी फुरसती न हुई फेर भी ओरू जोक लगां है तीह वासतै नवाव खांनखाना वा महावत खां जी का मुकाम कीया जी।

श्री महारांजा जी सलामती। बीजैस्यंघ जी चुरामणी जाट को नवाव खांनखांना कै अधिकार देखी अर डेरै बुलाया अर घोड़ा सीरोपाव उनको दीयां अर चुरांमणी सौ कही जो तुम नवाब सौ अरज करि हमकों मथुरा की फोजदारी दीलावों तब चुरांमणी कीसन स्यंघ नरूका का मीलांबा बेई अरज करी, तव कही

1. कोकलताश खां—बादशाह बहादुरशाह के पुत्र जहाँदार शाह का विश्वसनीय परामर्श-दाता, जिसे 2500/2250 का मंसब प्राप्त था तथा बहादुरशाह ने कोकलताश की पदवी प्रदान की थी।

जो तुम हम पासी ले आवो। तब दुसरै दीन चुरांमणी कीसन स्यंघ को ले गयां अर साह वलु नै परवानो लीख दीयो जो तुम वनाऊड़ सौ मुजायम मती हों म्हे यासौ औठै रामझी लेस्यां। अर खोहरी रूसतम दील खा साहीजादा रफील स्यांह की जागीर मैं थी सो ईजारै लीई रूपया...अर आधा वट वीजै स्यंघ जी को दीया अर आधा रूसतम दील आपणै राखी सो उठा की फोजदारी आधी तो वलु न हुई जी अर आधी परी रूसतम दील आपणा आदमी वीदा कीया जी। अर आगरे की गीरद[1] वा ईका परगनां सब चुरांमणी जाट ईजारै लीयां अर चुरांमणी जाट वा कीसन स्यंघ की यारवरी है जो मुथरा के आसपास की गढी ढाहणै कौ वीदा हो ही, सो सीरोपाव अलाहीदा हुवा छै सो जब पावैला तब अरज लीखोलो जी।

श्री महारांजा जी सलामती। जाट का मामला नवाव खांनखांना की मारफती अैसा वधी गया है जो अरज पहुचावा मै आवै नही जी।

श्री महारांजा जी सलामती। गरू की लसकर मैं या खवरी होय रही है जो नहाणी का रांजा का लोशा सी लड़ाई करी नीकसी गया जी सो यह खवरी वहोत गरम है जी अर कहै है जो भुटंतर के पहाड़ो मै गयां अर पातसाहजी ईस ही तफ झुकलाय झुकलाय डेरा करै है। कोस आठ दस नाहणी का रांजा का पहाड़ रहै है।

श्री महारांजा जी सलामती। फागण वदी ऽऽ मंगलवार साहीजादो अजीम शान जी माफीक हुकम पातसाहजी कै नवाव खांनखांना के डेरै आये थे तब चलती वेर हाथी वा घोड़ा नो वा जो वाहर नीजरी कीया सो रखाया नही, कही जो हमारै ही है, हम तो तुमको देखणै को आयै थे। अर तीसरै पहेरे नवाव दरबार कीया तब भंडारी वा खानाजाद जाय खैरायत कै वासतै रूपया गुजरान्या सो रखाया जी।

मीती फाग सुदी २, सं० १७६७।

1. गीरद—आसपास।

क्रम संख्या २८

वकील रिपोर्ट संख्या २८

[फागुण सुदी २, संवत १७६७

श्री रांम जी

श्री महाराजाधीरांज सलामती।

आगै तो भंडारी वा सारा राठोड़ यो कहै थां जो म्हे आपणे बल सो गुजरात को सुबो अजीत स्यंघ जी नै वा उजेणी को सुबो महाराजा जी नै लेस्यां। सो सब राठोड़ वा भंडारी येकठा होय बंदा को बुलाय कहि जो थे भी जोनकी बात करो, तब बंदे जवाब दीयां जो मेरा अर तुम्हारा कहैणा येक ही है। अर मै तो तुम्हारे साथी जाता ही हुं तुम कहो हो होसो मै ही कहयां फेरी जोनकी बात तो कुछ आधा नीसरया नही अर मनसुबा भी कुछ पेसी गया नही। साहीजादै जी भी ईनको मनै कीयां अर यह फुरमाई जो हम नीसाण तुमको करि देते है तुम खात्री जमा सो हजुरी आवो अर खानखांना वा महाबत खां भी हमारे नीसाण माफीक तुमको लीखी देहगे। तब भंडारी तो अधीका बोलणा छोड़ दीयां पणी रांठोडा कै यह बात होय हैं जो ई पातसाह पै तो म्हे कोई मारया जावा नही, म्हे पातसाही देखलीई, अजीत स्यंघ जी हजुरी कोई आंवै नही, साहीजादे जै कोई म्हा परी बीदा होसी तो उसको हम फोडी लेस्यां[1] अर जै फोज आसी तो फोज कै म्हे सारै नही, जो आसी जीहनै मारी लेस्यां। तदी बंदै ठाकर लोगा सौ कही जो हमारे राजा का क्या हाल होयगा ? तब सब राठोड़ो कहां जो अजीत स्यंघजी आय अर महा-रांजा जैस्यंघजी को ले जाहीगे अर जै फोज पातसाही हम परी जाईगी तो दोन्यौ राजा येकठे होय नारनोल कनै ही मारी लेहगे अर जै पातसाहजी चलाई आवैगे तो हम देस उजाड़ी देहगे अर बीखो करैगे अर बीस बीस तीस तीस कोस परी कही मारैगे सो पातसाह जी तो हमसो उलझे रहैगे, अर दीखणी तो पातसाह सै गई है तब सब मुलक का बंदबसत उठी जाईगां अर खजानां कहाका बैठे बैठे

1. अपनी तरफ मिला लेगे।

चाहीगे तव पातसाही का बल बरस च्यारी पाच मै तुटी जाईगां, तव ईनका मारणा क्या है ? हमारै तो रांजा उदैस्यंघ ही सो चाकरी करणै लागे है, हम तो सदा भोमे ही रहे अर राजा अजीतस्यंघ जी ओतार उपज्या है सो हमै तो परवाह चाकरी की नही । अर भंडारी जी या कहै है जो महाराजा आये । नवाव महावत खां भंडारी सौ ताकीद वोहत करी जो राजा कहा तक आये है । तव भंडारी जी अरज करी जो मेड़ता सौ तीन मजल मैरे कासीद छोड़ी आये है । सो यह बंदा को बड़ा अचीरज है जो मेड़ता सौ महाराजा अजीतस्यंघजी तीन मजल उरै आये है अर अव तक सभरी[1] के डेरै आये होयगे । अर हजुरि सौ कुछ खवरी बंदा को लीखी आई नही, खांनाजाद उमेदवार है जो महारांजा अजीतस्यंघजी की खवरी हर जोड़ी मै ईनायत होवो करै जी ।

श्री महारांजा जी सलामती । खांनाजाद को लाजम है जो पातसाही का रंग देखै सो तपसीलवार अरज पहुचाई चाहीये जी । पातसी मै फोजवंदी होय है । मोहोकमस्यंघ राठोड़ को पातसाहजी पंच सदी ईजाफा दीयां अर जवाहर जुदा कीया है अर मीरजा रूसतम की फोज मै नाव लीस्या है । अर मीरजा रूसतम, राव सकतस्यंघ मनोहरपुर वाला नै कही अर वै गाम दीया था जो तुम पातसाहजी को अरजी गुजरां तो मैं तुमको अपणी फोज दाखील कराय ल्यौहगां। तव रांव सकतस्यंघ जवाब दीयां तो मै जुन मनसवदार हुं मुझ मै येती कुवती नही जो मै तुम्हारी फोज दाखील हुं अर मै हमेसां अजमेरी ही की राह चलावणै कै तालकै रहै आया हुं । तव रूसतम दील खां कहाय भेज्यां जो मै तुमको ख्वाना-ख्वाह मै अपणी फोज दाखील कराउगां । तव राव जी कहाय भेज्यां जो पचास हजार रूपयां तो मदती खरच को दीवावो अर आछ्या ईजफा पाऊ तो मै तुम्हारा फोज दाखील हुं । अर पातसाहजी का चलवा की कुछ गम पड़ै नही, जो अरज पहुचाई जाय, कहै कुछ करै कुछ है जी ।

श्री महारांजा जी सलामती । उमीरल उमराव नै खत आगै ईनायत हुवा था सो पंचोली जगजीवनदास की मारफती गुजरान्यौ जी । सो जवाव आया सो हजुरी भज्या है अर नवाव नै जो जगजीवनदास नै जुवानी फुरमाया तीस की हकीकती पचोली जगजीवनदास की अरजदासती सौ अरज पहुचैगी जी । अर नवाव महावत खा जी वा राय भगवंत वा दरवार खरच का पईसा कै वासतै आगै खानाजाद अरज लीखी है जो जवाव ईनायत न हुवा सो नवाव वार वार ताकीद रूपया कै वासतै फरमावै है जी ।

श्री महारांजा जी सलामती । महारांजा अजीतस्यंघ जी की वीरादरी की सनदी गुनालचंद तयार कराई अर सरकार की सनदी तुरत वंद छै ।

---

1. सांभर ।

श्री महारांजा जी सलामती। साहीजादो जीहादार स्या बहादर ईदू की तरफ सीकार गया है सो हजुरी सौ हरकारा बीदां होहीगे जो उठा की हकीकती पै दर पै अरज पहुचाबो करै जी, हरकार भेजता तो बंदा ही पणी हरकारा बंदा कनै कोई नही जी।

श्री महारांजा जी सलामती। लसकर मै यह खबरी है जो जसवंतपुरा वा हवेली तबेला सुधां हकीमुलमुलक[1] को पातसाह जी ईनाम बकस्यौ, या खबरी बंदै भंडारी सौ कही तब भंडारी जवाब दीयां जो ग्रेक घड़ी मै लेस्यौ। श्री महारांजा जी सलांमती......।

---

1. हकीमुलमुल्क—शाहजादा जहांशाह का प्रमुख परामर्शदाता।

क्रम संख्या २६

वकील रिपोर्ट संख्या ३७

फाल्गुन सुदी २, संवत १७६७

॥ श्री गोपाल जी सत छै जी

॥ श्री महाराजा जी श्री जैसंघजी

॥ सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा जी श्री......चरण कमलानु खानजाद खाकपाय पंचोली जगजीवनदास लिपतं तसलीम वंदगी अवधारजो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी का तेज परताप कर भला है। श्री महाराजा जी का सीख समाचार सासता परसाद कराव जो जी। श्री महाराजा जी माईत हैं, धणी है, श्री परमेसुर जी री जायगां है। म्हे श्री महाराजा जी रा खानजाद बंदा हां जी। श्री पातिस्याह जी श्री महाराजा जी सु महरवान है। श्री महाराजा जी सुख पावजो जी। पान गंगाजल आरोगण रा घणा जतन फुरमाव जो जी।

। श्री महाराजा जी सलामत। परवानो श्री महाराजा जी को ईनायत हुवो सु माथे चढ़ाय लीयो, सरफराजी व खानैजाद नवाजी हुई जी।

। श्री महाराजा जी सलांमत। अमीरल उमराव का नाव को खत दीवान भीखारी दास जी खानाजाद नै दीयो सु गूजरानो। ईखलास बोहार जाहर कीयो। नवाब बोहत महरबानगी फुरमाई। जवाब को खत लिख दीयो है, सु हजुर मोकलो है सु नजर गुजरसी जी। अर नवाब श्री महाराजा जी का पधारवा की घणीताकीद करी जु अब महाराज अठै कही कै भरोसै न रहै, सीताब आवै जी।

। श्री महाराजा जी सलांमत। नवाब खानखाना जी नै अजार बोहत थो, अबै तो फुरसत है। राजा ऊदोतसिंघ जी की साथ खानाजाद अंदर गयो थो सु थोड़ी सी मांदा[1] के सोई[2] है पण आगाबीचै फुरसत है जी।

---

1. रुग्ण।
2. सुस्त।

। श्री महाराजा जी सलांमत। गुरू की अरज पोहोची, जु ऊठा सैं नीसरो अर खबर है भुटंत की तरफ गयो, पण चोकस न्ही कठीनै गयो है। चोकस हुवा अरजदासत करसु जी। गुरू कै वासतै पीजरो वनायो है तीमै तलै उपर चारू तरफ खीला आदमी रहै तीकै सारी तरफांसु भैंजी ई भात को बणो है सु गुलाल बाड़ के वारै गामा उप्र धरो है।

। श्री महाराजा जी सलांमत। वादस्याजादो अजीमुसां जी की जुवानी हकीम व नवाव खानखाना जी व महावत खां जी वहुत ताकीद कर कह है जु पातस्यांह जी श्री महाराजा जी का पधारवा के वासत बार बार य्याही कह है जुह मूं सू खनवह मुंकोल वह मुं अहद दूयैही तीमू बाता है तीनू सीताब आवै।

श्री महाराजा जी सलांमत। खानाजाद आगै भी पै दर पै अरजदासतां करी है अर अवै भी राहै खानजादगी कै अरज लीखी है जु महाराजा जी सीताब पधारजो जी। पधारबा की घणी ताकीद फुरमाव जो जी। महाराजा श्री अजीतसिघजी पधारै है तो भलां ही है न्ही तर श्री महाराजा जी बेगा पधारजो जी। अर महाराज का पधारबा कै वासतै दीवान भीखारीदास जी नै नवाब फुरमायो है सु य्यांकी अरजदासत सै जाहर होसी जी।

। श्री महाराजा जी सलांमत। खानैजाद आपकी परेसानी कठा मे लीखै। ई दरबार को वकील सदा उमराई भात[1] रहा है। अर खानाजाद वा मेघराज भी सदा वैही भात रहा यण य्या दीना मै आठ महीना हुवा महीना पायां तीसु नीपट परेस्यांन है सु महाराजा तो ईस रहै आबुजी खानाजाद का ही अय्यां मांकी है तीसु उमेदवार हु सीताब खबर लेजो जी। दोय हजार का तनखा को परवानो लाहोर मोकलो है जवाब आया अरज सादत करसु जी। मी० फागुण सुदी २, संवत १७६७।

---

1. उमरा (अमीरों) की तरह।

क्रम संख्या ३०

वकील रिपोर्ट संख्या ३८

फालगुन सुदी ३, संवत १७६७

श्री रांम जी

श्री महारांजाधीरांज सलामती

मीती फागण सुदी २ वीसपतीवार भंडारी वा वंदा नवांव खांनखांनां कै गये थे सो पहैली तो दीवांनखांनै वैठे अर खैराती का रूपया की फरद लीखी नवाव को गुजरांनी जी सो रखाये महारांजा अजीत स्यंघ जी श्री जी अफ गुजराने वंदै रूपया की अफ भंडारी गुजरान्या—

रुपया १००) १००)

तव नवाव खीरगाह मै दोन्यो को वुलाय लीया अर वातै तो कुछ करी नही हकीम ईलाज करै थे सो उस दीन सौ फुरसती वहोत देखी जी, फेरी पान दे दोन्यो को वीदा कीया जी। तव नवाव महावत खां जी नवाव कै डेरे आवै थे तव भीतली द्योढी भंडारी वा खांनाजाद सलाम करी तव खडे रहै, भंडारी सौ फुरमायां जो राजा अजीत स्यंघ कहा ताई पहुचे तव तेस करी कहां—जो तुम रांजों का भी काम खराव किया अर ओर भी लोग खराव कियां। तव भंडारी जी अरज करी जो राजा आये, तव गुसा करी नवाव की हजुरी गया जी। तव वहा सौ भंडारी वा खांनाजाद हकीम सलेम के डेरै गया तव हकीम सलेम अंदर सौ कहाय भेज्यां जो आजी मौ कांहीला हुं वाहारी न नीकसुगां, तुम डेरा जावों। तव हमो कहाय भेज्या जो साहजादै जी नीसण वेई फुरमाया है सो हमारै हवालै करो ज्यो हम हजुरी भेजां। तव उनो कहाय भेज्या जो काली तुम आईयों।

श्री महारांजा जी सलामती। वंदै वा भंडारी साहीजादा जी सौ भाती भाती रदवदल करि जो कावील की मुहंम राजों सो मोकुफ राखै सो साहीजादो जी कबुल करै है, नीसाण हाथी आवैगा तव हजुरी भेजांला जी।

श्री महाराजा जी सलामती। रूसतम दील खां[1] को तोपखाना दीखण का की दरोगाई हुई थी सो तो वाकां की फरद सी अरज पहुची होयली जी। सीरोपाव पायां पाछै पातसाह जी सो अरज करी जो दीखण के पयादे वीना तनखाह टीकैगे नही। तव पातसाह जी फुरमायां जो तुम परगना तजवीज करी ल्यावों, तव सांभरी वा मेड़ता की अरजी लीखी गुजरांनी जो वहाका हासील उनकी तनखाह होय, तव पातसाहजी मजुर[2] करी। तव गुसाई गंगाधर, रूसतम दील पासी रहै है सो ये समाचार वंदा नै कहाय भेज्या जी। तव वंदै फेरी केसरी स्यंघ पंचायणोत नै गुसाई मजकुर पासी भेज्यां तव गुसाई कहा जो देवती साचाहेडी की भी अरजी लीखी है सो आजी काल्ही मै पातसाहजी की नजरी गुजरांनैगां, सो हकीकती अरज पहुचै जी।

श्री महाराजाधीरांज सलांमती। ये समाचांर बंदै भंडारी सो कहां, तव भंडारी बंदा सो कह्या जो ये समाचार तुम हजुरी कों लीखो मती मे सगला काम सवारी लेस्यां। तब वंदै भंडारी सो कह्या जो या सरीयत लुण खाणै की नही जो ये समाचार हु न लीखु, तव भंडारी जी कही जो तुम हमारे कहे माफीक अरजदासती करबो करों, सो हुकम होय तो दरवार की खबरी बवाकी लीखबो करूं अर हुकम होय तो भंडारी जी की सल्हा माफीक अरज लीखबो करू जी। बंदा कोई भांती भंडारी नै नां रजावंद राखै नही है जी।

श्री महारांजा जी सलामती। नवांब खांनखांनां को खत बीमारपुरसी कां वा रूसतम दील खां को खत मुबारकबाद बेटा हुवा को ईनायत होय जी। रूसतम दील खां कै ताई पालकी झालकीदार पातसांह जी बकसी। रूसतम दील का मामला बहोत अधी कां है जी अर ईसकी तबीयत कोई भाती श्री जी सो छीपी नही जी। श्री महारांजा जी सलामती। तुरांब अली खां की अरजदासती नवाब खांनखांनां ने आई थी तीहमै श्री जी के वासतै बहोत भाती लीख्या था, सो तीहकी नकल हजुरी भेजी छै सो नजरी गुजरैली जी। मीती फागण सुदी ३, सुकरवार, सं० १७६७।

---

1. रूस्तम दिल खाँ जाजू के युद्ध में, जो शाह आलम तथा आजमशाह के मध्य जून 18, 1707 को लड़ा गया था, उपस्थित था तथा वह आजम का सिर काटकर शाह आलम के पास ले गया था। शाह आलम (बहादुरशाह) का विश्वसनीय सेनापति, जो सिक्ख अभियान में काफी सक्रिय था।

2. मजुर=मंजुर, स्वीकार।

क्रम संख्या ३१

वकील रिपोर्ट संख्या ३०

फालगुन सुदी ४, संवत १७६७

श्री रांम जी

श्री महारांजाधीरांज सलामती

मीती फागुण सुदी ४ सनीसरवार नै चोबदार दोय नवांब महाबत खा जी कां आयां अर भंडारी को वा बंदा को बुलांय ले गयां। तब चोबदारा नवाब सो अरज करि, तब नवाब फुरमाई जो दीवानखानै बेठो। तब पहैर दीन बाकी रह्यो तब नवाब महाबत खां जी दीवानखानै आये तब मुजरा कीयां। तब फुरमाया जो तुम बैठे रहो हम खाण खाय आई तुमकों कुछ कहैगे। तब स्याह कुदरतुंला[1] साथी थां तब स्याह कुदरतुला को फुरमायां जो नवाब फुरमाया है सो तुम ईनोको कहों। तब कुदरतुलै कही जो मैं भी भुखा हुं सो खाय कै कहुगां। तब महाबत खां जी फुरमायां जो तुमकों कुदरतुला सारा समाचार कहैगां सो तुम सुणीयो अर जवाब दीज्यो। तब स्याह कुदरतुला खां खाणां खाय आया तब खीलवती मैं भंडारी को वा बंदा को ले बैठा अर कहां जो राजो की क्या खबरी है? तब भंडारी जी अरज करी जो राजा आये। तब स्याह कुदरतुला कही जो राजो की बाजी बीगड़ै है मुचलका लीखी दयोह जो राजा के ते दीन मै हजुरी आवैगे। तब बंदै कह्या जो कावील की मोकुफी कां नीसाणं पहैली हमारै हवालै करों, तब कुदरतुला कहां जो मै नीसाण तुम्हारै हवालै करुगां तुम मुचलका लीखी दयोह। तब फेरी भंडारी वा बंदै या ठहैराई जो नीसांण हमारै हवालै करो अर मुचलका लीखाय ल्योह। तब कुदरतुला कही जो मै या हकीकती नवाब सो अरज करुं,

1. शेख कुदरतुल्लाह=बहादुरशाह के दरबार में प्रभावशाली व्यक्ति तथा शाहजादा अजिमुश्शान का कृपापात्र।

तब भंडारी वा बंदै कही जो अरज करो, तब अरज करी, सबको सीख दीवाई। तब घड़ी च्यार दीन रह्यो तब डेरै आयां जी।

श्री महारांजा जी सलामती। नवाब का रूपया कै वासतै वा राय भगवंत का रुपया कै वासतै परवांना बंदा कै नाव ईनायत हुवा था सो बजनसी बंदै राय भगवंत को दीखायां तब उनो कही जो नवाब यो कहै है जो राजों के ह्यासों[1] पैसे कोई आवणे नही, बुलाकीचंद का लीख्या आया है जो राजा जै स्यंघ जी दफलउकत करै है, नवाब भीखारीदांस सो ताकीद करैंगे तब पईसे आवैगे। सो नवाब के तो लांलच अर पईसा आवता ही आवै सो बंदा की सरम रहै बो कठणी है जी सो उमेदवार हुं जो हुड़ी सीताब ईनायत होय जी। अर नवाब फुरमावै है जो तुम पासी गहैणा है सो हमारै व्यापारयों के गहैणै धरी अर रूपया ले दयौह। सो बंदा की कुदरती नही जो बीना हुकम गहैणा धरी रूपयां ले दयौह हुं।

श्री महारांजा जी सलामती। भंडारी बंदा की भाती भाती जमाखात्री करै है जो राजा हजुरी आवैगे तब ज्यानै म्हे सुबो देस्या सो ही पासी तो म्हाका सुबा लेता केतीक बार लागै छै। ओर समाचार पंचोली जग जीवनदास का लीख्या सो दरबार का अरज पहुचैला जी। मीती फागु सुदीण ४, सनीसरवार, संवत १७६७।

1. यहाँ से।

क्रम संख्या ३२

वकील रिपोर्ट संख्या ३९

फाल्गुन सुदी ५, संवत १७६७

श्री रांम जी

श्री महारांजाधीराज सलामती

अरजदासती करांर मीती फागण सुदी २ बीसपतीवार वा सुदी ३ सुकरवार की लीखी हजुरी भेजी छै सो सारी हकीकती अरज पहुचैली जी। श्री महारांजा जी सलामती। फरवाना च्यारी फारसी ईनाईत हुवा सो मीती फागण सुदी ३ सुकरवार नै आय पहुता[1] जी। परवाना येक मैं हुकम आयां जो तुम लीख्यां था जो दोय नीसाण साहीजादा जी कां वा दोय हसवल हुकम हकीम सलेम की मुहोर सो येक तो महारांजा अजीत स्यंघ जी कै नाय अर येक श्री जी कै नाय मारफती रांजा रांजस्यंघ जी की हुवा है सो तुम्हारी अरजदासती आय पहुती सो खंगार यतां मैं पईसा छै सो तो वै माफीक हीसाब कै दीया ही जाय छै सो तुम भली भांती सौ राजा राजस्यंघ जी सौ रदबदल कीज्यौ। सो माफीक हुकम कै बंदा अमल करैला जी। परवाना दुसरा मैं हुकम आयां जो हुड़ी नवाव के रूपयो की वा भगवंत राय के रूपयो की पाछा थे पहुचैली।

श्री महारांजा जी सलामती। इन रूपयो की वंदा सौ नवाव की नीपट ताकीद करै छां सो परवानो वजनसी नवाव को गुजरान्यों जी तव नवाव फुरमाई जो ईन वात का परवाना तुम्हारै हमेसा आवै है अवै जै काम बीरादरी का चला-वणा है तो रूपया सीताव मगाय दयोह अर हुकम आया जो महैमद सायब का गुमानता को राजीनामों पाछा थे भेजांलां।

श्री महारांजा जी सलामती। जे तो यो राजीनामु सीताव वंदा पासी आवैला जै ताही वंदा का पीड़ सीताव छुटैगा जी नत्र ये रूपया लागैला जी। परवाना

---

1. पहुँचा।

तीसरा मै हुकम आया जो कासीदा नवाव सौ अरज करी सो सब लीखाफ अरज करी सौ बंदै बजनसी परवानी दोन्यों नवाबों कों गुजरांन्यां सो नवाव दोन्यों वहोत रजाबंद हुवा जी । अर परवाना चोथा मै हुकम आयां जो स्याह कुदरतुला के लीखै माफीक हाजी महैमंद साल्ह को रूपया ६०) नकद वा येक घोड़ो दे अर *अहेमदाबाद को बीदा कीयां अर बदर का साथी दीया है। अर हाजी महैमद सल्हे* का वां खत श्री जी का स्याह कुदरतुला नै ईनायत हुवा थां सो गुजरान्या जी, सो वहोत रजाबंद हुवा जी । अर जवाब पाछां थे लीखाय हजुरी भेजुलो जी ।

श्री महारांजा जी सलामती । साहजादा जीहादार स्या बहादर ईदां की त्रफ सीकार गया थां सो नाहर दोय मारी ल्याया जी । अर मीती सदर लसकर आय दाखील हुवा जी ।

श्री महारांजाधीरांज सलामती । साहीजादो रफीलकदर माफीक हुकम पातसाहजी कै नवाब खानखाना को देखणै को आया था सो नवाब हाथी वा घोड़ा वा खसबोई[1] नजर गुजरांनी थी सो ओर तो क्यौ भी रखाई नही अर खसबोई रखाई जी । अर पातसाह जी नवाब कै उपरी खैरायती कै वासतै रुपया ३२५०) माफीक कीताब कै भेज्या था सो नवाब ऊपरी खैरायती कीया जी ।

मीती फागण सुदी ४ सनीसरवार परभाती ही चोबदार नवाब महाबत खा जी का बंदा नै वा भंडारी नै बुलावणै कौ आया तब बंदा वा भंडारी नवाब खांनखाना कै माफीक बुलाये महांबत खां जी कै गये । तब उहा यब जाहीर हुई जो महाबत खां जी कै ताई पातसाहजी फुरमाया है जो तुम खानखाना के यहा रहैवो करों अर कीसी कों नवाब कनै आणै मती दयौह अर हकीम जाय अर कै साहीजादां आवै सो जाय अर हकीम खाणै को बतावै सो आपणै मुदे आगै खाणा खीलावों । सो माफीक हुकम के नवांब माहांवत खा नवाब खांनखांना कै डेरै रहै है । नवाब खांनखांना को दीन दीन थोड़ी थोड़ी फुरसती होती जाय है जी अर पातसाहजादो जीहादार स्या बहादर माफीक हुकम नवाब को देखणै आया थां सो माफीक दसतुर कै पेसकस गुजरांनी थी सो उन भी खसबोई ही रखाई जी ।

मीती फागुण सुदी ५......सं० १७६७ ।

1. खसबोई=इत्र ।

क्रम संख्या ३३

वकील रिपोर्ट संख्या ४०

फाल्गुन सुदी १२, संवत १७६७

श्रीगोपालजी सदा सहाय है जी ।

महाराजाधिराज महाराजां जी
श्री जैसिंघ जी

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा जी श्री......चरण कमलानु खाना-जाद खाकपाय पंचोली जगजीवनदास लिखतं, तसलीम वंदगी अवधारजो जी । अठा का समाचार श्री महाराजा जी का तेज परताप कर भला है। श्री महाराजा जी का सीख समाचार सासता करावजो जी। श्री महाराजा जी माईत है। धणी है श्री परमेसुर जी री जायगा है। म्है श्री महाराजा जी रा खांनजाद वंदा हां जी। श्री पातसाहजी श्री महाराजा जी सै महरबान है। श्री महाराजा जी सुख पावजो जी, पान गंगाजल आरोगण रा घणा जतन फरमाव जो जी।

श्री महाराजा जी सलांमत। नवाब खानखाना जी नै आजार है सु अरज पोहोचीने परहैजी करै है ती उपर हुकम हुवो महावत खां ताकीद राखे। सु महावत खां जी रात दीन नवाव कनै ही रहै है सु रूसतमदील खां अरजी कर सांभर व डीडवाणो व मड़तो अंवरी रीसाला की नकदी की तनखाह में हुकम करायो, तद नवाव खानखाना व महावत खां दीवान भीखारीदास जी व भंडारी खीवसी नै बुलाय कहो—आज ताई बात थांम राखी पण महाराज न पधारा अर आ दीना मे रूसतम दील खां खाली दरवार जाण तनखाह कराई सु दस हजार सै आपलो अर मेवातां नै वदसतुर साबक पुर मांडल की फोजदारी हुई, नुसरत खां चार पांच हजार सुवारा सै है अर मेवात की फोजदारी साहनवाज खां नै हुई सु बीस हजार सुवार कै नजदीक पातसय्याही फोजा वैनी नामै हुई, वड़ो फीसाद वै मुलक मै होसी। तद दीवानजी व भंडारी जी अरज करी सु राजा अजीतसिंघ जी मेड़तै आण पोहता है अर महाराजा श्री जैसिंघ जी राह मै ही

है सीताब हजुर आसी । तद नवाब कह्यो—एक महीना को मुचलको लिखदों जु वादसाहजाद अजीमस्यांजी की मारफत अरज कराय रूसतम दील खां नै मोकुफ रखावा । ई भात घणी रदबदलां सु नीठ दोय महीना को मुचलको ठहरो सु दीवान जीं व भंडारी लीख दीयो है सु अै सारा तफसीलवार समाचार आगै अरजदासत कीया है अर अबै वादसाहजादा अजीम सां जी को नीसांन व नवाब को खत मोकला है सु नजर मुबारक मै गुजरसी जी ।

सु अबै आवा की घणी ताकीद फुरमाव जो जी । जो महाराजा श्री अजीत सिघ जी का पधारवा की ढील होय तो वानै भीखा[1] को भी बल है अर वै घराणै सदा आगै भी होय आयो है अर थली नजदीक है उठै जाय वैठसी, पण श्री महाराजा जी के घराणै तो कदे ई भांत हुई नही सदा राह बंदगी का सुही दीन दीन तेज परताप वधतो गयो है तीसु श्री महाराजा जी अरजदासत पोहचत सवा सीताब पधारजो जी, पधारवा की ढील न्होय जी ।

श्री महाराजा जी सलांमत । राठोड़ दुरगदास[2] जी नै ईड़र को परगनो जागीर मे हुवो पंचास हजार रूपय्या मसादत[3] का दीराया गुरजबरदार रूसतम दील खां की मारफत फरमान ले चालो जी ।

श्री महाराजा जी सलांमत । राजा ईदरसिघ जी की पांच सदी जात कमी हुई अर कवर मोहकम सिघ नै पांच सदी जात पांच सै असवांरा को ईजाफो हुवो खवर है नागोर को उमैदवार कीयो है ।

श्री महाराजा जी सलांमत । अकवरावाद वा स्याहजहानावादि व लाहोर का सुवैदारा नैं हुकम हुवौ हीदुनै जाय जसीन आपको न करै अर हीदु जात राक अहल खीदमत है ताको जागीर तगीर करो ।

श्री महाराजा जी सलांमत । महमद सायव मनसवदार वादर जी को सादक महमद खां आसफदोला के पेसदमत तीको वीरादगी मै है तीको जागीर मोजावाद मैं है सु ईके वासतै दीवान भीखारीदास जी भी आगै अरजदासत करी है औ अठै सदा हंगामो राखै है सु खात्र मुबारक मै आवै तो ईजारो दीजे या वैका गुनाहता नै अमल दीजे जो ही खात्र मैं आवै सु ही करजो ।

श्री महाराजा जी सलांमत । लाहोर का व पेसावर का मुतसदी हरचैन उपर रुपया हजार २०००) की तनखाह खांनाजाद का रोजगार की तनखाह मै ईनायत हुई थी सु मवाफक हुकम कै लाहोर का पुरगना हवलदार करै मोकली[4] थी सु वै जवाब दीयो जु खरीफ को तो तामम दरीया वर्म वह गयो अर

तकावी देर वी कराई है सारो ही अठे रूपया हजार दोय अढाई का हासल है तामै आठ सै नोसै को अठा को खरच है, रवी का हासल का गरू आसी तद देसु सु ई ही भात दीवान भीखारीदास जी नै भी वै लिखो है।

मु श्री महाराजा जी सलांमत। खांनाजाद आपकी अरज वार वार कठा ताई लिखै जु महाराजा श्री मानसिघ जी सु ले अर आज ताई ई सरकार को वकील कदै ई भात हो न्ही सदा उमराई भात रहो है। अर या दीना मै अजीतसिघजी को व राणा जी को वकील तो वै भात रहै है अर खांनाजाद ई भात रहै जु पयादा सदा सरकार सै पाया गया है तांका देवा को व रोज खुराक को भाडा को व कपडा को वगैरह भात भात का कसाला सु कठा ताई अरज लिखु। अठा का अमला पहैला का महीना की तनखाह कदे हुई न्ही सदा अठै ही साहुकार उपर तनखाह रही है सु आठ महीना पाछै तनखाह हुई तीके वै यो जवाब दीयो सु या सारी जुवानी खांनाजाद का अय्यामा की है तीसु अवै उमैदवार हु जु मतसदां नै खांनाजाद की खरची के वासते ताकीद हुई है। पण महाराजा जी सलांमत।

खांनाजाद नै च्यार वरस हुवा वंदगी करता भागनगर मै वै भात की बीती सु अवै खांनाजाद मै कुछ ताकत परेसानी खैचवा की रही न्ही तीसु उमैदवार हु सीताव खवर लीजे जी।

श्री महाराजा जी सलांमत। मी० फागुण सुदि १२ सोमवार पहर डोढ दीन चढा नवाव खांनखाना को वाको हुवो वडो मुर वी कदरदां थां तीसु अवै श्री महाराज होली भी खेल चुका है सीताव पधारजो जी।

मी० फागुण सुदि १२, सोम, सां० १७६७।

क्रम संख्या ३४

वकील रिपोर्ट संख्या ३२

चैत बदी ८, संवत १७६७

श्री गौपालजी सहाय

श्री महाराजाधिराज महाराजा
श्री जैंसिघ जी

स्वस्ति श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री......चरण कमलांनु खांनाजाद खाकपाय पां० जगजीवनदास लिखतं तसलीम बंदगी अवधारजौ जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी रा तेज प्रताप थे भला छै, श्री महाराजा जी रा सीख समाचार सासता प्रसाद कराव जौ जी। पांन गंगाजल आरोगण रा जतन फुरमाव जौ जी। श्री पातिसाह जी श्री महाराजा जी सु महरवांन है श्री महाराजा सुख पावजौ जी।

खांनाजाद नवाजी को परवानो ईनायत हुवो सु माथे चढाय लीयो तमाम सरफराजी खांनाजाद नवाजी हुई जी।

ओरंगाबाद का पुरा मैं दाउद खां[1] अमल न दीयो सु दीवान भीखारी दास जी के परवांने में लिखी थी ज अमीरल उमराव[2] की सफारस व हसबल हुकम भेज जौ सु दीवान जी परवांनो दींखायो सु अमीरल उमराव कु ईलतमास दी है अर दीवानी कचहडी मे ईलतमास दी है सु हसबल हुकम दीवानी कचहडी सु कराय भेजु हुं अर अमीरल उमराव का खत दीवान नै अर दाउद खां कु लिखाय भेजु हुं जी।

---

1. दाऊद खां पन्नी—दक्षिण के प्रधान एवं मीरबख्शी जुल्फिकारखां का नायब, जिसे 7000 जात व 5000 सवार—दो अस्पा सेअस्पा का मंसब तथा बीजापुर, बरार एवं औरंगाबाद की सूबेदारी प्राप्त थी।
2. असद खां—औरंगजेब का वजीर जिसे बहादुरशाह ने वकील-ए मुतलक का पद प्रदान किया।

साह अजीमशंजी[1] सु रदवदल हुई अर भांत भांत नीशां करी सु हकीकत अर फुरमान तयार होय है तीको मजमुन दीवान जी के लिखै सु मालुम होयलो जी। अर शाह अजीमशां जी आपको नीशंन तयार करायो है तीकी हकीकत दीवानजी के लिखे सु मालुम होसी जी।

हीदायतुला खां[2] को मुवारकवादी को खत ईनायत होय जी। अर ईनायतुला खां खांनसामां है बैटो हीदायतुला खां है तीसु वेने भी मुवारकवादी को खत दीजो जी।

वजीर तो चंद रोज कोई होण को दीसे नही। अमीरल उमराव की तरफ तो तीन साहजादा है अर महावत खां की तरफ अजीमशां है सु ऐक रात को सोहरत हुई ज अजीमशां महावत खां ने वजारत दीराई तो उपर तीनु साहजादो की फोजां गुलालवाड़ उपर दोडी ज अजीम कुं महावत खां को मारडालो वे समे अजीमशां तो हजुर था अर महावत खां डेरे सुं सुवार होय चोकी खाने मे गुलालवाड़ मे जाय वेठे। चार पहर रात सव लसकर मे सोर रहो घोड़ा जीन रहा, दुसरे दीन अजीमशां अमीरल उमराव कुं वुलाय दीलासा करी, सु चंद रोज तो वजारत कही न होती दीसे नही। हीदायतुला खां ही कांम करेलो जी।

खांनाजाद ने लाहोर का व पेसोर का पुरा उपर दोय हजार तनखाह हुई थी सु लाहोर के पुरे के हवलदार जवाव दीयो—जमा नही सु तनखाह फेर हजुर पहली भेजी है सु नजर गुजरांनी। श्री जी अव खांनाजाद आपके वासते हर वार काई लिखे जो खातर मुवारक मे आवे सु सआदत आपकी जाण हुं जी।

सां० १७६७, चैत वदी ८, गुर तीसरे पहेर।

---

1. शाहज़ादा अज़ीमुश्शां।
2. हिदायतुल्लाह खां (सादुल्लाह खां)=इनायतुल्लाह खां का पुत्र तथा बहादुरशाह के शासनकाल में दीवाने तन व खालिसा तथा मुनिम खां की मृत्योपरांत (फरवरी 28, 1711) प्रमुख दीवान के रूप में कार्यरत।

क्रम संख्या ३५

वकील रिपोर्ट संख्या ३४

चैत्र बदी १३, संवत १७६७

श्री महाराजाधिराज महाराजा जी
श्री जैसिघ जी

सिध श्री महाराजाधिराज महाराजा जी श्री......चरन कमलां नु खानाजाद खाकपाय पंचोली जगजीवनदास लिखतं तसलीम बंदगी अवधारजो जी अठा का समाचार श्री महाराजा जी का तेज परताप कर भला है श्री महाराजा जी का सीख समाचार सासता परसाद करावजो जी। श्री महाराजा जी माईत है श्री परमेसुर जी री जायगां है म्है श्री महाराजा जी रा खांनाजाद बंदा हां जी। श्री पातिसाह जी श्री महाराजा जी से महरबान है श्री महाराजा जी सुख पावजो जी। पांन गंगाजल आरोगण रा घणा जतन फरमाव जो जी।

श्री महाराजा जी सलांमत। परवानो खांनाजाद नवाजी को इनायत हुवो सु मीती चैत बदि १० पोहोतो खांनाजाद नवाजी व सरफराजी हुई जी।

श्री महाराजा जी सलांमत। पनापुर कै वासतै हुकम आयो जु पनापुर लीजो ई मे थःको मुजरो होसी। सु परवानो पोहच स वां दीवान भीखारीदास जी का ईतफाक सैं नवाब महाबत खां जी नै खत दीयो अर परवानो बजनस पढायो। नवाब फरमायो अबार अरज करबा को वकत नही, महाराज कुच कर नजदीक आवै अर अरज कर परवानगी दां। सु श्री महाराजा जी का कुच कीयां की खबर आवै वैही बीरा अरज कराय लेस्यां जी सु यां हकीक्त दीवान भीखारीदासजी भी अरजदासत करी है जी।

श्री महाराजा जी सलांमत। हीदायतुला खां जी दसतुर कीफायत खां जी कै मीती चैत बदि ११ आदीतवार दीवानी कचहड़ी मै आण वेठो अर वादस्याहजी नैं वाजवुल अरज करी अर दवाव का मुतालवा वगेहरै का मुतसदा नै वुलाय कहो तीकी वीगत—

दवाव कै वासतै अरजी करी जु दोय लाख रूपय्यां को दर माहो लागै है सु आज ताई तो सरवराह हुवो अवै खालसो न्हो, खजानो न्ही तीसु खुदलमकां कै दसतुर उमराव सरवराह करै । ई भात की अरजी तो हजुर भेजी अर दवाव का मुतसदां नै कहो—खुलदम का के दसतुर उमरावा कना सु गुररै सफर सै सरवराह करावो । सु महाराज सलांमत । जो सरवराही हुई तो खांनाजाद की परेस्यांनी की हकीकत तो हर वीरां अरज होय है सु श्री महाराजा जी रा परताप सै ही दीन गुजरै है । सु दवाव की सरवराही तो मालुम अर दवाव का मुतसदी जी भांत को ई सरवराह करसी अर श्री महाराजा जी की दवाव सदा सारां सुं भलो भांत सरवराह रही है । अर महाराज श्री अजीत सिघ जी की तरफ सै भंडारी है सु तो कहे है दवाव लागसी तो सरवराह करस्या सु अै तो सरवराह करसी । अर दीवान भीखारीदास जी कै अर खांनाजाद के रदवदल हुई सु दीवान जी कहे है हजुर नै हुं भी लिखु हुं अर थे भी लिखो जु उठा सै सरवराही आवै । श्री महाराजा जी सलांमत ।हजुर से सरवराही आवै जी पहली दवाव की सरवराही हुई तो खांनाजाद उपर तसदीयो होसी सु हुं तो खानाजाद हुं मुनै तो वंदगी सु ही काम है पण य्यो सारो वोहार सरकार को है तीसु उमेदवार हुं जु अरजदासत नजर तसवां वोहरा उपर दर माहो आवै जु दवाव को दरमाहो लागै सु माह दरमाह दीयां जाय जी । श्री महाराजा जी सलांमत । ई वात की हजुर का मुतसदा नै घणी ताकीद होयजी जु वोहरा उपर सीताव लिखो कराय मोकलै, ई काम की ढील न करै जी ।

श्री महाराजा जी सलांमत । मुतालवा[1] तसरफ[2] कै वासतै अरजी करी जु खुलदम कांन का अमल मै कीतरायक उमराव व मनसवदार तो नकदी कीसत भरै था अर कीतरायक का दाम कटा था । सु अवै भी वैही दसतुर होय । सु ई भात की तो हजुर नै अरजी करी अर कचैहड़ी का दारोगा नै व मुतालवा तसरफु का मुतसदां नै वुलाय कहो—सारा का वकीला ने वुलावो जो नकद सरवराह करै तो कनै नकद भरावो, नकद न भरै तांका दाम काट लो । सु कीतरायक तो नकद भरसी कीतरायक दाम कटायदेसी । घणा मुतसद्रां सै साधन करसी । खानैजाद नै भी जो हुकम आवै तो मवाफक अमल करै जी ।

श्री महाराजा जी सलांमत । उमरावां की तथा मनसवदार वगहरै का ईजाफा की याददासत नवाव खानखाना थकां हुई सु तो हुई अर अवै जो याददासत आवै है अरज मुकरर सांनर का दसखतां नै, तो उपर दसखत न करै है जु ईजाफा वेदसतुर हुवा है तावी कीरोड़ा तलव हुई है । अर असल मनसव की

---

1. मुतालवा=राजा की तरफ शाही (मुगल दरवारा की) मांग ।
2. तसरफ (तसर्रुफ)=नियन्त्रण ।

बाकी तलब कीरोड़ा देणी है तीसु ईजाफा खुलदमकांन कै दसतुर होय सु ईकी भी अरजी हजुर मोकली है।

श्री महाराजा जी सलांमत। दागंनामा कै वासतै कहो—दीदु को तो हजारी ताई अर मुसलमान को तीन हजारी ताई मोजुदात देखो, तांकी मोजुदात न होय तांका दाम काटलो।

श्री महाराजा जी सलांमत। दवाब व मुतालवा वगहरै की अरजी हजुर गई थी ती उपर साद मुबारक हुवो जु खुलदमकां कै दसतुर करो। सु मीती चैत बदि १२ अरजी आई सु गुरा सफर से दवाब की सरबराही की चीठी होसी अर सरबराह करासी जी, तीसु योमे वड़ो वादे सीर हजुर मोकलो है। अरजदासत नजर गुजरत स वां सीताबी बोहरा उपर लिखो आवै जी। आबा की ढील हुई तो खानाजाद को अठै रहणो बोहोत मुसकल होसी जी। तीसु उमैदवार हु जू सीताब आवै जी।

मीती चैद बदि १३, सां० १७६७।

क्रम संख्या ३६

वकील रिपोर्ट संख्या ४६

चैत सुदी ५, संवत १७६८

श्री राम जी

श्री महाराजाधिराज सलामति

मिती चैत सुदि ३ दीतवार महावति खां जी को पातसाह जी फुरमाया जो राजों के मुतसधों[1] कौं सिरोपाव धौ अर ताकीदि करौ जो राजौं कों सिताब बुलावों। तब पातसाह जी तीसरै पहैर दिवांन आंम कीया तब हमौ अरज कराई जो राजा सिताब आवै है ? तब भंडारी वा वंदा को वा गुलाल चंद वा दोदराज मुनसी नों सिरोपाव ईनायत कीया तसलीमाति दीवान आम मौ वजाय लाऐ जी।

श्री महाराजाधिराज सलामति। मिती चैत सुदि ४ सोमवार पातसाह जी का पेसखांना लाहोर कों चला जो गुरू का सिख्यो नै चकगौ समद खां वा वाजीद खां सुवार पायदा १५०० सैं सौं नासा और लाहोर पर सुवारी की तयारी है सो फिसाद बहोत उठा। पातसाह जी सुनता ही पेसखाना चलाया अर हुकम कीया जो मंजल व मंजल पेसखांना चला जाय हम कूंच द्र कूंच लाहोर जायगे। श्री महाराजा जी सलामति। आगिला तो मोसर[2] गुरू का ऐसा था जो आप पधारते तो खाव स्वाह कांम होता अब दुसरा मोसर फेरि भी श्री महाराजा जी का भागो सो ही आय वाजवाया है जो सिताब पधारिवो होय तो सलाह दोलति है जी। पातसाह जी वा साहिजादा जी वा नवाब महावति खां जी भांति भांति करि दिलासा करी है और करते है जी। और कुंच पांच कोस जरीबां का मुकरर हुवा है जी, दीनतस्यंघ सेखावत का लिखा आवै सो वंदा को भी लिखी दीज्यो जी।

---

1. मुत्सद्दीयों।
2. अवसर।

श्री महाराजा जी सलामति । अव सव उमराव या ही कहते है जो राजा आंवने[1] की ढ़ील करैंगे तो वहौत वुरी करैंगे और नवाव महावत खां जी कहैं है जो मेरे ताई खत रूपयां ७५०००) का लिखि दीया है अर हाल रोक रूपया २५०००) देने का करार कीया था सो अव तक दीऐ नही सो और पैंसे क्यों करि देगें। सो निपट वहौत वुरा मानै है जी सौ उमैदवार हों जो नवाव के रूपया सिताव आवै जी ओर राय भगवंत रूपया ५०००) वा दरवार खरच का रूपया आंवै तो विरादरी को काम चलै जी। श्री अजीत स्यंघ जी का विरादरी का कांम सव होय चुका है जी। रुपया आया वीना सव काम वंद पड़ा है जी जो खात्र मवारक मै पसंद आवै तिसका जुवाव सिताव ईनायत होय जी ओर खत नवाव महावत खां जी कों वा वंदे के नाव प्रवाना ईनायत हुवा था वोली मलारणां वावती सो आय पहुंचा है जी। नवाव महावत खां जी ईन दिनौ मो जुलाव लीया है सो गुजरांन ने का मौसर हुवा नही है सो मौसर हुवां खत गुजरांनि जवाव लिखाय भेजौंगा जी। श्री महाराजा जी सलामति। लाल विहारी कोतवाल पुरा साहिजहांनावाद का की अरजदासति भेजी है सो नजरि गुजरैगी जी।

श्री महाराजा जी सलामति। भगवन्त स्यंघ खगांरोत नै खास मौहर सौं प्रवाना लिखी दीया था तीस मा प्रगना नरायणां मो० गागरड़ वगै० का दाम एक लाख वीस हजार अर प्रगाना पीड़ायन का दस लाख असी हजार सो मुसारण अलेह के सनद दरगाही तो पाही है पल अमल ऐताहं दामां मा पाये।

प्रगना नराईणां मो० गागड़ वगै० का दाम अठासी हजार	प्रगना पड़ायनि मो० ऐक कसवे अमल रह्यौ गांव दरोवसत नरुका कै तसरफ मो रह्या

श्री महाराजा जी सलामति। मसोदा पारसी[2] करि भेजा है, माफिक प्रवानो खास मौर सौ ईनायत होय तो थाकी खलासी पातसाही दरवार मो होय जी। मी० चैत सुदी ५, संवत १७६८, मंगलवार।

1. आने की।
2. फारसी

क्रम संख्या ३७

वकील रिपोर्ट नं० ४५

चैत्र सुदी ६, संवत १७६८

श्री राम जी

श्री महाराजाधिराज सलामति

हकीकति तमाम भंडारी की अरजदासति करार मी० चैत सुदि......की भेजी है तीसौं अरज पहुंची होयगी जी। श्री महाराजाधिराज सलामति। पहैली तो पातसाह जी के लाहौर चलने की वहौत ताकिदि थी जो वाका की फरद सौं अरज पहौची जो समद खां वा कुतव खां कांम आऐ, केरि अरज पहुंची जो ऐंक रैहै ऐंक कांम आया। तव पातसाहजादे रफीसाह हरद सो फुरमाया जो तुम हुकम पातसाहजांदे जहांदार नैं पहुंचावो जो तुम लाहौर की तयारी करी हम तुम को गुरू के सिख्यों की तंवही के वासतै भेजै है जो रदवदल दरम्यान है जो ठाहरैंगी जो अरज पहुंचाउंगा जी।

श्री महाराजाधिराज सलामति। भुव पति......राजा नाहनी का जो महावति खां जी के कैंदि था तिसके वासतै चेलां पातसाह जी की त्रफ सौं हुकम पहुंचाया सो ईसके तांई गुरू वाका पिंजरा वारदार है तिस मैं डारो तव महावत खां जी दरवार जाय पातसाह जी सौं अरज करी जो वह वेतकसीर है, देस के मुलक मैं सौं गुरू वाहिर निकसि गया तव पातसाह जी फुरमाया जो उसको सजावन करोगे तो सव जिमीदार सोख हो जांयगे ईसै खाहनखाह सजाय करो, तव फेरी महावत खां जी अरज करी जो उस पिंजरे मौ काठै वहुत सखत हैं डारते[1] हीं एक घरी मो मरैगा। तव पातसाहजी फरमाया मरि जायगा तौ वरजहंदम, तव महावति खां फेरि अरज न करी। तव पातसाह जी दरवार सो उठे तव महावति खां फेरि अरज करी तव पातसाह जी फुरमाया जो पिंजरा के कांटे

1. डालते।

मोडिवोह अर हुकम पातसाहौं का राखो। उसको पींजरा मां डालौ, तव चेला आय कांटे मोड़ि पींजरा मां डालि गया सो अब तक तो जीवै है। जो हक़ीकति होयगी सो अरज पहुंचांउगा जी।

श्री महाराजाधिराज सलामति। पातसाह जी की या खबरि है, जो कोई तो कहै है जो जहांनाबाद कों चलैगें कोई कहै है जमुना जी के किनारे कोई दिन रहैंगे सो ठीक पड़े अरज पहुंचाउगां जी और खत हदायतुला खां कों भेजा था सो आय पहुंचा है। सो मारफति पचौली जगजीवनदास की पहुंचाया है सु जुवाब पाछा थे भेजोला जी। ओर खत जवाब महाबतखां जी का सुजायत खां जी को लिखाय भेजा है सो नकल सौं सब हकीकति अरज पहुंचैगी जी और खत महाराजा अजीतस्यंघ जी का भेजा था सो पहुंचा सो रदबदल आप करया, नवाब महाबत खां जी सों मालुम करोंगा जी।

श्री महाराजाधिराज सलामति। प्रगने मेड़ता का ईजारा का रूपया स्यालु जमा थे अर चेलां की तनखाह मां या प्रगना था, तब नवाव महावत खां जी को चेलां जाय दवाया तब कहैबति सुनवति बहौत हुई तव नवाब महावत खां जी भंडारी को कहया जो चेलां परेसांन है, तुरत रुपया हजार पांच तो आज थ्री जो उनकी दिलासा होय तब भंडारी रुपया हजार पांच वैही घडी चेला के हवाले कीया औजु भी चेलां रहता रुपंया वासतै तंलव करि रहयौ है जो ठाहरैली सो पाछा थे अरज लिखौंगा जी। अर वंदे सो भी आय चेलौ तगादा कीया जो देवती सांचारी भी हमारी तनखांह मौ है सौ तुम भी रुपयां की निसां करो। तब मै उनको जुवाब दीया जो देवती सांचरी नवाव महावत खां जी वुलाकीचंद आपीन भेजा है मैवाफिक नही जो नवाव के क्या आया क्या वाकी है तव चेलौं नै नवाब कों जाय दवाया तव नवाव ने रूपयां तेईस हजार चैला नै दीया सो खात्र ममारक मौ आवै तो जो फसाले स्यालु मो प्रगना वहाव का रुपयां वुलाकीचंद नै दीयां है सौ वंदे को लिखी जेजीज्यौ जी।

मीति चैत सुदी ६, संवत १७६८, संणीसरवर।

क्रम संख्या ३८

वकील रिपोर्ट संख्या ४३

चैत्र सुदी १५, संवत १७६८

श्री राम जी

श्री महाराजाधिराज सलामति

॥ आगैं अरजदासति करार मिती चैत सुदि १२ की भेजी है तिसे संगली हकीकति अरज पहुंची होयगी जी। श्री महाराजाधिराज सलामति। पातसाह जी लोहौर पहुंचने की वहौत ताकीदि है जी। मिती चैत सुदि १४ व्रिसपतिवार पेसखांना पहार की तलहैटी दरा को चला है जी, सो या राह सिरहंद जाय निकसैंगी जी।

श्री महाराजाधिराज सलामति। फुरमांन तयार हुवा सो मारफति नवाव महावति खां जी चले है जी अर खत महावति खां जी अपना वंदे के हवाले कीया है सो हजुरी भेजा है सो पहुचां की जुवाव ईनायति होय जी।

श्री महाराजाधिराज सलामति। अगैं सैद सुजायत खां[1] के तांई खत नवाव महावति खां जी का लिखाय हजुरी भेजा था। तिस की नकल भेजी थी। तिसो सारी हकीकति अरज पहुंची होयगी जी, सो खत सुजायति खां को पहुंचाया होयगा। फेरि वंदे नवाव महावति खां जी सो रदवदल करी जो खत नवाव का सुजायत खां को भेजा है सो इस खत सौं कांम न होयगा। सुजायत खां सखती वहौत पकरी है, पातसाह जी सौं अरज करि हसवल हुकम लिखाय देंह तव नवाव कहा जो पातसाह सों ईन दिनो अरज करनी मुनासव नही, तव मैं अरज करी जो अरजी अपनी मोहर सौ पातसाह जी कों लिखि देता हो, नवाव पातसाह जी कों गुजरांनै अर जो मुझे फुरमावो तौ इसलाम खां के मारफति पातसाहजी के दसखत नवाव साहिव के नाव अरजी पर कराय ल्याऊ। तव नवाव महावत खां जी फुरमाया जो तुम अपनी मोहर सौं अरजी लिखिद्यो मैं पातसाह जी कों गुजरा-

1. सुजायत खां बारहा – अजमेर का सूबेदार।

नीगा, तब बंदे अपनी मोहर से अरजी लिखी दी सो नवाब ने पातसाह जी की नजरि गुजरांनि । पातसाहजी ने दसखत कीये जो जफरजगं सुजायत खां को लिखै जो जागीर वा जिमीदारी में प्रगने राजा के हैं तिसी मुजाहिमत होय पेसकस न लें, सो खत नवाव का हजुरी भेजा है, सो खत सुजायत खां को पहुचांवैगे अर नकल खत की हजुरी भेजी है तिसों हकीकति अरज पहुंचैगी जी ।

श्री महाराजाधिराज सलामति । किसनस्यंघ नरुका वा चुड़ामनि जाट को अमीरल उमराव रूसतमदिल खां की तानिन कीया था तब महाबत खां जी अरज करि मौकुफ कराया और सिरोपाव दिलाऐ अर दाखिल चौकी अपनी के कराऐ। अर नहानी के राजा को हुकम हुवा जो दिली लेजाव सलेमगढ़ मी बंदीखांने राखी। मिती चैत सुदी १५, संवत १७६८।

श्री महाराजाधिराज सलामति। गुरू का फिसाद का बडा मौसर आस वाज खाया है अर पातसाह जी गुरू के उपर जाय है ज ईस वकत मै महाराजा अजीत स्यंघ जी वा आपका पधारना होय तो वडी सलाह है जी जैरवाज मबारक सै पसंद आवै जो दौलतस्यंघ को प्रवानो ताकीदि को ईनायत होय जो राजा अजीतस्यंघ जी को को सिताब लै आवै जी। अर भंडारी खीवसी भी कहै है जो मै भी महाराजाजी को वहौत ताकीदि लिखि हैं ।

क्रम संख्या ३६

वकील रिपोर्ट संख्या ४८

वैसाख सुदी १, संवत १७६८

श्री रांम जी
श्री महाराजाधिराज महाराजा जी
श्री जैसिंघ जी

स्वास्ति श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री......चरण कमलांनु खांनाजाद खाकपाय पां० जगजीवनदास लिखतं तसलीम वंदगी अवधार जो जी । श्री महाराजा जी के सुख समाचार घड़ी घड़ी पल पल के भले चाहये जी । अठा का समाचार श्री महाराजा जी रा तेज प्रताप थे भला छै जी । पांन गंगाजल आरोगण रा जतन फुरमाव जो जी । श्री महाराजा माईत हे धणी है श्री परमेसुर जी री जायगा हे । म्हे श्री रा खांनाजाद वंदा हां । श्री पातिसाह जी श्री महाराजा थे महरवांन हे । श्री जी सुख पाव जो जी । पांन गंगाजल आरोगण रा जतन फुरमाव जो जी ।

खांनाजाद नवाजी रा परवांनां आयां वोहत दीन हुवा सु वदनवाजी रा परवांनां सदा ईनायत होय जी ।

महाराजा सलांमत । ईनायतुला खां तो खांनसामां है अर हीदायतुला खां वेको वेटो दीवान खालसा को व तन[1] को है । खांनखांना पाछै यां दोनु वाप वेटा का अखतयार है, जो ये कहे हे सु पातिसाह जी करे हे । सु चेत सुद १० खांनाजाद ने रात ने खीलवत मैं बुलायो अर कही—महाराज नही आवे हे सु कीस वासतें, जो अतलब थां को कहो सु करदां, अर कही—महावत खां नाहन का राजा ने कोल पंजो कीसम[2] दै पहाड़ा मे सुं बुलायो अर अठे आया पछै वेकोली[3] कर केद में

1. दीवान-ए-खालिसा व तन ।
2. कीसम—शपथ ।
3 वेकोल—वचन से फिरना ।

कीयो। अर खांनखांना मुवां पछे गुरु के वासते पीजरो बणायो थो सु वे पीजरा मे नाहन का राजा ने बेठायो, कुलफ जड़ दीयो। सु ई भांत की वेकोली महावत खां करी, तीसु उसवास सब कही न। महाबत खां का कोल को हुवो सु सब कोई साचा हे पण सब महावत खां सरसा[1] बेईमांन न है। तीसुं थे महाराजा कुं हमारी जुवानी लिखो जो महाराजा हमे अपने दील की लिखै। सचा कोल दे अर अपने मतलब जो दील मे हे सु हमे लिखै। पै वे भी अपने कोल सु न फीरै, जो बात होय सु सची होय। तब खांनाजाद कहीज आज तांई हमारी बात मै महावत खां है अर वह यह बात सुणे तो दुसमन होय जाय, अजीमशं हमारी बात मे है सु सुणै तो बुरा मांनै, तीसका क्या जतन कीजै? अर हमारी बात साहजादे वीगर करणी नही। ती पर कही हम तो साहजादै अजीम के ही दसतगीरफता[2] है, अजीमशं ही तुम कुं खुफया हम पास भेजे तो हम पास आवोगे? अर महावत खां सुं तो यह रदबदल जाहर न्ही करणी। जद सब तुम्हारे मतलब मवाफक काम कर चुकेगे तब महावत खां पर जाहर होयगी सु भी यह बात जाहर नही होयगी क राजा जी की खाहस[3] सुं काम हुवा या वकील न रजु करी। हमारे आवो तव रात पहर देढ पहर गये आवो रोज आवो मत, हम वुलावे तव ही आया करो। सु खांनजाद ये समाचार दीवान जी सुं व भंडारी जी सु खीलवत मे कहा। सु श्री जी नै ये समाचार दीवान जी भी अरजदासत करेला जीतने श्री जी को जवाव न आवे जीतने ईनायतुला खां सु हीदायतुला खां सुं रदवदल कुछ करी जाय न्ही। जेसो हुकम होय तेसो कीजे। पे अर अखतयार तमाम ईनायतुला खां हीदायतुला खां को है। महावत खां जी की अव बात उठ गई।

अमीरल उमराव जी की खवर मुसखत[4] तो न्ही पै खवर सोहरत[5] हे ज रवी अल अवल मे वजारत को सरपाव कलमदांन जड़ाउ दे तीस सुं अमीरल उमराव सुं भी खुफीया जोड़ राखणो जरूर हे। ओरंगावाद का पुरा की सीफारस मांगी तो याही कही—हम खत आवें तो सीफारस लिख दै, श्री जी ने चाहे हे ज हमारी तरफ आवे तो हम मतलब चाहे सु करदै जी, अर अव ही चंद रोज महावत खां की वातौ उपर भुले हे तो आप ही वाद चंद रोज के रजु हमसुं करोगे, हमारे अर राजा जी के घराने सदा ईखलास हे तीससुं हम चाहते हे इनका काम होय। आसफदोला सुं पहली कोल करार था तो हम केसा कीया अर महावत खां कोल

---

1. सरीसा (सरीका)—की तरह।
2. दसतगीरफता—पकड़े हुए, दाम के समान।
3. खाहस—ख्वाहिश—मरजी—इच्छा।
4. मुसखस (मुशख्खस)—तशखीस की हुई, जांच की हुई।
5. सोहरत—मशहूर।

कीया तो वरफी[1] राजा को कुरान वीच दे ल्याये अर पीजरे मे केद कीया, ये अैसी तरह कहे हे। अजीमशां भी अब अमीरल उमराव की ही पख[2] हुवा तीसुं अठे रदवदल हुई सु लिखी हे ज अब जो भला होय सु हुकम आवे पण मसल्हत अब खांनाजाद की नाकस अकल मे तो या आवे हे—जाहर तो वोहार[3] महावत खां सु राखजे अर वात न वोहार सब सुं राखजे अर समे देखजे तेसो साधजें।

खांनाजाद वकील हे सब दरवारां मे जाय हे। हुकम होय सब ठोड़[4] जाय, हुकम होय महावत खां के ही रहे ओर ठोड जाण सुं कदाच महावत खां बुरो मांन अर खांनाजाद को गीलो करे तो मंजुर न्होय अर हुकम होय तो कही के न जाउ। फर खांनांजाद पर अेतराजी न आवे, जेसो हुकम होय सु करू जी। जो दस ठोड़ जाउ हुं तो दस खवर सुणजे हे, सब सुं वोहार रहे हे अर महावत खां की वा वात थी सु अब न्ही पण जो हुकम आवे सु सही।

दवाव सब उमरावां ने लगी तीपर सब उमरावा का वकील ऐकठा हुवा ज म्हां सुं सरंजांम न होय। तीपर दवाव के दारोगे अरज की—वकील सरंजाम करै न्हे। हुकम हुवो—सरवराह खां कोतवाल वकीलां ने केद कर सरवराह करावे। सब कोतवाल सवनै बुलाया। सब का वकीला डेरा चवुतरा पाछे कराया। सब वकील रात दीन चवुतरे वेठा रहे हे। कोतवाल कहे हे—हुकम हे खाहनाखाह[5] सरंजाम करो। ती पर महाराजा जी की व अजीत सिंघ जी की तरफ की ईलत-मास[6] शाह कुतरतुला की मारफत अजीमशां जी कने दीवान जी व भंडारी जी भेजी थी—ज म्हाका दांम ही कटा रहे ती पर मंजुर न करी, दसखत कीया, जफर जंग सुरत दीहद ई का ये अरथ ज महावत खां समझाये सरवराह करावे। अर चेत सुद ११ कोतवाल सब वकीलां ने कही—चार दीन था की ईजत राखी आज सरवराह करो के केद कर सुं, वेईजत करसुं। तब वकीला कही—म्हे कहां सु सरवराह करां, उमरावा कने सरवराह करावो, वे म्हाने खरची दै, म्हे सरवराह करां। तब कोतवाल कही—थे थांका खावदा कने जावो जो सरवराह करै, ती कनै तो दानो उलावो अर सरवराह न करे ती कने लिखाय ल्यावो। हुं सरवराह न करूं हुं, अरज करसुं, कभी मनसब होसी। ती पर सब वकील आय आपका खावदां कने गया। ती पर अमीरल उमराव आसफदोला की व आपकी दाउद

1. वरफ के पहाड़ों के।
2. पक्ष में।
3. व्यवहार।
4. ठोड़=जगह।
5. खाहनाखाह (ख्वाह नख्वाह)=किसी-न-किसी तरह।
6. ईलतमास (इल्तेमास)=अर्ज, प्रार्थना।

खां की दवाव सरवराह करणी कवुल की, रूसतम दील खां कवुल की, महावत खां खांनज्मां खां कवुल की, राजा उदोत सिघ कबुल की। ओर भी वकील खावंदां सु सरवराही ले ले आवे हे। अवार तांई नही तो कही न्ही करे, अव देखजे काई चुके। अजीत सिघ जी के तो भंडारी सरवराह करसी। महाराजा ने केई अरज-दासतां करी पण दवाव को जवाव ही नही सु उमेदवार हुं सरंजाम सीताव आवै, दाम काटा है सु वहाल करासां। खांनांजाद अव आपकी हकीकती काई अरज लिखे, खांनाजाद हुं।

फुरमान म्हावत खां जी आपका आदमीयां कै साथ हजुर भेजो है सु नजर गुजरसी। चेत सुद १३ हीदायतुला खां फेर खांनाजाद ने वुलाय कही—हमारी तरफ रजु करो तो देवती सांचारी व मेड़तो दीराउं अर लाहोर की सुवादारी की नीयावत दीराउ, ऐक ने फोजदारी दील वीच लाहोर सुधी[1] दीराउं। सु ये समाचार भी दास जी ने भंडारी जी नै कहा।

हीदायतु खां जी ने मुवारक वादी रो खत दीयो थो सु दास जी खांनाजाद ने सोपो खीलवत मे गुजरानो, जवाव तयार करायो सु पाछा सु भेजसां जी।

सां० १७६८ बैसाख वदि १. सनउं।

पनांपुर के वासते म्हावत खां तो दर गुजार अर खत हीदायतुला, खां ने आवे तो गुजरान बहाल करावां।

नाहन का राजा ने दीली भेजो सलेमगढ मे केद राखे सु अव चलसी।

गुरु का चकमे सीख फेर पैदा हुवा लाहोर का साहदरा तांई अमल वाको है......।

1. दिल्ली से लाहोर तक।

क्रम संख्या ४०

वकील रिपोर्ट संख्या ४६

वैसाख वदी ११, संवत १७६८

श्री राम जी

श्री महारांजाधीराज सलामती

अरजदासती करांर मीती चैत सुदी १५ की लीखी हजूर भेजी छै तीसी सारी हकीकती अरज पहुची होयली जी। श्री महाराजाधीरांज सलामती। परवाना ४—पारसी ३ हीदुई १, वंदा कै नाई ईनायत हुवा थां सो वंदै सलाम करी माथे चढाय लीया जी, खांनाजाद सरफराज हुवां जी। परवाना ऐक मैं हुकम जाया जो सव उमराव दवाव सरवराह करै तव तुम भी हजुरी को अरजदासती कीज्यो, दवाव खरच की हुंडी भेजैगे अर दाम जो येवज दवाव की कटे है सो देवती साचाहेडी तथा मोजावादी में लीज्यो।

श्री महारांजाजाधीरांज सलामती। दवाव के वासतै अरजी साहांजादा जी को लीखी दी है जो दोन्यो रांजा हजुरी आवै है, दवाव के वासतै जो हुकम होयगा वा पंच अमीर करैगे सो हम भी करैगे। सो अरजी परी कुछ दसकत हुये नही है सो दसकत होय आवैगे तीस की नकल हजुरी भेजुगा जी।

श्री महाराजाधीरांज सलामती। उकीला पर वडा हगामा होय रहा है, रोजीना घेरी ले जाते है, आधी आधी राती पाछै घरी आवतै है।[1] जीवणी दाणा कीसो उकील अब तक नाख्या नही, गुरजवरदार भी भागे है सो जो ठाहरै ली सो पाछा से अरज लीखुगा जी। अर देवती साचाहेड़ी तथा मोजावादी मै तन्खाह का तलास करूगा जी। श्री महाराजा जी के परताप सौ माफीक हुकम सब काम होयगे जी। अर खत नवाव जफरजंग वा खांनजमा व वहादर वा अबीराहम षां को ईनाईत होवे थे सो पहुचावे है जी सो जवाव वोका पीछो थे

---

1. घरी आवतै=घर पर आते हैं।

भेजूगा जी । हुकम आगा जो छीयालीस हजार दाम परगनौ जलालपुर मै महैमद जम्मा वाँ महैमद अमां मनसबदार के है सो तीस की हकीकती हीदुई परवानां सौ मालुम होयगी । सो परवाना हीदुई बंदा पासी न पहुता जी ।

श्री महाराजाधीराज सलामती । हुकम आयो जो तुमों लीख्या थां जो खत तममुख अगरवाल का लीखाई भेज्या है सो हजुरी पहुच्या नही । गरीव नवांज सलांमती । अगरवाल का तमसुक की नकल बंदे जगजीवनदास उकील को सोपी थी सो वा आपकी अरजदासती मै भेजी होयगी जी । परवांना दुसरा पारसी मै हुकम आयां जो नीसान हीदुई दसकत खास कां वा हसबल अमर हकीम सलेम कामैल पद्य लालस्यंघ वा बेनीराम हाथी आय पहुतां सो इसके जुवाब की अरजदासती वा खता का जुवाव पाछै थे भेजैगे अर राजा अजीतस्यंघ जी नै लालस्यंघ हाथी ताकीद लीखी है सो श्री सीतारांम जी सौ उमेदवार है जो वेगाही आवना होयगा ।

श्री महारांजाधीरांज सलामती । अव तो सलाह दोलती यह ही है जो जेता सीताब पहुचै तैता ही मुजरा हैं जी । परवाने तीसरे मै हुकम आयां जो दोलत स्यंघ सेखावत का लीख्या आया जो राजा अजीतस्यंघ जी मेड़ता सो कुच कीया सो सीताव ही रांजगढ़ आय व्याह करी माहरोठ वा सांभरी की राह आवैगे जी सो तुम नवाव सौ अजर कीज्यौ, सो बंदै वजनसी परवांना नवाब कों पढ़ाया, नवाव नै वजनसी पातसाह जी सौ अरज करी, ती परी पातसाह जी फुरमाया जो जेता सीताव आवै जेता ही उनका मुजरा है । पमवानो चोथा हीदुई करार चैत सुदी १२ कां ईनायत हुवा तीसमै हुकम आयां जो पिरोहित स्यांम रांम को परगना मोजावादी की जामीनी न ठाहरी तीसौ केसोदास वा करमचंद व्यापारी की जामीनी लीखाय भेजी छै सो उधालु की कीसती वा व्यापारया कना दीवाज्यौ । सो माफीक हुकम करूगा जी ।

श्री महारांजाधीरांज सलामती । परवान २ फारसी ता० करार १३ सफर के ईनायत हुवे सो माफीक अवादै आय पहुता जी । वंदा सरफरांज हुवां जी । परवांना मै हुकम आया जो राजा अजीत स्यंघ जी रांजगढ आय पहुंचे है अवै सीतारामजी कीया तो सीताव ही हुजुर पहुचैगे वा अरजदासती साहीजादा जी को वा खत येक नवाव महावत खां जी नै वा खत दोय हकीम सलीम[1] कों वा खत येक रूसतम दील खा वहादुर कों वा खत हीदुई राजा गोपाल स्यंघ को ईनायत हुये थे सो आय पहुचे जी । सो मीती वैसाख वदी ७ वीसपतीवार नै खत नवाव जफर जंग को गुजरान्यां तव नवाव पढी वहोत रजा वंद हुए अर पातसाह जी की अरजी मै खत लगायां अर फुरमायां जो तीसरै पहरी हम अरज करैगे, फैरा

1. हकीम-उल-मुल्क=शाहजादा जहांगीर का प्रमुख सलाहकार (पार्टीज एंड पालिटिक्स, 78)

फुरमांया जो अरजदासती साहीजादा जी की कहा है ? तव वंदे अरजदासती वां नकल वजनसी गुजरानी तव नकल पढी फुरमायां जो खुव लीखी है। तव वंदे अरज करी जो जीस भाती हुकम होय जीस भाती गुजरानों। तव फुरमायां जो साहीजादो जी पातीसाह् जां की हजुरी आवैंगे तव मैं या अरजदासती साहीजादे जी को गुजरांनोगां अर मैं अपने खत की हकीकती अरज करोगां। अर साहीजादो जी अपनी अरजदांसती पातसाह् जी कों गुजरानैंगे। तव वंदा को फुरमायां जो तुम्हारे नाई परवांनां आया है। तव वंदा परवाना आपना नजरी गुजरांन्यां, तव नवाव पढ़ी फुरमाया जो जेते सीताव आवैं जेताही मुजरा है। अर नवाव रुसतम दील खां जी येक मजल अगाउ चाल्या है अर गोपालस्यंघ जी वहोत रजावंद हुवा अर कही—जो अवैं पेसखांना चल्या सो मैं आगे जाउ हुं सो आगली मजं(ल) जुवाव का खत लीखी घहुंगा सो पाछा थे लिखाई हजुरी भेजुगा जी।

श्री महारांजा जी सलांमती। पातसाह् जी कै वालतोड़[1] हुवा थां सो सो मुकाम दस कीया जी अर अवैं फुरसती हुई है। सो मीती वैंसाख वदी ९ सनीसर वार लाहोर की त्रफ नैं पातसाह जी को कुच हुवो जी। सो कुच भी कोस पांच जरीवी को कीयो जी। सो लसकर वहोत कसाईला सो आय पहुतो जी अर अवैं या हुकम कीया है जो अवैं अैसा ही कुच हमेसा होवो करैं जी।

श्री महारांजा जी सलांमती। नोताद होली की पातसाहजादा जी का लोगा नैं वा नवाव महावत खां जी का लोगा नैं दीई जी। अर सीरोपाव खांनाजाद नैं पातसाह् जी ईनाईत कीया था तींकी भी नोताद पातसाही लोगा नैं वा साहीजादा जी का लोगा नैं दीई जी। अर ईदरमनी[2] मुनसी हकीम सलेम कां को रुपया १००) भंडारी खीवसी अपनी सरकार थे दीयां तव वंदा नैं भी कहाय भेजी जो थे भी यांकी सरकार सौ दयोह, लीखने पढ़ने का कांम ईनसो हमेसा अपना रहैंवो करैं है, सो दीया जी।

श्री महारांजाधीरांज सलामती। अव कै लसकर मैं महैगाई हमेसा ज्यादा रहैबो करी अर महैंगाई कै सवव वंदा लसकर मैं वहोत करजदार हुवां अर सरकार मे भी रुपयां मसादती तरीक वहोत खाये अर अवैं खाणे को भी जुरता नही है। सो उमेदवार हो जो जवाव सोताव ईनाईत होय जी।

श्री महारांजाधीरांज सलामती। खत २ हकीम सलेम को ईनायत हुये थे सो वंदे गुजरानैं अर नीसाण कै वासतै रदवदल करी। सो हकीम जुवाव दीया जो साहीजादे जी सौ अरज करी लीखाय दयोहगां। सो सीताव लीखाई हजुरी भेजुगा जी।

---

1. बालतोड़ फुन्सी।
2. इन्दरमनी=शाहजादा जहांदार के प्रमुख परामर्शदाता हाकिम-उल मुल्क का मुंशी।

दरबार की हकीकती मागी पचोली जगजीवनदास का लीख्या सो तथा वाका की फरद गी अरज पहचैली जी । मीती वैसाख वदी ११, संवत १७६८ ।

श्री महाराजा जी सलामती । खत नवाब महाबत खां जी का भेज्या है सो नजरी गुजरैगा जी अर माफीक हुकम सीपारसी भट जी के वासतै लीखाय अर रूपीराम गुजराती हाथी भेजी छी जी ।

क्रम संख्या ४१

वकील रिपोर्ट संख्या ५१

वैसाख सुदी ११, संवत १७६८

श्री रांमजी

श्री महारांजाधीरांज सलामती ।

अरजदासती करांर मीती वैसाख वदी १३ बुधवांर की लीखी हजुरी भेजी छो तीसो सारी हकीकती अरज पहुची होसी जी । श्री महारांजाधीरांज सलामती । परवाना २ दफत्र दीवानी करार मीती वैसाख वदी ९ का लीख्या सादर हुवा सो आनी पहुचे । परवाना येक मै हुकम आया जो येवज दवाव के दाम ३४६००००० कटे है तीसकी जागीर मै प्रगना वहान्नी तथा मौजावादी मैलीज्यौ ।

श्री महारांजा जी सलामती । दवाव की येवज अमीरल उमराव के दाम कटे थे नो दवाव के वासतै उकीलो सो ताकीद हुई थी । तव नवाव ने कहया जो हमारे दाम कटे है सो हमको जागीर दयौह, हम दवाव सरवराह करैगे । तव सव अमीरों ईतफाक करी, यह ही अरज करी जो दांम येवज दवाव की कटे है तीस की जागीर पावै अर दवाव सरवराह करै ।[1] तव वंदे भी जगजीवनदास को कहयां जो तुम भी या ही जवाव दयौह । तव जगजीवनदास जागीर के वासतै हीदायतुला खां जी सौ कहयां । तव जुवाव दीयां जो सवका राह होयगा सो तुमारां भी राह होयगां ।

श्री महारांजा जी सलांमती । येती[2] जागीर पातसाह जी के खालसै नही जो येवज दवाव की जागीर दीजे । अर दवाव सरवराह कराजे सो अव तो दवाव की वात मुवहम होय ही है, उकीलो सौ तलव कोई नही जव जागीर येवज दवाव की देहगे तव दवाव को वराउ रद पचोली जग जीवनदास कना कराई हजुरी भेजुगा जी ।

---

1. सरवराह करै=वसूल करे ।
2. इतनी ।

श्री महारांजाधीराज सलामती। हुकम आयो जो परगना मेड़ता रांजा अजीत स्यंघ जी कै साढां चो माहा[1] मै ईजारे चुक्यां अर परगनो बहात्री सरकार मै छ माहा मै ईजारै चुक्यां। सो नवाब महाबत खा सौ अरज करी मेड़ता माफीक बहात्री को ईजारों चुका ज्यौ अर पेसगारा नै रूपया खरच का दोय है जीतीनै हजार लागै सो भी दे अर बुलाकीचंद नै परवानो कराय जे जी ज्यौ। श्री महाराजा जी सलामती। मेड़ता को ईजारो नाहर खां अपनी मुहोर सौ छ माहा लीख दीया था तब बंदै भी मेड़ता माफीक लीख दीया जी ती सही ईजारा माफीक नवाब भंडारी खीवसी सौ पईमा की तलब करै है जी अर तुरत साढ चो माहा का मजकुर कोई नही जी। अर जै मेड़ता का साढ चो माहा चुकैगां तो वंदा क्यो गाफील रहैगा जी। अर पहैली बहात्री का ईजारा चुकांउगा जी।

श्री महारांजा जी सलामती। परवांना ४ फारसी ईनागत हुवां सो सलाम करी माथै चढ़ाय लीया, खांनाजाद सरफराज हुवां। हुकम आया जो नाहनी का राजा की हकीकती लीखज्यौ सो बंदै तो आगै ही अरजदासती करी भेजी है जो नाहनी के रांजा को दीली भेज्या हुकम हुवा जो सलेमगढ केद रहै सो दीली जाय पहुच्यौ सलेमगढ पहुचाई आया जी।

श्री महारांजाधीरांज सलामती। हुडी रूपया ९५०) की बंदा कै नाई ईनाईत हुई थी सो आनी पंहुती जी, बंदा की खबर श्री महारांजाधीरांज बीना कुण लेहजी अर बदा जो ईहा काम करै है सो खीवसी भंडारी का ईतफाक सौ करै है जी। खात्री मुबारक ईस बात सौ जमा रहै जी। बंदा बीना ईतफाव भंडारी कै न करै है जी।

श्री महारांजाधीरांज सलामती। पहली तो उमीरल उमराव की दीवानगीरी की खवरी वहोत गरम थी अबै तो वात सरद पडी गई है जी। अर नवाव महावत खां जी सौ पातसाह जी वहोत मिहरवानगी करै है सो देखजे क्या ठाहरै जी।

श्री महारांजा जी सलामती। वीजैस्यंध जी आगै तो दोय महैल देस भेजे ही थे येक भारथ स्यंघ सीसौदया साहीपुरां वाला की वेटी सीसोदणी हजुरी रही थी सो अव मीती वैसाख सुदी ४ मगलवार कै दीन सुंदर खोजा साथ दे अर देस नै रूखसद करी जी। अर अव हजुरी मैं महैल कोई भी नही जी। अर दोय महीने हुये वीजै स्यंघजी पातसाह जी कै मुजरै कोई जाय नही है जी। न जाणी ज सवव क्या है जी? अर पातसाह जी येक कुच येक मुकाम पहार की तलैहैटी की राह चले जाते है सो परगना छतवनुर के उरै कोस पांच आय पहुचे है जी। अर खवरी या है जो सतनंज के दरीया वडी पुल वधै है सो उस राह होय लाहोर चले जाही।

---

1. साढ़े चार माह की जमा पर।

श्री महाराजा जी सलामती। परवाना करार ता० २४ सफर का लीखा ईनायत हुवा था तीस मै हुकम आयां जो अरजदासती पचोली जगजीवनदास की सौ अरज पहुची जो खांनखाना के मुवा पाछै हीदायतुला खां का मामला खुब है जो कुछ अरज पातसाह जी सौ करै है सो ही मनजुर होय है। सो वंदा सौ या हकीकती पचोली जगजीवनदास कही थी तव वंदे व भंडारी खीवसी वीचार कीयां जो वीना हुकम साहीजादा जी कै व महावत खां की सलाह वीना हीदायतुला खां के जाणा सुव नही। तव वंदै वा भंडारी खीवसी, पचोली जगजीवनदास को हीदायतुला जी के भेज्या सो वै रदवदल करै है सो अब तक कोई अैसी वातचीत नही हुई जो अरज लीखवा मै आवैं अव जो क्यौ रदवदल होयगी सो अरज लीखौंगा जी। हीदायतुलाखा पचोली मजकुर कै हाथी कहाय भेजी जो तुमारे वुलावणे का हुकम मेरै ताई साहीजादै जी कीया है अर तुम भी अरज करी च्यौंह सो हकीम मलेम सौ कही है। सो हकीम जी कहैगे तो हीदायतुला खां के जाहीगे जी।

श्री महाराजा जी सलामती। नवाव महावत खां जी का रूपया २५०००) जो हाल रोक देवा कै वासतै परवाना दोय तीन ईनायत हुये थे सो परवाना व मुजीव खानाजाद नवाव सौ कह्या को यासो ईस वात कों च्यारी महीना हुवा। रूपया हजुरी सो ईनाईत हुवा नही। सो नवाव की ताकीद वंदा सौ ज्यादा होती है, कहैते है जो तुमारां अवादां पीचेहत्र हजार रूपया जो जोहरयौ लो, तनखाह लीख दोई है सो भी आय पहुच्या सो रूपया की नीसा करो सो पचीस हजार रूपया तो तो नवाव न जरूरी देणा जी अर पीचेहत्री हजार रूपया को जुवाव ईनाईत होय तीस माफीक नवाव सो अरज करु जो।

श्री महाराजा जी सलामती। पातसाह जी सौ अरज पहुची जो साढारा की मवैसी गरु का सीखो घेरी सो कोई तो कहै है जो गरू के साथ वीनजारा थां नी न लीन्ही अर कोई कहै है जो नाहनी के राजा के लोगों लीन्ही। सो मवैसी तो ली न्ही। सो जो अव ठीक पडैगा सो पाछा थे अरज लीखौंगा जी।

श्री महारांजाधीरांज सलामती। राजा सतरसाल[1] को फुरमान वा हसवल हुकम सादर हुवां जो दीखणी[2] उजेणी की तरफ आये है सो तुम उजेणी सीताव आई उनको तवीह कीज्यो। तव खाड़ेराव परीहार जो राजा सतरसाल के वेने के साथ रहै है तीनको वुलाय नवाव महावत खाँ ताकीद करी। तव उन्होंनै अरज करी जो राजा सतरसाल की धामैनी पहुचे की खबरी आई है, फुरमान पहुचते वै मालवा की खबरदारी करैंगे।

---

1. छत्रसाल बुन्देला।
2. मराठा।

श्री महारांजाधीरांज सलामती । खीवसी भंडारी कै रांजा अजीतस्यंघजी का खत वां वंदा को पासी श्री जी का खत आया थां । सो मीती वैसाख सुदी ५ व्रिसपतीवार नवाव को खीलवत मैं गुजरानो तब नवाब भंडारी सो फुरमांया जो मैं ये खत पातसाह जी की नजरी गुजरानोगा सो असा न होय जो वै साभरी न आये होय । तव भंडारी जी अरज करी जो वै सांभर कै उरै आये होंईगे । तव वंदा सी फुरमाया जो रांजा जैस्यंघ जी खुब कांम कीया जो आवैरी फेरी न गये अर हमारै ताई या भरोसा है जो राजा जैस्यंघ जी खाहनाखाह आवैगे अर राजा अजीतस्यंघ कां आवने का भरोसा परता नही । तब भंडारी जी खीवसी अरज करी जो राजा अजीतस्यंघ जी वां राजा जैस्यंघ जी सीताब हजुरी आवैगे मै ईस ही वासतै ईहा वैठा हां । तव नवाव फुरमाया जो खुदाय तुम्हारा क्या करै ।

श्री महारांजाधीराज सलामती । नवाब महावत खा जी भंडारी खीवसी वा वंदा सौ फुरमावै थे जो मै पातसाह जी सौ अरज करी जो मालवा मै दीखण्यो का फीसाद वहोत है अर धामोनी की तरफ सी सतरसाल भी आवै है । अर ईधर सो रांजा अजीतस्यंघ वा जैस्यंघ को हुकम होय तो दीखन्यौ को तत्रीह ववाकी करै । तव पातसाहजी फुरमायां जां येक मरतवै वै हजुरी आवै हम उनको उमदा खीदमती फुरमावैगे, वै हमारे खुब बंदे है अर फुरमान हमारा सादर हुवा थां तीसमे पहुचे की अरजदासती आई नही । तव नवाव महाबत खा जी अरज करी जो साझ सवेरे मै अरजदासती हजुरी आवैगी । तब पातसाह जी फेरी फुरमाया जो तुम ताकीद लीखो जो सीताब हजुरी आवै, काम का उकत है ।

श्री महारांजा जी सलांमती । मीती बैसाख सुदी ९ सोमवार पचोली जगजीवनदास का रूका खांनाजाद के नाई आया थो सो बजनसी हजुरी भेज्यो है सो दवाब की हकीकती अरज पहुचैली जी । भंडारी खीवसी वा बंदे अरजी दवाब की मारफती नवाब महाबत खां जी दसकत पातसाहजादां जी का कै वासतै साह कुदरतुला नै सोपे है सो जो दसकत पातसाहजादा जी का होय आवेला सो पाछां थे अरज लीखौलो जी ।

श्री महारांजाधीरांज सलामती । बंदै पचोली जगजीवनदास नै रूको का जवाब लीख दीयां जो भंडारी खीवसी व गुलालचंद उकील महारांजा अजीतस्यंघ का वा वंदा अर तुम श्री जी की तरफ सौ हाजरी है सो जो आपस मै महाराजा अजीत स्यंघजी की ठहरै ली सो आपा भी करांला, थे सीताबी मती करो अर श्री जी का हुकम तो दवाब के वासतै आया ही है सो तुम दवाब के दामो की जागीर बसवा तथा मोजाबादी मै ल्यौह अर परवाना करांवो मै ईहा दवाब सरबराह करूगा अर तुमो नै कहया था जो हीदयतुला खां जी कहै है जो काम सरकार का होय सो तुम मुसै आय कहो हो, मै सब सरंजाम दयौहगां । सो दोन्यौ परगना

मैं येक परगनो दवाव के दामों नै कढ़ाई ल्यौवो ई काम मैं तुम्हांरा वड़ा मुजरा है। अर वंदा उस ही परगना परी दवाव सरवराह करै अर नही तरी जव ताई भंडारी जी सरवराह न करैंगां तव ताई वंदा भी ईस वात मै न आवैगां. तुम साफ जवाव दीज्यौ—जागीर देह अर दवाव सरवराह कराई लेह।

श्री महारांजाधीराज सलामती। पहाड़ की तलैहटी का सवव करी लसकर मैं म्हैं ज्यादा हुवा तीका सवव करी नवाव महावत खां जी वा रूसतम दील खां का खत का जवाव न आया है जी। सो जवाव पाछा थे हासील करी भेजो लो जी श्री महांराजाधीरांज सलामती। भारत स्यंघ जी सोद्यां साहीपुरा वाला के खवरी आई जो साहीपुरा री फोज सुवा अजमेरी का की आई अर राड़ी हुई सो आदमी धसेक[1] छोटा गोटा वारली फोज का कामी आयां अर कसवो मजकुर च्यारयो तफ नी फोज घेरी राख्यो छै अर ईहा भारतस्यंघ साहीजादा जीहादार स्याह वहादर की तईनाथ है सो अरजी साहीजादा जी नै गुजरानी है जो मैं तो हजुरी मैं, चाकरी हजूरी मैं करू हुं अर मेरा उतन ईस भाती खराव होय है। सो हुकम होय तो मैं देस की खवरी ल्योह अर रजपुत हु सो देस परी कामी आउगां। सो अव तक अरजी परी दसकत हुये नही है सो जो ठांहरै ली सो पाछा थे अरज लीजोलो जी। मीती वैसाख सुदी ११, सं० १७६८, मुकाम सतलंज डेरो कोस सात।

1. धसेक=दसेक—दस के लगभग।

क्रम संख्या ४२

वकील रिपोर्ट संख्या ५२

जेठ वदी ५, संवत १७६८

श्री राम जी

श्री महारांजाधीराज सलामती

अरजदासती करांर मीती वैसाख सुदी ११ सोमवार की लीखी वुधवार हजुरी भेजी है तीसो सारी हकीकती पहुचोली जी। श्री महारांजाधीरांज सलामती। जेठ वदी १ दीतवार को पेसखाना पातसाही सतनज नंदी को चाल्यां हुकम हुवां जो ऊहा जाय हवादार ड़ेरा खड़ा होई अरं चतुतरा वधै, ऊहा जसन करैंगे।

श्री महारांजाजी सलामती। महैमंद अमीखां[1] वहादर घर का हाथी ऊपरी चढ्या थां अर पातसाही मनसबदार अबदुल रहैमान भी हाथी ऊपरी चढ्या जाई थां। सो नवाव महैमंद अमी खा को हाथी थोडा-सा कम सत थां सो दुसरे हाथी ऊपरां दोडयां सो हाथी का पाछीला पाव दातो सो ऊठाई लीव अर कोस पावताई[2] लीया चल्यो गयो। तब हाथी तो ऊहा सो भाजी छुटां अर महैमद अमी खां महाऊत सौ कही जो हाथी को बैठाई मै ऊतरी पालकी असवार हुगां, तब महाऊत अरज करी जो अबार हाथी कहया मै नही, ठंढो पड़या[3] बैठाऊगा। तब हाथी को जीस तीस भाती पाणी ऊपरी ले गयां अर पाणी ऊपरी जा अर पाणी आपणै ऊपरी छड्क्या। अर महाऊत भी पाणी हाथी के माथै परी ड़ाल्या अर महाऊत बहोतेरा कहयां सो हाथी बैठा नही तब महैमद अमीखां जी खवास को कही जो तुम पछै सो उतरी जां तेरै पीछै मैं भी ऊतरूगां। तब खवास तो हाथी सो ऊतरी

---

1. मुहम्मद अमीन खां=संभल एवं मुरादाबाद का फौजदार तथा बहादुरशाह के शासन के प्रारम्भ में 5000/3500 का मंसबदार। इस समय गुरु बंदा के विरुद्ध शाही अभियान में कार्यरत।
2. पाव कोस=चौथाई कोस।
3. शान्त होने पर।

गयां सो हाथी बोल्या नही, फेरी महैमंद अमीखां जो भी हाथी सो उतर्या सो ऊतरता ही हाथी फीर गयां। सो महैमद अमीखां जी कै ताई हाथी नै दातो वीची दावी लीयां तव महैमद अमीखां जी की कमरी मै छुरी थी सो छुरी काढ़ी अर हाथी के मोहो भीतरी तीन घाव कीये सो घाऊ वहोत कारगर हुवां अर महैमद अमीखां जी को दाती वीची सौ हाथी डाली दीयां, अर हाथी चाहै था जो पाछले पाऊ की लात लगावे सो हाथी के फीरते पहेली महमद अमी खां जी दोई हाथी के ओर मारी, सो हाथी चीस मांरी आगां नै भागी गयो अर नवाव महैमद अमी खां जी नै पालकी मै डाली अर ड़ेरे ले आयां सो माथा मै वा वावा हाथ मै[1] जखम आई होजी। अर जीव जीवता वच्या। जव या खवरी पातसाह जी सो अरज पहुची तव पातसाह जी फुरमाया जो हमारा हाथी वच्या, जोनाऊर मुवा वो पड़्या मरो, तव खवास वाको फुरमायां जो तुम जाई हमारी तरफ सो खवरी ले आवो।

श्री महारांजा जी सलामती। पातसाह जी फरासखाना का दरोगा नै फुरमाया जो सारा परदा दुतरफां वड़ा करो हम तीसरै पहैर जारती को जाहीगे तव दारोगै सरा परदा वड़ा करी अरज करी जो तयार हुवा है। तव पातसाह जी खोजे को फरमाया जो खवरी ल्यावो जो कुण कुण ऊमराव आवे है तव खोजे ने तहकीक करी अरज करी जो महावत खां आया है ओर कोई ऊमराव आया नही तव पातसाह जी फुरमाया जो महावत खां को हजुरी वुलाई ल्योह। तव महावत खां जी हजुरी जाई सलाम करी, तव पातसाह जी आगै वुलाई फुरमाई जो आगै तुम्हारा वाप हमारी खूव खवरदारी राखे थां तुम भी ऊसी भाती खवरदारी राख्या करो आजी तुम्हारा वड़ा मुजरा हुवा जो सवके पहैली आप खड़े रहे। फेरी पातसाह जी वसार मुवारक जनाने समेती पयाद हो गये अर ऊहा सो उलसखाने का नवाव महावत खां को ईनाईत कीया, फेरी साझ को दाखील दोलतीखानो हुये तव उलस मे वैका फेरी भेज्यां अर पातसाह जी वहोत म्हेरवानी फुरमावै है अर साहीजादा अजीमसान भी वहोत म्हेरवानी फुरमावै है। पाचवै सातवै दीन हमेसा नवाव पातसाहजादाजी कै मुजरा नै जावो करै छै जी।

श्री महाराजा जी सलामती। पातसाह जी सरै असवारी[2] साहजादो कों वा ऊमरावो को फुरमायां जो हमा छाऊणी रोपड़ करैंगे[3], सव साहीजादे वा ऊमराऊ हवैली रोपड़ मै करों ईसका नाऊ हम जीहागीरपुर मुकरर कीया है अर ईहा सो

1. वावा हाथ मै=वायें हाथ में।
2. सरै असवारी=शाही अभियान के समय घोड़े पर सवारी।
3. छावनी की स्थापना करेंगे।

साहजीहानाबाद भी नजदीक है अर लाहोर भी नजदीक रहै है। अर दरे का मुढा बंद रहैगां। पहाड़ो के रांजा गरू की मदती करी सकोगे नही अर गरू भी पहाड़ को भाजैगां तो जाई न सकैगां। अर पातसाह जी चाहै है जो पातसाहजादा जीहादारसाह बहादर वा रफीलसाहा बहादर को जीहानाबाद की तरफ बीदा करूं अर महैमद करीम की साथी फोज आदी दे अर लाहोर को भैज जी। अर नवाब रूसतम दील खां अरज करी जो मेरै ताई गरू उपरी हुकम होय अर हजरती सतनंज[1] उपरी छाऊनी करै, सो पातसाहजी मजूर करी अर फुरमाईणा। पातसाहजी का श्री...जी को मालुम है जी सौ जो ठहरैली वा ठीक पड़ैलो सो पाछा थे अरज लीखो लो जी। अर गरू का फीसाद लाहोर की तरफ बहोत है अर लाहोर के कसबे कै ताई आगर खा वा आगर खा का बेटा वां महमद रफी फतुला खा का भतीजा ले रहे है नही तर कसबा लुटी लीया होता जी।

श्री महाराजा जी सलामती। चेला पातसाही दवाब सरवराह कै वासतै भंडारी सौ वा बंदा सौ आय ताकीद करी तव भंडारी वा बंदा चेलो को साथ ले असवार होई नवाब महाबत खा कै डेर गये। नवाब खीलवती मैं बुलाई लीये अर राजों की हकीकती पूछी, तब हमों अरज करी जो चेले दवाब के वासतै आये है सो जो नवाब की खात्री में आवै सो फुरमावै। तब नवाब चेलो कों बुलाई फुरमायां जो दाम ईनके कटें है सो ईनके ताई दामो की जागीर का परवाना ध्रौह वे दवाब सरवराह करैगे। तब चेलो ने नवाब सो अरज करी जो परवांना हमारै तालीकै नहीं, हमारै ताई दवाव सरबराह करांवा को हुकम है। नवाब फुरमायां जो तुम जाय हीदाईतुला खां के ताई कहो तब चेलो अरज करी जो नवाब का भी ऊकील बुलाया है। तब नवाब भी यही जवाव दीया जो मेरे भी दाम कटे है सो जागीर ध्रौह मैं भी दवाब सरबराह करूगां। तब नवाव दोन्यौ राजो की बेई अरजी लीखी अर स्याह कुदरतुलां कों पातसाहजादा जी कां दसकता कै वासतै सोपी है सो जो दसकत होय आवैला सो पाछा थे अरज लीखौलो जी।

श्री महारांजाधीरांज सलांमती। जमा खरचं खांनाजाद ३ हजुरी भेज्यां सो तीनका दाखीला अब तक हुवा नहीं अर हवालगीरी वंदा के नाई मडी है सो मुतसदी हजुरी का नै हुकम होय जो अरज करी अर जमा खरच को दाखीलो करांई देह जी। अर हवालगीरी खानाजाद का नाव सो दुरी होय जी।

श्री महारांजाधीरांज सलामती। भंड़ारी खीवसी वंदे सौ कहां जो महारांजा अजीत स्यंघ को मेरै नाई परवाना आया है जो हम साभरी[2] ताई आवैगे अर

1. सतलज।
2. सांभर।

साभरी सौं कुच तव करैंगे तव पातसाहजादाजी को नीसाण कावील की मोकुफी का आवैगा। तव भंडारी जी वा खानजाद आपस मे सलाह करी नवाव महावत खा जी पासी गये अर अरज कराई जो कुछ खीलवती मैं अरज करणी है। तव नवाव खीलवती मैं बुलाई लीयां। तव महाराजा जी का परवानां सव नवाव को पढायां अर सव हकीकती अरज करी। तव नवाव अरजी करी अर स्याह कुदरतुला के हवालै करी जो साहजादे जी का नीसाण सीताव कराई श्रौह। तव कुदरतुलाह साहजादे जी के दसकत अरजी उपरी कराई हकीम सलेम कै हवाले करी तव हकीम जी नीसाण तयार कराई अर महारांजा अजीत स्यंघजी का नीसाण वा हसवूल अमर हकीम सलेम की महोर सो भंडारी के हवाले कया जी। अर श्री...जी के नीसाण वा हसवल अमर हकीम की महोर सौ खानाजाद को सोप्या सो हजुरी भेज्या है, सो सव हकीकती अरज पहुचैली जी।

श्री महारांजा जी सलामती। राठोड़ो के यह मजकुर हुवां जो महारांजा अजीतस्यंघ जी की फोज म्हारोठ परी गई। तव वंदे भंडारी सो पुछ्या जो तुम्हारै क्या लीख्या आया है। तव भंडारी कहा जो मै महारांजा जी को अरज-दासती करी है जो जै मारोठ भागैगे तो मै ऊठी आऊगां, यहा पातसाह जी सौ ओर ही भाती अरज पहुचैली सो यह सीवा कराया सव वीगड़ी जाहीगां। सो महारांजा अजीत स्यंघजी की फोज म्हारोठ कोई जाई नही अर सीताव हजुरी पधारेला सो हकीकती अरज पहुचै जी।

श्री महारांजा जी सलामती। यह मोसर वहोत खुव है जै दोन्यौ राजो का पधारणा ईस ऊकत मैं होय तो वड़ी सलाह दोलती है अर जै गरू भाजी जाय अथवा आई मीलो तो तीस पाछै पधारण श्री...जी ने मालुम है जी। तीसो वंदा वार वार अरज पहुचावै है जी जो दोन्यौ रांजा अैसे मोसर मैं पधारै तो नीपट खुव हो जी। पातसाहो के फुरमान के वासतै वहोत पईसे खरचै है तव नीठी हासील होई है सो पातसाह जी नै फुरमान महारांजा अजीत स्यंघजी नै वा श्री ...जी नै अजरूय महरवानगी वा वंदनीवाजी सौ आप हीम रैहैमती फुरमाया है सो अैसे वकत मैं दोन्यौ राजों का पधारणा होय तो संसार मैं वडा जस होयजी अर जै पातसाहजी दीली जाई तो अमर नाव होय जी, अर दीखणी मैं फीसाद वहोत है सो जो उहो को वीदा करै तो वड़ा काम होयजी। सो वंदे की तो अकली मै यही आवै है जो जेतै सीताव पधारै जेता ही वड़ा जस होय जी ती सीवाई जो खासी मुवारक मैं पसंद आवै सो जवाव वंदा नै ईनायत होय जी। अर राजा गोपाल स्यंघ भद्रोड्या नै आगो खत ईनाईत हुवा थां सो उनको पहु-चायां अर ऊनका जवाव लिखो गोपाल स्यंघ जी वंदा को सोप्या था सो हजुरी भेज्या है सो नजरी गुजरैलो जी। अर नवाव महावत खा को भी खत लीखाइ हजुरी भेज्या है तीसो सारी हकीकती अरज पहुचैली जी।

कीक करी अरज करो तब महावत खां जी हीदायती केस खांवाकानीगार[1] कुली सो तहकीक करी अरज पहुचाई जो टीके का फुरमान वां जमीदारी का वा सीरोपाव वा घोड़ा दोई वा हाथी येक वा माला मोत्या की हमेसै[2] टीकै की पावै है। तब पातसाह जी फुरमायां जो सव तयारी करी सीताव चलावों अर महाराणा का कीताव दीया सो अरज पहुचै जी।

श्री महाराजाजी रालामती। आगै तो परगना मौजावादी की खरीफ को तुमवार[3] ईनाईत हुवो थो अर अबै स्याम स्यंघ खंगारोत रबी की आफती को तुमवार रूपया १५४०) को ओर करि भेज्यौ सो बंदे आगै अरज पहुचाई थी जो वे कनो स्यंदा काम करदा वाकीफहाल जो जवाव साल भलीभाती कचहैडी मै करै सो हजुरी सौ ईहा आवैज्यो जगजीवनदास उकील के साथी जाई हीदायतुला खां जी के रदबदल करी मामलो फैसली करै सो ईस बात का जवाब ईनाईत न हुवा। अर केसरी स्यंघ जी का गुमासता साहुकारा नै जाई दबावै तब साहुकार या जवाब देह जो म्हाकै पईसा तयार है थे आपणो मामलो फैसलि करो मेह पातसाही दरबार मै कोई जावा नही।

श्री महाराजाधिराज सलामति। परवाना हीदुई करार मीति बैसाख सुदी १४ का मै हुकम आया जो परगना मोजावादी की कीसती का रूपया की हुड़ावणी केसरी स्यंघ का गुमासता कनै दीवाज्यौ। श्री महाराजा जी सलामती। बंदे तो या अरज लिखी थी जो मोजावादी की पहैली कीसती का रूपया सरकार को गहैणो गहैण धरी अर ब्याज बाधी वाई गुजरात्या नै दे अर केसरी स्यंघ जी का गुसामता नै रूपयां दीयां था अर हजुरी सो हुकम आयां जो गहैणो तुम छुड़ाय लीज्यौ, सो माफीक हुकम ब्यापार्‍या के नाव ई साले गहैणो छुड़ाया सो इन रूपयों की हुड़ाई व्यापार्‍या काटी लीई सो सरकार का गहैणा की धीवाई वा ब्याज लागा सो तो सरकार मै नोटावड़ेगां ती वासतै वंदे अरज लिखी थी अर हुड़ावणी[4] तो व्यापार्‍या काटी ले रूपयां दीया जी।

श्री महाराजाजी सलामती। हुकम आया जो पेसोर का बाग का कागद दसतुर का हजुरी मै नही अर तुम उहासौ वाकीफहाल[5] हों सो जीसमै कीफाईत सरकार वा आवादानी रैय्त कि होय सो करवाज्यो। सो माफीक दसतुर कै तो वंदा वाकी फहैवणी जब ताई ऐक वार हरचैन ऊहा न जाई तब ताई ऊहाकी रैय्त कि दीलासा न होई, तव ताई हासील की कमी होयगी, तीस वासतै हरचैन कै

1. सूचनाएं प्रेषित करने वाला।
2. हमेशा।
3. विवरण।
4. हुडावणी=हुण्डी जारी किये जाने पर लगने वाला कमीशन।
5. वाकीफहाल (वाकिफ-ए-हाल)=स्थिति की जानकारी रखना।

नाई परवाना ईनाईत होय जो ऊहा जाई रैय्त की दीलासा करी आवौ ज्यौ ऊहाका हासील कमी न होय जी। अर वीना गये हरचैंन के ऊहाकी रैय्त कि दील न होय जी अर बागवान बंदा पासी आये थे तीन की हर भाती दीलासा करी पाघ बंधाई सीघ्र दीई जो साख का ऊकत है तुम ऊहा जाय आबदानी करो।

श्री महाराजा जी सलामती। मौ० ढ़ीगार्‌यो परगना धोसा को वे वाजी दस को नवाब महावत खां का सगानैर है यांसो सरकार नवाव की वसत ले भागी व यांसो नवाव का परवालखाना का दरोगा की महोर सौ फरद हजुरी भेजी है सौ धोसा का आमीला नै हुकम होय जो ऊसौ पैदा करी नवाव की वसत ले अर हजुरी भेजै अर वसत देवा मै ऊजर करै तो उसका मातवर जामीन ले अर उसकी साथी आदमी दे अर ईहा भेजैज्यौ ऊसका जवाव वा करी लेह नी। ईसके वासतै नवाव बंदा सौ वहोत ताकीद् करै थे जो वसत मै आदमी सीताव आवै।

श्री महाराजा जी सलामती। दवाव की अरजी की फरद स्याह कुदरतुलाह को दसकत पातसाहजादा जी का के वासते सोपी थी सो स्याह कुतरतुलां साहीजादा अजीमसान जी को गुजरानी तब साहीजादै जी फुरमाई जो तुम फरद महावत खां कों सोपी हम पातसाह जी की हजुरि जाहीगे तव महावत खां गुजरानैगां तव स्याह कुदरतुलै फरद नवाव महावत खां जी नै सोपी। सो अब ताई फरद उपरी दसकत हुये नही, जव सौ साहीजादी आपस मै गुफतगोई हुई है तव सौ पातसाहजी सव ऊपरी गुसरहै है, दीन मै तीन वारी मुकररी दरवार करै है अर जो कोई अरज करै है तीसै वददीमागी का जवाव दै है। अर हीदायतुला खां जी का चेला वा जसोल दवाव के वासतै पचोली जगजीवनदास सौ ताकीद करी थी। तव जगजीवनदास जसोल वा चेला नै वंदा पासी ले आया तव वंदै जसोला नै जवाव दीया जो श्री महाराजा जी का दाम दवाव मै काटी लीये है सो उनकी जागीर हमारै ताई दीजेज्यौ हम दवाव अव ही सरवराह करै। हमारै ताई हमारै खावदो[1] का हुकम है जो दवाव सो कोई भाती उजर करो मती। जागीर देह तव दवांव सरवराह कीज्यै अर ईन दीन मै दोन्यौ राजों की दवांव की भी ताकीद हुई नही है जी।

श्री महाराजा जी सलामती। जुलम्पाना के वासतै वंदा नै हुकम आयां जो जीस भाती जाणो-जीस भाती फैसली दीज्यौ अर जगजीवनदास को भी हुकम आया जो फलानै की मारफती मुकदमां फैसलि दीज्यौ सो पचोली मजकुर वंदा पासी जुलम्पाना का चेला ले आया तव पचोली कही जो दरोगा वा मुसरफ रु० ६०) वा चेला रु० १०) पावै है सो धोह सो रदवदल करी रूपया २१) दीयां

1. मालिक=स्वामी।

अर पचोली जगजीवनदास की कवज ली है जी अर या करार कीया है जो जव ताई श्री महाराजा जी हजुरि पधारै तव ताई फैरी आदमी न भेजै जी।

श्री महाराजा जी सलामती। परगना मोजावादी नै साहीजादा रफीसानजी की सरकार का फोजदार, अमीन, कीरोड़ी वीदा होय थे सो वंदा मोकुफ रखाये थे तीस की वंदे आगै अरजदासती करि थी सो जवाब ईनाईत न हुवा सो उमेदवार हु जो जवाव सीताव ईनाईत होय ती माफीक वंदा अमल करै जी। दरवार की हकीकत सारी वाका की फरद सौ अरज पहुचैली जी। मीती असाढ़ वदी ८, स० १७६८।

क्रम संख्या ४८

वकील रिपोर्ट संख्या ६६

सावण वदी ५, संवत १७६८

॥ श्री महाराजाधिराज महाराजा

॥ श्री महाराजा जैसिघ जी

।:। स्वस्ति श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री......चरण कमलांन खांनजाद खाकपाय पं० जगजीवनदास लिखतं तसलीम वंदगी अवधार जो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी रा तेज प्रताप थे भला छै, श्री महाराजा जी रा सीख समाचार सासता प्रसाद कराव जो जी। श्री महाराजा माईत है, धणी है, श्री परमेसुर जी री जायगा है। म्है श्री जी रा खांनाजाद हा। श्री पातिसाह जी श्री महाराजा जी थे महरवान है। श्री महाराजा जी सुख पावजो जी। पान गंगाजल आरोगण रा जतन फुरमाव जो जी।

अप्रच परवांनो खांनाजाद नवाजी को आयो, सीर चढ़ाय लीयो, तमाम सरफराजी खांनाजाद नवाजी हुई जी।

परवांनां मै हुकम आयो ज हीदवी अरजदासत भेज्या करो, फारसी मत भेजो सो हुकम मवाफक हीदवी ही अरजदासतां भेजसुं जी। अर हुकम आया पछै तीन अरजदासतां चली है, चौथी या अब अरजदासत है। सु दरबार का समाचार मालुम हुवा होसी जी। खांनांजाद नवाजी का परवांनां भी पै दर पै ईनायत हुवा करै जी। हीदायतुला खां जी श्री जी का काम नै वोहत चाहै है; जाणै है जी पांच वरस सुं खांनखांनां ई कांम नै हुवो चाहे थो सु खांनखांनां ई आरजु मै ही मर गयो। सु अे सोवको कांम म्हारा हाथ सुं होय तो हीदसतांन म म्हारो नांव अवदा आवाद ताई रहै। अर वडा राजा है हीदसतांन का थंम[1] है। अेसा राजां उपर म्हारो अहसान होय, जस पाछला। लालची न्है, चोर न्है,

1. स्तम्भ।

पको दयानतदार है । ईनायतुला खां जी हीदायतुला खां जी मनसाबाचा श्री जो का भांत भांत का कांम करबा उपर है। यां दोनु बाप बेटा का हाथ सुं भली होसी तीमे ये कोताही न करसी । खांनाजाद रात दीन हमेस यां के रहे है हाजर, तीपर अठे भंडारी जी व दीवान जी नै भी खीलयत मे बुलाया है, सरपाव जुदा कीया है। पग भंडारी जी कदही तो कबुल करे है जमीलसा, कदही कहे हे महाराजा श्री अजीतसिघ जी नै लिखो पण जवाब न आयो जो आपसुं[1] जावां तो महाराजा बुरो मांने है । अर दीवान जी कहै है जागीरां को तो सब काम हीदायतुला खां सु पड़ो है अर अबार वे बाप बेटा मनसुध आपणो काम कीयो चाहे हे । ईसा वकत मै चाल खुफया मील जे कही पर जाहर न्होय, अबार चंद रोज टालो दे बेठसां अर वो भी ई गमाज पकड़सी तो चंद रोज पाछे भी कांम ने जासां तब लजत न्ही, तीसुं पहर रात गया मील आसां, पछे वकील तो रहो करसी ती पर हीदायतुला खां जी सुं कही, ज कही दीन पहर देढ पर रात गया पछै दीवान जी भंडारी जी ने ल्यासां ती पर खां भी कबुल करी कहो जद आवौ तब पहली खब्रर कीजो, पहर पछै बुलाय लाजो । सु अब तांई तो चला न्ह चलसी तो जो रदबदल होसी सु अरजदासत करसु । पण मीलणो मसल्हत हे जी फेर तो जेसो हुकम आसी तेसो करसा जी, पण जीतरे न मीले तीतरे कांम भी जारी न होसी। दीवान दो येहै कांम सब यांसुं रजु है। भंडारी जी, दीवान जी साहजादा ने अरजी दी थी सु हुकम हुवो हकीम सलेम फेर म्हांसु पुछ हीदायतुला खां पास सबने साथ ले जाय सु सहजादां के नदी पछे वहदो है तीसुं फेर न पुछो है हीदायतुला खां को साहजादो ही मुरवी है। दवाव सरवराही का पातिसाह जी शहनवाज खां मुजफर जंग की तोजीह उपर दसखत कीया है जीकी नकल हजुर भेजी है। असतबल का दारोगा के पेसदसत दीवान भीख्यारीदास जी ने रूको भेजो थो सु दीवान जी रूको खांनाजाद पास भेजो अर आपको रूको भेजो सु वजनस हजुर भेजो है ।

सु दवाव का दांमां को काम भी हीदायतुला खां सुं है। श्री जी लिखो है देवती सांचारी के मअजावाद में दांम लीजो। सु देवती सांचारी तो खालसे है, मअजावाद रफीशंनै है अर पातिसाह जी मुजफर जंग की तोजीह पर अैसा दसखत कीया है सु दवाव का लोग तो अब अैमा लागा है ज लिखण मे न आवे। वोहत उमरावां तो दवाव सरवराह करी ओर करना ही जाय है। अमीरुल उमराव तो आसफदोला का आपका दांम ले दवाव सरवराह करी अर ओम करे तो दीना दांम दीयां ही सरवराह करावै है। अर कोई जवरदस्ती सु कहे हे ज दाम लियां वीगर हरगज दवाव सरवाह न करूं तो चोथाई दांम मनसब

1. अपने आप ।

की तलव का मुतालवा[1] तसरफ[2] मे खलासा महाल काट ले हे अर दवाव मे दांम कटा है सु दे हे। दवाव मे दांम तो मवाफक ही कटा है सु दीजे अर मुतालव तसरफ मैं तो चोथाई मनसव की काट ले। तीसु अव दांमा को भी झगड़ो उमरावा छोड़ दीयो अर दवाव सरवराह करण लागा। अव श्री जी की दवाव वासते फेर नकीव लगा है अव देखजे रदबदल करतां करतां कांई चुकै, जो चुकसी सु अरजदासत करसुं। साहजादो अजीमशं दवाव सरवरा ही नै बजद्द है, भांत भांत का दसखत कर भेजे है। हीदायतुला लागु है ज खाहनाखाह उमरावा सु दवाव सरवराह करावे। तीसु अव श्री जी दवाव सरंजांम कर भेजजो जी। साहुकार पर हुकम आवे ज माह दर माह वरावरद[3] मवाफक दया जाय। मुशरफ तहवीलदार मुकरर कर भेज जै जी।

अव ताई तो श्री जी व म्हाराजा अजीतसिघ जी की वीरादरी को कांम वंद थो। अव तो श्री जी कुच दर कुच पधारे है। नारनोल पोहचां की तो सवान्ह सुं अरज हुई न्हे सुं अव तांई तो उरै पधारा होसो जी। सु अव वीरादरी की तलव लेणी है सु भी हीदायतुला खां जी सुं ही कांम है।

महवत खां जी वा नाशहीया सु कहो आपकी तलव के वासते हीदायतुला खां ने वेईजत करो। ईतरा मैं वालासाही व फतहुलाखां नी महमद अमीखां की साथ तईनात हुवा, तव या आपकी तलव कै वासतै हीदायतुला खां को घर घेरो, तंग कीयो। तव हीदायतुला खां अरजी की ती पर अमीरल उमराव ने व मुखलस खां नै ईसलाम खां तोवखांना का दरोगा ने हुकम हुवो, मुखलस खां, ईसलाम खां तोवखांनो लेवां पर गया, सव ने ले आया वा अरज करी महावत खां का कहा सुं ईतनो म्है कीयो। तीपर महावत खां जी उपर अेतराजी हुई। सीरा की चोकी दी थी, खांनखांना की होड़ सुं दुर कर सीरा की चोकी अमीरल उमराव ने दी, पेसदरामद था सु मने कीया। अंत्ररी रीसाला का दारोगा था सु रीसालो ही सव वरतरफ कीयो। ती पर महावत खां जी अजार को वहानो ले वेठ रहा था। सु यै समाचार तो पै दर पै अरजदासत कीया है। अव महावत खां चंद रोज दरमीयान दे अव मुलाजमत की दुसरी चोकी मे दाखल हुवा, अव ताई अेतराजी मे ही है। पण पातिसाह रहीम दील[4] है थोड़ा दीन्मे म्हरवान होय जासी। अव रोज व रोज म्हरवानी करै हे जी।

थांने सु रकेके कुरछेत्र पास आय चंद रोज का मुकाम कीजो जी। जुं वीरादरी की जागीर ले चुका तव आगे पधारजो जी।

---

1. मुतालबा=मंसबदार के प्रति राज्य की वित्तीय मांग।
2. तसर्रुफ=नियन्त्रण।
3. बरावरद=शाराब्दी सवार।
4. रहीम दिल=रहमदिल।

गुरु पर म्हमद अमी खां व गाजी खां रूसतम जंग गया है, सब फोजदार, जमीदार है। अब ताई कुछ गुरू को मुकाबलो वणो न्हे, लड़ाई फोजां सु होय है, गुरू की तहकीक खबर न्ही कहा है जो ठीक होसी सु पाछां सु अरजदासत करसु जी। कोई तो कहे हे गुरू भागो मु पहाड़ का राजा के गयो, कोई कहे है गुरू जखमी है, कोई कहै गुरू तांई फोजां गई न्ही लोग ही लड़ै है, तहकीक कुछ न्ही अर पातिसाह जी तो म्हमद अमी खां व गाजी खां रूसतम जंग ने सरपाय माही जुदी ही कर चुका है सु अब भेजसी।

चीमां जी की जागीर पर पहली ही दसखत हुवा था ज खालसो करो सु ही दसखत है। जवती का परवानां पहली ही लीख्या है सु दफतर मे धरा है[2], चला न्है। दलेर दील खां व वालाशही लोग चीमां जी की जागीर लेण को हुकम ल्याया था सु अरजी दफतर मे धरी हे हजुर चली न्है।

दखण को गनीम अबतांई नरवदा वार ही है पार गयो न्है, मालवा नै लुटै है। अठा सुं वेकी तंबीह की कुछ फीकर न्ही। जद वाका सु अरज होय है तब योही हुकम होय है सुबेदार, फोजदारां नै लिखो तबीह करै।

राय राजा सुं मउ[1] को परगनो तगीर कर खालसे कीयो थो सु जहांदारशह की अरज सु फेर राय राजा ने वहाल कीयो।

काम वकस का तोपखाना का लोग खांनखांना के रीसाले था सु वांकी तलब चढ़ी, महाबत खां जी दै न्ही। तीपर असाढ़ सुद ५ खांन खांना के सब तोपखाने पहली तो राय भगवंत सु ड़ेरे सोरसराबो कीया तब भी नवाब तलब न दी तब नवाब पातिसाही दरबार आया गुलाल बाड़ के दरवाजे नवाब की पालकी फीरतां रोकी। सोटा, पथर, धुल फुराटो बोहत कीयो, ड़ेरै आवण न दै। घड़ी दोय हगामो राख्यो, तब मीनत मया कर डेरे ले आया। राजे खां, खांनखांना के खानसामां थो अर नवाब के भी अब वोही खांनसामा थो अर तोपखांनां को दारोगो थो, वेने आपका दीवानखाना मै बोहत मारो, बेईजत कर मुसका बांध सीर उघाड़ै आपका बाजार मै फेर[3], पठाणां के हवाले कीयो अर तोपखानां की तलब राय भगवत नै कही दौ। राजे खां सात सदी को मनसब राखै है। खांन जमां खां वेकी पख राखे थो तीसुं मारदी सु अब यै भाई भाई भी अणरस हुवो, घर फुटो देखजे काई होयजी।

। सां० १७६८ अषाढ़ सुदी ७ भोमवार गजर बाजतां हीदायतुला खां ने पांच सदी जात ईजाफे हुई अर झालरदार पालकी वकसी जर दोजी।

---

1. रखे हुए हैं।
2. महु।
3. फिराकर।

। सांभर, वेराढ, सीघाणे खांनखांनां का रीसाला नै तनखाह हुई ।

। राजा उदोत सिघ जी नै देस की सीख हुई सरपाव हाथी दीयो, रफीअशं सरपाव समसेर दी, छत्रसाल वदेला से लड़वा जासी, देस मैं भी फोज राखी है ।

महाराजा सलामत। खांनाजाद आपकी परेसांनी कहा तांई लिखुं न डेरो, न कपड़ो पहरण नैं न खांण ने न उट । सु खांनाजाद की तो सहल है जी भांत रहै ती भांत सआदत है । पण ईजत है सु सरकार की है। आगला वकीला के तो सरा पड़दा डेरा कै होता, दस दस घोड़ा पालकीं, वीस वीस उट तोसाखानो होत अर खांनाजाद तो वीखो भोग वदकी करै है सब सरम परदाखत श्री जी ही करैला ।

। राजा उतमराम भी रूकसत को तलास करै है । भुसावड़ की, हीडोण की, भीम का तोड़ा की फोजदारी फीरोजमंद खां, फीरोज खां मेवाती का भाई न हुई । शह अजीमशं हकीम सलेम सुं ऐतराजी कर खीदमत तगीर करी दीन पांच छह सु हकीम सलेम दरबार जाय न्है ।

लालसोट का परगनां का सतर लाख दांम दीलदार खा ने तनखाह था सु वेसु तगीर हुवा, अवदुला खां वगेरह महावत खां की वीरादरी नैं हुवा । सु नुसरत यार खां ने परगनो सोपे हे सु जो परगनो सरकार मे इजारे लेणो होय तो ठीक कर लिखजे । आगे कीतनां ने ईजारे थो, आगला जागीरदार का मुतसदां ने कांई कारसाजी देई थी जो मुसकस हुकम आवै । अर सराफ[1] की माल जामनी आवे तो यांसु रदवदल कर फसल करां ।

। गुरू भागो सु पहाड़ा मैं गयो फोज पाछे हे खवर है वरेली की तरफ जासी ।

। चुड़ामन जाट नै साहजहानां वाद सुं ले आगरा ताई राहदारी हुई । महावत खां स्याहो दीवानी मैं दीयो ।

। गनीम अव तांई दखणी मालवा मैं है ।

। राजा मुसलम खां की पांच सदी जात पांच सै असवार कम कीया सेर अफगन खां का लीखा सु ।

---

1. सरीफ ।

क्रम संख्या ४५

वकील रिपोर्ट संख्या ६३

श्रावण सुदी ३, संवत १७६८

श्री गौपालजी सहाय

श्री महाराजाधिराज महाराजा
श्री जैसिघ जी

स्वस्ति श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री......चरण कमलांनु खांनाजाद खाकपाय पां० जगजीवनदास लिखतं तसलीम बंदगी अवधार जौ जी। अठा का समाचार श्री जी रा तेज प्रताप थे भला छै श्री महाराजा जी रा सीख समाचार सासता प्रसाद करावजौ जी। श्री जी माईत है धणी है श्री परमेसुर जी री जायगा है म्है श्री जी रा खांनांजाद बंदा हां। श्री पातिसाह जी श्री महाराजाजी थे महरवांन है। श्री जी सुख पावजौ जी। पांन गंगाजल आरोगण रा जतन फुरमाव जो जी।

खांनांजाद नवाजी रो परवांनो आया वोहत दीन हुवा सु वंद नवांजी रा परवांनां सासता ईनायता कीजौ जी।

आगै अरजदासत पै दर पै हजुर भेजी सु नजर मुबारक गुजरी होसी जी। साहजहाना(बा)द उरै कुरछेत्र जी की नवाह मै मुकामात फुरमाय अरजदासत व खत भेजेला जु दांम वीरादरी का लां जी।

पातिसाह जी व्यास नदी असाढ सुद ऽऽ गुरवार पुल कराह पर उनरा अजीमशं सुवारी के पाछै पाछै चला गया। पातिसाह जी सुवारी मै हजार सुवार भी न था अर अजीमशं की सुवारी मे सुवार हजार छह मान था ओर तीनु साहजादा पार उतर गया था, सु पातिसाह जी तो पार उतरा अर अजीमशां जी का डेरा वार ही हुवा। पुल उपर जहांशाह[1] को अहतमांम[2]

1. शाहजादा जहांशाह।
2. महतमांम: एहतिमाम=व्यवहार का बंदोवस्त।

थो सु उठ गयो, अजीमशां को वाड़ो जाय खड़ो हुवो, ज आधी रात नै नदी चढी पुल टुट गई। अजीमशां जी का डेरा मै गोड़ा सवां पाणी आयो सु रात नै तो जनानी सुवारी हाथीयां उपर रही सवार हुवा पाछै जठा सु डेरा टुठ गया था अर नदी पर गया था सु फेर तीन कोस आय डेरा कीया। पातिसाह जी सु भांत भांत की अरज हुई सु असाढ सुद १० रात नै साहजादा जी नै हुकम आयो ज तीन कोस फीर जाता मसल्हत न कीजो, दरयाय चढो थो तो कोस आध कोस फीरता अव सीताव कुच कर नदी के मुतसल उतरजो सु असाढ सुद ११ म्हे बरसतां ही साहजादो जी कुच करो, ऐक कोस कुच करो, असाढ सुद १५ चढी नदी मे ही नवाड़ै चढ हजुर गया। पहर देढ पातिसाह जी की हजुर रह फेर नदी वार नवाड़ै वेठ आया। पातिसाह जी तो उतर गया पण लसकर सब वार पड़ो है, नावां लसकर उतरै है जी।

असाढ सुद १५ तो कुछ मजकुर न हुवो। सावण वद १ बुधवार शाह कुदरतुला जी की मारफत हुकम शहजादा जी को हुवो ज राजा नै लिखो वरसात मे आहसते आहसते आवै, वरसात सतलंज पार करै। तब भंडारी जी व भीखारी दास जी शाह कुदरतुला जी सुं पुछी ई वात सुं पातिसाह जी बुरो मांने तीको काई जतन? तव कुदरतुला जी कही पातिसाह जी की मरजी भी इस्मै है। तव पुछो कुं कर जाणजै? तव कही—जहादारशाह रफीअशां पास छह छात हजार सुवार है अर दोनो राजा पंदरा, सोला हजार सुवारां सु हजुर आवै है सु अजीम कहे अर लसकर मै हीदु मुसलमांन सव अजीमशां का है, जागीर देणी वे को अखतयार लोग वै आपका कीया, ती पर पातिसाह जी नै भी अजीमशा की तरफ सु उसवास रहो सु अव उसवास गया ज धुर डरे हजरत की सुवारी मे हजार सुवार न थै अर ईन पास छह सात हजार सुवार थे। जो ईनका वीगाड़ करणा होता तो अैसा वकत कद पावै? सु पातिसाह जी न भी जाणे ज ये वाअेतकाद है यै शाह कुं पुछा राजा दोनु कहां आये, तव अरज की नारनोल पास पोहचे अव हजुर आये तव फुरमायो वरसात है, आहसतै आहसतै आयै, दो वार शाह कुदरतुलाजी अजीमशां जी पास आयो गयो जवाव सुवाल ल्यायो तव शाह कुदरतुला कही ज हसवल हुकम महावत खां की मोहर सु दीरासां। महावत खां जी तो पार है। सावण वद २ गुरवार शाह अजीमशां जी भी लसकर सुधा पार हुवा अर लोग पार होतो जाय है। खांनाजाद की पहल की अरजदासत मै ही अरज लिखी है ज कुरुछेत्र के नजीक रहै जी सु वीरादरी की सनदां ल्यां। श्री जी सलामत। जो वणे है सु श्री जी का प्रताप सुं वणे है जी। च्यार महीनां की फुरसत पाछै जो भली होसी सु श्री जी का प्रताप सु होसी जी। तीसुं धीरज सुं तो चला आजो कोस दोय को कुच कीयो, पांच सात मुकाम कीयो, ई भांत पधारजो अर पै दर पै अरजदासत खत

भेजता रहजे । हुकम मवाफक चला हजुर आवा हां, ईतरा मे ज मतलब है सु सरंजाम करलेसा जी ।

गुरू पहाड़ा मैं भाग गयो फोजा पाछै लागी है । पहाड़ का रा सुजा भी सब जमा हुवा है देखजै कांई चुकै वे पास ज्मयत बोहत है ।

मालवा सु गनीम अब तांई गयो नही सब सुबो खाक सपा कीयो अठा सुं कुछ तबीह की फीकर न्ही फुरमाई ।

राजा उदौतसिंघ देस गया वांकै देस मै पठाण चाकर राख्या है अर छत्रसाल के फोज है ही अर वैको बेटो हीरदै नरायन दस हजार पठाण चाकर राख उदौत सिंघ को मुलंक सब खाक स्याह कीयो । अब देखजे बुंदेलखंड मै कांई उदरह होय ।

चीभा जी की जागीर खालसे है जबती परवांने तयार हुवै है ओर सब हकीकत भंडारी जी अंक पलवी मे महाराजा श्री अजीतसिंघ जी नौ लखी है सु जाहर होयलीह जी । अर दीवान भीखारीदास जी की अरजदासत सु सब समाचार मालुम होसी जी । खांनाजाद आपको डेरो दीवान जी पास ल्यायो हुं कबीला समेत दीवान जी पास रहुं हुं जी । अब तांई खांनाजाद आपकी परैसानी की केई अरजदासतां भेजी पण म्हारी शुं मी दीसा कीसुं कुछ परदाखत न हुई । अब दीवानजी भंडारीजी आखो देख अरजदासत की ही होसी । उमेदवार हुं आज तांई की तलब चुकाय पाउ आगां सुं कही साहुकार पर हुकम आवै ज अठा का अमला फेला सुधा महीनो दीयां जाय तो कुत सुं आज जतर हुं अर सब दरबार का चोबदारां ने ईनाम सदा पाय आया है सु पाउ तो दरवान सोर न करै । खांनाजाद नै तो सब ठोड़ जाणो पड़ै है जी ।

भंडारी जी अर दीवान जी ने शह अजीमशां कही हीदायतुला खां पास जावो । अब भंडारी कहै है पहली गुलाल चंद कीं म्हाकी तरफ सुं ने जावो श्री जी की तरफ सु थे जावो ही हो सु अब गुलाल चंद ने हीदायतुला खा जी पास ने जासुं फेर भंडारी जी ने दीवान जी ने ले जासुं । जो रदबदल होसी सु दीवान जी अरजदासत करसी । महाराजा सलामत । आज दीवान नो ये ननग्या लेगो यांका हुकम मे तीसु यांसु राह दुरसत कीया है ईसु राखनो दुस्मन म्हां नो जागीरां के ई लांजे ली जी ।

दीवान जी कनै हमीदुदी खां की बकसीगीरी की मुबारकबादी को खत भेजो थो सु खांनाजाद नै दीयो सु गुजरांन सु जी । अर जो रदबदल होसी सु अरज... ।

क्रम संख्या ४६

वकील रिपोर्ट संख्या ६६

श्रावण सुदी १३, संवत १७६८

श्री रामजी साय छै जी ।
महाराजाधिराज महाराजा
श्री जैसिघ जी

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा जी श्री......चरन कमलांनु खांनांजाद खाकपाय पंचोली जगजीवनदास लिखतं । तसलीम वंदगी अवधारजो जी । अठा का समाचार श्री महाराजा जी का तेज परताप कर भला है श्री महाराजा जी का सीख समाचार सासता परसाद कराव जो जी । श्री महाराजा जी माईत है धणी है, श्री परमेसुर जी री जायगा है । म्है श्री महाराजा जी रां खांनाजाद वंदा हां जी । श्री पातिसाह जी श्री महाराजा जी सैं महरवान है । श्री महाराजा जी गुख पावजो जी । पान गंगाजल आरोगण रा घणा जतन फरमाय जो जी ।

श्री महाराजा सलांमत । आगै पै दर पै अरजदासतां करी है तांसु सारा समाचार अरज पहुच्या होसी जी । पण दोय महीना हुवा जु खांनाजाद नवाजी का परवानो ईनायत न हुवो सु उमैदवार हुं जू वंदानवाजी का परवाना पै दर पै ईनायत होय जी ।

श्री महाराजा जी सलांमत । मी० सावण वदि १० सक्रवार दीवान भीखारी दास जी नदी पार उतरा व सावण वदि ११ खांनाजाद पार उतर लसकर दाखल हुवो अर भंडारी जी खीवसी जी नदी पार ही है सु मीती सावण सुदि १ को महुरत जोतसां[1] दीयो है सु सावण सुदि १ पार उतर सी जी ।

महाराजा जी सलांमत । सावण वदि ११ दीवान भीखारीदास जी व खांनाजाद नवाब महावत खां जी नु मीला नवाब सु मजकुर हुवो सु दीवान जी की अरज-

---

1. ज्योतिषियों ने ।

दासत सैं अरज पोहोच सी। तकरार लीखणो मनासब न देखो पण उमैदवार हुं नवाब फुरमाया है ती माफक अमल फुरमाव जो जी।

श्री महाराजा जी सलामत। हीदायतुला खां जी को मजकुर आगै पै दर पै अरजदासत कीयो है तीसु अरज पोहोची होसी। मीती सावण वदि १२ खांनाजाद हीदायतुला खां जी सु मीलो। खां साहब बोहोत महरबानगी सु फरमायो जु हम महाराजां का काम ने वोहोत चाहां हा। सु य्या हकीकत दीवान जी सु खांनाजाद कही अर भंडारी जी नैं लिख मोकलो पण भंडारी जी व दीवान जी बीना हजुर की मरजी न मीलैं है। पण महाराजा सलामत। जागीर को सारो काम ईसु है अर पातिसाह जी की ईन वदनय्या सु महरवानगी जादा है अर अवार अैं चाहै है तीसु जो काम सरकार को होसी सु खात्र खाह होसी अर पछै आपणा मतलव नैं मीलस्यां न द्रोयो वोहार[1] न रहसी तीसुं मीलणो य्यासु सलाह है। पछै जो हुकम आवै ती मवाफक खांनाजाद भी अमल करै जी।

महाराजा सलांमत। जो पातिसाह जी खांनखांनां सुं महरवांनी करी वजारत दी थी तो आसफदोला के डेरे को कोई झांकन गयो नही जो वीठलदास भंडारी नै महाराजा अंजीत सिघ जी न चाहो अर भंडारी खीवसी ने कीयो तो सव यासु रजु है, तीही भांत आपां तो ऐक महावत खा ही पकड़ रहा हां पण पातिसाह जी तो वजारत हीदायतुला खां न सोप चुका, जागीर देण को अखतयार तो हीदयतुला नैं है अर वैका छाने[2] मीलण सुं काई वीगाड़ है। कोई या अरज न करे है ज महावत खां सुं तोड़ जै वो तो है ही पण छाने हीदायतुला खां ने दीवान जी भंडारी जी मीले तो ओगण[3] तो नही। फेर भी खांनाजाद हाजर सब ठौड़ रहै ही है जुं रहसी पण ऐक वार ये मीने दम वैं वीग वे मीलो करो तो यो जाणै म्हारा है सब काम करला अवार तांई वाकी पाहस[4] है फेर ई तरफ की दील देगा वो भी दील नरद करसी तीसुं खांनांजाद की नाकस अकल मैं तो या आवे है न वजीर सु मीलजै, ईखलास बोहत कीजै पछे तो जो खातर मुबारक मैं आवे सु सही।

खानाजाद की परैसानी कहां तांई अरज कहां नाई लिखु। ई वरस मै सब गहणो घर मै थो सु वेच वेच खायो अब श्री जी का पावां की दुहाई है न कावा सुं दीन काढुं हुं। कपड़ा पहरन ने नहीं नहीं, टेंगो नहीं, कबजदार नहीं खाना-

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]

जाद तो ई हालत सुं भी सआदत जांणै है पण लोग कहै है सरकार को वकील ई खरावी सु कदै न देखो । सु म्हारा ही भाग की वात दोय हजार की लाहोर की तनखाह भी अवकै फेर दी, आठ म्हीना तनखाह ने ही लीयां फीरो सो रूपया कासद अजुरदांरा ने ही लागा पर हवालदार दमड़ी न दी सु अब परेसानी की हद है, खबर लीजे तो जीवतो रहुं नही सीरसदके होसु ।

सं० १७६८, सांवण सुदि १३, सोम ।

गुरू की तरफ थो सु फेर खबर हे, साढोरे गयो फेर तहकीक हुवां अरजदासत करसुं जी ।

लाहोर का व पेसोर का पुरा उपर दोय हजार रूपया दीराया था सु ऐक हजार तो नीठ ऐक बरस मे दीया, हजार के वासते कहे हे—फेर हुकम आवे ज लाहोर ही का हासल मे दीजो तो दो, जाहर करे हे, पेसोर का पुरा मे अमल पायो नही । पातिसाही हुकम भी मांने न्ही सु लाहोर का हासल पर आवे जी तो पाउं ।

सं० १७६८, भादवा बदि ५, बुधवार ।

क्रम संख्या ४८

वकील रिपोर्ट संख्या ७२

भाद्रपद वदी ११, संवत १७६८

श्री गोपालजी सहाय छै जी ।

श्री महाराजाधिराज महाराजा
श्री जैसिंघजी

स्वस्ति श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री...चरण कमलां नु खांनांजाद खाकपाय पां० जगजीवनदास लिखतं तसलीम वंदगी अवधार जी जी । अठा रा समाचार श्री महाराजा जी रा तेज प्रताप थे भला छै श्री महाराजा जी रा सीख समाचार सासता प्रसाद कराव जी जी । श्री जी माईत है धणी है श्री परमेसुर जी री जायगा है । म्हे श्री जी रा खांनांजाद वंदा हां । श्री पातिसाहजी श्री महाराजा जी थे महरवांन है । श्री महाराजा जी सुख पावजी जी । पांन गंगाजल आरोगण रा जतन फुरमाव जी जी ।

आगै अरजदासतां पै दर पै भेजी है थांसु समाचार मालुम हुवा होसी जी । परवांनो खांनांजाद नवाजी को आयो सु माथे चढ़ाय लीयो तमाम सरफ-राजी खांनांजाद नवाजी हुई जी ।

परवांनां मै हुकम आयो सु थारी परेसानी सुण हुंडी रुपया पांच सै ५००) की भेजी है । सु हुंडी ३ तीन रूपया ४५०) साढा चार सै की पोहची । पचास की हुंडी रवांन[1] करता हजुर मे ही रही होसी अठै न पोहची है सु चाढा चारसे की कबज भर पायां की लिख दी ।

पातिसाह जी नै वाका सवान्ह सुं अरज पोहची ज दोनु राजां की साथ तीस हजार असवार है सु फरद पढ जहांदारशाह वगेरह साहजादा

1. रवांन=रवाना ।

बेठा था सु जहांदार शह अरज की भाई के बुलावे ज्मयत ल्यावे है तीस हजार न होय तो वीस हजार असवार तो होय ही होय। वीस हजार उनके होय अर सात आठ हजार सुवार भाई पास है ही, तीस सुं सुलाह दोलत यह है उन्कु हजुर न बुलाय। यै तो उपर पहली हुकम तो यो हुवो थो—वरसात है आहसते आहसते सतलंज उपर आवै राह में पाणी वोहत है। सु शाह कुदरतुला जी भी अजीमशं शाह बहादर की जुबानी कहो थो सु तो पै दर पै अरजदासता की थी। फेर अब हुकम हुवो साढोरै जाय। सु महावत खां जी की मोहर सु हस-वल हुकम ले गुरजदार श्री जी की हजुर चलो है सु पोहचो होसी।

सु अव तो श्री जी सलांमत। दोनु तरफ को धरम रहो। महाराजा अजीत सिघ जी भी हजुर का आवा सु[1] राजी न था, श्री जी जोरावरी सुं वांनै हजुर लीयां पधारै था सु वाको चाहो हुवो। अर पातिसाह जी नै रटनां लागी थी हजुर बुलावाकी सु आप सुं उठै भेजा। सु श्री जी रा प्रताप थे भली ही वणती जाय है। अव श्री जी हुकम मवाफक साढोरै पधारजो जी। अर अरजदासत कीजो हुकम मवाफक हजुर आवा था अव वो हुकम आयो है तीसु साढोरै चाला अर ज्मयत जादा सीवाय जावते लांवां हां सु सरकार का काम नै ल्यावां हां जु कही ठोड़ तरदद कर वतावां वीनां ज्मयत न हां कांम काई कर सकजै सु अव यो काम हुकम हुवो सु सीवाय जावतै ज्मयत ईतना हजार सुवार है सु उमेदवार हां ई ज्मयत की जागीर पावा।

महाराजा सलांमत। अठे दरवार की या तरह हो गई है। छतरसाल बुदेला की रूकसत पाछे राजा उदोतसिघ भी देस की रूकसत मागे सु रूकसत न हुई तव अजीमशां सुं छाने छाने मीला, जाहर तो रफीअशं की साथ हे वातन्मै वासुं सोस सुक्त खाई तव अजीम अरज की—उदोतसिघ के मुलक में छतरसाल फीसाद कीया हे सु राजा रूकसत वतन की मागे है सु रफीअशां वार-वार रूकसत की अरज करे हे, पातिसाहजी सुण चुप होय रहे। तव अरज की—आप सुं उठ भी तो जायगा तीस सु रूकसत ही कीजै। तव उठ जाण को नाव लीयो तव कही रूकसत कर दो। सु ईसी तरह दरवार की पड़ी है। चीमनाजी उठ गया जागीर वहल है दीलासा का हुकम जाय हे, वरसात पाछै आजो। भारतसिघ साहपुरा-वालो उठ गयो—जागीर वाहल रही, हसवल हुकम दीलासा को गयो। राणांजी मेवाती मारा तीपर गुरगुराट फीटोसो करै हे, रोज कहै हे अज्मेर जांसा, कसमीर को चलणो मोकुफ कीयो जी। फेर देखने काई चुकै। घड़ी घड़ी का मता है।

श्री जी सलांमत। श्री जी वाका की फरद की नकल नारनोल की भेजी थी अर

1. आवा सु=आने के लिए।

वाकेनवीस हीदायतुला खां नै हकीमलमुलक[1] नै खत भेजो सु वेकी नकल भेजी थी सु दीवानजी खांनाजाद नै फरदा सोपी सु खांनाजाद दफतर मे तहकीक करी सु पहली तो नवीसदा बतावे ही नहीं, कहण लागा—उलटी गंगा वहे हे, दसतुर तो यह है जीस घड़ी वाकेसवान्ह की फरद आवे उसी घड़ी हम तुम्हे नकल पोहचावे, तुम महाराज पास भेज दो, फेर उसी घड़ी अरजी भली भांत लिख पातिसाहजी सु अरज करै, सो राह रवस सदा की थी सु तुम्हारै दरवार मे भी छोड़ दी है। दोय वरस हुवै वाकेसवान्ह के नवीस दे महीनां पावते थे सु न्ही पावै, फरद की नकल भेज देते तव हम देते, भली फरद आवती तो हमें देणां कर अरज कराय ने गीले सीकवे की फरद आवती तो हम देणा कर वंद करावते सो तो रवस छोड़ दी सीत सु हम भी यह करे है। भली फरद आई अर आवेगी स तो दाव राखे हे अर गीले सीकवे की फरद आवेगी सु तुरत अरज करेंगे। अव भी आगे सु सलुक करो तो भला है न्ही तो अखतयार है, वोहत ही उलाहण दीया। तव खांनाजाद वाकी भांत भांत दीलासा करी ज अव तो वंदगी मे आया हां थांसु ही सलुक करसां। तव कही यै नारनोल के वाकेनवीस ने लिखा था सु हम तुम कुं खवर भी न करी अर अरज भी करणे न दी, कुछ मतलव तो तुम सुं न था ज खवर दे अर अरज करावै। तव हीदायतुला खां जी सु यही कही शाहनवाज खां सुं पातिसाह तगीर न करैंगे। अर राजा अव ही चाकरी ही नही करते उनको कद दै। यह कह फरद व खत अरज करणे न दीया, शाहनवाज खां ने ही हमारा भला मांनां।

श्री जी सलांमत। ओर तो हजुर मे सव वाकफ ही है पण ठा० वुधसिंघजी ने कांई हुवो, सदा यां वाता की खवर राखता अर दयाराम हजुर मे हे सदा दीवानी का पेसदसत रहा है। म्हाराजा श्री वीसनसिंघ जी का अमल मैं हरीसिंघ जी की कीसा कीसा कांम करता अर ठोड़ ठोड़ सु गीला लिखा आयता अर तरदद लिखा आयता सु जेसी फरद आवती तेसो खरच दे अरज करावणी होती सु अरज करावता अर अरज करावणी होती न्ही सुं वंद कर राखता, नकल हजुर भेजता। सु यां वाता का खरच के वासते केई वार अरजदासतां की पण जवाव कदे न आयो। अव तांई ओर भांत वात थी अव वंदगी मे पधारो हो दस ठोड़ सु गीला लिखा आसी दस ठोड़ सु तरदद लिखा आसी सु फरद की खवरदारी राखजे ली तो मसलहत है अर देस मे हुकम होय सव ठोड़ का वाका नवीसां सुं सवान्हवीसां सु सलुक राखै अर हजुर मे भी ताकीद रहे अर दरवार की याही वाता की वोहत ताकीद फरमाजै तो फरद-फरद की खवरदारी राख हजुर नकलां भेजु अर जो फरद अरज करावण की होय सु तो अरज कराउं हुकम होय तीकी नकल भेजु अर जो अरज करावणी मनासव न देखु सु फरद वंद कराउ तीकी नकल हजुर भेजु

1. शाहजादा जहांदारशाह का प्रमुख परामर्शदाता।

पण या फरदा की खबरदारी राखणी जरूर है ई काम को खरच करणो जरुर है फेर जो हुकम आये सु सही जी।

दीवान जी का परवांनां मे लिखो थो नुसरतयार खां लिखो हे हजुर सुं दीवानी परवांनो आयो है, चटसु वगेरह महाल की तखफीफ[1] बाजयाफत[2] करो सु चाटसु वगेरह का दांमां की हासल की नीसां करो। सु श्री जी सलांमत। दीवानजी खांनांजाद सु कही, खांनाजाद हीदायतुला खां जी सु अरज की जु नवाव का कहा मवाफक मे महाराजा ने अरजदासत की है ज चाटसु वगेरह की अरजी लिखी है पण अरज न्ही करी अर महाराज हमारी तरफ आवे तो ओर बड़े बड़े मतलब कर देसु। उहां नुसरतयार खां ने यह तुतया उठाया है, तव नवाब कही —हमने जो कहा हे सो ही है अरजी हम पास है अरज न्ही करी नुसरत यार खां ने खीलाफ लिखा है, श्री जी सव कांम तो दीवानगीरी मे रजु अर दीवान के आपणे बोहार न्ही वो चाहे ज हु कांम कर दुं जस लुं। श्री जी ई बात को जवाब ही न लिखै अठै भंडारी जी शाह सुं पुछो सु अमर हुवो जरूर मीलो, सु अव तांई तो कोई मीलो न्है अब देखजे कांई चुके पण दीसे हे वो चाहे हे जीतरै न्ही मीलै वो न चाहेलो तब गलै पड़ता फीरजेला घरू वोहार सुं न मीलेला जद शाह कही की साथ भेजसी तब कही की साथ जासी, तब वो जाणसी मे बुलाया सुन आया भेजा आया है। वो भी उचे दील मीलसी। खांनाजाद तो श्री जी की तरफ सु हाजर रहै है।

दीली का जैसिंघ, पुरा की केतीक धरती अजीमशं शाह बहादर का लोगां दबाई हे तीकी दासजी अरजी की थी, दसखत हुआ खांनसामां तहकीक कर अरज करै सु अरजी शाह का खांनसामां सेफखां ने दी है। हकीकत लिखाउ हुं जी जो ठहरसी सु अरजदासत करसुं।

बणारसी जी बैंका राह की दसखत क हीदायतुला खां जी की मोहर सु व सीपारस फोजदार के नाव लिखाय मंगाई थी सु ईलतमास दाहां दसकत सीपारस भेजुं हुं जी।

महाबत खां जी ने श्री जी कौ खत गुजरानौ तीकी नकल दीवान जी की अरजदासत मै भेजी है सु नजर गुजरसी।

सं० १७६८, भांदवा बदि ११, सोम।

---

1. तखफीफ (तखफीफ ए-दामी)=जमादामी में कमी तकनीकी रूप में तखफीफ कहलाती थी, कर्मा की गयी जमा के लिए जागीरदार अन्य जागीर (उतनी ही जामा की) के लिए दावेदार हो जाता था।
2. बाजयाफत (बाजयाफ्त)=बकाया वसूली।

क्रम संख्या ४९

वकील रिपोर्ट संख्या ८३

भाद्रपद वदी १३, संवत १७६८

श्री गोपालजी सहाय

॥ श्री महाराजाधिराज महाराजा
श्री जैसिंघ जी

॥:॥ स्वास्ति श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री...चरण कमलां नु खांनाजाद खाकपाय पां० जगजीवनदास लिखतं तसलीम वंदगी अवधारजो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी का तेज प्रताप थे भला छै, श्री महाराजा जी का सीख समाचार सासता प्रसाद कराव जो जी। श्री जी माईत हे, धणी हे, श्री परमेसुर जी री जायगा है। म्हे श्री महाराजा जी रा खांनजाद वंदा हां। श्री पातसाहजी श्री महाराजा जी सुं महरवांन हे श्री जी सुखपायजो जी, पांन गंगाजल आरोगण रा जतन फुरमाय जो जी।

॥ आगे अरजदासत भेजी हे तीसुं समाचार मालुम हुवा होसी जी।

॥ भादवा वदि १३ गुरवार भंडारी शाह कुदरतुलाजी साथ शाह अजीमशां जी कने गया, अरज की मे तो राजा ने वोहतेरो लीखो पण आवे नही, जो दखण नरवदा उपर रुखसत करो तो जाय। तीपर साहजादे जी कही, अखतयार है पातिसाही ऐतराजी में आवोगे, भंडारीजी वोहत ही कही पण मांनी नही, तव कही मोने रुकसत कीजे हुं जाय ले आउ, तव कही—जावो ले आवो। डावर आये पीछै जो अरज करोगे सु सव मंजुर होयगी पण पहली पातिसाह की खातर मे आवे ज हमारी चाकरी मे तो आये वदनवसी दुर होय तव जो मतलव कहोगे सु सव होयगे। अर घर मे वेठे ही हुकम करते हो सु कोण सुणे। सु अव दीन पांच सात मे भंडारीजी चलसी अर भंडारी जी कहै है मोने या भी कहीज, डावर आयां पछै दखणयांरी तंवीह ने रुकसत करसां। सु कुदरतुलाजी तो न कही पण

भंडारी जी कही है, या भी भंडारी जी कही। गुजरात का सुबा को तो जवाब दीयो ज तुम चाहते हो ज कही कोइ को मौदमत होय सु तो हरगज होण की नही, तीसु श्री जी नो महाराजा अजीत सिघजी ने समझाय कह जो ज चाकरी ने दील दे हाजर आवे सुरत ने तबील करे, सुजरो कर सीरावै, फेर अरज करेला सु मंजुर होसी। अर श्री जी नलांमत कदान गाहनशाह महाराजा अजीतसिघ जी भंडारी का आयां उपर भी न आवे तो श्री जी जी तो हरगज रहजो मत जी। कुच कर हाजर पधारजो, मतालब सब मंजुर होसी, पातिसाहजी बोहत खुस पासी जी।

सां० १७६८ भादवां वदि १२ गुर गंगा नै नाहरखां सांभर सु आयो सुणो है खानांजाद सु पोहकर मे देण की रदबदल कराई थी अर खानांजाद अरज की थी ज राजा परतापसिघ राणाजी का भाई को भी ईही भांत देण की फजीहती करी थी। सु श्री जी वेने कह दीयो तब सु दुख पायां हे। महाबत खां जी सुं भी कह गयो चार लाख रूपयां की हरकत पचोली की तीसु अब कुछ खानांजाद की अरज करे तो मंजुर न होय।

क्रम संख्या ५०

वकील रिपोर्ट संख्या ८०

भाद्रपद सुदी ६, संवत १७६८

॥ श्री गोपालजी सहायं

॥ श्री महाराजाधिराज महाराजा
श्री जै सिंघ जी

॥ स्वास्ति श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री......चरण कमलांनु खांनांजाद खाकपाय पां० जगजीवनदास लिखतं तसलीम वंदगी अवधार जो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी रा तेज प्रताप थे भला छै। श्री महाराजा जी रा सीघ्र समाचार रासता प्रसाद कराव जो जी। श्री जी माईत है, घणी है, श्री परमेगुर जी री जायगा है। म्हे श्री जी रा खांनाजाद वंदा हां। श्री पातसाह जी श्री महाराजा जी सुं महरवांन है। श्री महाराजा जी सुख पावजो जी। पांन गंगाजल आरोगण रा जतन फुरमाव जो जी।

। महाराजा सलांमत। गाजी खां वहादर उरफ रुसतम दील खां वहादर नै मीती भादवा वदि ८ सनवार कैद कर लाहोर का कीला मै तोक जंजीर कर वेड़ी-मास कैद कीयो घर जवत हुवो।

। महाराजा सलामत। गाजी खां वहादर नै दस हजार सुवांर की फौज सुं गुरु की तंबीह नै सलंतज नदी उतर राह मे सुं हजरत रुखसत कीयो थो सु तमाम मुलक का सहर गांव तो सव लुट लिया अर महमद अमी खां भी दस वारा हजार सुवार सु गुरु की तंबीह ने था और सव फोजदार, ज्मीदार तईनात था। अव ताई गुरु पहाड़ा मे रह्यो तव तांई तो सारां मुलक पातिसाही सहर, कसवा बंद कर खाक कीया। अव गुरु पहाड़ां मैं सुं नीकसयां सुं दोय चार कोस का तफावत सुं अवर की तरफ गयो। तव गाजी खां सुं महमद अमी खां सुं तंबीह न हुई। गुरु यांके आगे होय नीकल गयो। ईसे खां पठाण ई जी लाको है ती म्हमद अमी

खां सुं व गाजी खां सुं कही लडाई मालो । गाजी खां वहादर उहां सुं फोज समेत भागे सु हजरत सुं दस कोस ठोङ रही तहां सु अरजदासत की ज केतेक मतलव जरूरी है सु रूवरू अरज करने के है । इस वासते हजुर कदमवोसी कर जहां हुकम होय तहां जाउं । हुकम हुवा गुरू के सीर की साथ आवोगे तव कदमवोसी होयगी । अब भी फीर जा मतलव होय सु अरजी कर भेज, गुरजदार पोहचण पायै ही न्ही का सांझ को लाहोर सहर मै आवे, फोज कोई पोहची कोई न पोहची वा अरज हुई तब महावत खां जी, ईसलाम खां तोपखाना का दारोगा ने मुखलस खां नै, कोतवाल ने हुकम हुवो केद कर ले आवो । सो भादवा बदि ७ सुक्रवार सब फोजा जाय देउ पहर रात गयां सहर का पास सुं केद कर लाया । आधी रात का अमल मे केद कीयां लावण की अरज हुई तव आधी रात तांई तो गुलाल बाड़ मे रहो, सवार हुवा बेडी ड़ाल पालकी मे बेठाय सब लसकर देखो, सहर का कीला मे कैद कीयो, कबीलो सुहागपुरै भेजण को हुकम हुवो, माल मताह सब जबत हुई । ईसलांम खां तोपखांनां को दरोगो सहर का कीला मै कैद कीयां बेठे है, सव फोज पर अैतराजी है बोहत बरतरफ होसी । ओर भी कई केद कीजैला सु पाछा सु पैं दर पै अरजदासतां करसुं जी ।

। महाराजा सलामत । महमद अमी खां की खबर है गुरू कै पाछै लगो गयो है ।

। महाराजा सलामत । ईसा मे जौ खतर मुबारक मे आवे अर महाराजा अजीतसिघ जी की मसलहत मे आवे तो दोड़ पहाड़ मे बेठण न दीजे अर पकड़ लीजे तो बड़ो मुजरो होय, बड़ो मरातब होय जी ।

। भादवा बदि ६ गुरवार महाबत खां जी कै मीज्मानी हीदायतुला खां जी की हुई, पहर दीन रहां सु भंडारी जी दीवान जी खांनाजाद व राणा जी का, छत्रसाल बुदेले के मुतसदी सब महाबत खां जी के जाय बेठ रहै । महाबत खां जी पहर दीन रही सुं हीदायतुला जी का मुनतजर[1] बेठा रहा सु पहर रात गया हीदायतुला खां जी आया । हमीदुदी खां जी यां की रदबदल मे हे सु घड़ी चार रात गयां आये पीछै तीनु मील एक चबुतरे पर बेठे । पहर रात गयां पछै नवाव सब ने बुलाया, हीदायतुला खां जी को जुदो जुदो मुजरो करायो, नो नो रूपया सारा नजर कीया, दोय दोय रूपया राखा सब की दीलासा की जी । दीवान जी की दीलासा करी, हमीदुदी खां जी की नो नो रूपयां नजर कीया, कही का राख्या नही, खेलना का मोरचा मे था सु वो मजकुर कीयो, ईखलास जाहर कीयो, खांनांजाद भी वा मोरचां मे थो सु महाराज का ईखलास की अरज की घड़ी एक बेठाय रूकसत कीया, अब दीन एक दोय मैं सब हीदायतुला खां जी के डेरे जासी जी ।

1. मुनतजर (मुन्तज़िर) = प्रतीक्षा में ।

। खांनाजाद हीदायतुला खां जी के ड़ेरे हाजर रहै है श्री जी को वोहत इखलास जाहर करै है जी ।

। कीरपा राय हीदायतुला खां जी को पेसदसत है तीकी मारफत चार महीना गु रदवदल है । वैसुं दीवान जी मीला वे सव वदगी की अरज की सु दीवान जी अरजदासत करसी जी ।

। लाहोर का जैसिघपुरा का मुतसदीयां ने वांणदार जहांदार शह जी का ने दीया फीलखांनो मनै कराय दीयो, पुरा मैं आज ताई खेर सलाह है ।

। कोकलताश खां का वाग की हीड़ोला की वोहत महाफजत होय जी ।

। महाराजा सलांमत । गजसिघ व साह मनोहरदास ईजारां की मुकरर करे है । सु महाराजा सलामत । जेतपुरा की व गाजी का थाणां की ठीक पड़ै है । ओर भी परगना लेसां जी । साहुकार की जामनी भेजजै जुं पटा लीखाय ला जी ।

। नारनोल की नीयावत की रदवदल ठहरती दीसे है अगे नायव देहती सु ईजाफा दीयां व खरच दीया लेसकजै है जी के नाव हुकम होय तीके ही नाव सनद करावां । अव हकीकत गजसिघ जी साह मनोहरदास अरजदासत करसी जी ।

सं० १७६८, भादौ वदि ६, खगजरख ।

क्रम संख्या ५१

वकील रिपोर्ट संख्या ८१

भाद्रपद सुदी ११, संवत १७६८

॥ श्री गोपाल जी सहाय

॥ श्री महाराजाधिराज महाराजा
॥ श्री जैसिंघ जी

॥ स्वस्ति श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री चरण कमला नु खांनजाद खाकपाय पं० जगजीवनदास लिखतं तसलीम बदंगी अवधार जो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी रा तेज प्रताप कर भला छै। श्री महाराजा जी रा सीख समाचार सासता प्रसाद कराव जो जी। श्री महाराजा माईत है, धणी है, श्री परमेसुर जी री जायगा है, म्हे श्री महाराजा जी रा खांनजाद बंदा हां। श्री पातसाह जी श्री महाराजा जी थे महरवान है। श्री महाराजा सुख पाव जो जी। पान गंगाजल आरोगण जतन फुरमाव जो जी।

। अप्रच श्री महाराजा जी रौ परवांनो खांनांजाद नवाजी रो आयां घणां दीन हुवा सु बंद नवाजी रा परवांना सासता ईनायत फुरमाव जो जी।

। महाराजा सलामत। देवती सांचारी का रूपयां को कोल हंगामो कर रहा है। बुलाकी चंद नै दुर करावै है, नुसरत यार खां के हवाले कराये चाहै है तीसु याका रूपयां की असी सबील होय ज परगना मे कोई खलल न करे।

। साहजहानांबाद का वाका सुं अरज पोहची ज बाग व रमनो कटै है, सीकार खेले है, सो बजनस फरद महाबत खां जी पास पातसाह जी भेज दी सु महाबत खां जी बजनस फरद भंडारी जी नै दीवान जी नै पढ़ाई, नकल वै फरद की ले हजुर भेजी है सु नजर गुजरसी। नवाब कहे था ज यां बात सु हजरत बुरो मांने है, दुख पावै है। अत्र गुरू साढ़ोरे गयो है जो ईसामै श्री जी डाबर की तरफ

आवै तो वड़ो मुजरो होय । तब भंडारी जी वही मोने रुकसत कीजे तो हुं ले आऊ, तब नवाब कही म्हारो तो मोह न है ज हुं पातसाहजी सुं या अरज करू अर ई अरज करावा मे तो या जाहर होयं ज यै उठ गया चाहे है, अर देढ़ दोय महीनां हुवा जहानाबाद मे बेठे रहा भांत भांत की तऊदी करे है सुं क्या मसल्हत है, वणी वणाई[1] बात कुं बीगाड़े है । अब ताकीद लिखो ज डाबर आवे अर जो जो मतलब लिखेगे सु सब सरंजांम पावेगा । भंडारी जी घणी ही बातां कही गुजरात को सुबो दीजे बाबाप्यारे के घाट की खीदमत दीजे ओर केई की तरंगा कही पण बेदीमाग होय घर मे नवाब उठ गया। अब भंडारी जी कहे है नवाब तो न मांनी साहजादा अजीम जी सु भी कह देखा ।

श्री जी सलांमत । आणे तो दस बार साहजादा जी सुं कह चुका है, जवाब पाय चुका है, अब देखजे काई हुकम करे, पण यां बाता सुं रस तुटतो जाय है तीसुं श्री जी की खातर मुवारक मै आवै तो महाराजा अजीतसिंघ जी ने समझाय कहजो—चाकरी करणी होय, पातसाह जी सुं रस राखणो होय, देस मे फेर खलल करणो न होय, राजा राज प्रजा चेन चाहे तो ये बातां अब छोड़ दे, दील लगाय चाकरी करै, मुजरो कर दीखावे, गुरू ने पकड़ ल्यावै सीर ले आवे पछै जो जो बातां अरज करै सु सब मंजुर होय । अर दीली मे बेठा भांत भांत की फुरमायस करै तो अखतयार है, पहली पातिसाह जी की हजुर खांनखांनां देरीनो थो जो पातसाह जी ओर तरफ को भी कही केबाब कहता तो वो समाल लेतो, अब तो छोकरा की मजलस रही है, सब लड़का लड़का ही है, पातिसाह जी खातर मे आवे हे सु ही कर बेठे हे, येसा समया मे तो चाकरी सुं वहुत खबरदार रहसी वोही पेस पड़सी तीसु श्री जी समझाय दीली सु कुच कराय डाबर नीतान पधारजो जी अर कुरछेत्र पास आवो तब मतलबां की वाजबल अरज कीजे तो सब मंजुर होय जी ।

श्री जी सलांमत । अबार ताई सब बात सामे है अर कुच कर डाबर पधारा तब सब मतलब भी होसी, पातसाह जी को दील साफ होसी, ईजाफा लेसां, जागीरां लेसा, जो जो चाहे सो सु सब होसी, बलकी जादा होसी जी ।

। गाजी खां के चालीस लाख रूपया तो नीकल चुका, कीरोड़ देढ़ कीरोड़ नगद जीनस मताह जबत होसी ।

। श्री जी दीली सुं कुच करै तो सरहंद की फोजदारी को तलास करां, दीली व लाहोर बीच सब मुलक श्री जी कै ओहदे होय जी ।

। पातसाह की खबर है जहानाबाद ने कुच करै, कुच की ताकीद है ।

। हुकम हुयो गाजी खां की कोई अरज करनी वेको भी यो ही हाल करसां, अध सेर खीचड़ी जीमे चार पईसा भर लुण यो रोज कर दीयो जी ।

---

1. बनी बनाई ।

जादा अजीमशं जी का दसखत कराय तसतग लिखसां जी सु पाछा सुं त दसतग हजुर भेजुं हुं जी।

पातिसाह जी को खुफया सवान्ह नवीस लिखो ज चीमनां जी ई मुलक मे लोगां पर जबरदसती करे हे हजुर चाले म्हे ती पर जागीर तगीर हुई बेटो कतो सुजात खां ने दी, भीम का तोड़ा का दाम ओर परगनां लोगां ने दे हे।

लाहोर का मुलाणां[1] पांच बरस सु हजरत को खुतबो पढबा दे था न्ही, कुछ वांका मजहब की बाता को झगड़ो थो ती पर हैदराबाद सुं पातिसाह जी यां मुलाणां की तेबीह नै व आपको खुतबो पढाबा नै लाहोर आयो सुं दोय म्हीनां सुं लाहोर का मुलाणा ने समझाया पण समझे नैं; कैद कीया वो भी समझे न्ही, मीलक रोजी ना गाव पाये था सु तगीर कीया। दोय चार बार, मारवा को हुकम कीयो पण मुलाणा न समझां तब म्हीनां ऐक पहली महाबत खां ने हुकम हुवो थो फोज ले जाय, म्हे कहां हां ती भांत खुतबो पढावे। तब महाबत खां जी बडी फोज सु तयार हुवो, जुमा मसजद बाहर कीमे केई हजार मुलाणां मरण ने जाय बेठा था तब तो मोकुफर रही। असोज बद ६ सुक्रवार महाबत खां सब फोज सु स्हर मे गया, ईसलांम खां तोपखांनां का दारोगा ने हुकम हुवो सहर मे सारै बाड़ौ रोपै मुलाणो सहर कौ कोई जु मोनसजद मै आवण न दीयो, सहर का सब कुचा बंद कीया था। महावत खां जी खुतबो पढाय आयै, कोई कहे हे आगे सदा यांका धरम मे पढ आया है तीही भांत पढी, कोई कहे हे वा नई तरह बणाई है ती भांत पढी।

सं० १७६८, आसोज बद ८।

---

1. मुलानां=मौलाना।

क्रम संख्या ५३

वकील रिपोर्ट संख्या ६२

आश्विन वदि ११, संवत १७६८

श्री गोपालजी साय छै

श्री महाराजाधिराज महाराजा
श्री जैसिंघ जी ।

स्वस्ति श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री...चरण कमलांनु खांनाजाद ग्राकपाय पां० जगजीवनदास लिखतं तसलीम वंदगी अवधार जो जी । श्री महाराजा जी रा सीख समाचार सासता प्रसाद कराव जो जी । श्री महाराजा जी रा तेज प्रताप नु, अठा रा समाचार भला छै । श्री महाराजा जी माईत है धणी हे, श्री परमेसुर जी री जायगा है म्है श्री महाराजा जी रा खांनांजाद वंदा हां । श्री पातिसाह जी श्री महाराजा जी सुं महरवांन है । श्री जी सुख पाव पावजो जी । पांन गंगाजल आरोगण रा घणा जतन फुरमाव जो जी ।

अप्रच खांनाजाद नवाजी रो परवानो आया वोहत दीन हुवा सो खानाजाद नवाजी का परवानां कोही वंदा ने आधार है ती सु उमेदवार हुं हर जोडी की साथ परवानां खांनांजाद नवाजी का ईनायत होय जी ।

साहजादा जी को सरपाव व नीसांन फारसी तो दीन दोय पहली सोपा था सु रजपुता की साथ सरपाव भेजो है सु तो पोहचो होसी अब अजीमशं का खास दसखता को रुको भेजो है नीसांन की साथ सु नजर गुजरसी जी । ईही मवाफक महाराजा अजीत सिंघ जी नै रुको हीदवी लिखो है एक ही मजमुन लिखो है जी । आगै भी हीदवी दसखतां का रुका श्री जी पास होसी, महाराजा अजीतसिंघ जी पास होसी सु दसखत देख लीजो जी । शह कुदरतुला जी दोनू रुका दीया है । श्री जी सलामत । अब तो भांत भांत खातर जमा हुई । साढोरे पोहचा पाछे नीसाद रवानद होसी तीसुं अब वेगा पधारजो जी, ढील न होय जी ।

जादोजी पंड़त[1] राम राजा का बेटा को वकील अठै महाबत खां जी पास थो सु खांनखांना का वाका पछै अमीरल उमराव अरज करी ज दखण मे फीसाद है सु जादो पंडता का लिखा सु है, जादो ने म्हारे हवाले कीजै सु महाबत खां जी छीपाय राखो आखर हर का राजा सु सलगा, तब जादो देखो ठीक सकु न्ही तब अजीमशं जी सुं जाय जोड़ कीयो, महीना ऐक अजीम जी भी छीपाय राखो। अब राजा साहु नै व राजा शीव जी नै हीदवी नीसांन व सरपाव व धुगधुगी दे, जादो ने सरपाव दे रूकसद कीयो। पहली महाराजा पास आसी। महाराजा राणाजी पास पोहचाय दे। राणाजी चंद रोज राखसी, दखणी की फोज नरबदा बार आसी तब वाकी साथ दखण जासी। तीसुं श्री जी हजुर आवे तब बोहत महरवानगी कर राणां जी ताई पोहचाय दीजो जी। साहजादा जी वेनै कहा है सु वो रूबरू अरज करसी जी।

खांनाजाद बार बार आपकी परेसांनी कहां तांई अरजदासत करे व्याज मैं ही रोजगार जाय हे[1] तीसु लाहोर को व जहानाबाद को पुरो नीम सवाई ईजाफा सु भी कबुल करूं हुं ईमे सरकार की कीफायत है खांनांजाद की परेसांनी मीटे है जीके कही साहुकार पर माह दर माह कर पाउंजी नीपट परेसान हुं।

1. जादु केशो पंडित—तारावाई का वकील। यहाँ राजाराम की विधवा तारावाई के पुत्र शिवाजी द्वितीय के वकील के रूप में उल्लेख किया गया है। वास्तव में वजीर मूनीम खाँ ने तारावाई के वकील को बादशाह से मिलाया था तथा उसके लिए शाही फरमान जारी करने का आवेदन किया था। मूनीम खां की मृत्यूपरान्त महावत खाँ (शाहजादा अजीम-उस-शान के सहयोग से) ने इसकी पैरवी जारी रखी।

2. सम्पूर्ण वेतन व्याज के पैसे चुकाने में खर्च हो जाता है।

क्रम संख्या ५४

वकील रिपोर्ट संख्या ६४

आश्विन वदि १४, संवत १७६८

श्री परमेश्वर जी साय छै

श्री माहाराजा जी

स्वस्ति श्री लसकर विजै कटकेत माहाराजाधिराज माहाराजा श्री श्री श्री श्री श्री जैसिघ जी चरण कमलानु पातसाही लसकर थे आग्याकारी हुकमी बंदा भां० खीवसी लिखायतं सेवा गुजरो तसलीम अवधारजो जी। अठा रा समाचार श्री जी रै प्रताप कर नै भला छै। श्री जी रा घडी घडी पल पल रा सदा आरोग्य चाहीजै जी। श्री जी वडा छैं साहिब छै। हुं श्री जी रो खांनाजाद छुं मोसुं सदा मैहरवांनी नु निजर फुरमावैं छै तीण सूं विसेख फुरमावैं जी।

अप्रच दांम सात लाख प्रा० रोसनपुर खंगारोत भगवंत सिघ हरीसिघोत रै तालकै मै अलावंदै खां सायसता खां रा पोता री जागीर मै तनाखाह छै सो ईणारो अमल दखल मां नै न छै मालवाजवी देवे न छै तिण उपर अलावंदै खां साहिजादै जी कनै फिरीयाद कीवी जु म्हारी जागीर रो टको नावै छै[1] हुं पूरेसान छुं सो हसवल हुकम नै हसवल अमर श्री माहाराज कु सादर आवै छै नै म्हां सु भिखारी-दास जी नुं पिण ताकीद हुई तिणसु अरज लिखी छै दैस रै हाकीमां नु ताकीदरो परवांनो होय जु ईणारो अमल दखल करारवा की कराय दे वै असो न होय जु अं अठै नालस करै...।

...आसोज वद १४, सं० १७६८।

---

1. नावै छै=नहीं आता है।

क्रम संख्या ५५

वकील रिपोर्ट संख्या १००

कार्तिक वदी ६, संवत १७६८

श्री गोपालजी सहाय

स्वस्ति श्री महाराजा सलामत। काती वद ८ भोमवार महावत खां के भंडारी जी, दास जी[1], खांनाजाद गया था सु महावत[2] खां खीलवत कर कही ज कती वद ७ भोमवार अदालत मे पातिसाह जी मुने फुरमावे था राजौ का क्या चुकया, मै अरज की ज साढोरै हुकम मवाफक आये अव जहां ठोड़ मुकरर होय तहां जाय। तव हुकम कीयो अजीतसिघ पुरव जाय, राजा जैसिघ दखन जाय अर वहा न जाय तो कांगड़े जाय, वहां भी न जाय तो हजुर आवे, अव उसवास काहे का रखते है कोण उनको खाता है अर हमारा उसवास रखते है सु सारी उमर उसवास ही रखैगे, कद ही तो उसवास दुर करै अर हमसे उसवास रखते हे तो आजीमशां तो उनका भाणजा है पुरव अजीम कु है[3] पुरव जाय वहां तो कोई उसकुं खाता न है अर मे जाणता हुं सव यह फीसाद महाराजा के छोकर का है मुझे वेठे वेठायै कु सोरसमे मत ल्यावो—या फुरमावे था के अजीमशं मुजरै आयो तब देख कर कहौ वह आया उसका भाणजा, यह खायगा तो नही अपणी आखौ उपर रखैगा अर यह भी कही, अजीमशां जी महारै रूवरू तो न कही पण दीसे हे खीलवत मै वोहत कही ज बराड़[4] को सुवो महाराजा अजीतसिघ जी नै दीजै पुरव मे कोई सुवो श्री जी ने दीजे। पातिसाह जी की मरजी हुई थी

---

1. दीवान भीखारीदास।
2. वैठक।
3. पूर्व में वंगाल, विहार, उड़ीसा तथा इलाहावाद के सूवे शाहजादा अजीम-उस-शान के अधिकार में थे।
4. वरार।

अमीरुल उमराव[1] सुं पुछी, तब अमीरुल उमराव अरज की अजीत सिंघ कु वराड़ की सुवेदारी हुई तो मैं दखण छोडी, खातर मे आवे जी ने दखण सोपजै, अजीतसिंघ वराड़ मे जाय तव सव दखण मे मैरा क्या वंदवसत रहै वह तो सव दखण लुट जाय, अजीतसिंघ नरवदा पार होय तो मुझे सुवेदारी दखण की कवुल नही, अर राजा जैसिंघ को दखण भेजो तो कवुल है। दखण राजा जैसिंघ को भेजये अर पुरव अजीतसिंघ को भेजये। सु अजीमशां जी वोहतेरी कही पण हजरत अजीमशां की अरज वराड़ की कवुल न की, तीपर अजीमशं जी आजुरदा हुवा कही अपनां कांम अपने हाथ हजरत खराव करते है तो मे क्या करू, वाप वेटा वोहत रदवदल हुई पण आजुरदा होय उठा, रस न रहो। आज अदालत मे भी आय वेठा था सु हजरत तो गुसा सो आय वेठा। सु नवाव कही मोने हजरत देखतो ही वे वाता कही अर साहजादा ने आवतो देख वा कह चुप होय रहा। अजीमशं भी गुसो खाया वेठा रहा अर पातिसाह भी गुसा सुं ही वेठा रहा। तीपर नवाव कही यह वात तो पेस न गई अव क्या तदवीर करणी। तव भंडारी जी कही महाराजा तो पुरव हरगज न जाय, जो गुजरात रखो के मालवे रखो तो सुलह कवुल है के दखण नरवदा पार खानदेस, वराड़, वावा प्यारा के घाट ये ठोड़ तो कवुल है, ओर हरगज कवुल नही सु वह होय भावे न होय। तद नवाव कही यह हरफ[2] तो अव हरगीज मत कहो अर दीसे हे हजरत मुझ उपर अेतराजी करेंगे, वह तो वेटा हे जवाव दे वेठेगा, हजरत की खातर मे आवे सु करै अर उनका कुछ कर भी सकते नही पै हम उपर वडी अेतराजी होती दीसै हे। आज फेर अदालत मे बुझेगे तव मे क्या अरज करूं? तव भंडारी जी कही अजीत सिंघ जी की तो एक वात हे छुट गुजरात मालवै वराड़ ओर कुछ कवुल नही। तव कही लिखदी मे अरज तो कर सकता नही, तुम्हारा लिखा हाथ पकड़ाउंगा तव लिखो तो न कर दीयो अर या कही म्हे साहजादा सु ठेहराय चार पांच दीन मे नवाव सुं अरज करसो। नवाव कही—भला, मे आज चुप रहुंगा जो हजरत आप ही पुछेंगे तो कहुगा आज मे वुलाय मवाफक हुकम के सव वकीलो से कही वे लिख ल्यावेंगे सो नजर करूंगा। ईस भात दोय चार दीन टालौगा, तुम साहजादा जी सुं ठीक करो। फेर नवाव कासु[3] शह कुदरतुला के गया। कुदरतुला साहजादा जी की व पातिसाह जी की सव रदवदल कही, आपस मे वाप वेटा रस न रहो, सु कही वराड़ को मालवा को गुजरात को जवाव दीयो हरगज न

---

1. जुल्फिकार खां—मीरबख्शी के पद के साथ ही उसे दक्षिण के विषयों का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व था।
2. शब्द।
3. पास मे।

होय। तव भंडारी जी भी जवाब दीयो यां तीनु ठोड़ सीवाय कवुल नही सुल्हे मोकुफ, म्हे देस जासा थाने फोजा भेजणी होय सु भेजो। शह कुदरतुला वोहत समझाया पण ऐक ही जवाव भंडारी जी कह्यो। सु कुदरतुला जी आज अरज करसी, देखजे साहेजादी जी काई जवाव दै, रोज की रदवदल मे देखजे काई चुकै। जो ठहरसी तथा रदवदल होसी सु अरजदासत रोज की रोज हजुर करसुं जी। श्री जी मसल्हत कर लिखजो आखर कांई करणो, ऐकठा[1] तो हरगज राखता दीसे नही, पुरव के दखण जुदा जुदा भेजसी।

1. महाराजा जयसिंह एवं महाराजा अजीतसिंह को एक साथ।

क्रम संख्या ५६

वकील रिपोर्ट संख्या १०२

कार्तिक वदि १४, संवत १७६८

श्री गोपाल जी सहाय

श्री महाराजाधिराज महाराजा
श्री जैसिंघ जी

स्वस्ति श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री...चरण कमलानु खांनांजाद खाकपाय पां० जगजीवनदास लिखतं तसलीम वंदगी अवधार जो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी रा तेज प्रताप थे भला छै। श्री महाराजा जी रा सीख समाचार सासता प्रसाद कराव जो जी। श्री जी माईत हे धणी है श्री परमेगुर जी री जायगा हे, म्हे श्री जी रा खांनाजाद वंदा हां। श्री पातिसाह जी श्री महाराजा जी सुं महरवांन है। श्री महाराजा जी सुख पाव जो जी, पान गंगाजल आरोगण रा जतन फुरमाव जो जी।

अप्रच श्री महाराजा जी रो परवानो दीवान भीखारीदास जी के नांव आयो ज सेख सादुला[1] आगे भी सरकार का मतालवां मे कोसस करै थो अर अव दीली मे मीलो थो सु आगला वोहार पर नजर कर अरज करी ज हूं लसकर जासुं सरकार का मतलव वकील जाहर करसी तीकी वंदगी वजाय लासुं सु जगजीवन दास आगला मुकदमां सु वाकफ हे अव सेख सुं सरकार का मतलव कहै। सु श्री जी सलांमत। सेख जहानांवाद सुं तो चालो है, लसकर मे दाखल हुवो न है। अव दीन दोय चार मै आसी तव खांनाजाद सदा वानु मालसी सरकार का मतलव वासुं जाहर करणा होसी सु करसां, सरजाम देसा जी।

श्री महाराजा सलामत। दरबार का समाचार साह कुदरतुला खां जी व महावत खां जी की रदवदल का अरजदासत काती वदि १२ हजुर चली है तीसुं मालुम

---

1. सादुल्ला खां (हिदायतुल्लाह)=दीवान-ए-तन का खालिसा।

हुवा होसी जी । अरजदासत चला पछे शह कुदरतुला के डेरे गया सुं रदबदल तो बोहत हुई पण भंडारी जी जवाब दीयो ज महाराजा अजीतसिघ जी नै गुजरात मालवो, बराड़, खाहनाखाह न दीजै तो सोरठ ही दीजे अर सोरठ भी न दो तो सुल्हबर हम है। अजीतसिघ जी छुट पां चार ठोड़[1] ओर कही ठोड़ नही जाय, सुल्ह करो, भावे मत करो । तब कुदरतुला कही—लिखदौ, तब या लिख दीयो सोरठ कबुल है ओर ठोड़ कबुल नही । तब दास जी सुं कही तुम क्या कहो हो ? तब दास जी कही हजुर कु लिखा है जवाब आये अरज करेगे । तब भंडारी जी कही...ई लिखसां पीराग जी कबुल है। तब कुदरतुला जी कहा लिख दौ। तब दास जी कही बीना हुकम हरगज लिख न दुं । तब भंडारी जी कही म्हे लिखदां हां तब दासजी मोहर खोल भंडारी जी आगे धरी, भंडारी जी मोहर कर दी सु ईलाहाबाद की तरफ तो श्री जी की तईनाती ठेहरे हे अर सोरठ की तईनाती अजीतसिघ जी की ठेहरे हे । तब ये मुचलका रजामंदी का ले कुदरतुला जी महाबत खां जी पास आया । महाबत खां जी कही सोरठ की अरज हुं न करू हजरत बेदीमाग होसी, मतलब सरंजाम न होसी । तब भंडारी कही होय सु होय न होय सु न होय पण गुजरात मालवा सोरठ बराड़ या चार ठोड़ मे कोई ठोड़ दौ ओर ठोड़ कही न जासा । तब दास जी न पुछो यो कही अखतयार भंडारी जी को है । भंडारी जी कहे है सु समझ ही कहै है । तब दोनु मुचलका कुदरतुला जी की साथ पातसाह जादा जी पास भेज दीया है। वांजबल अरज महाबत खां जी तो न ली कुदरतुला जी नै कही मे तो साहजादा जी कु दीखाय चुका अब तुम फेर दीखावो । तब कुदरतुला जी मुचलका व वाजबल अरज साहजादा जी पास ले गया, साहजादे जी मुचलका तो राखै अर वाजबल अरज मे सु ईतरा मतलब दुर कर दीया :

नागोर ईदरसिघ न बहाल रहै सु यो मतलब दुर कीयो, कहो तुम कोण हो ज यह अरज करो ।

महाराजा को मीरजाराजे जी को खीताब न लिखे, कहो कुछ तरदद करोगे तब पावोगे ।

ओर मतलब लिख दो जो अरज करेगे हुकम होयगा सु सही, तब फेर वाजबल अरज ओर लिख दी सु अब मुचलका वाजबल अरज होसी जो हुकम होसी सु अरजदासत करसुं जी ।

महाराजा सलांमत । अरज पहुचायां पछे जो सोरठ व पीराग जी कबुल हुवो तो सोरठ तो अजीत सिघ जी का मतलब मवाफक है, मारवाड़ सुं नजीक है वाकी तो बणी अर पीरग जी की भंडारी जी कबुल की सु हजुर की मरजी

1. जगह ।

मवाफक ही कही होसी तीरथ तो है पण देस सुं तो दुर हे जो खातर मे आवे तो हजुर की ही ठहराजे, अरजदासत कीजे, हुकम होय तो हजुर आउ, हजुर आय फेर जहां हुकम होय तहां जांउ तो पातिसाह जी का दील मैं सु सब गुवार दुर होय जाय, साफ दील होय जाय, ईजाफो खीताव ओर जो जो मतलव कहे जे सु सब होय पण छाती करड़ी करी चाहजे जो हुकम आवण की मसलहत होय तो कोल करार साहजादा जी कने सब लीजै। दस हजार सवार से पधारो तव ये कांई कर सकै पण वंदगी को नकस दुरसत होय जाय पछै तो जो खातर मुवारक मे आवे सु सही। आज काल्ह साहजादो जी मुचलका वाजवल अरज करसी। देखजे कांई हुकम होय जी।

नां० १७६८, काती वदि १४, सोम, पहर रात गयां चली।

हीदायतुला खां का खत को जवाव ले हजुर भेजो हे सु नजर गुजरसी जी।

क्रम संख्या ५७

वकील रिपोर्ट संख्या १०३

कार्तिक सुदी १, संवत १७६८

॥ श्री गौपाल'जी सहाय छै

॥ श्री महारांजाधीरांज महाराजा श्री
जैसिंघ जी

॥ स्वस्ति श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री...चरण कमलां नु खांनाजाद खाकपाय पां० जगजीवन दास लिखतं तसलीम बंदगी अवधार जो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी रा तेज प्रताप थे भला छै। श्री महाराजा जी रा सीख समाचार सासता प्रसाद कराव जौ जी। श्री महाराजा जी माईत है, ध्रणी है, श्री परमेसुर जी री जायगा है। म्है श्री महाराजा जी रा खांनाजाद बंदा हां। श्री पातसाह जी श्री महाराजा जी थे महरवान है। श्री महाराजा जी सुख पावजौ जी। पांन गंगाजल आरोगण रा जतन फुरमाव जो जी।

। अप्रच काती बदी १४ का समाचारां की अरजदासत तो आगे चली है सु नजर गुजरी होसी जी। काती बद ऽऽ दीवाली के दीन पातिसाह जी सुं साहजादे जी बाजबल अरज अर रजामंदी का मुचलकां की अरज की ती पर पातिसाह जी वाजबलअरज उपर दसखत कीया, तीकी बीगत।

। महाराजा अजीतसिंघ जी नै सोरठ की फोजदारी मंजुर हुई।

। श्री महाराजा जी नै अहमदाबाद गुहारा[1] की फोजदारी हुई या ठोड़ पीराग जी[2] सुं कोस २[3] छै, गंगाजी वार है। बसंत जमीदार को मुलक है, सुं बसंत तो

1. अहमदाबाद गहोरा (खोरा)'।
2. प्रयाग।
3. अन्य विवरण के अनुसार यह दूरी पिरागजी से पश्चिम की ओर 30 से 35 कोस दी गयी है, (वी० एस० भटनागर, 91)।

गुवों वेको वेटो राज करे है, वडो मुफसद[1] है। कदही सुवादार ने अमल दैं है न्हीं। और भी जमीदार है। सु दसखत हुवा अहमदावाद गुहारा वगैर की फोजदारी शह अजीमश दैं।

। महाराजा अजीत सिघ जी का व श्री महाराजा जी का ईजाफा के वासतै लिखो थो तीं पर दसखत उमेदवार है।

। महाराजा अजीतसिघजी का कवरां का ईजाफा के वासते लिखो थो अर महाराज कवार चीमनां साहव जी का ईजाफा वासते लिखो थो, सु दसखत हुवा, उमेदवार रहै।

। वीरादरी की तलव वासते लिखो थो सु दसखत हुवा, हीदायतुला खां अरज करैं।

। दवाव का दांमां की लिखी थी। परवतसर तो अजीत सिघ जी ने जागीर दीजे अर मअजावाद श्री जी की सरकार मैं दीजे तो दवाव खातर जमां सु सरवराह होय तीपर दसखत हुवा, हीदायतुला खां अरज करैं।

। राव गौपाल सिघ जी का मनसव की सनद जारी होय अर जागीर पावे तीपर साद[2] कर दीयो।

। खुम्र सिघ वगैरह गोडां की सनद वंद है सु जारी होय वे पर साद कर दीयो।

सु वाजवल अरज की नकल दासजी ने हजुर आगे भेजी है अव दसखतां की नकल सुधादास जी की अरजदासत मे भेजी है सु नजर मुवारक गुजरसी जी। शाह कुदरतुला जी वजनस खास दसखतो सुधा दीखाई। अव महावत खां जी नैं सोपसी। उठासु साह लीजे ला सु हीदायतुला खां जी ने दीजेला, उठे वीरादरी की व दवाव का दांमां की परगनां की हकीकत लिख अरज करसी जी।

लाख रुपया अजीतसिघ जी की तरफ सु अर लाख रुपया श्री महाराजा जी री तरफ सु भंडारी जी पातिसाह जी की व साहजादा जी की पेसकस कवुल कीया तीमे साठ साठ हजार तो पातिसाह जी की पेसकस अर चालीस चालीस हजार साहजादा जी की पेसकस कवुल कीया सु मंगाय खजानां रीकाव का मे दाखल करां हुकम होय जहानावाद का के अजमेर का खजाने भरा। तव शह कुदरतुला जी कही साहजाद जी तो तुम्हारे पास हरगीज न ले, अपने रुपये भी पातसाह जी कु देंगे। तव भंडारी जी कही हम लाख लाख रुपये देंगे फेर साहजादे जी का अखतयार है भावैं[3] आप लो भावैं पातिसाह को दो।

सं० १७६८, कार्ती सुद १, वुधवार।

1. मुफसद—मुफसिद; फसादी, उत्पात करने वाला।
2. साद (स्वाद)—फारसी वर्णमाला का शब्द जो स्वीकृति के लिए बनाया जाता है।
3. भावैं—इच्छा पड़े तो।

क्रम संख्या ५८

वकील रिपोर्ट संख्या १०६

कार्तिक सुदी ६, संवत १७६८

॥ श्री गोपाल जी सहाय

॥ महाराजाधिराज महाराजा श्री
जैसिघ जी

॥ स्वस्ति श्री महाराजाधराज महाराजा श्री...चरण कमलान खांनाजाद खाकपाय पां० जगजीवनदास लिखतं तसलीम बंदगी अवधार जो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी रा तेज प्रताप थे भला छै। श्री महाराजा जी रा सीख समांचार सासता प्रसाद कराव जौ जी। श्री महाराजा माईत हे धणी है। श्री परमेसुर जी री जायगा हे। म्हे श्री महाराजा जी रा खांनाजाद बंदा हां। श्री पातिसाह जी श्री महाराजा जी सुं महरवांन है। श्री जी सुख पावजौ जी। पांन गंगाजल आरोगण रा जतन फुरमाव जो जी।

। आगे अरजदासत काती सुदि १ ने चलाई हे तीसुं समाचार मालुम हुवा होसी जी।

। अब काती सुदि ५ सनउ साह कुदरतुला जी कै भंडारी जी व खांनांजाद गया अर दीवान भीखारी दास जी ने तो दीन पांच सु अजार है सु अब फुरसत हुई सु कुदरतुलाजी कही हुकम हुवो है। महमद अमी खां उपर गुरू मकहुर आयो चाहै है सु जो कदाच मकहुर महमद अमी खां उपर आवे तो दोनु राजा महमद अमी खां की मदत करै, गुरू ने तबीह करै।

। साह कुदरतुला जी भंडारी जी ने कही, थांका कहा मवाफक लाख लाख रुपयां की मैं अरज की ज साठ साठ हजार तो हजरत की नजर कबुल करे हे अर चालीस चालीस हजार साहब आलम की पेसकस कबूल करे हे, तीपर अमरह वो अजीतसिघ जी का तो लाख ही रुपया हजरत की नजर करौ अर राजा जे-

सिघ जी लाख रुपया दे हे तीमे पचास हजार पातिसाह की नजर करी अर पचास हजार म्हे लेसां। तीपर कुदरतुला जी कही अजीतसिघ जी की तो एक लाख ही की पेसकस हजरत की लिख दी अर पचास पचास हजार की दोय फरद लिखदी। ती पर भंडारी जी तो लाख रुपया की फरद आपकी मोहर सु लिख दी अर दास जी ने कही थे भी लिख दी, सु दास जी कहे हे वीना हुकम न लिखदुं। अब भंडारी जी कहे हे दोय लाख दोनु राजां का पातिसाह जी की ही पेसकस लिखदां लाख लाख, अर साहजादा ने लाख रुपया दोनु तरफ सु जुदा दां। पचास पचास हजार सु अब देढ लाख को करार करे हे। सु दास जी तो कहे हे कांम हमारा क्या हुवा ज देढ लाख दे सु हकीकत भंडारी जी भी दासजी भी अरज-दासत करसी। श्री जी को हुकम आयां जो लिखणो होसी सु दास जी लिखसी।

काती सुद २ दीवानी परवांनो खास मोहर सुं आयो ज खोहरी को परगनो सरकार मे ईजारै लीवो सु भली की जामनी प्रोहत सामराम की है, देस सुं मगाई हे सु ठहराजो अर खरच की हुंडी भेजां हां। महाराजा सलामत। खरीब सु ही ईजारो ठहरो, रवी का चार म्हीना है मवाफक हुकम के या ठहराई हे। खरीफ मे जो अनुपसिघ लियो होय सु तुमार मवाफक भेज दे। मुतसदीयां भी या बात कबूल की पण जामन मानवर मांगे हे सु सामराम ने हुकम होय आपका गुमासता ने लिखै जी भांत नीसा होय ती भांत करदे अर सीताब जामनी आवे। खरीफ कोहंगा महे परगनो लेणो हे तो यो वकत हे, फेर न जाण जे केसी वणे अर की के नांव पटो लिखा वांक कबुलयत दा।

श्री जी सलामत। जेतपुरा को कांस ईजारा को चुका दोय महीना हुवा पण प्रोहत जी जमनी ले न्ही तीसुं कांम बंद है। प्रोहत जी का गुमासता ने जेतपुरा वालो कहे थाकी मातबरी सराफा मे कही कने कराय दो, गुमासता मातबरी आपकी कराय दे न्ही तीसु प्रोहित जी ने हुकम होय गुमासता ने लिखे थे आपकी मातबरी को लिखो, सराफा का साहुकारा कने लिखाय दीजो अर खोहरी को जेतपुरा की मांल जामनी दीजो।

। दबाब गुराजीलकाद सुं सरबराह होसी।

। खानजाद की परेसानी लिखण सुं गुजर गई अब खातर मे आवे सु कीजै।

सं० १७६८, काती सुद ६, रबवार।

। भंडारी जी सु रदबदल हे सायद पचास हजार ओर वधावे हे सु न वधे अर लाख लाख कहे चुका है पछे जो ठहरसी सु अरजदासत करसी जी।

आज म्हाबत खां का सु खीदमतां का स्याहा लेण ने जाय हे अर खानजाद तो हुकम आयां साह लेसी जी।

क्रम संख्या ५९

वकील रिपोर्ट संख्या १०८

कार्तिक सुदो १२, संवत १७६८

श्री गौपालजी सहाय

श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री जैसिंघजी

स्वास्ति श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री......चरण कमलांनु खांनांजाद खाकपाय पां० जगजीवनदास लिखतं । तसलीम वंदगी अवधार जो जी । अठा का समाचार श्री महाराजा जी रा तेज प्रताप थे भला छै श्री महाराजा जी रा सीख समाचार सासता प्रसाद कराव जौ जी । श्री महाराजा माईत है, धणी है श्री परमेसुर जी री जायगा हे । म्हे श्री जी रा खांनाजाद वंदा हां जी । श्री पातसाह जी श्री महाराजा जी सुं महरवान है श्री जी सुख पाय जो जी पांन गंगाजल आरोगण रा घणा जतन फुरमाव जो जी ।

अप्रंच खांनाजाद नवाजी रो परवांनो आया घणा दीन हुवा सु वंदनवाजी रा परवांनां हर जोडी की साथ ईनायत होय जी तो मतलवां सुं वाकफ हो जै जी, जवाव सुवाल करजै । अर दरवार का मतलव तो रोज वरोज का अरजदासत करूं हुं जी पण पै दर पै परवांनां ईनायत हुवो करे तो वंदनवाजी है जी ।

वाजवलअरज होय आई थी तीकी नकल तो आगे भेजी हे सु नजर गुजरी होंसी अव वेही मतलव फेर वाजवल अरज मैं लिख्या अर केताक ओर मतलव लिख महावत खां जी ने दीयां । नवाव काती सुद ८ बुधवार साहजादाजी कने ले गया, साहजादाजी फेर दसखत कर दीया तीकी नकल दामजी की अरजदासत मे हजुर भेजी हे सु नजर गुजरसी जी । अहतयात के वासते हींदवी मे भी अरज करु हूं जी ।

श्री महाराजा का व महाराजा अजीत सिंघजी का ईजाफा वेई लिख्यो सु दसखत कीया उमेदवार रहुं ।

महाराजा कुवार का व अभैसिघ जी वगेरह कवरां का ईजाफा का दसखत कीया जफरजंग मरातव अरज करै ।

पटण व हालार[1] की फोजदारी अजीतसिघ जी न होय दसखत कीया, नमेशवद[2] ।

कंतत[3] की व तरहार की व चंनाट की फोजदारी श्री जी ने होय सु कंतत की फोजदारी हुई—अहमदावाद गुहारा सुधां ।

श्री जी को व्याह कर आगे जावां दसखत हुवां अब खीदमतां हुई है उठे पोहचा पछै अरज लिखसो सु मंजुर होसी ।

वीरादरी का पांच सदी पाई सुवार अमुमन मोकुफ रहा हे सु उमेदवार हां वहाल रहे दसखत हुवा पातिसाही जावतो वरहम करो जाय नही ।

वीरादरी की तलव भरपायां दसखत हुवा अजमेर की पायवाकी मुकररी सुदै ।

मेड़तो देवती सांचारी ईजाफा का तलव मे पायां, के वीरादरी की तलव मे के दवाव मे पाया, दसखत कीयां कलम, जदै अर महावत खां जी ने कहो यह तो कोल करार हुवा तव ही फुरमान मे दाखल हे ज मुफसी खालसा कीया, अब वेही कोल सुं कु फीरते हे।

दवाव का दामां मे मअजावाद व फुलयो केकड़ी पावा, दसखत हुवा हीदायतुला खां वारसी दै अरज करै ।

महाराजा अजीत सिघ जी का पुरा सहरां मे हे सु पायां, दसखत हुवा, खानसांगां अरज करै ।

राव गोपाल सिघजी को हीमतसिघ कवर को मनसब बहाल होय, राव को खीताब होय । दसखत हुवा—मनसब वहाल, खीताव नही ।

सुध सिघ गोड़ का सनदां ली ।

ओर फुटकर मनसवदारा की हकीकत लिखी हे सु वाजवलअरज की नकल सुं मालुम होसी जी।

नवाव डेरे आय कही वाजवलअरज पढ देखो अर राजो के ईजाफो की व वीरादरी के सुवारो की फेर भी अरज करेगे, वीला सरत न हुवा तो मसरूत[4] ही थोड़ा वोहत लेगे, सु ईजाफे की व वीरादरी के सुवारी की अरजी फेर लिखाई है जी अर ओर साहा दफदरां ने दीया ।

---

1. हालार=हालोल ।
2. नमेशवद (नमी शवद)=नही होगा, नामंजूर ।
3. कतत (कतित)=इलाहावाद ।
4. मसरुत (मशरूत)=सशर्त ।

फुरमान तयार कराय कर स्याहा देणां थां सु दीया ।

दीवान आला का दफतर कौ परवानां फोजदारी का दै तीका स्याहा दीया ।

दवाव मै मअजावाद फुलया केकड़ी की अरज करै हीदायतुला खां वो स्याहो दीयो ।

गोपाल सिघजी का हीमत सिघ का मनसव की तसदीक दी

गोपाल सिघजी देढ हजारी जात छह से सुवार,

हीमत सिघ चार सदी दोय से सुवार ।

कमाल जालोरी की अरजी हुई वेकी सनदां ली, सुख सिघ वगेरा गोडा की सनदां ली ।

सरकार मे आगै वीरादरी का मनसव लीया है ती सीवाय अब्र सामसिघ जी का अमर सिघजी वगेरह दस आसामी ओर अरजी मै लिखाय दी है जी, कदीम मनसवदार ।

श्री जी सलांमत । खोहरी लेणी है तो सीताव जामनी व खरच मुतसदां को जरूर सीताव ईनायत होय अर सांम रांम ने हुकम होय आपका गुमासता ने लिखे ज सराफा में या सरत लिख दै जो व जागीर वहाल रहे तो मी भाला तांई जामन होये लिख दै । श्री जी सलांमत । सांम रांम का गुमासता एक वरस की हर ईजारादार ने लिख देणी कहे सु मुखो तो लिखाय ले जवरदमत तो लिखावे नही, कहे थांको राजा जवरदमत है ऐक माल की जामनी दै आगा सु पर-गनो दाव वेठ रहे जामन दे नही तो कीसु झगड़ता फीरा, तीसु तीन वरस को पटो लिखाय लो, तीन वरस की कबुलयत लिख दो, तीन वरस को जामन दो तो पर-गनो दां तीन वरस में या कबुल करा हो लिख दे ज परगनो वहाल रहे तो दां नही न दां । अेसो लिखो मांगे है अर परगना दै है तीसु फसल खरीफ जाय है । जो खोहरी लेणी है तो खरीफ सु देसां, खरीफ मे लीयो होयलो सु तुमार मवाफक भरदे सी । तीन वरस की जामनी लेसी, जामन की मानदगी[1] लेसी । जो खोहरी लेणी है तो सब तरह साहजादा का मुतसदीया सु श्री जी का हुकम मवाफक ठहरायो है जी ।

खांनाजाद आपकी परेसानी लीखतो लीखतो थाको पण सरजाम न हुवो । छह महीनां हुवा सरकार मे तलब का जो रोजगार पाउ सु दरबार मे ही [illegible] तीसु उमेदवार हूं छह महीना चढा है सु पाउ आसा सु मास दर मास पाउ । सरम सु ईजत सु दरबार मे फीर सकु जी ।

1. मानदगी ([illegible]) = [illegible] ।

गुराजीलकाद सुं दवाव सरवराह करणी पड़सी सरजाम दी सु भंडारी जी दाराजी मुचलका दीया है ज गुराजीलकाद सु दांणो घोड़ा हाथीया मे डालां सु मुतसदी दवाव का रोज कहे हे। वीस दीन पाछे दांणो घास सब सरवराही करासां तीमु दवाव को दर माहो सीताब आवे जी।

सां० १७६८, काती सुद १२, सन वारवडी फजर चलो।

क्रम संख्या ६०

वकील रिपोर्ट संख्या १०६

कार्तिक सुदी १४, संवत १७६८

॥ श्री गौपाल जी सहाय

॥ श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री......चरण कमलांनु खांनाजाद खाकपाय पं० जगजीवनदास लिखतं तसलीम वंदगी अवधार जौ जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी का तेज प्रताप थे भला छे। श्री महाराजा जी रा सीख समाचार सासता प्रसाद कराव जौ। श्री महाराजा जी माईत हे, धणी है, श्री परमेसुर जी री जायगा हे। म्हे श्री महाराजा जी रा खांनाजाद वंदा हां। श्री पातसाह जी श्री महाराजा जी सुं महरवांन है। श्री जी सुख पावजो जी, पांन गंगाजल आरोगण रा जतन फुरमाव जौ जी।

। अप्रंच खांनाजाद नवाजी को परवानो इनायत हुवो सु सीर चढाय लीयो, तमाम सरफराजी खांनाजाद नवाजी हुई जी।

। अहमदावाद गुहारा कां फोजदारी की दीवान जी का परवांना मै लीखी सु हुकम मवाफक दीवान जी सव हकीकत कही सु अव श्री जी का हुकम मवाफक फुरमान व दीवानी दफतर सु परवांना तयार करावां हां। महमद यार खां कोल सनद सीताव करावे तीको सजावल[1] लीयो है सु फुरमान व परवांनो खीदमत कां दीन पांच छह मै हाथ लागसी जी सु हजुर भेजां हां जी, कंतन की फोजदारी की भी सनद करावां हां जी।

। वीरादरी का असवांरा की अरज तो फेर भी कराई पण चार गदीया ईनका असवार न हुवा, फेर साहजादे जी कही यह हरगज न्हीं होना, सु भंडारी जी कही चार वार अरज कराई अदके मंजुर न हुवा सु अव सनद तयार करावो सु अव वीरादरी की सनद तयार करावां हां जी।

---

1. सजावल=भू-राजस्व प्राप्ति का अधिकार।

दवाव का दांमां मे मअजावाद की अरज कराई सु दसखत कीया, हीदाय-तुला खां अरज करे सु महावत खां जी की मोहर सुं स्याहो ले दीवानी कचहड़ी मे दीयो, तीकी नकल हजुर भेजी हे सु नजर गुजर सी। दीवानी कचहड़ी मे हकीकत लिखाय तयार करी हे। अब हीदायतुला खां जी अरज करसी जो हुकम होसी सु अरजदासत करसुं जी, जो मंजुर होय है तो परवांनो कराय हजुर भेज सुं जी।

। वीरादरी की जागीर अजमेर की पायवाकी मे लेसां अर वाकी रहेली सु अहमदावाद गुहारा मे व कंतत मे भर लेसां जी। चोथाई दागनामां के वासते मोकुफ रहसी दागनामो देसा तव चोथाई का दांम पासा। अर पांच सदी हे थांके दवाव होसी, पहली दवाव के वदले दाम काट लेता था अब दाम काटे नही, दवाव ही सरवराह करासी जी।

। महाराजा अजीतसिघ जी को हालार की भी फोजदारी हुई।

। खांनाजाद नवाजी कर सातसे रुपया दीवान जी पास रोजगार मे दीराया था सु लीया जी, जमां खरच हाल तो ईको दीवानजी नै सोपसुं जी।

श्री जी का ईजाफा सरत, वीला सरत वासते व महाराजा अजीतसिघ जी का सरत, वीला सरत वासते फेर अरजी लिख दी थी सु नवाव महावत खां जी श्री पातसाहजी सु अरज करी सु आगे माजुल[1] फोजदार नै मसरूत थी ती मवा-फिक श्री जी नै भी ईजाफो मसरूत को होई आयो छ जी, तीकी नकल हजुर भेजी है जो। तीसु समाचार मालुम होसी जी ओर परगने कंतत की फोजदारी तगीर अवदुलाखां की श्री जी के नांव हुई छे अर परगनां तरहार की फोजदारी अवदुला खां नै वहाल रही छै सु यां दोनु परगनां की फोजदारी उपर असी लाख दाम मसरूत छै सु तफरीक मसरूत की फेसलन हुई छे अव जो ठहर सी सु पाछा थे श्री हजुर अरजदासत करस्यां जी।

। दोई लाख रुपया की फरदा भंडारी जी की वा दास जी की मोहर सु लिख कुदरतुला जी नै दी। देढ़ लाख रुपया तो पातिसाह जी की नजर व पचास हजार साहजादा जी की नजर। सु पचास हजार की फरदा तो साहजादा जी आप पास राखी अर देढ़ लाख की फरद के वासते कही, महावत खां ने सौपो जु पातसाह जी की नजर करै। सु भंडारी जी फरद नवाव ने सोपी।

। महाराज कवार का ईजाफा की अरजी दी है जो हुकम होसी सु श्री जी सोपसां जी।

---

1. माजुल (माजूल)=पदच्युत।

क्रम संख्या ६१

वकील रिपोर्ट संख्या ११२

मार्गशीर्ष सुदी ८, संवत १७६८

॥ श्री रांमजी

श्री महाराजाधिराज सलामति

आगै अरजदासती करार मिति मागिश्र वदी ६ संवत १७६८ की हजुरि ईरसाल[1] करी है सौं सारी हकीकति अरज पहुंची होयगी जी। श्री महाराजाधिराज सलामति। प्रवांना किताद फारसी वा हींदुई ईनायति हुवा सो आय पहुचा सलाम करि माथे चढ़ाय लीया। वंदा सरफराज हुवा जी। परवाना करार ता० १४ सवाल के मैं हुकम आया जो दसखत पातसाह जी के सनंद वीरादरी के पर हुए जो सुबे अजमेरि के मे जागीर दयौह। श्री महाराजा जी सलामति। दसखत पायवाकी के हुए है सो जो तजवीज के प्रगनी मो पायवाकी होयगी सो ली जैही गी अर जो ई सीवाई प्रगनें जागीरदारों के होंयगे सो भंडारी जी की सलाह थे रदवद कीजैगी सो जो ठाहरैगी सो पीछै सौं अरजदासती करोंगा जी।

श्री महाराजाधिराज सलामति। नवाव महावति खां जी ईन दीनौ मो आपने पईसों के वासतै ताकीदि वहोत करै है। अर थोरा सा दीन भी खैंचा है ति सी भंडारी जी की सलाह सौ उनकी तसलहै कीजै है सो नवाव की तसलहै हुऐ पाछै मलारना वा वौली की रदवदल नवाव सौं करोंगा जी अर मनसव वा ईनाम जो आगे जसवतस्यंघ अहमदावाद गहोरा की खिदमति पर पावै था तिस का स्याहा महावति खां जी की मोहर सौं ले दफत्र दिवांनी मी सौपा है जी सो सनद जागीर की जहां आगीला पावै था तहां की तयार होय है जी ओर भगवत स्यंघ वगैरह जो आगै बिरादरी मे तईनात थे तिनकी वहाली के वासतै हुकम आया सो वंदा वा भंडारी जी की सलाह सौ सब कांमो मौ मुकदै है सो जो जो कांम सरंजाम होयगा तिसकी हकीकति अरज पहुंचागा जी। ओर हुकम आया

1. ईरसाल—भेजना।

जो बिरादरी का सुवारां के दाग के वासतै जो कुछ मुकरर हुवा होय सो अरज लिखी थो। सो अरजी मारफति साह कुदरतुलाह की सौं साहिजादे जी सौं अरज पहुंची। साहिजादे जी फुरमाया जो बिरादरी के रजपुतौं के घोडो को आगै दाग माफ नही सो अब भी दांग माफ न होयगा, सो अरज पहुंचै जी।

श्री महाराजाधिराज सलामति। प्रगना बहाली का इजारा हाल साल[1] के वासतैं हुमक आया जो किफायति सौं ढह्या ज्यौ सो पीछले साल के रूपया को लारो के देने है सो उनकी हुंडी ईनायति होय जो पीछले साल सौं तो फारिखत हुजै पाछै हाल साल थे सलाह भंडारी जी की सौं रदबदल कीजैगी जी।

श्री महाराजाधिराज सलामति। प्रवांना हींदुई करार मी० मागेश्र बदी ५ का मै हुकम आया जो प्रवाना टोड़ा भीव की जामिनी प्रोहित स्यांम रांम की पीछे सौं पहुंचैगी अर जो कुछ प्रगने मजकुर मै गुमासतें विजैस्यंघ जी के मुतसरफ हुये है सो जागीरदार सो कहियो जो वै पईसा बिजैस्यंघ जी सों लेहिसो। वंदे सैद खां का दिवान सौं बुलाय कहा तब उन्है जुवाव दीया जो दयारांम मुतसदी विजैस्यंघ जी का ईहां आया है तुम उनकी मुतसरफ हुऐ है सो लिखाय मंगागा अर पंचौली जगजीवनदास वकील को हमारे साथ दयौ जो कचहैडी दीवांनी मैं साबुत करि दे, हम पईसा दयारांम सौं लेगे। अर हुकम आया जो किसमति नामा[2] फेरि दुरसत करांय ने के वासतै सनंद दिवांनी लिखाय वंदाज्यो। सो सैद खां का दिवांन सौ ताकीदि करी है सो फेरि किसमति नामा करावने के वासतै दिवांनी सनद तयार होय है सो पीछे सौं सिताब पहुंचांउगा जी।

श्री महाराजाधिराज सलामति। फुरमांन वा सिरोपाव दोनो राजो के गुरजबरदारौं के हवाले हुये है सो मिती मागिभ सुदि......के चले हजुरि पहुंचैगे जी। अर स्यौस्यंघ वा स्यौदांन राठौड़ गुरजबरदारौं के साथ दीये है सो हजुरि पहुंचैगे जी। अर सब हकीकति स्यौस्यंघ जुवानी अरज पहुंचावैगे जी।

श्री महाराजाधिराज सलामति। प्रगना मालपुरा का ईजारा की कबुलाति की नकल तौ आगे भेजी थी, तिसो सारी हकीकति अरज पहुंची होयगी जी। अर पटो देवा मौ राजस्यंघ जी फिरि गया जो दिली मौ म्हांकै मुनमदी जगजीवन दास, साह नैन सुख थे ईजारो ठेहरायो छै तिस माफिक कबुलाति फेरि लिखी दयी। तब भंडारी जी वा वंदे यामौ रदबदल करि पटो लै हजुरि भेजा है सो अरज पहुंचैगी जी।

श्री महाराजाधिराज सलामति। हरचंद मुतसदी पुत्र लाहौर के नाजिम

1. इजारा हाल साल=चालू वर्ष का ईजारा।
2. किसमतिनामा—वह दस्तावेज जिसमें भू-राजस्व के बंटवारे से सम्बन्धित विवरण दिया जाता था।

करी जो आगे नासिर खां नावं सुबै काबिल केनै खत २[1] श्री जी को लिखे थे अर हमी दोनो खत हजुरि पहुचाएँ सो अब तक उनका जुवाव ईनायति न हुवा सो अब बंदा उमेदवार है जो उन खतों का जुवाब ईस मजमुन आवै जो पेसौर[1] मैं बाग वा हवेली सरकार के हैं तिसका गोर खसमांना जिस भांति मुतसदी सरकार का कहै तिस माफिक करै।

श्री महाराजाधिराज सलामति। स्यांमी सीतलदास वैरागी कांथरयो प्रोहित है अर बरस विस सौं पेसौर की हवैली मौ रहै है। अर महाराजाधिराज महाराजा जी श्री वैकुठंवासी जी रोजीना[2] टका आ ठाकुर का भोगनै वा खांने कों करि दीये थे फेरि श्री महाराजा जी का अमल मौ जब तक वंदा उहा था तब तक पावै था तब पुरा सरकार सौं तगीर हुवा अर विजैस्यंघ जी को हुवा तब भी पावै था अब हरचैन मुतसदी कहै है जो बिना नई सनद कोई दयौ नही सो बंदा उमेदवार जो स्यांमी सीतलदास की सनंद ईनायत होय जो स्यांमी श्री ठाकुरा नै भोग लगावै अर श्री......जी को आसिरवाद दे जी।

श्री महाराजाधिराज सलामति। ओर तो कांम सब श्री......जी के प्रताप सौं हुये ही है अर होते है। अब भंडारी जी वा बंदा ईस बात के तलास मो है जो दोय महीना की सीख आंवैरि की होय तो सुभ सरंजाम करि अर गहोरै[3] पधारै।

श्री महाराजाधिराज सलामति। मुंतरां[4] की फोजदारी को प्रवानां तयार हुवा था, फेरि साहिजादा जी फुरमाई जो मुंतरां हमारी जागीर है उहां राजा की फोजदारी बनैगी नही। तब भंडारी वा बंदे अरज करी जो तरहार वागैरह सब महालों की फोजदारी राजा कों फुरमावै जो राजा मुजरा करि दिखावै सो अब ताई मुसकउस[5] बस हुवा नही जो मुसकस ठाहरैगी सौं पीछे सौं अरज पहुंचाउगा जी।

श्री महाराजाधिराज सलामति। मी० मांगथ सुदी १ ब्रिसपतवार के दिन रुसतम दिल खां माफिक ईलतमास नवाब महाबति खां जी के खलास हुवौ है जी अर दयौढ हजारी पांच सै सुवार को मनसब हुवा है कांगरा की किलादारी मुकरर हुई है अर हुकम हुवा मुलाजमति न करै प्रवाहरा जाय।

श्री महाराजाधिराज सलामति। पातसाह जी नै दोनो राजों को घोड़ा २ मरहमति कीऐ थे सो महाराजा अजीतस्यंघ जी के तो घोड़ा क्रिमति २०० ऽऽ

1. पेशावर।
2. प्रतिदिन।
3. घर।
4. मुंतरां=मुथरा—मथुरा।
5. मुसक्खस (मुशख्खस)—तजवीज किया हुआ, निर्धारित किया हुआ।

का आया अर सरकार मै कामि किमति का घोड़ा आया तव बंदे भंडारी जी की सलाह सौ साह कुदरतुला कों अरजी लिखी दी। साहिजादे जी दसखत कीऐ जो जिस किमति का घोडा राजा अजीतस्यंघ को दिया है तिस ही किमति का घोड़ा राजा जैस्यंघ को दयौह। सो घोड़ा बदलाय हजुरि भेजा है।

श्री महाराजाधिराज सलामति। साहिजादे जी ने निसांन वा सिरोपाव खासा दोनौ राजौं को ईनायति कीऐ हैं सो स्यौस्यंघ वा स्यौदांन राठौड़ के हवालै कीऐ है। सो हजुरि पहुचैगे जी। और पचौली जगजीवनदास जमा खरच आपना अलुफा का वा लवाजिमां को ईवतदा[1] व सरू खिदमति का करि भेजा है सो नजरि गुजरैगा जी।

श्री महाराजाधिराज सलामति। प्रगाना टोड़ा भीव मै फुटकर जागीरदारो के दांम है सो वैंभी ईजारै ठहराये है। हाल साल[2] का दु माहा, गुदसता साल[3] का सवा दु माहा, ती साला[4] का अढाई माहो ओर खरचा उनासी सौ ठहरा है। सो औरो की सनद तयार होंय है, हाल पातसाह कुली बेग गुरजबरदार का दांम दोय लाख दस हजार की सनंद दरगाही तयार थी तिसको पटो कराय वा दरगाही सनद की नकल हजुरी भेजी है अर खरच का रूपया ठाहरे हैं सो हकीकति अरज पहुंचैगी जी।

श्री महाराजाधिराज सलामति। प्रगना टोड़ा भीव की जांमिनी प्रोहित स्यांमराम की अब तक आय पहुची नही, सो उमेदवार हों जो जांमिनी सीताव ईनायति होय जी।

श्री महाराजाधिराज सलामति। नवाव महाबति खां जी को पातसाह जी खिताब ईनायति कीया है बकसियल मुमालिक महाबति खां बहादुर जफर जंग ऊफादार बहादरसाही।

श्री महाराजाधिराज सलामति। मी० मागिसर सुदी ५ सोमवार के दिन सवारां ही मसहुद खां खोजा वागै० का दरोगा, केताऐक तोबखांना का तोपची लै वांगो की महाफजति[5] के वासतैं सुवार हुवा था सो राव बुधस्यंघ जी की मिसिलि आय निकस्यां सो राव जी की मिसिलि एक बाग मो थी सो बसंत राय सौ कहाय भेजा जो तुम मिसिलि बाग सौ उठावो, दंगल मै डैरा करौ तब वा कही जो दिन एक दोय मै डेरा उठावैगे। तव मसहुद खां आगे कों चला वाजार

1. ईवतदा (इबतिदा)—आरम्भ, शुरू।
2. हाल साल—चालू वर्ष।
3. गुदसता साल (गुजश्ता साल)—पिछला वर्ष।
4. ती साला—पिछले से पिछला वर्ष।
5. महाफजति—हिफाजत, सुरक्षा।

मो आय निकसा तव ऐक दरखत तुरत का कटाऐक कलाल की दुकांन आगै पड़ा था तव कही ईसकी वाधि ल्योह तव वाजार मो सोर हुवा रजपुत दोड़े तव तोपच्या गोली चलाई सो ऐक आदमी तो वरनि गयो, आदमी ४ ऐक चिग दायल हुगे, सो हकीकति अरज पहुचै जी।

मी० मागिश्र वुदी ६, संवत १७६८।

क्रम संख्या ६२

वकील रिपोर्ट संख्या ११५

पोस वदी १, संवत १७६८

श्री रांम जी
श्री महाराजाधिराज सलामति

आगै अरजदासति करार मिती मागिश्र सुदी......की हजुरि ईरसाल करी है तिसो सारी हकीकति अरज पहुंची होयगी जी । श्री महाराजाधिराज सलामति । दरबार खरच वागैरह जो ईहां होय है सो सब भंडारी जी की सलाह सौ कीजे है जी । सो जहां भंडारी जी देह ऐक[1] कटावैं है सो तो काटि लीजै है जी अर वटो साहिजहांनी अर औरंग साह्या सराफा मैं ईकोत्रा सईमों कमि है जी सो वंदे भंडारी जी सौं या हकीकति कही जो हमारी सरकार मैं दसतुर साहिजहांन्या का है तब भंडारी जी कही जो म्हे कहा सो थे करो, ईकोत्रा सई काटी लेवा मै कांई किफायति छै या रूपया देवा मै सब रजावंद होय है सो हकीकति अरज पहुंचै जी ।

श्री महाराजाधिराज सलामति । भंडारी वा वंदा वा गुलालचंद वा पंचोली जगजीवंनदास हदायतुला खा जी के जाय जागीर की रदबदल करी तब नवाब फुरमाया जो सोरठ मै आगै जागीर फोजदार पावै था सो तो तुम सिवाय ल्यौ अर पिराग[2] मै जो आगै जसवंत स्यंघ पावै सो ए सिवाय ल्यौ । अर भंडारी की जागीर अजमेरि की पायबाकी है तिन सो सिवाय ल्यौ । तब भंडारी जी खिलवति मै अरज करी जो आगै नवाब खानखानाजी हमारी बाह पकडी थी तिन ही भांति नवाब अबै हमारी बाह पकडै । तब नवाब जुवाब दिया जो तुम

साहिजादे जी सो ईस बात की अरज करो मै भी साहिजादे जी सौ अरज करौंगा। साहिजादे जी फुरमावैंगे तो मै तुमको कौल दयौहगां। हमको अर तुमकों साहिजादे जी का हुकम बजाय ल्यावणा है। तब सब नवाब सो रूखसति होय, क्रिपाराम जो पेसदसत नवाब का वा मुबा नवीस अजमेरि वा अकबराबाद वा पिराग का है तिस के डेरे गये, अर उससो रदबदल करी जो तुम हमारा कांम सिताब करि दयौह। रूपया ३००००) नवाब को देहिगे अर रूपया हजार १००००) तुमको देहिगे। तब क्रिपाराम जुवाब दिया जो मेरे तांई रूपया पांच हजार ही दयौह पाणे नवाब ने रूपया चालिस हजार पुरा करि दयौह। तब भंडारी जी रूपया ४००००) तो नवाब नै अर रूपया १००००) क्रिपारांम नै देना ठहराया जी अर नवाब को भी रूपया क्रिपाराम की मारफति देना मुकरर कीया छैं जी।

श्री महाराजाधिराज सलामति। मिर असदुलाह[1] मनसवदार पातसाही को खिदमति फोजदारी वा अमीनी प्रगनै बैराठ वा सिवाने की हुई सो उन मसाले के वासतै पातसाहजी को अरजी गुजरांली तिस पर दसखत खास साद[2] होय आये तिसकी नकल हजुरि भेजी है सो नजरि गुजरैली जी।

श्री महाराजाधिराज सलामति। पातसाहजादा जहांसाह जी के मुतसदयौ पातसाहजी कों अरजी गुजरांनी जो प्रगना मुतसफा बादसाहिजादे जी की जागीर मैं है तहां दोनो राजौं के लोग कही जाय है सो सब जागीर उजड़ होय गई। तिस पर पातसाहजी दसखत कीऐ तिस की नकल हजुरि भेजी है सो नजरि गुजरैली जी। श्री महाराजाधिराज सलामति। बंदा वा भंडारी को नवाब हदायतुला खां जी बुलाय बोलमा दीया जो ईनायतुलाखां जी की जागीर उहा थी जो तुम्हारे लोगों खराब करी तब हमो अरज करी जो अब ताई तो राजौं की नालिग[3] कही ठोर को आई नही या अज रहैंगी, नवाब की जागीर राजो के लोगां क्यो करि खराब करैंगे जी। तब नवाब हीदायतुला खां जी खत लिखी दीया सो हजुरि भेजा है जी। सो गुरनि मजलसी बाबत का जुवाब सिताब ईनायति होय जी।

श्री महाराजाधिराज सलामति। आगे हुंडी रूपया साहीजहान्यो[4] की आवै थी सो ही सरस मै आवै थे अब हुंटी औरंगसाह्यो की आई सो बाजार मै बटा सतलाव मै सो टकोसा सई थे कनि आवै अर बंदे माफिक सिरसते भंडारी जी सो गही जो हमारी सरकार मै दह ऐक काटि लीजे है अर रूपया सहाजहांनी

1 असदुल्ला खां।
2. दसखत खास साद—बादशाह के हस्ताक्षर।
3. नालिग (नालिश)—शिकायत।
4. शाहजहांनी रुपयों में भुगतान सम्बन्धी।

दीजै है। अर साह नैन सुख का लिखा मेरे नाव आया है जो मुहमसाजी[1] कों खरच करी तिसमे हुंडावनि दर सैकड़ै रूपया १३॥) काटि लीज्यो सो बंदे सब कागद भंडारी जी को पढाऐ। भंडारी जी जुवाब दीया जो म्हे रूपया दिलावां सो थे देवो करी बटो का हुंडावनि म्हे कदे कांघी न छै देह ऐक जहां की म्हे कहां तहां की काठि ल्यौह सो हकीकति अरज पहुंचै जी।

श्री महाराजाधिराज सलामति। गहोरा का जमीदार हिरदेई का पोता सभादत रांम का बेटा पातसाह जी के हजुरि दादखाह[2] आयो थो सो या खबरि पाई जो गहोरा की फोजदारी श्री...जी को हुई, तब आपनों दीवान बंदे पास भेजा अर हकीकति लिखी भेजी सो ऐ पेसकस देनी करै है जो हमारां उहां अमल कराय दयौ सो उसकी हकीकति बंद पारसी वजनिसि हजुरि ईरसाल कीया हैं सो नजरि गुजरैगा जी। सो जो उसका जवाब जो खात्र मुबारक सों फुरमावै सो जुवाब मा प्रवाना सिताब ईनायत होय जी।

श्री महाराजाधिराज सलामति। प्रवांना करार मी० मागिश्र सुदी ४ का वा अरजदासति साहजादे जी कों बाबत साह कुदरतुला को इनायति हुवा था सो आय पहुचा, सो प्रवांना बंदे बजनिसि भंडारी जी को पढायो। तब भंडारी जी जुवाब दीया जो अबार थे ई बात को जुवाब मति लिखो मेरे ताई भाई रुघनाथ नै श्री......जी के हुकम माफिक लिखे है मै जब ईसका जुवाब कहौं तब लिखियो। तब बंदे कही जो कहो तो अरजदासति साहजादे जी कों वा साह कुदरतुलाह को गुजरांनि, ऐं तब कही जो अब ई अरजदासति गुजरांनबा की वकत होसी तब म्हे अर थे ई अरजदासति नै गुजरांना ला सो हकीकति अरज पहुंचै जी।

श्री महाराजाधिराज सलामति। ज्यो खरच फरद २४ महीना परोज २२ का हजुरि ईरसाल कीया है सो नजरि गुजरैगा जी। सो दयारांम को हुकम होय जो खजांने का दाखिला भराय बंदे की हवालगी मै दाखिल करि दे जी।

श्री महाराजाधिराज सलामति। हदायतुला खां जी को खिताब उजारति खां की सरफराज हुवौ छै सो वाका की फरदां सो अरज पहोंची होयगी जी।

श्री महाराजाधिराज सलामति। भगवंत राय दीवान राजस्यंघ जी का नै प्रगना मालपुरा का ईजारा बाबति देना कीया था सो मुसारण आलेह[3] रूपया २०००) दीया है जी सो हकीकति अरज पहुंचै जी। मी० पोस वदी १, संवत १७६८।

---

1. मुहमसाजी (मुहिमसाजी)—महत्वपूर्ण कार्य।
2. दादखाह—आशीर्वाद लेने।
3. मु सारण आलेह (मुशरून इलैहे)—उपरोक्त।

क्रम संख्या ६३

वकील रिपोर्ट न० ११८

पोस..., संवत १७६६

॥ श्री रामजी

श्री महाराजाधिराज सलामति

॥ आगै अरजदासति करार मिती पोस वदी १ संवत १७६६ की हजुरि ईरसाल करी है तिसों सारी हकीकति अरज पहुंची होयगी जी।

श्री महाराजाधिराज सलामती। मिती मागिश्र सुदी १२ सोमवार के दीन साह कुदरतुलाह के आदमी सों वा न्यामतुला वा असीर खां काबिल वाले का बेटा तिसो गुफनगो हुई सो साह कुदरतुलाह खां का आदमी को जखमी कीया तब साह कुदरतुलाह जी गुसा खाय ईहतमाम खां के डेरे रूसि जाय बैठे, तब या खबरि साहीजादे जी को हुई तब साहीजादे जी फरमाया जो तुम जाय साहि कुदरतुला खां कों जिस भांति रजामंद करि लै आवो, अर दिवान खास व अदालति का दारोगा नै हुकम हुवा जो जब तक साह कुदरतुलाह को ऐ न लै आवै तब ताई हजुरि मा आवै तब माफिक हुकम कै बांजाय साह कुदरतुलाह जी के मिनति करि आजीजी करि लै आऐ। फैरि घड़ी चारि राति रह्या साह कुदरतुलाह जी सुवार होय सहैर लाहौर को गये। किसी को जाहिर न हुवा जो सहैर मै कुंण जायगै जाय रहे। भंडारी जी साह कुदरतुलाह पासि रदबदल को गऐ थे सो साह कुदरतुलाह जी तो पाऐ नही तब राति कों साह जी के सब आदमी बुलाय अर कही जो बाहुत बुरी करी साहजी जहां सहैर मै गऐ होय वहा मुनै बतावो, तब उनौनै सहैर मैतिसांदि, तब भंडारी जी साहिजादे सौ अरज कराई जो मै ठौर साह जी की पाई है हुकम होय तो जाय लै आऊ। तब साहिजादे जी फुरमाई जो अलबतै जाय ले आवो। तब भंडारी जी घड़ी चारि राति पाछि सीरह्या असवार होय गजरवाजे डेरे आया अर जहां जहां लसकर मै साह जी के रहणै की ठौर थी तहा गुलालचंद कों भेज्या अर बन्दे सों कहा जो तुम ईहाही

रहो, गुलाल चंद साहजी की खबरि ल्यावै तब तुम जाय साहजी की तसलहैकीज्यै अर साहजी को डेरे ले जाज्यौ अर मै सहैर जाय साहजी की खबरि ल्हां हां। तब भंडारी जी असवार होय सहैर मै गये, जहा साहजी को उनके आदमी बताया था तहां तो पाऐ नहीं, तब लोगा बताऐ जो ईहांसो अब ही साहजी असवार होय नवाडे परि गऐ हैं। तब भंडारी जी नवाड़े गया उहां भी साहजी न पाऐ तब लोगों बताया जो साहजी मुलतांन की राह जातै है तब भंडारी जी सहैर वाहिर होय उस राह चले, ऊहा नवाव महावति खां जी सौ मिलाप हुवा तब नवाव फुरमाया जो तुम ईस वखत कहा जाते हो। तब भंडारी जी अरज करी जो साह कुदरतुलाह जी को ढुंढै थे जो जहा उनके आदम्यौ बताऐ थे तहा तो पाऐ नही। तब नवाब फुरमाया जो हमारे असवार खबरि ले आऐ है अर असवार साथ हैं सो तुम हमारी लार आवो हम साह जी को लै आंवैगे। तब नवाब वा भंडारी जी घड़ी चारि दिन रहयां, साहजी को लै आऐ। सो भंडारी जी तो आपणै ड़ेरे आऐ अर नवाव महाबत खां जी साहजी को आपणै ड़ेरे ले गया अर कुछ खिलाय अर आपणै आदमी तातवर साथ दे साहजी कों साहजी के ड़ेरे पहुंचा आऐ।

श्री महाराजाधिराज सलामति। मिती मागिश्र सुदी १४ बुधवार भंडारी खीवसी वा बंदा हदायतुला खां जी के डेरे गऐ थे, सो नावाब सौ तो मिलाप न हुवा, दुपहैर उहां सौ उठि नवाब महाबत खां जी के ड़ेरे गये। पहैर दिन बाकी रहै नवाव सुवार होय पातसाहजादे......की हजुरि गऐ अर कुदरतुलाह जी तिन दिन ताई दरवाजा मुंदि हवेली मां ऐकले बैठे रहे, अर उस दिन तो नवाब महावति खां जी को ड़ेरे को रूकसति कीया अर सुबांह हुऐ, साह कुदर-तुलाह के बुलावने के वासतै साहिजादे जी के रूका साह कुदरतुलाह को आऐ सो साह कुदरतुला ने मुकान पछे अर दरवाजा न खोला, पातसाहजादे जी अपने हजुरी साहजी पास भेजे पण साहजी कीसी सो बात न करी, तब राति पहैर ऐक गऐ सब चाकर साहजी के साथ ले ध्रोढी पर जाय उन चाकरा हाथ कहाया जो तुम भूखे प्यासे मरते है। तब साहजी उठि के वाने पास आऐ कहा तुम सोर क्यो करते हो, जोवो तुम खांना खाब, तब चाकर कंहा हम खांना तब खांयगे जब आप खावगे, तब कहा जो फते महैमद हमारा चाकर खाना ले आवो, तब खासी भंडारी जी को नाही रही सो रूखसति कीया, तब भण्डारी जी तो उहांही रहे; बंदा वा गुलाब चंद वा पंचोली जगजीवनदास को रूखसति कीया सो ड़ेरे आऐ। मी० पोसवदी १ सुक्रवार को दिन नवाब व महावत खां जी छड़ी चारि दिन पाछी लाबा की रहां, तब माफिक हुकम पातसाहजांद के साह कुदर-तुलाह के ड़ेरे आय सब लोगों कों हवेली मांसों काढ़ि दीया, नवाब नै दरवाजा पसों खंडे होय आवाज दी कै तो दरवाजा खोलो कै हम द्रवाजा तोड़ी नाखैगे,

तव साहजी नै दरवाजा खोला। साहजी अर महावति खां अंदर वैठि वातैं करी घड़ी दोय दिन सौ नवाव साहजी को पातसाहजादे जी पास ले गये, भंडारी जी धोढ़ी ताई साथ गया। साझ को नवाव ड़ेरे गये, अर पहैर राति गये साह कुदरतुलाह खां अपने ड़ेरे आऐ तव भंडारी जी साह कुदरतुलाह जी के साथ आऐ, धोढ़ी पर सों रूखसति किये। मी० पोस वदी २ सनीसर वार के रोज माफिक दस्तुर के साहजी पातसाहजादे जी के हजुरि गऐ दव भंडारी जी को भी साह कुदरतुलाह जी के साथ आये अर वंदे सों कंहा जो कहोतो मैं आज पातसाहजादे जी के हजुरि होय आंऊ, मुझै साह कुदरतुलाह नै कहा है, तव वन्दे जुवाव दीया जो दोनी सरकारो का कांम तुम को करना है जो खात्र मैं सो करो। तव भंडारी जी को साह कुदरतुलाह ने साहिजादे जी की हजुरी वुलाय भेजा, घड़ी ऐक हजुरी रहे पाछे डेरे आऐ, मोहर ५० वा छीट थान १० मुलतान का थान २ वसमाकी थान......नजरि गुजरानी साहिजादा जी सव रखाई फुरमाया जो साह कुदरतुलाह के वासतैं तुम खूव तलास कीया तुम्हारा मुजरा हुवा, मिहरवानगी फुरमाव भंडारी जी को रूखसति कीया। दुपहैर को साह कुदरतुलाह ड़ेरे आये भंडारी वा वंदा वा गुलालचंद वा पंचोली जगजीवनदास साह कुदरतुलाह जी पास गऐ तव साहिजादे जी सौं व साहजी सौं मुझै जुवाव सुवाल के आऐ थे सो सव पाछा ऐ वहोत भली भांति अदव सो लिखे थे।

श्री महाराजा जी सलामति। पहैली तो फुरमांन तयार हुये तव महावत खां जी पास साहजी नी अरज करी जो हुकम होय फुरमान लै गुरजवरदार चलै- तव पातसाह जी फुरमाया जो हसवल हुकम ईसही गुरजवरदार के हाथा ले ज्यो, राजा को ई दिन साढौर रहै हम हरसदार खां की फोज दे दवावे को भेजा है...।

क्रम संख्या ६४

वकील रिपोर्ट संख्या ११६

पोस सुदी ३, संवत १७६८

।। श्री गोपाल जी सहाय

श्री महाराजाधिराज महराजा
श्री जैसिघजी

स्वास्ति श्री महाराजाधिराज महाराजा जी श्री......चरण कमलानु खांनाजाद खाकपाय पां० जगजीवनदास लिखतं तसलीम बंदगी अवधारजौ जी । अठा का समाचार श्री महाराजा जी रा तेज प्रताप थे भला छै जी । श्री महाराजा जी रा सीख समाचार सासता प्रसाद करावजौ जी । श्री जी माईत है, धणी है। श्री परमेसुर जी री जायगा हे। म्हे श्री जी रा खांनांजाद बंदा हां। श्री पातिसाह जी श्री महाराजा जी थे महरवांन है। श्री जी सुख पावजौ जी, पांन गंगाजल आरोगण रा जतन फुरमाव जौ जी।

अप्रच खांनाजाद नवाजी रा परवांनां सासता ईनायत कीजौ जी ।

बीरादरी की जागीर को व मसरूत की जागीर कौ डोल वजारत खां जी पास लिखायो दीवानी दफतर सुं भली भांत लिखायो तीका परगनां की तफसील आगे अरजदासता मे भेजी है अर तफसील दीवान जी नै भी लिखाय दी है। सु मालुम होसी जी। आगला परगनां सीवाय फागवी का दांम आठ लाख सुलतान सिघ जी कै नांव दफतर मे वहाल रखाया था सु वांके नांव ही रखाया था, अब सुवार तो वांका कम जात वहाल रही। अर ईजाफा को तलास करा हां सु भी लेसां । सदी ईजाफ जात होसी तव चार सदी होसी। सु चार सदी का चार लाख दांम फागवी का भी ई कोल मे लिखाया अर वाकी सव तलब का दांम परयाग जी का सुवा मे सरकार तरहार मे व मानकपुर मे लिखाया है। भंडारी जी का कहा मवाफक अव डोल दीन दोय मे साहजादा

जी पास जासी, दसखत होय आसी तव डोल की नकल हजुर भेज सुं जी। भंडारी जी दोनु सरकार की तरफ सु चालीस हजार तो वजारत खा ने देणां कीया, दस हजार वांका पेसदसत ने देणा कीया।

शह कुदरतुला जी ने महावत खां जी आठ कोस सु मनाय ल्याया तो भी चार दीन तांई दरवाजो हवेली को वंद राखो। पोस वद १ महावत खां जी डेरे आया, दरवाजो खुलाय साहजी नै पातसाहजादा जी पास ले गया। भंडारी जी भी कुदरतुला जी के डेरे रहा। नवाव साहजादा जी पास सु वारे आया तव भंडारी जी सुं कही दोनु राजा चंद रोज रहणे का हुकम हुवा था सु अव हुकम हुवा राजा तो अपणी खीदमत उपर जाय अर हजार सुवार रखै हो सदार खाँ पास।

पोस वद २ भंडारी जी ने कुदरतुलाजी साहजादा जी पास ले गया तव यां पचास मोहर नजर की दस छीट सो रखाई मजकुर तो कुछ कीयो नही।

खोहरी का ईजारा के वासते हुकम आयो थो सु साहजादा का मुतसदीयां सुं प्रोहत की जामनी वेई कही सु हरगज कवुल न करे था सु हर तरह समझाया तव कही, तीन पांती[1] का तो और जामन दौ अर चोथी पांती प्रोहत की ही कवुल करसां। अर पोस वद हो प्रोहत का गुमासता कह हे ज म्हां पर प्रोहत जी लिख दे ज थे जामन होजो तो म्है साहजादा का मुतसदीयां ने रजामंद करलां म्हां की ही जामनी दां। तव खांनजाद कही, म्हां सु रूवरू कर दौ तो हजूर ने लिखां तो पर कही, प्रोहत जी का लिखा वीगर म्हे कु कर कहां तीसुं खातर मुवारक मे आवे तो प्रोहत की ही जामनी भेजजे। वांका गुमासता पेस ले जाय तो भली हे। खांनांजाद भी तलास करसी अर जो ऐक दोय पांती को ओर जामन वणे तो नीपट भलां हे। तीसुं जामनी व खरच सीताव आवे तो पटो लिखाय लां जी, अर खरीफ सुं ही देसी।

खांनाजाद जमां खरच हजुर भेजो हे सु उमेदवार हुं साहुकारां का रूपया ईनायत होय तो सरम रहे। फागुण मे खांनांजाद का लड़का को व्याह हे जो साहुकारां सु सरोधो रहे तो फेर गरज करै तो व्याह करदुं जी अर आगां सुं दर माहो दवाव में पायां जाउ।

भगोतीदास हरकारे अरज की तीकी नकल दीवान जी ने सोपी है सु हजुर भेजी है तीसुं मालुम होसी।

मुतसदी सरकार सुं सदा पाय आया[2] है सु रोज ताकीद करे हे। परीछत राव

1. पांती—भाग।
2. दरवार के मुतसद्दी हमेशा से सरकार (आम्बेर राज्य) की तरफ से निश्चित राशि (वार्षिक के रूप में) प्राप्त करते रहते थे।

क्रम संख्या ६५

वकील रिपोर्ट संख्या १२०

पोस सुदी ६, संवत १७६८

श्री महाराजाधिराज सलामती

अरजदासती करांर मीती पोस सुदी ६ कि लिखी हजुरी भेजी छै तीसौ सांरी हकीकति अरज पहुर्चा होयली जी । श्री महाराजाधिराज सलामती । मीती पोस सुदी ८ सनीसरवार कोलारा सौ देवती सांचारी का रदवदल हुई सो ती साला सरकार मैं ईजारै ठेहरया सो कबुलियती वा पटा की नकल पाछा थे हजुरी भेजुलो जी अर ईक हराफ हकीकती बंद मैं लीखी भेजी है सो मालुम होयली जी । सो उमेदवार हु जो जामनी साहुकारां की सीताब ईनाईत होय जी। अर जै जामनी आवाकी ढील होयली तो बंदा सौ वा भंडारी सौ कोलार सुण काढैला जी। जामनी व वाकी सीताब ईनाईत होय जी । टोड़ा की सी जामनी ईनाईत न होय जी जो स्यामराम का गुमासता नकारवानै तयार होय परगना टोडा की जामनी का अब तक पडया नही है जी । पिरोहीत मजकुर का गुमासता कहै छै जो या चीठि प्रोहित का दसकता की न्ही ।

श्री महाराजाधिराज सलामती । हुडी[1] दरवार खरच कै वासतै ईनाईत हुई थी तीस का जमा खरच का बंद १ ईक हरफि माफीक सला भंडारी जी की जो खरच हुवो छै तीको करी हजुरी भेज्यौ छै सो नजरी गुजरैलो जी । श्री महाराजाधिराज सलामती । दरबार खरच का जीनको देणा कीया हे सो तो वीना लीया कांम करैला नही । तीसै बंदा उमेदवार है जो खरची सीताब ईनाईत होय जी ।

श्री महाराजाधिराज सलामती । कोलार कहै जो म्हां कै तो बुलाकी चंद की मारफती रुपया ६१०००) पहुचै है अर तुम सड़सती हजार कहो हो सो रुपया छ हजारै कि कबज थे म्हानै बुलाकी चंद की मुहोर से मंगाई दयौह, म्है बुलाकी चंद

1. हुडी ।

का उकील पासी लेहगे । अर येक महीना मैं कबज न आवैली तो रूपया तुम पासी लेहगे । तीसो वंदा उमेदवार है जो कवज असली सीताब ईनाईत होय जी । अर काजी की मुहोर सौ कवज हजुरी मैं रहै जी ।

श्री महाराजाधीरांज सलामती । दवाब तो सरबराह कीया परि खरची का कसाला है तीसौ वंदा उमेदवार है जो खरची दवाब की पंचोली जगजीवनदास के नाव सीताव ईनाईत हो जी अर मुसरफतै हैवीलदार भी आवै जी ।

मीती पोस सुदी ६, सवत १७६८, मु० लाहोर ।

क्रम संख्या ६६

वकील रिपोर्ट संख्या १२१

पोस सुदो १०, संवत १७६८

॥ श्री राम जी

॥ श्री महाराजाधिराज सलामती

अरजदासती करांर मीती पोस सुदी ९ की लीखी ईरसाल करी है जी सौ सारी हकीकती अरज पहुची होयली जी। श्री महाराजाधीराज सलामती। परवांना करार मीती पोस वदी ऽऽ का लीख्या साद हुवा था सो मीती पोस सुदी ९ आय पहुता वंदा सरफराज हुवां, माथे चढाई लीया जी। हुकम आयो जो परगना चाटसु बागैहरै की तहेसील, तकफीफ वा जीयाफती[1] कै वासतै असवार १५ नुसतीयार खां का आया छै सो तुम तलास करी परवांना दीवांनी माफी का सीताब करांई भेजी ज्यो।

श्री महाराजाधिराज सलामती। फरद अरजी की तयार करी है सो ईद कै वासतै ऊजारती वाजी का उखत[2] पाया नही सो ऊकत पाय अरजी गुजरानी परवांना कराई भेजुलो जी। वांलफैल सुवारा मा ऊठवा कै वासतै जरूरी जाणी अरजदासती दीपचंद दीवान नुसरतयार खां का क नाव मै फरद नकल दसखत खास जो पातसाह जी माफ का कीया है सो लीखाई हजुरी भेजी है जी सो मुतसद्दी हजुरी का नै हुकम होय जो कागद नुसरतयार खां के पहुचावै जी अर असवार उठावै जी। परवानो कराई पाछा थे हजुरी भेजुला जी।

श्री महाराजाधीराज सलामती। हुकम आया जो परगना फागुई मै दाम खालसा पाय बाकी है सो दरोबसत जागीर मै लीज्यो सो माफीक हुंकम वंदा अमल करैलो जी। श्री महाराजाधिराज सलामती। हुकम आयो जो परगना येक-

---

1. तकफीफ व जीयाफती (तखफीफ व जियादती)—कमीवेशी।
2. उखत=वक्त, समय।

लात अठै तहकीक करी सो न हुई सो ठीक पाडी कर लीखज्यौ । श्री महाराजां-धिराज सलामती । यकलात अठै अजमेरी का कानुगो वा सो तहकीक कीयो सो उनांनै कही जो यकलात जी रो...जाद भाया का नाव है सो अरज पहुचै जी ।

श्री महाराजाधीराज सलामती। वीरादरी की जागीर के वासतै वंदा राती दीन वजीद छै । उमेदवार हु जो श्री महाराजा जी का तेज परताप थे सीताव सरंजाम पावै जी । श्री महाराजाधीराज सलामती । हुकम आयो जो मीती पोस वदी ऽऽ नै ह्ंदुवार[1] सु कुच किया है सो वंदा नै वडी सुस्याली हुई जी, अर वंदा भी अवे ईही वात का उमेदवार है जो सीताव ही श्री......जी का कदम देखु जी । श्री महारांजाधीराज सलामती । कसीदा की जोडी अठै कोई नही सो मुतसदी हजुरी का नें हुकम होय जो कासीदा की जोड़ी सीताव भेजै जी । अवै तफाऊत ज्यादा पडया है सो कासीद आवै तो पै दर पै खवरी पहुचावो करूजी ।

श्री महारांजाधीराज सलामती । परगना वहात्री की जामनै के वासतै आगै अरज लिखी छी सो मालुम हुई होसी जी । सो वंदा उमेदवार है जो जामनी सीताव ईनाईत होय जी । जामनी आवा की ढील होयली तो को लार भंडारी वां वंदा सौ सवाग करैला जी । मीती पोस सुदी १०, संवत १७६८ ।

क्रम संख्या ६७

वकील रिपोर्ट संख्या १२३

माह वदी ६, संवत १७६८.

॥ श्री गोपालजी सहाय छै जी

॥ श्री महाराजाधिराज महारांजा
॥ श्री जैसिघ जी

॥ : ॥ स्वस्ति श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री चरण कमलान सदा सेवग खानांजाद खाकपाव पचोली जगजीवनदास लिखतं तसलीम वंदगी अवधार जो जी। अठा का समांचार श्री महाराजा जी रा तेज प्रताप कर भला छै जी । श्री महाराजा जी रा सीख समांचार सासता प्रसाद कराव जो जी । श्री जी घणी छै, साहीब छै, श्री परमेसुर जी री जाईगा छै जी। म्हें श्री महाराजा जी रा खांनाजाद वंदा छा जी । श्री पातसाह जी श्री जी से मीहरवांन छै तीको श्री जी सुख पावजो जी । पांन गंगाजल आरोगण रा घणां जतन फुरमाव जो जी ।

। अप्रंच श्री महाराजा जी को परवानो आयो सु माथे चढ़ाई लीयो, तमाम सरफराजी व वंदनवाजी हुई जी ।

। मसरूत[1] की व वरादगी की जागीर मे परगनां भंडारी जी की व दासजी की सलाह मवाफक लीया अर वाकी जु ज तलव रही छै सु भी यांकी सलाह मवाफक लेसा जी ।

। हुकम आयो, जमां खरच की व दवाव की वरावरदी की हकीकत हीदंवी परवांना सु मालुम होसी हीदवी परवांनो ई जोडी की साथ पोहचो न्ही, पोहचसी तव जवाव अरजदासत में करसु जी, पण खांनाजाद का वेटा को व्याह फागुण मै

---

1. मशरूत जागीर ।

है, आजसु ऐक महीनो ब्याह को रहो है, सब सरम श्री जी नै है । अर परगनां खोहरी के वासते साह नेन सुख जी लीखो छै जु ईजारा को पटो कराई भेजजो अर मालजामनी अठै आमल छै तीकी नीसां करदे अमल करसां के हजुर से आदमी मातवर पटो ले आवे तीकी म्हे अठे मालजामनी की नीसां कर दे पटो लेसा ।

सु श्री महाराजा जी सलामत । खोहरी को परगनो नरूका अनोप संघ की सुपरद मै तथा तनखाह मे छै अर पातसाह जादा जी के घणां मुसाहीबा मे छै, जुदी आमल मातवर उठै नही अर अठा सैं ई कांम के वासते आदमी भेजै सु वण न आवै अर या तो बमुजब हुकम के पातसाहजादा जी का मुतसदीयां से रदवदल कर इजारो ठेहरायो थो सु अब हजुर से मालजामनी साहुकार की आवै अर वांका खरच कीह की आवै तो पटो रबी से लीखाई हजुर भेजां जी ।

। ओर श्री जी सलामत । मुतसदी पातसाही दरबार का हमेसां सरकार सुं दर माहा पाई आया छै सु खानांजाद से तलब करे छै, अर वांही सु काम रात दीन छै अर परीछत राय की मोहर सुं फरद यांका महीना वगेर की छै तीकी नकल खानाजाद आगे हजुर लीख भेजी है अर ईकी नकल दीवान भीखारीदास जी भी ले हजुर भेजी है जी सु नजर गुजरसी जी । उमेदवार छां जु दबाव की तनख्वा के साथ यो भी हुकम आवे तो मवाफीक दसतूर के पायांजाई तनखाह या जरूर कर दीजे जी ।

। ओर पातसाही दरबार का चोबदार तथा दीवान आला की कचहरी वगेरे चोबदार हमेसां ईनाम दर माहा पाई आया छै अर हमेसां कचहरी दरबार जाणो हमेसा यांही लोगां से काम, तीसैं उमेदवार छुं जु हुकम आवै तो मवाफीक दसतुर के हमेसां पायो करे जी तीकीं तनखाह आवै अर रुपया दां नै बीनां दीयां तो कही दरबार मे जाय सकजे न्हीं, पहली चोबदार खीदमतगारां ने दीजे तब जाण दे ।

। ओर खांनजाद का व नवाजमा का दर माहा की तनख्वाह साहजहानाबाद व लाहोर व पेसोर का पुरा उपर आई सु माथे चढ़ाई नी सरफराजी व बंदनवाजी हुई जी मवाफीक हुकम के दीवानी परवानो पुरा का हवालदारा ने दीखायो तीपर लाहोर का पुरा का हवालदारा जाहर करी जु वारा मै पचास रुपया ई वरस का हासील मे रेवी सुधा बाकी छै सु सावण भादवा सुधा भर देसां अर पेसोर का पुरा का हवालदार खीदमत को ईसतेफा[1] लीख दीयो छै जु उठै एक दाम हासील नही । अर जहानाबाद का पुरा का हवालदारा नै हकीकत लीखै

1. ईसतेफा=त्यागपत्र ।

छै जो उठा से समाचार आवसी सु अरजदासत करसु जी, तीसु उमेदवार छुं जु हमेशां दवाव की तनखाह में सुं पाई आया छां ती मवाफीक पायां जाऊ जी ।

। ओर पातसाही दरवार को जमा खरच[1] आगे हजुर भेजो है सु नजर मुवारक गुजरां ही होसी जी तीसुं उमेदवार छुं जु जमां खरच मे साहुकारा का खत का रूपया ज्मां छै सु ईमायत होई जु साहुकारा ने दे फारग होवां जी ।

। ओर खानाजाद का वेटा को फागुण मैं व्याह छै सो उमेदवार छुं जु कुछ सरकार से मसादे ईनायत होई जी ।

। खोहरी के वासते साहजादा का मुतसदीयां सु वोहत रदवदल हुई वा कही म्हां को आमल उठै न्ही परगनो अनुपसिंघ ने तनखाह छै अर नकद टका साहुकार मालजामन दोहो तीसुं कवुल करां हां जो थांने लेनी हे तो मालजामन दो ऐक कीसत पहली खजाने भरो अर पटो लो, अर आदमी तो भेजण को साहजादां के दसतुर न्ही तीसुं श्री जी सलामत । यो परगनो लेणो है तो साहुकार की जामनी भेज दीजो, ऐक कीसत का रूपया दै अर मुतसदीयां का वाईस हजार भेजजे अर खरीफ सु लीजै तो तुमार मवाफक जु लीयो होय सु भर लीजेजी अर रवी सुं लीजें लो तो पचदु के हीसाव लेसी दोय हीसा खरीफ तीन हीसा रवी यो ठहरे है तीसुं जामनी व एक कीसत का रूपया सीताव आवे अर मुतसदीयां को खरच आवे ।

। हुकम आयो वसवे फोज जमां होय है जे सोखी करे हे थांने तंवीर होसी जो नरूका को कोई फीरयाद करे तो खवरदार रहजो । श्री जी सलांमत । श्री जी तो सीताव कुच कर अहमदावाद गुहारे पधारजो, ढील मत करो, पांच दीन सुं जादा आंबेर मे मत रहो कुच कर वाके दाखल कराजो अर पाछे फोज मुलक को वंदवसत करसी ईसो न्होय ज श्री जी वंदवसत के वासते मुकामात करे अर पातिसाह ढील सुण अेतराजो करे, साहजादो झुठो पड़े, सु मत करो जी । साह कुदरतुला जी कही हे मैं साहजादा जी सुं वजद होय पांच दीन की कहाई है अव म्हारो वचन रहे सु कीजो ।

। पातिसाह जी कसमीर की सेर नें कुच करसी जरीदाखवर[2] हे, वुनगाह[3] अठे रहे, ऐक दोय साहजादा साथ चले ऐक दोय वुनगाह पर रहै । कचहडी सव अठे रहैली सु खानांजाद तो दरवार मे साथ पातिसाहजी की चालसी । एक आदमी मातवार अठे चाहजे सु कचहडीयां सुं खवरदार रहै, दवाव अठे रहे सु सरबराह करे, तीसुं खानाजाद को जवाई धनरांम आगे मुलाजमत भी करी हे,

1 दरबार में होने वाले राज्य का खर्च व जमा का विवरण ।

2 जरीदाखबर—सरकारी सूचना ।

3. बुनगाह—शाही डेरा ।

दरबार मे वाकफ हे सु कचहड़ीयां की खबरदारी ने व अठे दत्राब का घोड़ा हाथी रहसी तीकी सरबराही ने अठे रख जासुं की तीसु उमेदवार हुं कुछ तसदक फरमावे अर वेके नांव सरफराजी को परवांनो ईनायत होय। श्री जी सलांमत या सफर बरस देस बरस की होसी तीसुं फहमीदा आदमी राखणो जरूर......।

क्रम संख्या ६८

वकील रिपोर्ट संख्या १२४

माघ वदी १४, संवत १७६८

॥ श्री परमेश्वर जी सत्य छै

॥ स्वरूपि श्री महाराजाधिराज महाराजा जी श्री श्री श्री श्री श्री जैसिंघ जी चरण कमलांइन पातसाही लसकर था आग्याकारी भां० खीवसी लीखतं, सेवा मुजरो अवधार जो जी । अठा रा समाचार श्री महाराजा जी रै तेज प्रताप कर भला छै जी । श्री महाराजा जी रा घड़ी घड़ी पल पल रा सदा आरोग्य चाहीजै जी । श्री महाराजा जी वड़ा छै जी, श्री महाराजा जी साहिब छै जी, मो सुं सदा म्हैरवांनगी फुरमावै छै जी, तीण था वसेख फुरमावण रो हुकम हुवै जी । श्री महाराजा जी रा डीलां रा पांन कपूर गांगाजल आरोगण रा घणा जतन फुरमाव जो जी ।

अप्रंचि श्री जी सलामत । यां दीनां मै साह नैण सुख रा कागद चार पांच आया था तीण मै वार वार लीखीयो छै हमकै ईजारा रो फैलाव छै सो मुलक रो वंदवसत जरूर करणो छै । वीगर वंदवसत ईजारा री वात रस न पड़सी । सो ईणरी अरज तो आगै खीजमत मै लीखी छै सो मालुम हुई होसी जी । श्री जी सलांमत । श्री महाराजा तो पातसाही कांम था वाकफ छै, नैण सुख वाकफ न छै सो ईण वात री खीजमत मै अरज करै छै जो श्री महाराज दस दीन वीराज नै वंदवंसत करै सो या सलाह मार वीचारण री न छै । श्री महाराज तो सरव जांण छै सो भलीज फुरमाव सी । पीण अवार उखैलो करणो मनासव नही । पातसाह जी अपरी तरफ था कीणी वात री तखसीर[1] न राखी छै नै पेहलाईज सुं श्री जी री जतरी फरी फीसाद री सुणै तरै भलो नै लागै जीण सु था अरज दवायनै करू छु

1. तकसीर—कमी ।

लाखै बातै हमार उखैला री मत फुरमावै हमार री याही ज सल्हा छै । आबैर पधार पांच सात दीन बीराज नै गहोरा नै कुच फुरमावै, ईण बात मै तमाम पातसाह जी री रजावंदी छै नै सरकार रो घणो फायदो छै नै श्री महाराज रै खातर मै याही ज आवै म्हांनै पातसाही था सरोधोन राखणो तो श्री महाराज रो ईखतीयार छै । चाकर होय सो तो सरकार रा फायदा री अरज लीखै ।

ओर खरची रै वासतै सा० नैणसुख नै लीखीयो छै सो वीगत मालुम करसी जी उण माफक खरची ईनाईत हुवै जी । ई तरफ सु भांत भांत खुस्याली फुरमावै ।

वाहुडता प्रवांना सदा ईनाईत कराव जो जी ।

सं० १७६८...।

क्रम संख्या ६९

वकील रिपोर्ट संख्या १२५

माह वदी ss, संवत १७६८

श्री महाराजाधिराज सलामती

॥ आगै अरजदासति करारा मिती माह वदी ११ की हजुरि हरेसाल करी है तिसौं सारी हकीकति अरज पहुंची होयगी जी। श्री महाराजाधिराज सलामति। भंडारी खीवसी बंदे सौं कहा जो महाराजा जी का परवाना वा साह नैन सुख का कागद म्हांनै वार वार आंवै छै जो हमारे ताई बंदवसत देस का करणां है सों कोई दिन की अध्र की सीख होय तो देस का बंदवसत करि अहमादाबाद गहोरां कों कुच करां। सो थे क्यौ कुच करवा की दिल की ईसारा तालंबो होयगी। तब बंदे जुवाव दीया जो मै तो कदै अैमी खिलाफ अरज लिखी नही, जो वात दरबार मौ होय आवै है सो ही लिखता हूं। तब भंडारी जी कहा जो थे वावत नही लिखी तो अब म्हे भी अरजदासती का कागद साह नैंन सुख को लिखा छां थे भी अरजदासती लिखौ।

श्री महाराजाधिराज सलामति, बंदे तो आगे भी अरजदासत्यौमो दाखिल कीया था जो पातसाह जी की मरजी रूखसति की नही, पातसाह जी का याही हुकम है जो मुहम[1] को चले जांय। अर कोई दिन की रूखसति के वासतै साह कुदरतुलाह को दवाय कहा था सो साह कुदरतुलाह कही जो मै साहजादे जी की मरजी लि है सो आंवैरी मो पांच दिन रहि अर कुच करि चले जायं अर ज्यादा दिल[2] लगांवनी मुनासिब नही सो तपसीलवार भंडारी खीवसी की अरजदासति सो अरज पहुंचैगी जी।

श्री महाराजाधिराज सलामति। आगे पातसाही दफत्र का मुतसदी वा नौसींदा

1. मुहम—महत्वपूर्ण सैनिक अभियान।
2. डेरा।

सरकार थे फसीलाना पावै थे सो बिचके दिनो मा सबब फिसाद के सोश्रौ पहुंचै नही सो अब सब दफत्रौं के मुतसदो वा नोसीदां ऊठी लागे हैं जी सो हालती मुतालिबा के दफत्र सोऐक वरक मुतालिबा की लिखाय ऐक अहदी दसतग पचौली जगजीवनदास के नाव ल्याया है सो सगली हकीकति पचौली अरजदासति सो अरज पहुंचैगी जी सो मुतसध्या नै हुकम होय ईसका जुवाब का प्रवांना ईनायति करावै जी। मी० माह वदी ऽऽ, संवत १७६८।

क्रम संख्या ७०

वकील रिपोर्ट संख्या १२६

माघ वद १५, संवत १७६८

श्री रांमचंद्र जी सहाय
श्री महाराजाधिराज श्री जैसिंघ जी

स्वस्ति श्री महाराजाधिराज श्री...चरण कमलां नु खांनाजाद खाकपाय पां० जगजीवनदास लिखतं तसलीम वंदगी अवधार जो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी रा तेज प्रताप थे भला छै। श्री महाराजा जी रा सीख समाचार सासता प्रसाद करावजो जी। श्री जी माईत हे, धणी हे, श्री परमेसूर जी री जायगा हे। म्हे श्री जी रा खांनाजाद वंदा हां। श्री पातिसाह जी श्री महाराजा जी सु महरवान हे। श्री जी सुख पावजो जी। पांन गंगाजल आरोगण रा जतन फुरमाव जो जी।

श्री जी सलामत। साह कुदरतुला जी आंवेर सुं कुच कर वाकी[1] वोहत ताकीद करे हे, कहे हे मे साहजादा जी सु वजद[2] होय आंवेर के राह होता जाय पांच दीन सुं जादा न रहसी, ई भांत कोल करार कर हुकम लीयो थो। पातिसाह जी ने खवर भी न की। साहजादे जी कही पातिसाह जी हजुर मजकुर होयगा तो मे कहुगा आंवेर मे होय राह हे तीस वासते मे कहा हे। उस राह ही होता जाय, यह वात टाल दुगा, तीस अव साहजादे जी का सुख न रहे मेरा वोल रहे। सु महाराज करे सीताव कुच करै। श्री जी सलामत। मुलक को वंदवसत मुतसदी कीयो करसी। श्री जी तो सीताव कुच कर पधारजो जी ई मे ही पातिसाह जी की रजामंदी है, ढील मत करो जी। पातिसाह जी की साहजादा जी की रजामंदी मे सब भला हे जी। महाराजा सलामत। चाटसु की, दोसा की

---

1. महाराजा जयसिंह के आम्बेर से कूच करने के लिए।
2. वजद (वजिद)—जबरदस्ती से मनाना।

तखफीफ[1] माफ हुई तीको वजारत खां की मोहर सु परवांनां कराय दास जी के हवाले कीया ।

। परवांनो म्हमद मुकीम अजमेर का दीवान के नांव

। परवांनो नुसरतयार खां के नाव

अब दोनु आसफदोला की मोहर दसखतां ने परवांनां अमीरल उमराव के देसां जी । दसखत मोहर कराय हजुर भेजसां जी ।

बीरादरी को दाग तसीहो[2] एक बरस माफ हुवो सो ईलतमास उपर दसखत हुवा तीकी नकल हजुर भेजी है अब या फरद बकसीयल मुलक के दे महाबत खां की मोहर सुं तसदीक ले याददासत अरज मुकरर करासां ।

मुतालबा का दफतर मे फरद दांम काटबा की लिख तयार की तीकी नकल हजुर भेजी है । पयादा भंडारी जी के व दास जी के खांनाजाद के पाछा लागा है, नकद कीसत कर मांगे हे । कहे हे नकद कीसत कबुल करौ कै दांम काटां हां ।

श्री जी सलामत । हजुर का जवाब आवणताई भंडारी जी, दास जी, खांनाजाद मुतालबा का मुतसदीयां की मीनत मया करां हां जो फरद हजुर का जवाब ताई राखै हे तो भलां हे न्ही जसी बणसी तेसी अरजदासत करसुं जी । अर फरद रहसी दांम न काटबो अखतयार मुतालबा का मुसतोफी को अब पेट भर टका लेसी आगा सु मनमानतो सालीनो कर लेसी, तब फरद राखसी दाम न काटसी । पहेली तो अखतयार नवीसंदा को थो, श्री जी को ईसमनवीस जी की जीलद मै श्री जी के सीर मुतालबो है सु लिखो धरो है वो नवीसंदां लिख फरद मुसतोफी ने दे तब मुसतोफी ने याद आवे सु वो ईसम नवीस सरकार सु महीनो सदा पावे हे । परीछद राय की मोहर सुं फरद खांनांजाद पास हे तीकी नकल केई बार हजुर भेजी पणवे को जवाव आयो नही वे फरद मे वे नवीसदां को नाव भी दाखल हे, जद वे नवीसंदे देखो ज हुं सदा पाउ थो सु अव केई दीन सु पाउ न्ही, तब फरद लिख मुसतोफी ने दी । अब पयादा, अहदी पाछे लागा हे सु के तो नकद की कीसत ठहरसी के दांम काटसी, अर चंद रोज वात टलसी तो मुसतोफी ने देसा वेका पेसदसत ने देसा अर वे ईसम नवीस ने देसां अर आगा सु सब ने सालीनो कर देसां तव फरद रहसी । सु अव भंडारी जी, दास जी, खांनाजाद वेसु रदवदल करे हे जो ठहरसी सु अरजदासत करसु जी ।

श्री जी सलांमत । पहली ईसमनवीस दो पावे हे सु देता तो ईतनो वीसतार कुं पडतो, टका की ठोड़ दस टका लागसी तव वात थंमसी, सु या वात तो जु

1. तखफीफ—जमादामी के पुनःस्थापन के लिए की गयी प्रक्रिया; जमादामी में कमी ।

2. दाग तसीहो (दाग़ तसहीहा)—घोड़ों को दाग़ के लिए प्रस्तुत करना ।

व्रगी तुं वनी पण अव्र तसरफ वाला[1], तकसीम वाला[2] वगेरह ज सदा पाय आया हे सु मांगे हे न दीजेलो तो तसरफ मे दांम काटसी । तकसीमवाला मवाजनां[3] का मंगावाने परवांना भेजसी, अहदी भेजसी देह वदेही को हासल मगासी, भांत भांत की सव कोई आप आपका काम की दीकतां उठासी तीसु उमेदवार हुं फरद मवाफक सव का दर माहा फसलाना चढ़ा हे सु पावे । आगां सु मंजुरी को हुकम आवे सु पांयां जाय, वांकी तनखाह आवे अर ढील हुई तो जी भांत मुतालवा की रदवदल आय पड़ी हे परमेसुर वात ने थामसी तो टका का दस टका लगासी तीही भांत सव ठोड़ ठोड़ का लगसी, टका का चार चार टका लसी, घणी महनत होसी, कोई कांम हाथ रहसी कोई कांम वीगड़ जासी । अर अवार एक मुतालवा की रदवदल आय पड़ी है ओर सव कांम खांनाजाद के हाथ हे सव ठोड़ का ईसमनवीस वगेरह सदा पाय आया है जीनै जीनै दीयां जासा तो कोई काम की चरचा नही चले तीसु कांम कांम उपर दील दे वाकफ हो जे हर कांम को नफो नुकसान वीचार जे । जी काम की खातर मे आवे जईने साधा जाजे तीही कांम को खरच मंजुर कीजे अर श्री कांम ने जाणजे ईका साधन की अव तुवाज नही तीको जवाव ईनायत होय फेर खांनाजाद कांम उपर नजर कर अरजदासत करणी होसी सु करसुं जी । पण ई कांम सुं गाफली[4] न फुरमाजे जी । तगाफल करण मे हजारा को नुकसान होसी जी । दफतरा की खवरदारी राखणी जरूर है ।

श्री जी सलामत । सो सो वरस मुं जे मुसतदी पाय आया हे सु अव कु कर छोड़सी जी । तीसु उमेदवार हुं सव मुतसदीयां को दर माहो मवाफक फरद के मंजुर होय जी ।

वीरादरी की याददासत आसफदोला का सुवाद ने अमीरल उमराव ने दी हे सु सुवाद होई आयां अरजदासत करसुं जी । रात दीन लगाहुं सु वा सनद वेगी कराय जागीर का परवांना लां हां जी ।

वीरादरी की जागीर मे खंडार, खीरनी वगेरह माहल लीखाया हे त्यांकी अरजी वजारत खां जी पास हे अव अरज होसी जी या दीना मे वजारत खां सुं खास चोकी का मनसवदारा सुं गुफतगो हुई थी तीसु आजुरदा[5] था, अव दरवार जाण लागा हे सु वेगी अरज करासां जी ।

---

1. तसरफ वाला – तसर्रुफ कार्यालय ।
2 तकसीम वाला—वह कार्यालय जो राजस्व के आंकड़ों सम्बन्धी हिसाब-किताब रखता था ।
3. मवाजना—मुवाज़ना—वसूल किये गये भू-राजस्व के वार्षिक तुलनात्मक आंकड़े ।
4 गाफली—भूल ।
5 आजुरदा—दुखित ।

शीवजी ईजारदार दवाव के हुकम कचहरी का दारोगा उपर कढायो हे ज सात हजार रूपया म्हार दवाव खुराख[1] का, खुलदम कां के वकत का केसोराय मेघराज का अमल का सरकार मे वाकी हे । तीमे तीनसे रूपया दर माहे सन ५१ मे कर दीया था, दोय कीसत पाई हे, ईतरा मे पातिसाह आलमगीर को वाको हुवो। अब हुकम होय पाउती पर अहतमांम खां के नांव हुकम कढ़ायो है सु दवाव का दर माहा मे तीन से रूपया दर माहे पावे थो अव हुकम होय तो तीन से रूपया दवाब की सरवराही जी साहुकार पर होय सु ईने भी दीया जाय अर हुकम भेजाय की ढील करतो हाकम तो ईने रूपया दीरांवे हे खानाजाद ने क सालो...।

खानाजाद का वेटा का व्याह का तीस दीन रहे गया अव ताई कुछ मसादत ईनायत हुई नही अर साहुकारा का रूपया जमा खरची का वाकी का भी ईनायत हुवा नही ज साहुकार ने दे सरोधो साध फेर व वाने ही करज ले, थोडा मे ही व्याह करतो । सो व्याह तो नजीक आयो टको घर मे नही, वडो नाव ज श्री जी को वकील हे, पंचा मे सरम राखनी सु वडा धरम संकट मे पड़ो हुं, परमेसु सरम राखे के श्री जी सरम राखै अर खांनाजाद टालो भी घणो ही कीयो पण सनमंधी हठ चढो है तीसुं इसमे सरफराजी होय जी, वडी नवाजस है।

पेसोर का पुरा उपर देढ हजार की खांनाजाद का अलुफा की तनखाह आई थी सु पुरा का मुतसदी ने वोहतेरो समझायो पण पुरा की खीदमत छोड़ ही दी, ईसतीफा लिख दीयो सु तो आगे हजुर भेज्या हे, अब दीवानी सनद पुरा का हवलदार के नांव आई थी सु वेने दीखाई सु फेर दी तब खांनाजाद अठा ताई भी कही जो लाहोर का पुरा की खीदमत करसी सो ही पेसोर का टका को जवाब करसी, तब कही या भी खीदमत छोडी मनमाने जीने दौ । तीसु पेसोर का पुरा की सनद फेर हजुर भेजी छै सु पोहचसी। अर लाहोर का पुरा मै सुं मे बारा से देणां कहा है सु भी सावण भादवे कहे हे देसुं अब दमड़ी नही, अर दीली का पुरा की खबर आई नही खबर आसी सुं अरजदासत करसा जी । सु तीनु पुरा मेसुं खांनाजाद की गरज दमडी की सरी नही । उमेदवार हुं दवाब को दर माहो जी साहुकारा सुं मुकरर होय वे पर ही खांनाजाद को दर माहो मुकरर होय जी । अठे लसकर मे तीस रूपया सवडे बटो है अर देढा खत करे हे सु रूपया को दोय रूपया लिखावे तब गरज नीठ सरे हती सु खांनाजाद की सीताब परदाखत होय जी ।

सां० १७६८, माह बदि, ऽऽ सनउ ।

---

1. दवाब खुराख—खुराख ए-दव्वाव ।

क्रम संख्या ७१

वकील रिपोर्ट संख्या १२७

माघ सुदी १, संवत १७६८

श्री महाराजाधिराज सलामती

आगे अरजदासति करार मिती माह वदी ऽऽ की हजुरि ईरसाल करी है तिसौं सारी हकीकति अरज पहुची होयगी जी। श्री महाराजाधिराज सलामति। सवांनै जहानावाद के सौ अरज पहुची जो हातम वेग साहिजादे अजीमुसां वहादर जी का निसांन दोनौ राजौं को लै गया था सो निसांन तो राजौं को पहुंचाया अर खिदमतांना हातम वेग को दे थे सो लीया नही, अर गैर रजावंदी मै रूख-सति हुआ। सो लसकर सौ कुचं करि जहानावाद कों आवै था सो कोस वारा लसकर थे वरें आया तव दौड़ा दौड़े सो हातम वेग मारा गया, वसत भाव लुटि लै गऐ। सो लसकर मै या सुहरति हुई जो राजौं सों गैर रजावंदी मै आवै सो राजौ की फौज आय मारि गई। सो ईस वात को साहिजादा जी व नवाव महा-वति खां जी वगेरे सव उमरावां के वहोत खवाव है अर हरकारा साहिजादे जी के विदा हुऐ है जो हातम वेग किन मारा सो सव हकीकति तहकीक करि लै आवो।

श्री महाराजाधिराज सलामति। जव हातम वेग ईहांसों चला तव भंडारी वा वंदे को खवरि कोई हुई नही जो साहिजादे जी क्या जुवांनी फुरमाया, क्या निसांन मो लिखा था अर हजुरि सौ भी प्रवांने ईनायति हुये तिसमै भी हातम वेग का कुछ व्यौरा न आया जो कौन कांम कों साहिजादे जी नैं भेजा था। अर हातम वेग के मारे जांने को दोनो सरकारौं की वदनामी ज्यादा हुई है जी।

श्री महाराजाधिराज सलामति। ईन वातौ सों पातसाही का रंग ओर भांति हुवा है तिसों सलाह दौलति है जो पेसखांना गहोरे को सिताव निकसै जो दिन पांच सात की ढील भी कुंच की होय तो गिरदपेस का वाका नवीस, सवांना नवीन दाखिल करै जो राजा का पेसखांना गहोरे को निकसा।

श्री महाराजाधिराज सलामति । बिरादरी की यादिदासति अब तक अमी-रल उमराज उमराव के सौं आई नही। सो भंडारी वा वंदा ईस वात के वासतै लगी रहे है सो आज काल्हि मै आवैगी जी । सो भंडारी जी कहे है जो म्हे कोई वार श्री महाराजा जी नै अरजदासति वा राह नैन सुख नै कागद लिख्या है सो थांको जुवाव भी आयो नही सो म्हे थांको सरकार मे कांम के वासते कव तक वैठया रहाला सो वंदे सो तो सरकार की हकीकति लिखी नही पणि विना खरची आंऐ ईहां काम निकसै न्ही तिसौ मुकरर अरज पहुंचाई है जो भंडारी जी खरची की तजवीज करि भेजी है तिस माफिक खरची सिताब ईनायत ज्यौ काम काज करि लीजै जी ।

मिती माह सुदी १, संवत १७६८ ।

क्रम संख्या ७२

वकील रिपोर्ट संख्या १२८

माघ सुदी ६, संवत १७६८

॥ श्री गोपालजी सहाई छै जी

महाराजाधिराज महाराज
श्री जैसंघ जी

॥ स्वस्ति श्री महाराजाधिराज महाराज श्री......चरण कमलान सदा सेवग खानाजाद खाकपाव पचोली जगजीवनदास लिखतं तसलीम वंदगी अवधार जो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी रा तेज प्रताप कर भला छै जी। श्री महाराजा जी रा सीख समाचार सासता प्रसाद करावजो जी। श्री महाराजा जी म्हांके धणी छै, साहीव छै, श्री परमेसुर जी री जाईगा छै जी। म्हे श्री जी का खानांजाद वंदा छां जी। श्री पातसाह जी श्री जी से वोहत मीहरवान छै तीको श्री जी सुख पावजो जी। पांन गंगाजल आरोगण रा घणा जतन फुरमाव जो जी।

। अप्रंच श्री महाराजा जी को परवानो खांनाजाद नवाजी को आयो सु माथे चढ़ाई लीयो, तमाम सरफराजी व वंदनवाजी हुई जी। ओर अहमदावाद गुहेरा की फोजदारी उपर असी लाख दाम ईनाम व आठ से असवार मसरूत इजाफे हुवा छै ताकी तलब एक कीरोड चमालीस लाख दाम हुवा तलब तीमै छीयासी लाग तीन हजार पाचसे दाम तो हवेली अहमदावाद गुहेरा का लीया अर वाकी दाम जलालपुर का परगना मे लीया, सोला लाख दाम परगने जलालपुर में पाई-बाकी रहा छै सो भी वीरादरी की तलब मे लेसां जी। दरवसत[1] परगनो लेसां जी कही ओर की सराकत[2] परगनां मै राख सा नही जी।

1. दरोबस्त—सम्बन्धित इकाई का सम्पूर्ण भाग।
2. सराकत (शिराकत)—दूसरे हिस्सेदार।

। ओर दवाव मै छत्रीस लाख दाम व ज हुवा था सु अे अठांरा लाख दाम परगनै साररोप मै लीया छै जी । वाकी दाम परगनै फागुवी मै तनखाह लीया छै जी सु साहा परवानां तयार कराई हजुर भेजा हा जी ।

। ओर श्री महाराज जी सलामत । हातम वेग गुरजवरदार राह मे मारो गयो तीकी हकीकत साहजहांनाबाद का सवाना नवीस का लीखा से श्री पातसाह जी नै अरज हुई । सु व फरद की नकल श्री जी हजुर भेजी छै ती सै हकीकत मालुम होसी जी । सवाना का मुतसदी हमेसा सरकार सु दर माहा फसलानां पाई आया छै सु यां दीना मे नही पावे छै जी, जो मवाफीक दसतुर के पाया जाई तो यैसी वाता की हकीकत की वासते अरज पोहचावे । तीसुं उमेदवार छां जु हमेसा पाई आया छै सु पायां जाईजो, सवाना मै लीखी आवै सु खानांजाद की वीना ईतला अरज न पोहचावै जी ।

। ओर वीरादनी की याददासत नवाव आसफुदोला के दफतर सुवाद के वासते नवाव अमीरूल उमराव जी कने गई छै सु महीनो डोढ हुवो छै जु दसखत कर दे न छै । सु साह कुदरतुलाह जी ताकीद के वासते फीरे छै जी उठा सु आयां पाछै याददासत अरज मुकरार ने जोसी जी ।

। ओर खानांजाद का दरमाहा की तनखाह पुरां उपर आई थी तीकी हकीकत आगे पे दर पे अरजदासत करी छै सु अरज हुई होसी जी । तीसु उमेदवार छुं जु हमेसा दवाव की तनखाह का दर माहा मे पाई आया छा ती मवाफीक पायां जावा । अर वंदजादा को व्याह छै फागुण का महीना मे छै सु बोहरां का रूपयां सरकार मै उठा छै सु इनाययत कीजै जु बोहरां से सलुक रहै जी । अर कुछ मसादे इनायत होई तो व्याह मै सरम रहे जी ।

मीती माह सुदि ९, सं० १७६८ ।

क्रम संख्या ७३

वकील रिपोर्ट संख्या १२९

फालगुन वदी ६, संवत १७६८

॥ श्री परमेश्वर जी साय छै

॥ स्वरूप श्री सरवओपमा विराजमांन महाराजाधिराज महाराजा जी श्री श्री श्री श्री श्री जैंसिघ जी चरण कमलांन पातसाही लसकर था आग्याकारी भां: खीवसी लीखतं सेवा मुजरो अवधारजो जी। अठा का समाचार श्री माहराजाजी रे तेज प्रताप कर भला छै जी, श्री महाराजा जी रा घड़ी घड़ी पल पल रा सदा आरोग्य चाहा जै जी। अप्रचि श्री महाराजा जी वड़ा छै जी साहिब छै जी मोगु सदा सु नीजर म्हैरवानगी फुरमावै छै तीण था वसेख फुरमावण रो हुवे जी। श्री माहराजा जी रा डीला रा पांन कपूर गांगाजल आरोगण रा घणा जतन फुरमावजो जी।

॥ अप्रचि श्री जी सलांमत। अठे पातसाह जी रा दुसमणा रो डील फागुण वद ५ रै दीन वैंचाक[1] हुवो सो नीपट घणा दवीया तद वा तीनुं साहजादां ऐकी कर नै रात घड़ी २ गया फोज चढ़ाय राखी अजीम जी सु करण रै वासतै सो अजीम जी पीण पातसाह जी री हजुर सु डेरा आयनै सारी जमीत नो वखानो तयार करा पोसी लेम्रांने सीपायां नै दीयो नै फोज चढ़ाय नै मोरचा वंधी कर राखीं। मनै पीण साहजादा जी रो हुकम आयो जमीत लैनै हजुर आवो, सो हुकम माफक सारी जमीत लैनै रात पोहर १॥ गया हजुर गयो, माहे मुजरो मानम करायो, वोहत रजामंद हुवां, पछै रात रा दोढ़ीयां माहै तसवी खांना री दोढ़ीयां हीज सुता नै वद ६ आखो दीन दोढ़ीयां हांजर हो पाछै पातसाह जी रा डील री खवर आई अवे कीउ फुरसत छै वार ऐक दोय मुढे वोलिया पीण नीराए फुरसत न हुई छै, तुरत डील वैंचा कहीज छै। साहजादा रै परदो माह वड

---

1. वेंनार (वैंचाक)=शिथिल।

भडो मांड रहो छै । सो नीवड़ा यां सु सारा समाचार लारा सु अरज लीखु छु जी । हुं साहजादा जी रैजालीयां मै चोकी खांनै छु, सारी जमीत लीया बेठो छु अठे श्री माहराज ईस समाचारा माफक घर नो जाबलो फुरमावै जमीत ज्यादा भेली करै नै उणीज जायगा वीराजीया रहै देस सु जमीत सारी हजुर बुलाईजै नै खातर ममारख मै आवै तो हमै व सुकंद नै पीण-पगे लगाय चाकर राखीजै । अबार रामोसर मै जमीत सावठी हजुर राखण री सला छै पछै जी कोई मजकुर देख सु तीण माफक सीताब अरज लिखसु जी । श्री जी अठारी तरफ सु भांत भांत खुस्याली फुरमायै । श्री जी रा प्रताप सु सरकार रो बोलबाला करा छा ।

॥ श्री जी सलांमत । खंगारोत भगवांन सिंघ जी रा तरफ सु मु० वीमलदास अठै छै सो या भगवांन सीघ जी री चाकरी री सारी हकीकत कही नै यारी सरकार री तरफ सु पाछी गोर न हुई तीणरी पीण हकीकत कही सो मारी चाकरी सु हूं पीण वाकफ छु यां मांन सुध बंदगी करी छै उण भांत मनसब जागीर छोड़ नै आय बंदगी करी नै गंठ वाई पातसाही गरदी हुई जद सु यां गांठ ही ज बांधी छै सो सारी हकीकत श्री महाराज सु मालम छै पीण पाछी यांरी गोर न हुई तीण सु अरज छै । यांरी भांत भांत गोर हुवै जी । पेहल के फेरे जोधपुर आबैर रो काम हुवो तरै तो श्री जी यांरा मुनसब दीसा न फुरमायो जदै हुकम हुवो, हुत तो वात सरै कांम होय आवतो नै अवै ही श्री जी रा प्रताप सु की उई सु तो कांम ठीक लगायो छै नै अवै यो फीसाद हुवो जीण सु अरज छै । प्र० पकांरन मै यांरो अमल कराय दीजै कीतराईफ दाम तो यांरे जागीर मे पाया छै बाकी सरकार मै ईजारै छै सो दरोवसत अमल कराय दीजै, असवारां चीना पांवते नीभणी ना वै सो सारी गौर सरकार था होसी जद नीभ सी देवी सिघ रो पटो वहाल राखण रो हुकम हुवै वै छोड़नै घरै परा गया छै सो दीलासा कर हजुर वुलाय पटो सरफराज कीजे, ईण भात उमराव ठाकुर दील सोजी सु वंदगी करै ती लारी ओरा सीवाय घणा परदाखत कीजै तीण मै सरकार की सोभा छै न आगा सु दुसरा ठाकरा नै पीण देख होय । वाहुड़ता प्रवाना मदा ईनाइत फुरमाव जो जी ।

संवत १७६८ रा फागुण वद ६, रववार ।

क्रम संख्या ७४

वकील रिपोर्ट संख्या १३६

फाल्गुन सुदी १०, संवत १७६८

श्री गौपाल जी

श्री जी सलामत । फागुण सुदि १० गुरवार जहांदार साह व जहांसहा, रफीअसां तीनु मील अजीम उपर हला करी[1], तोपखाना की मार बडी हुई। तीसरा पहर पाछै अजीम की खबर है, कोई कहे हे मारो गयो कोई कहे हे भागो। महमद करीम कांम आयो, राजा बहादर महावत खां, हमीदुदी खां, साह नवाज खां की खबर है मारा गया। कोई कहे हे महावत खां भागो, अजीम का डेरा लुटा, सब तोपखानो, खजानो जहांदारसाह लीयो। अजीम का डेरां उपर जहादारसाह का डेरा मोरचा मे था सु जाय खड़ा हुवा, फते की नोवत वाजी, सहर में दुहाई जहांदारसाह की फीरी। अवार रात की तो या खबर आई, सवार ठीक होसी सु अरजदासत करसुं जी। अमीरल उमराव को अखतयार रहै, सवार खांनाजाद भी जाय मीलसी। जोडी सरकार की तो अवार चलाई हे पण राणां जी की जोडी सु अहतयात कै वासतै ईके हाथ भी अरजदासत भेजी हैं जी। खांनाजाद ने सीख सलाह लीखणी होय सु लीखजो जी। अर खरची की सीताव मदत होय जी। गजसिंघ दमडी दी न्ही। हजुर सु मदत होय जी।

अब देखजे यां तीनुवां के कांई सुल्ह ठहरे, के लड़ाई होय सु अरजदासत करसुं जी।

थेली लखोटा भेज जो जी। दास जी भंडारी जी तो पोहचाहांसी।

सां० १७६८ फागुण सुदी १० गुर पहर रात गया। कासद पैं दर पैं भेज सु जी। कासीद हजुर सुं सीख सलाह का पैं दर पैं आवे जी।

1. आक्रमण किया।

क्रम संख्या ७५

वकील रिपोर्ट संख्या १३७

फागुण सुदी ११, संवत १७६८

श्री गौपालजी सहाय

श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री
जैसिंघ जी

स्वास्ति श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री...चरण कमलांनु खांनांजाद खाकपाय पां० जगजीवनदास लिखतं तसलीम बंदगी अवधार जो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी का तेज प्रताप थे भला छै। श्री महाराजा जी रा सीख समाचार सासता प्रसाद कराव जो जी। श्री जी माईत है, धणी है, श्री परमेसुर जी री जायगा है। म्हे श्री जी रा खांनाजाद बंदा हां। पांन गंगाजल आरोगणरा जतन फुरमाव जो जी।

अप्रंच दासजी ने भंडारी जी ले गया, सु समाचार तो पै दर पै अरजदासतां की है। दास जी हजुर पोहचा होसी जी।

फागुण सुदि १० गुरवार जहादारसाह, जहांसाह, रफीअसां तीनु मोरचां मै चढ खडा रहा। अजीम उपर हलां की, तोपखानां की मार की। अजीम भी चढ आपका मोरचां मै खड़ो रहो, तीसरे पहर सलेमान खां जहांसाह का मोरचां उपर घोड़ा उठाया सु सलेमांन खां, फीरोज खां मेवाती, बाज खां का बेटा वगेरेह फोज अजीम की दोडी थी सु मारली। जहांसाह मोरचो अजीम को खोस लीयो। उठे ही महमद करीम के गोलो लागो। तब महाबत खां भागो। महावत खां का भांगण सु अजीम की फोज चली, अजीम सुवार हजार दोय सु रह गयो तब हमाउ बखत नै व महल की सुवारी नै बुनगाह का डेरां भेजी अर आप भी भागो, तीरवा दोय तीन जाय फेर फीरौ इतरै गोली लागी, फोजा घेर लीयो, जखम बेसुमार हुवा तब अमारी घेर जहादार साह की दोढी ले आया सु घडी

चार पांच रात गयां मुवो। जहादारसाह की फतह हुई। सबकै नोवतां वाजी। अजीम का डेरा उपर तो जहांदर साह का डेरा हुवा। जहासाह कोस ऐक तफावत सुं उतरा, रफीअसां तफावत सु उतरा, खजानां उपर अमीरल उमराव जाय उतरो, तोपखानां का रहकला तीन वांका लोग ले गया ओर अजीम को लोग भागो, सु सहर मे आयो, लसकर लुट गयो। अब दुहार सहर मे जहादारसाह की फीरी। अब तीनु उठै मोरचां मैं है देखजे अब यांकै कांई चुकै, सुल्है ठहरी है सु ही रहै क लड़ै।

कुल अखतयार अमीरल उमराव को है जी। आज खांडेराय पड़हार छत्र-साल बुंदेला को अजीम की साथ थो सु आयो। ती लड़ाई का यै समाचार कहा अर राजा गोपाल सिघ कै ई भांत खबर आई, काल्ह खबर थी कोई कहै थो भागो, कोई कहै थो कांम आयो, तीको तो दोय अरजदासतां रात ही चलाई सु पोहची होसी। एक जोडी धरू अजुरदार चला, एक अरजदासत राणां जी की जोड़ी की साथ चलाई सु सांगानेर का मुतसदीयां ने रूको लिख दीयो है वे कासीदा कनै अरजदासतां ले हजुर भेजसी। मुतसदयां ने हुकम होय रहै जो अरज-दासत वे राह आवेती ने खांनाजाद का लिख्या मवाफक रूपया दे अरजदासत तुरत हजुर भेजै।

आसफदोला ने लिखणो होय सु लिखजे जुं अमीरल उमराव नै लिखै।

श्री जी फते की मुबारकबादी की अरजदासत नजर भेजजो जी, अमीरल उमराव नै खत लिखजो जी।

महावत खां तो भागो सु नदीया पार उतर गयो। साहनवाज खां, हमीददी खां की खबर न्हे मारा गया क भागा, साह कुदरतुला की खबर न्ही, राजा बहादर की कहै है जखमी भागो, राजा उतमराम की खबर है सहर मे भाग आयो, राव सकतसिघ की खबर ठीक न्है।

श्री जी सलामत। लड़ाई तलवारां की तो हुई नही, बाण, गोलां सु दोय सै, चार सै आदमी मारा गया अर महावत खां भागो तीसुं सब फोज चल खाई, अजीम मारो।

अजीम मारा पछै खांनाजाद गजसिघ पुरा का हवालदार सु कही पातसाही नई बेठे हे, परवानां मवाफक रूपया दै तो अमीरल उमराव ने जाय मीलां। फुरमान, मनसब, खीताब, जवाहर लां, चोबदार ठोड़ ठोड़ कां नै दीजै तब कांम करण पाजे सु साफ जवाब दीयो, थांको हीमायती[1] थो सु तो मारो गयो अब न जाणां थाने पुरो होयक नही जो ओर ने पुरो होय तो रूपया की पास लुं। तब खांनाजाद थोहतेरो दोलासा की पण मानी न्हो। तीसु श्री जी वेगी खबर लीजो

1. हीमायती=हिमायत करने वाला—यहाँ पर अजिमुशां के सन्दर्भ मे प्रयोग किया गया है।

जी । ढील न्होय । वोहरो कोई न्ही । सव छीप छीप रहा है । अवार तो जीव जांमो वेच साधसुं पण वेगी खवर लीजो जी । सुन्हेरी रूपहरी थेलीयां व लखोटा सीताव भेज जो जी ।

मी० फागुण सुदि ११, सुक्रवार, १७६८ दोपहर कासीदा ने सोपा ।

ओर य्याकै दोय तीन दीन मै लड़ाईय्या सुलह की चुक जासी अर दवाव का मुतसदी आण लागसी तीसु उमैदवार हु जो दवाव को भी सरंजांम आयै जो लगै तो सरवराह करू जी ।

क्रम संख्या ७६

वकील रिपोर्ट संख्या १३६

चैत्र वदी ६, संवत १७६८

श्री गोपाल जी सहाय छै जी

महाराजाधिराज महाराजा
श्री मीरजाराजा जैसंघ जी

स्वस्ति श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री...चरण कमलान खांनाजाद खाकपाव पचोली जगजीवनदास लिखतं तसलीम वंदगी अवधार जो जी। अठा का समांचार श्री महाराजा जी के तेज प्रताप कर भला छै जी। श्री महाराजा जी का सीख समाचार सासता प्रसांद कराव जो जी। श्री जी धणी छै, साहीव छै, श्री परमेसुर जी री जाईगा छे जी। म्हे श्री जी का खानाजाद वंदा छा जी। पान गंगाजल आरोगणरा घणा जतन फुरमाव जो जी।

अप्रंच आगे समाचार दरवार का की अरजदास करी छै तासे समाचार श्री जी नै मालुम हुवा होसी जी।

ओर दास जी[1] का कुच कीया पाछै खांनांजाद सहर मे कवीला नै राख अमीरल उमराव जी की हजुर गयो। नवाव भांत भांत खातर तसले करी। सदा नवाव पास हाजर रहु, वाजवल अरज गुजरानी तीकी नकल हजुर भेजी हे सु नजर मुवारक गुजरसी। चेत वदि ३ घडी दोई रात गयां नवाव खांनाजाद ने पातिसाह जी की हजुर तसवीह खांना[2] मे ले जाय मुलाजमत कराई, पांच मोहर नजर की सु माफ हुई। पातिसाह जी श्री जी की भांत भांत खातर जमां फुरमाई अर वाजवलअरज मंजुर की तीकी विगत—

---

1. दीवान भीखारीदास।
2. तसवीहखाना=पूजा करने का कमरा।

मीरजा राजा को खीताब पावां, सु मंजुर कीयो सु खीताब श्री जी ने मुबारक होय जी।

मनसब सात हजारी जात सात हजार सुवार बदसतुर मीरजा राजा के पावां, सु मनसब की नवाजस[1] फुरमान मे लिखी है सु मालुम होसी।

खीताब व मनसब की नवाजस को व ईनायत महरबानगी को फुरमांन पावा, हुकम कीयो, लिखो खानांजाद के हवाले करो। अर महरबानगी कर खानांजाद नै सरपाव ईनायत कीया सु फरमान व अरजदासत सवार ही हजुर चलायो है सु बोहत अदब सुं फुरमांन लीयो होसी वाके दाखल कराया होसी जी। सु श्री जी महाराजा जी नै खीताब, मनसब मुबारक होय जी। पातसाह जहादार साह होय चुका, तखत बेठा, अब सुकरगुजारी की अरजदासत व नजर मोहर २२)) बाईस भेजी है सु मंजुर होय जी।

महाराजा सलामत। चेत बदि ५ अजीमशं का मारा पछै दस दीन ताई सुलाह की बाता रही। जहासाह ई मीती जहांदारसाह नै कहाई भेजी, मुलक माल जी भांत तेमुर की ओलाद बाट आया है ती भांत बटसी। आज हुं भी चढ़ खड़ो रहुं हुं थे भी चढ़ खड़ा रहो। सु जहांसाह आई मेदान में खड़ो रहो, जहांदारसाह व रफीशं दोनुं मील चढ़ खड़ा रहा। चेत बदि ५ सारे दीन तोपखांना की लड़ाई रही, चढा खड़ा रहा, साझ ने उठे ही डेरा कीया। चेत बदि ६ सारे दीन लड़ाई तोपखांनां की रही। घड़ी चार दीन रहां फेर ड़ेरा खड़ा कर डेरा दाखल हुवा। जहांसाहा डेरा मे जाई घडी ऐक वेठ फेर सुवार होय खड़ो रहो अर तलवार की ही मार करतो आयो। जहांदारसाह रफीश भी चढ़ खड़ा रहा। तीनुं तरफ का आदमी हजार दोय दलवादल के नजीक तलवांर सु काम आया। अमीरल उमराव उपर तुट पड़ो। मोरचा मे साझ पड़ा जहासाह काम आयो, एक वेटो मारो गयो दोई छोटा वेटा पकड़ आया।

जहांदारशह व रफीअशं सादीयानां[2] वजाय डेरा फेर दाखल हुवा वेही दीन पहर रात गया जहांदारसाह रफीअशं नै कहाय भेजो, आगे काबल वगेरै हीमो थांको थो अब थे म्हारी रीफकत[3] करी काबल के बदले पुरब जहांसाह ने थी सु थे लो; दखण चाहो दखन लो। तब रफीअशं अरज कर भेजी, जदसुं खुदाय नै दुनीया पैदा की हे जदसुं कीसही नै पातिसाही मांगी पाई होय तो मै भी मांगु। दीन नीकलते नीमाज के वकत लड़ाई है, अर तोपखांना अब ही से छुटे अर हजरत भी रात को आराम करे हुं भी आराम करु, जावाब भेज तोपखांनां की लड़ाई

1. नवाजस (नवाजिश)=महरबानी।
2. सादीयानां—नक्कारा।
3. रीफकत—रिफाकत।

तीन पहर रात तांई भली भात हुई, घड़ी चार रात पाछली रही तव रफीअशं सुवार होय खड़ो रहो, जहांदारसाह सुवार होय खड़ो रहो, गोली तीर की मार करी।

चेत वदि ७ सोमवार घड़ी दोय दीन चढता अमीरल उमराव दोडो, रफी-अशं की फोज भागी। रफीअशं हाथी उपर सु उतर धरती उपर तीरंदाजी करण लागो, जहा तांई तीरंदाजी करतो रहो तहांतांई तीरा मै पोई लीयो उठै ही रफीअशं काम आयो। सुलतान ईवराहीम रफीअशं को वड़ो वेटो लड़ाई मै काम आयो। दोई वेटा पकड़ लीया। सु ई भांत अजीमशं व महमद करीम मारा गया। कोई कहे हे महमद करीम गयो अर जहांशह व रफीअशं एक-एक वेटा समेत मार लीया। अव जहांदारसाह पातिसाह होई तखत वेठा।

महाराजा जी सलामत। अव मनसव की तसदीक याददासत करावणी, जागीर लेणी, परवांना करावणां, तीसु दरवार खरच की खरची की वेगी खवर ले जो जी। जो दासजी ही ने भैजणां खातर मै आवे तो दासजी ने भैज जे, ओर कोई मुनसदी भेजणो खातर मै आवे तो वेने भेजे जो। अर खातर मे आवे ज वकील खीताव लीयो, मनसव लीयो, काम थो सु कर चुको। जागीर मे जो परगनां लिखसा सुं तलास कर लेसी तो खरची दरवार खरच नै सीताव ईनायत होय जी।

खानाजाद मनसव, खीताव, फुरमांन लीयो तीको नतीजो असो पावे जे सारा संसार मै नवाजस जाहर होय।

महाराजा अजीत संघ जी का तो अठै कोई थो नही। भंडारी जी व गुलाल चंद वकील तो देस उठ गया अर खानांजाद सु तो वां ईसी नवाजस करी थी ज सो वरस की वकालत दुर करी, तीस वरस वीरवा मे चाकरी करी, कई वार मुजरा कर दीखाया पण जद ही जोधपुर पायो तव ही वकील ओर करो। पीण खानां-जाद ई वात पर नजर न करी अर या जाणी ज श्री जी का खानांजाद हुं ई वार या मै वांकी भी वंदगी करदी। ती पर फुरमांन व महाराजा को खीताव व मनसव लीयो सु वांका भी फुरमांन श्री महाराजा कने भेजो है सु पोहचो होसी। श्री जी वा कने भेज दीयो होसी। अव वाने समाचार की अरजदासत भेजी हे सु वां कने भेज जो जी।

ओर अमीरल उमराव के ऐक तीर मोढा उपर लागो छे। ओर रूसतमदील खां ने, मुखलस खां ने गरदन मारो। ओर हुकम हुवो छ अजीम की साथ जहांसहा, रफअशं की साथ लोग भागा हे तोकी हकीकत अरज करो ओर हकीकत होसी सु पाछा थे अरजदासत करस्यां जी। मीती चेत वदि ६, संवत १७६८।

क्रम संख्या ७७

वकील रिपोर्ट संख्या १४१

चैत सुदी ६, संवत १७६६

श्री गोपालजी सहाय छै

॥ श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री
मीरजाराजा जैसिघ जी

॥ : ॥ अरजदासत खांनाजाद, पां० जगजीवनदास की महाराजा सलांमत आगै अरजदासती पैं दर पै भेजी है सु नजर गुजरी होसी जी ।

॥ महाराजा सलांमत, जहांसाह, रफीअसां मारो अर महमद करीम पकड़ लीयो । जहांदारशह पातिसाह होय चुका तब खांनाजाद अमीरल उमराव जी सुं अरज की लड़ाई की पहलां फुरमान मनसब खीताब ईनायत हुवो थो सु तो फुरमान चलाया सु हजुर पोहचा होसी । सुकरगुजारी की अरजदात अब आयसी, पण अब हजरत तखत बैठा सब नै मार लीया खातर जमां हुई, अब पातिसाह होय चुकै अब तखत बैठे पीछै फुरमान खीताब को, परवानगी को ओर दीजै । ती पर नवाब पातिसाहजी सुं अरज की ज वकील फेर ओर भी फुरमान मांगै है । तब पातिसाह जी महरबान होय हुकम कीयो ओर भी उनकी दीलासा का फरमांन भेजौ, खिताब लिखौ । सुं श्री जी का प्रताप थे खीताब मनसब लीयो तीकौ फुरमान ओर भैजो है, सु बोहत अदब सुं लीजौ जी अर सुकरगुजारी की अरजदासत, नजर तखत बेंठा की मुबारकबादी की सीताब भेजजौ जी, ढील मत करौ जी ।

॥ कदीम जागीर बहाल रहै तीका बदस्तुर साबक का परवाना की ईलतमास दी थी सु नवाब का दसखत कराया बहाल करी सु मुबारक होय जी अब खरची आवेतो परवाना करावां जी ।

सां० १७६६, चेत सुदी सुरज रहै अरजदासत चली ।

क्रम संख्या ७८

वकील रिपोर्ट संख्या १४३

चैत सुदी १३, संवत १७६९

श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री मीरजाराजा जैसिघजी

स्वस्ति श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री......चरण कमलांनु खांनाजाद खाकपाय पां० जगजीवनदास लिखतं, तसलीम बंदगी अवधार जौ जी। आठा का समाचार श्री महाराजा का तेजप्रताप थे भला छै श्री महाराजा जी रा सीख समाचार सासता प्रसाद कराव जौ जी। श्री जी माईत हे, धणी हे श्री परमेसुर जी री जायगा है। म्हे श्री जी रा खांनांजाद वंदा हां, श्री पातिसाह जी श्री महाराजा जी सुं महरवांन है। श्री महाराजा जी सुख पाव जौ जी, पांन गंगाजल आरोगण रो जतन फुरमाव जौ जी।

महाराजा सलांमत। दोय फुरमान तो पातिसाहजी का अमीरल उमराव जी खांनांजाद नै दीया सु तो हजुर भेजा सु नजर गुजरा होसी। ऐक फुरमान तो अजीम का मारां पछै जहांसाह का जीवतां खांनांजाद ने मुलाज्मत कराई पातिसाह जी महरवानगी कर सरपाव दीयो, श्री जी ने फुरमान दीयो थो। सु खांनाजाद दोय चार दीन मुख छोड़ो थो। जी घड़ी जहासाह व रफीअसां नै मार लाया वे घड़ी ही पातिसाहजी को फुरमांन व वा[1] दोनां का मारां का समाचारां की अरजदासत भेजी। फेर जहादारसाह जी तखत बेठा तव खांनाजाद अमीरल उमराव जी सुं अरज की वह फुरमांन ईनायत हुवा था सु पेसगंज सुलतांनी[2] कै दीया था। अब खातर जमां हुई ओर फुरमान दीजे तव नवाव अरज की तव पातिसाह जी ओर फुरमान ईनायत कीया। सु आज दस पदरा दीन हुवा दुसरो फुरमांन हजुर भेजो है सु नजर गुजरो होसी।

1. उन।
2. पेसगज सुलतांनी (पेशे गज-ए-सुल्तानी)—बादशाह की हजूरी में।

आज चेत सुद १३ अमीरल उमराव को खांनांजाद मुजरो कीयो, तब खांनांजाद ने कही—जवाब आज तक आया नही सु कुं, तीपर खांनांजाद कही—घड़ी पल मै जवाब की राह देखां हां कदाच राह को मुलाजो है जो ओर फुरमान ईनायत होय तो बड़ी महरवानगी है। तब नवाब कही—ओर भी फुरमान लो। सु आज अरज की, हुकम हुवो ओर फुरमांन दो, सु तयार होय है, खांनाजाद ने दे हे तो खांनाजाद हजुर भेजसी कदाच आपकी जोडी चलासी तो वाका कासद ले आसी।

खांनाजाद आपकी बंदगी मैं हाजर है, पै दर पै फुरमांन भेजे हे। मनसब ले चुको खीताब ले चुको, अब अरजदासत सुकरगुजारी की सीताब भेजजो जी। नजर तखत बेठां की भेज जो जी। अमीरल उमराव नै राजा सभाचंद ने खत भेजजो जी। मतलबां की वाजबलअरज भेज जौ जी। असफदोला जां कनै कही मुतसदी मातबर ने भेजजो जी। वांका लिखा अमीरल उमराव ने भीजवाजो जी।

तसदीक मनसब की व दसतुर साबक[1] जागीर बहाली का परवाना खर्च बीना बंद पड़ा है। सब संसार ईजाफा की तसदीकां ले हे, परवांनां जागीर बहाली का ले हे, ईजाफा की जागीरां ले है। काल्ह कोई हजुर मे यो मजकुर करेला, संसार का परवांनां आया सरकार को वकील परवांना भेजे न्ही, तीसु अप ड़र सुं अरजदासत करू हुं सनदां लेण को समय यो है। चार टका घट बध खरच ईजाफा की सनद लीजे, जागीर लीजे, आगली जागीर का परवांनां लीजे ढील न कीजे ...पछै जी भांत पातसाही का काम होय आया है तीह भांत सहज मैं होसी जी।

श्री महाराजा जी सलांमत। महंमद कुली महंमदाबाद का जमीदार को वकील अठै ईखलास खां जी कनै आण जाहर करी—श्री महाराजा जी का सुवार महंमदाबाद मै जाई महंमद कुली नै पकड़ लीयो अर परगना मै अमल कीयो, तीसुं इखलास खां जी खांनांजाद ने बुलाई कहां—हमारै वा महाराज कै कदीम सुं ईखलास है, महाराज कुं मेरी जागीर मै अमल न करणो थो, भंला अब भी महंमद कुली न छोड़ दे अर रूपया मेरी जागीर मै तहसील करा है तीकी हुडी कराई सीताब भेजै। तीसु उमेदवार हुं—ईखलास खां तन को दीवान हुवो है, श्री महाराज का कांम ने है जागीरां को कांम ईही सु लेणो है, तीसु महंमद कुली नै छोड़ दीजे अर सरकार मै रूपया तहसील हुवा है ताकी हुडी कराई सीताब भेजा जै।

श्री महाराज सलांमत। दीलदार खां लालसोट को जागीरदार सरबराह खां उपर हुकम चढाओ है। खांनांजाद ने बुलायो थो। रदबदल हुई सु सारी हकीकत

1. दसतुर सावक (दसतूर-ए-साबिक)—पुरानी प्रथानुसार।

आगै अरजदासत मे लिखी है । मी० चेत सुद १० खांनांजाद कनै मुचलको लीयो है तीकी नकल श्री जी हजुर मोकली है । सतर लाख दांम लालसोट मै दीलदार खां वगरै का तनखाह है तीमै अडतालीस लाख दांम का ईजारा बीचतो[1] पीरोहत सांम रांम का गुमासता है बाकी बाईस लाख दांम दीलदार खां वगेरह का है तांमे पांच हजार आठसै रूपया हजुर मै पाय्या—बाकी[2] का के वासतै हुकंम कढायो है । खांनांजाद तो ईह मुकदमां सु वाकफ न्ही तीसु अरजदासत गुजरत सवां य्यां का बाकी का रूपया की हुंडी कराई सीताब ईनायत फरमाव जै जी । आगां सु रवी को ईजारो लेणो होय तो पईसां का जांमन की नीसां भीजा जी ।

श्री महाराज सलांमत । सईद खां वगेरे भीव का तोड़ा का जागीरदार सरवराह खां उपर हुकंम कढायो है जु भीखारीदास जी की मारफत परगनां हम श्री महाराज की सरकार मै ईजारे दीयो है जीसमै ऐक कीसत का रूपय्या पाय्या है बाकी का कुल गया । ईतना बीच श्री पातसाह जी को वाको हुवो तीसु अब बाकी का रूपया वकील पास दीरावो । खांनाजाद नै बुलायो जद खानांजाद कही—परगनो तो म्हे श्री जी की सरकार मै ईजारै लीय्यो ही थो, एक कीसत का रूपया दीया ही था इतनां मै तुमारे गुमासतै उहां बीजेसीघ जी के ईजारो दीयो सु तुम उनसु समझो, वां कही—हमारै ताई तो हरगीज उनकु ईजारो देणो कबुल न्ही, हम तो सरकार मै ईजारो दीयो है सु रूपया की नीसां करो । तीसुं उमेदवार हुं दास जी की मोहर सुं पटो कबुलईत को य्यां कने है, झगड़ा वणै नही तीसु श्री महाराज तोडा मै अमल कीजै अर य्यां का रूपय्या की हुंडी कराई सीताब भीजा जै जी ।

श्री महाराज सलांमत । देवती सांचारी को परगनो वदसतुर साबीक कोलां नै फेर वहाल हुवो । परवानो वदसतुर साबीक बहाली को कराय्यो है अर खांनांजाद सु लागा है जु म्हाको कीसत का रूपया की नीसां करो । खांनांजाद वांसु कही—ईह मुकदमां के वासतै हजुर नै अरज लीखु हु हजुर सुं हुकंम आया सारो सबील होसी । तीसुं अरजदासत गुजरत यांका रूपया को सरंजांम करवाई भेज जै जी ।

श्री महाराज सलांमत । खांनाजाद देवती सांचारी को परगनो जागीर मै लेवा वासतै बोहत तलास मै है पण कछु कांई श्री जी को जवाब वा खरची पोहंची न्ही । खांनांजाद आपकी कृत मै भी आजीज तीसुं अब सीताब सरंजाम पोंहचा परगनो जागीर मै लेवा को तलास करां जी ।

श्री महाराज सलांमत । सरवराह खां कोतवाल कचेड़ी दीवानी को दारोगो

---

1. मध्य—मध्यस्थ ।
2. बाकयातो ।

हुवो तीनै हुकंम हुवो है—तीनुं सहजादा कनै जो जो रूपया वा घोड़ा लीया है सु फेर लो। सु सारी हकीकत आगे अरजदासत मै लीखी है सु मालुम हुई होसी। अजीम की सरकार सुं पांच हजार रूपया वा घोड़ो ऐक दास जी लीया है अर बीस हजार रूपया वा घोड़ा दोई भंडारी जी वा हजार रूपया वा घोड़ा ऐक हाथी राम बीकावत लीया है तीसुं उमेदवार हुं पांच हजार रूपया दास जी लीया है सु सरकार सुं हुंडी करवाई सीताब भीजाजै। महाराजा श्री अजीतसिघ जी सुं भी लीखजै बीस हजार रूपय्यां की हुंड़ी करवाई सीताब अठै भेजै। हाथी राम का रूपया कै वासतै खनांजाद उपर हक नाहककोतस दीय्यो है जो कठे ही नजदीक सो होय तो श्री जी वे सुं भी ताकीद फुरमाई हजार रूपया भीजाजै।

महाराज सलांमत। श्री पातसाह जी मी० चेत्र सुद ९ सफर जुमा की नीमाज पढबा नवाड़ा[1] उपर सुवार होई सहर मै पधारा था। नीमाज पढ नदी पार सीकार खेलबा पधारा। घड़ी दोई तक सीकार खेला। पेहर दीन पाछलो रहो जद नवाडा राह दोलतखांनै आंण दाखल हुवा।

महाराज सलांमत। श्री पातहाह जी मी० चेत सुदी १० हाथी नवाडा बा नै सहर मै पधारा आप कीला मै पातसाही महल...झेरोखै जाई बेठा। पांच जोडी हाथां की कीला नीचे...उपर रेती मै लडी तीन पहर तक हाथां की लड़ाई को तमासो देख सुवार होई चार घड़ी दीन रहता का आंण दोलत खांनै दाखल हुवा जी।

महाराज सलांमत। घोड़ा लीय्या है सु आसफ दोला जी की रूबरू जहानाबाद का दीवान कै हवाले कर कबज ले अठै भेज जो।

महाराज सलांमत। वकाया की फरदां हजुर मोकली है सु नजर गुजरसी जी।

चेत सुद १३ सुकरला खां आगला सुकरला खां को बेटो आकल खां आगै जहानाबाद को कीलेदार सुबेदार थो तीको दुहीतो है सो अजमेर को सुबादार हुवो।

महाराजा जी ने व महाराज अजीत सिघ जी व राव राजा बुधसिघ जी ने भीमसिघ जी हाडा ने अयजुदी साहजादा की फोज मे लिखा सु दीला पधार साहजादा की मुलाजमत कीजो जी। पंदरवी तारीख रूकसत हे बीसवी रबी अल अवल की पातसाह जी को कुच है आगरा नै।

- सां० १७६९, चेत सुद १३।

1. नवाड़ा—नाव।

क्रम संख्या ७९

वकील रिपोर्ट संख्या १४४

वैसाख वदी १३, संवत १७६९

श्री राम जी

श्री जी सलांमत। खांनांजाद नावाजी कर ईजाफो, सरपाव, घोड़ो ईनायत कीयो सु सीर चढ़ाय लीयो। तमाम सरफराजी खानाजाद नवाजी हुई, हजारां हजार तसलीमत वजाय लायो जी।

अप्र० महाराजा सलांमत। खांनांजाद ने देढो ईजाफो ईनायत कीयो सु जो खांनाजाद देढो ईजाफो लीयो होय तो देढो ईजाफा पाउ, स्वायो[1] लीयो होय तो स्वायो पाउ, अर पोण दुणो[2] पायो होय तो पोण दुणो पाउ, अर दुणो पायो होय तो दुणो पाउ। तीसु गुलाम परवरी[3] के राह देढो ईजाफो पायो तीकी सुकर-गुजारी करतां ई करू जो कदाच गुलाम परवरी के राह खांनांजाद दुणो ईजाफो ले अर अरज मुकरर करावे तो उमेदवार हुं जो जादा मीरजा न होय तो पाउ पर गुलाम परवरी कर अनवर[4] मीरजा राजा जी का वकील की मुवाफक पाउ, बलक जादा पाउं तो हीसाव है।

श्री जी सलामत। आलमगीर का समय मे मीरजा राजा जी वंदगी करी नु मालुम है, ई समे खांनांजाद वीना वंदगी खीताव लीयो सु आब सरफराजी करणी श्री जी को अखतयार है पण खानाजाद की भी या प्रतग्या है जो श्री जी मनसब मवाफक...जी को अखतयार है पण श्री जी की गुलामी की वा प्रतग्या के राह अरज करू हूं जु जीतनी अरज मुकरर कराउ जीतनो ईजाफो पाउं।

---

1. स्वायो—सवा—1¼।
2. पोन दुणो—पौने दो 1¾।
3. गुलाम परवरी—मेवार्द;
4. अनवर—उम्दवर।

श्री जी सलांमत। धनराम खांनाजाद मुलाजमत करी है। चीमा साहब की वकालत खांनाजाद धनराम के नाव मुकरर होय ई सरत उपर जो मवाफक दसतुर कै मनसब कराय जागीर ले तब रोजगार पावै।

महाराजा सलामत। मीरजाराजा को खीताव लीयो तीकी नवाजस[1] मै सरपाव, घोड़ा बकसी सु महाराजा की नवाजस की, सुकरगुजारी कठा ताई करूं। पण श्री जी ही इनसाफ करै जो मीरजा राजा का खीताब की नवाजस घोड़ा सरपाव है जो घोडा सरपाव पायो, सरफराज हुवो। म्हारी तो बुनयाद ई नवाजस की हाथी है पण ई खीताव की सरफराजी श्री जी कीही सु नजर है जी। श्री जी सलांमत। खांनांजाद सु नजर सुं ही परवरण पाई है अर पाउगो जी पण ई सरफराजी को उमेदवार हुं, जी भांत मीरजा राजा[2] जी को वकील मीरजा अनवर रहै थो ती भांत भली तरह खांनांजाद भी सरफराज होय दरबार मैं रहै जी। खानाजाद की ती सहल है पण ई खीताब की मवाफक श्री मीरजा राजा जी को वकील रहै थो ती भांत खानाजाद भी दरबार मै रहे जी।

महाराजा सलांमत। पेसदसती मै खानाजाद के है, तथा साचई वकील है, खबरदार है, उमेदवार ईजाफा का है जीसु जो खातर मुबारक मै आव्रे सु सब बंदा ईजाफा सु सरफराज होय जी।

श्री महाराजा जी सलामत। धनेसुर गुजराती की दुकांन पर रूप(या) दोय हजार पांच से की हुड़ी आई थी। सु वैकी अठै आड़त थी, दुकान तो थी नही। सु जी सराफ के आड़त थी वैकी दुकान उठ गई सु उमेदवार हु जी ओर साहुकार मातबर की हुंडी ईनायत होय जी।

श्री महाराजा जी सलामत। फखरूद्दी खां अहमूदू जनल अबदीन खां के बेटे सतर हजार रूपयां की राजा सभाचंद की नीसां क सुबा अजमेर की दीवानी व महमद मुकीम सुं व फोजदारी सांभर की नसरतयार खां सु तगीर कराय आपकै नांव ली जी।

श्री महाराजा जी सलामत। दीवान भीखारी दास जी पांच हजार रूपया महमद अजीम की सरकार सुं ले आया है सुं वां रूपयां वासतै खांनाजाद नै घणो कसालो छै तीसु उमेदवार छु जो ये रूपया सीताब ईनायत होय तो खांनांजाद को कसालो दुर होय जी जी।

मीती बैसाख बदी १३, सवत १७६९।

1. नवाजस (नवाज़िश)—मेहरबानी।
2. मिर्ज़ा राजा जयसिंह।

क्रम संख्या ८०

वकील रिपोर्ट संख्या १४५

वैसाख सुदी ८, संवत १७६६

॥ श्री गोपालजी सहाय

॥ श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री
॥ मीरजाराजा श्री जैसिंघ जी

॥ स्वास्ति श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री......चरण कमलांनु खांनाजाद खाकपाय पां० जगजीवनदास लिखतं तसलीम वंदगी अवधार जो जी । अठा का समाचार श्री महाराजा जी रा तेज प्रताप थे भला छै जी । श्री महाराजा जी रा सीख समाचार सासता प्रसाद कराव जी जी । श्री महाराजा जी माईत है, धणी श्री परमेसुर जी री जायगा है । म्हे श्री महाराजा जी रा खांनांजाद बंदा हां । श्री पातिसाह जी श्री महाराजा जी थे महरवांन है । श्री महाराजा जी सुख पावजो जी । पांन गंगाजल आरोगण रा जतन फुरमाव जो जी ।

अप्रच श्री महाराजा जी रो परवानो खांनांजाद नवाजी रो तारीख चोथी रवी अवल रो अठाईस वी माह मजकुर की पोहचो । तमाम खांनांजाद परवरी हुई, फुरन सात वजाय ल्यायो माथै चढ़ाय लीयो जी ।

हुकम श्री जी को आयो ज श्री पातिसाह जी को फुरमान वालासान[1] दरबाब सरफराजी व नवाजस वे पाया[2] को पोहचो । हकीकत मालुम हुई अर अदब सु पेस वाजाय तसलीमात वजाय लाया अर नवाब अमीरल उमराव जी की तवजह की । सुकरगुजारी लिखी श्री सु अर खांनांजाद ने हुकम आयो ज हमेस नवाब पास हाजर रहे । सु महाराजा सलांमत । खांनांजाद हमेस नवाब की खीदमत मैं हाजर

---

1. फरमान वालासान (फरमान-ए-वालाशान)—शाही फरमान ।
2. दरबाब सरफराजी व नवाजस वे पाया (दर बाद-ए-सरफराजी व नवाजिश-ए-बे पायां) —अपार सम्मान तथा मेहरबानी से पूर्ण (शाही फरमान) ।

रहै है। राजा सभाचंद[1] कै हाजर रहै है। राजा जी बोहत प्यार करै है। परवांनो राजा की मारफत बजनस परवानो नवाब की हजुर पढं सुणयो। नवाब पातिसाह जी की नजर गुजरानो, पातिसाह जी मुताले मुबारक मै ल्याय बोहत सुख पायो। नवाब से बोहत तारीफ श्री महाराजा जी की फुरमाई। नवाब दीवान खास की कनातां बारे आया तब खांनांजाद सु फुरमाई।

श्री जी सलांमत। अजब तरह को गंजबकस पातिसाह है। अर नवाब की बुजरगी कहा तांई लिखु। महाराजा सलामत। लसकर मै भांत भांत की अफवाहां उठै है अर श्री महाराजा जी ने तो म्हारी कांई कुदरत है तदबीर की अरजदासत करूं पण हजुर का मुसाहब मुतसदां ने तो उलाहणो कहां तांई लिखुं ज आज की घड़ी ताई अरजदासत तखत बेठां की मुबारक बादी की भेजी न्ही, नजर भेजी न्ही, नवाब ने खत भेजो न्ही। राजा सभाचंद ने खत भेजो न्ही, बकसी अलमुमालक खांनजहां बहादर[2] ने खत भेजो न्ही। मनसब ईजाफै हुवो तीकी तसदीक याददासत को खरच भेजो न्ही। जागीर ईजाफा की लेणी तीका परगनां लेणां को तो हुकम भेजो पर खरच न भेजो। सु कहां तांई तगाफल्नी[3] करी है तीकी अरज करू। अब हुई सु गुजरी। अब अरज पढत स्वां ओर सारा कांम पाछै करण को हुकम होय, पहली श्री पातिसाह जी नै मुबारकबादी की व ईनायत की सुकरगुजारी की अरजदासत व नजर व नवाब अमीरल उमराव नै खांनजहां बहादर जफर जंग ने, राजा ने खत भेजजौ जी। पातिसाह जी व नवाब आपकी तरफ सु खांनांजाद का कहा मवाफक सब कर दीयो। अब श्री जी फुरमावैला सु सब मंजुर होसी। पातिसाह मुतवजह[4] है, नवाब मनसाबाचा[5] श्री जी को कांम भली भांत कीयो चाहै है। या तो कह चुका ज दोर दोर तुम्हारा है जो चाहो सु अरज करज करो सब मंजुर होसी। तब श्री जी ही ईनसाफ फुरमावै फेर कांई रहो ती सीवाय जो मन्मै अरज होय सु लिख भेजजै। श्री जी रजामंद होयला सु ही पातिसाहजी फुरमावला जी। अब ढील श्री जी की तरफ की है तीसुं अरजदासत वगेरह खरच सीताब भेज जो जी।

गुरे रबी असानी पातिसाहजादो अयजुदी पचास हजार अंसवारा की फोज सुं फरखसयर की तंबीह नै रूकसत हुवा। खासो सरपाव डेरै भेजो थो, रूकसत होता हाथी, घोड़ा, जवाहर व कीरोड़ रूपया व ईजाफो दे रूकसत कीया।

---

1. राजा समाचंद—बादशाह जहांदारशाह के दीवान जुल्फिकार खां का दीवान तथा दीवान-ए-खालिसा शरीफ।
2. जुल्फिकार खां—इस समय तक दीवान का पद नहीं मिला था।
3. तगाफल्नी=भूल।
4. मुतवजह (मुतवज्जह)=ध्यान देना।
5. मनचाहे—इच्छानुसार।

पातिसाह जी आप कुच दर कुच साहजहानावाद नै चला आवै है। तीस कुच चार मुकाम मुकरर हुवा है फेर देखजै कीतना दीन लगे। नदीया का पुल तयार हुवा है।

आसफदोला पास सीताब मुतसदी भेजजो जी खत मतालब सरंजाम को अमीरल उमराव नै भीजवाजो।

श्री जी सलांमत। दसतुर सावक का परवानां करावण नै दीवान भीखारी दास जी की मारफत की हुंडीया मधे रूपया दस हजार खांनाजाद नै दीराया था ज गजसिंघ लाहोर का पुरा को हवालदार, साहुकारां कने दीवासी।

सु श्री जी सलांमत। हुंडी तो पातिसाह जी का तावुत की साथ भंडारी जी को आदमी चलो सु दीवान जी का कागद गजसिंघ भेज दीया वा मैं हुंडीया चली गई। पण श्री जी को परवानो व दीवानी सनद हजुर सुं आई थी सु साहुकारां नै दीखाई तीकी वीगत—

पांच हजार तो खड़ग सेन हाथी राम की दुकान सुं दीराया था सुं पहली तो नट गया फेर पदरा दीन को वादो कीयो ज म्हाका साहुकारां को हाल कांमीतां को लीख्यो आवेलो तो देसां। सु वेसाख सुद ७ वांको लिखो आयो सु व कबूल कर गया। लिखतं भरपाया को कराय ले गया पण तुरतं रूपया दीया न्हे। साल सवार वतावे है कहे है एक म्हीना मे भर देसा। खानाजाद काम की सुरत वताई ज परवानां करणो है पण कहे म्हीनां मे भर देसा। सु पांच हजार को तो या सुरत है थोड़ा ना देसी ५,०००)

धनेसुर की अढ़ाई हजार की हुंडी मधे दीराया था सु धनेसुर तो अठे नही ये की आढत थी सु सराफा कने वेकी आढत का वोहरा ने ले गया बोहत समझायो पण वे कहो मैं वेकी हुंडीया कद ही की नकार दी हुं दमड़ी दुं नही। झुठी ही म्हारै उपर लिख देहै सु धनेसुर कने उठे ही रूपया फेर लेजो जी। आगा नु वेकी हुंडी मत भेजजो जी।

ढोला महासिंघ की दुकान सुं हुंडीया मधे दीराया था अढाई हजार, सुं वां वां भी पंदरा दीन को वादो कीयो थो, सु वां आय जाहर कीयो ज म्हाके साहुकारां लिख भेजो है हजुर मे रूपया फेर लीया दमड़ी कोई मांगे तो दो मत, ती पर गज सिंघ वांने माकुल बोहत कीया पण वां साफ जवांव दीयो ज बीगड़ो भावे सु धरो पण दमड़ी न दुं। तब खड़ग सेन हाथीराम वाला गुमासतां समझायो ज सरकार के कांम है दो पण न दीयां। सो जो हजुर में रूपया फेर लीयां है तो चुकी, न्ही तो गुन्हगारी सुधा रूपया फेर लीजो जी अर ईसी परस्मनुमाई होय ज फेर कोई साहुकार दगो न करै

२५००)

सामराम की हुंडी रूपया १०००) ऐक हजार की खांनाजाद का रोजगार मे भेजी थी सु गुमासतां तो भाग गया अब सहुकारां कही प्रोहत ही गुमासता बुलाय भेजा अब झुठी हुंडीयां लिख लिख भेजे हे । कही सराफ भी हुंडी मोल न ली कही वो बदमा मलै है तीसुं हुंडी फेर भेजी है जी ।

ईतरा उमरावां तो दवाब सरबराह करी दसतुर आलमगीर कै कीरोड दांम पाछे पांच हाथी अर तबेलो सीरा माफक—

अमीरल उमराव ।	खांनजहा बहादर ।
खांनदोरां बकसी दुयम ।[1]	राजा गोपाल सिघ भदोड़यै ।
हफीजुला खां बकसी सीउम ।[2]	बहरमंद खां गुरजदारा कै दारोगै ।
तरबीयत खां ।	दाउद खां दखण के सुबेदार ।
अलीमरदांखां लाहोर के सुबेदार, जबरदसत खां वगेर बेटा की भी सरबरा हुई ।	ईनायतुला खां कसमीर के सुबैदार ।
अली मुराद खां मुलतान के सुबेदार को नायब ।	नासर खां काबल के सुबेदार ।
	हुसेन खां थटा का सुबा को नायब ।

ओर भी छोटां मोटा सरबरा करी अर हर रोज करता जाय है । जागीर बहाली की सनद जद दे हे तब दवाब सरबराह करा मुतसदीयां की परवांनगी ल्यावे हे । सु खांनाजाद अब तांई तो हुकम की राह देखे हे । दीन ऐक दोय मे सरबराही को हुकम आवे हे तो भलां हे न्ही तो दवाब सरबराह कर दवाब का मुतसदां की परवांनगी ल्याय दसतुर साबक का परवांनां को कांम चलतो करू हुं ईतरा मै श्री जी खरची की खबर लेही लै ।

लालसोठ का जागीरदारां को, भीम का तोड़ा का जागीरदारां को रोज हंगामो कचहड़ी मै लग रहो है सु श्री जी वांको सरंजांम जवाब सुवाल ईनायत कीजो जी बड़ो गाहरयो कर रहा है जी ।

सां० १७६६, वैसाख सुदि ८, गुरवार सवार ही चलाया ।

आज दरबार का दीखावे ने परवांना फारसी आवे, घरू मतलब का हीदवी आवे ।

लसकर मे भांत भांत की अफवाह होय रही है अरजदासत नजर ओई न्ही तीसु परवांनो दीखायो रही रहां हा, बगई अरजदासत नजर सीताब भेज जो जी ।

1. ख्वाजा हसन खाने दौरां—द्वितीय बख्शी तथा कोकलताश का बहनोई ।
2. तृतीय बख्शी ।

क्रम संख्या ८१

वकील रिपोर्ट संख्या १४६

जेठ वदि १, संवत १७६६

॥ श्री गोपाल जी सहाय छै जी

॥ श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री
मीरजाराजा श्री जैसिंघ जी

॥ सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री......चरण कमलांनु खांनाजाद खाकपाव पंचोली जगजीवनदास लि(ख)तं तसलीम वंदगी अवधार जो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी का तेज प्रताप कर भला है। श्री महाराजा जी का सीख समाचार सासता प्रसाद कराव जो जी। श्री महाराजा जी माईत है, श्री परमेसुर जी री जायगा है। म्हे श्री महाराजा जी रा खांनांजाद वंदा हां। श्री पातसाह जी श्री महाराजा जी सुं महरवांन है। श्री महाराजा जी सुख पावजो जी, पांन गंगाजल आरोगणरा घणा जतन फरमाव जो जी।

श्री महाराजा जी सलामत। परवानां खानाजांद नवाजी का जोड़ी तीन साथ ईनायत हुवा। तसलीमात वजाय लाय माथे चढ़ाय लीया। अरजदासत व नजर श्री पातसाह जी नै व खत नवाव अमीरअल उमराव जी नै व खानजहां बहादर नै व राजा सभाचंद नै व खत नवाव आसफदोला जी रो नवाब अमीरअल उमराव जी नै भेजा था सु अरजदासत व नजर श्री पातसाह जी नै गुजरानी अर खत गुजरानां। साह नैनसुख जी लीखो थो सु महाराज कंवर चीमा साहब के नांव मथुरा की फौजदारी बाबतै नवाब आसफदोला जी सु मोहमसाजी[1] ठीक करी है सो उठै रोक च्यार हजार रुपया लागै सु खरच काम कीजो। सु खांनांजाद या बात राजा सभाचंद सु जाहर की तद कही जु तुमनै वहां मोहमसाजी त की यहां

1. मोहमसाजी—महत्वपूर्ण कार्य करने की ऐवज मे तय की गयी राशि।

नवाव अमीरअल उमराव[1] की मोहमसाजी कीयां बीना कुछ काम सरंजाम पावै नही। जो नवाव की मोहमसाजी करो तो अरजी करै।

सु श्री महाराजा जी सलामत। राजा परताप सिंघ जी ईजाफा मनसब वगैरै कामां की वतीस हजार रूपयां की मोहमसाजी करी अर राजा गोपाल सिंघ असी हजार रूपयां की मोहमसाजी की, तो भी कुछ वात न पुछी। सु राजा परताप संघ जी सुबा अजमेर का तईनात होय रूखसत हुवा है सु सारा समाचार रो वरो श्री जी सु जाहर करैला। सु खानांजाद हकीकत तो लिखावै है पण नवाव अमीर-अल उमराव जी की मोहमसाजी की यां काम सरजांम पावसी तीसुं अरजदासत हजुर भेजी है। जो कुछ जवाव ईनयात होय ती माफक खानांजाद अमल मैं लावै सु ईको जुवाव सीताव ईनायत होय जी। मतालव सरजांम का नवाव नै लिख दीया है तीकी नकल हजुर भेजी है सु नजर गुजरसी। सु मतलव की जुदी मोहमसाजी मांगै है। सु मतलब उपर नजर कर जु वांनै देणो खातर मुबारक मैं आवे सु लिख भेजजो जी। नवाव खातर खाह रूपया लेला तद काम करैला जी। तीसुं सात हजारी सात हजार सुवार की तसदीक हाथ लागै तो पेट भर मनमानतो मांगै सु दीजे। मथुरा जी की फोजदारी हाथ लागै तो जु चाहै सु दीजे। अर देवती सांचारी अथवा मालपुर कै टोक वा खोहरी अथवा ओर परगनां लिखा है तामै तलव भरपांव जे तो भलां है। तीसु ऐक ऐक कांम उपर नजर फुरमाय ऐक ऐक परगना नै खातर मैलाय याकी मोहमसाजी वीचार सीताव जवाव ईनायत फुरमाव जे जी। पातसाह जी कै कुल अखतयार नवाव अमीरअल उमराव जी को है। ती भांत नवाव के तमाम अखतयार राजा सभाचंद को है। जो नवाव व राजा सभा-चंद ने खातर खाह मोहमसाजी दीजेली तो सारा कांम मनमानता सरंजाम कर देला। श्री जी सलामत। अवार रोलाधीया[2] को समै है, ईसी...समया मे जो काम कर लीजे लो सु तो सरंजाम पावैलो अर दीन चार पाछै जी भांत पातसाही काम होव है ती भांत होयला जी।

श्री महाराजा जी सलामत। दीवान भीखारी दास ना रुपया पांच हजार महमद अजीम की सरकार सु ले आया है सु वा रुपयां कै वासनै खानांजाद सु तगादो हुवो थो सु खानाजाद मुचलको लीख दीयो जु जागीर की ना तद या रुपया की नीसा करां। सु वै की नकल हजुर भेजी है सु नजर गुजरी होसी। अब पर-वानां लेवा लागा तद पयादा साथ दीया है। जु रुपयां की नीसां करो ती सु उमेद-वार हु जु यां रूपयां को सरंजाम सीताव ईनायत हो जी।

श्री महाराजा जी सलामत। परगना लालसोट व भींव का टोडा का जागीर-

1. वजीर जुल्फिकार खां।
2 झगड़ा, विवाद।

दार का ईजारा का रुपयां कै वासतै हुकम आयो जु पाछां सु जवाव लीख मोकला छा। सु वै दोय सै आदमी खानांजांद सु कचड़ी मै झगड़ता फरै है सु भीखारीदास जी ई मुकदमा सु वाकफ है। उमेदवार हु जो यां का ईजारा का रूपयां सीताब ईनायत होय तो खानाजाद वाका हमेस का झगड़ा सु खलास होय जी।

श्री महाराजा जी सलामत। दसतुर सावक वहाली जागीर का परवानां खरच वासतै रूपया हजार दस चालीस हजार आयां की हुंडी मधे तनखाह हुवा था। सु त्यामां सुं रूपया पांच हजार खड़ग सैंण हाथी राम का गुमासतां कवुल कीयां है। अर धनसुर गुजराती जी की दुकान पर हुडी की थी सो वै दीवांलो काढो ओर परोहत सामराम का गुमासता हजुर आया ओर ढोला महासिघ साफ जवाव दीयो नकारा को खत लिख दीयो सु हजुर भेजो है। तीसु उमेदवार हुं जु सीताब परवानां वहाली का तयार कराय भेजु जी। रूपया पांच हजार खड़गसैण हाथीराम का गुमासता कवुल कीया ओर परवाना तयार करावा लागो हु पर वाकी तनखाह ईनायत होय तो सीताव परवानां तयार कराय भेजुं जी।

श्री महाराजा जी सलामत। सारा अमीरा नै दवाव लगी। खानांजाद उपर भी चीठी हुई है सु खानांजाद नवाव अमीरअल उमराव जी सु जाहर कीयो थो सु फरमायो जु तुम दवाव की नाह जमां मत करो सरंजाम करो सु दोय तीन दीन टलै है सु टाला हां पर जागीर को परवानो दवाव सरवराह कीया देला। उमेदवार हुं जु दवाव की सरंजाम सीताव ईनायत होय जी।

सां० १७६६, जेठ वदि १।

क्रम संख्या ८२

वकील रिपोर्ट संख्या १४८

असाढ़ सुदी ५, संवत १७६६

।। श्री गोपालजी सहाय

।। श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री
।। मीरजा राजा जी श्री जैसिघ जी

।। स्वस्ति श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री......चरण कमलांनु खांनाजाद खाकपाय पां० जगजीवनदास लिखतं तसलीम वंदगी अवधार जो जी । अठा का समाचार श्री महाराजा जी का तेज प्रताप थे भला छै । श्री महाराजा जी रा सीख समाचार सासता प्रसाद करावजो जी । श्री जी माईत है, धणी है, श्री परमेसुर जी री जायगा है । म्हे श्री जी रा खांनाजाद वंदा हां । श्री पातिसाह जी श्री महाराजा जी थे महरवांन है । श्री जी सुख पावजो जी । पांन गंगाजल आरोगण रा जतन फुरमाव जो जी ।

अप्रच श्री जी को परवांनो खांनाजाद नवाजी को आयो सु माथे चढ़ाय लीयो तमाम सरफराजी खांनांजाद नवाजी हुई जी ।

श्री महाराजा जी को परवांनो वदसतुर सावक जागीर वहाली को आगली जोड़ी की साथ भेजो है सु नजर मुवारक गुजरो होसी जी । अब काजी की मोहर की नकल कराय हजुर भेजी है जीसु नजर मुवारक गुजरसी जी ।

श्री महाराज कवार चीमा साहब जी की जागीर बदसतुर सावक बहाली को परवांना भेज्या है सु मुबारक होय जी । खांनांजाद आपकी तरफ सु दरबार को कांम सरंजाम कर हजुर भेजतो जाउं हुं जी सु नजर मुबारक गुजरता जायसी ।

सारा मुमालक महल्ला[1] रा पुन बहाल कराया परवांना खालसा रा दफतर

1. महल्ला=शहर अथवा कस्बे के अन्तर्गत आने वाला क्षेत्र ।

सु तयार हुवा, आसफदोला की मोहर नै दीया है सु दीन चार पांच मै वै भी परवाना हजुर भेजुं हुं जी ।

लाहोर का पुरा को परवांनो हजुर भेजो सु पहचो होसी, अब काजी की मोहर की नकल भी हजुर भेजी है सु नजर गुजरसी जी ।

महाराजा सलांमत । हफत हजारी जात हफत हजार सवारां को स्याहो खालसा का दफतर सुं ले खानजहां बहादर के दीयो थो सु वे महमसाजी मांगण लागा तब खांनाजाद राजा सभाचंद सु कही म्हे घर घर फीरता न फीरसा, महा-राज को हुकम नही ज कही कै जावो, यो हुकम है नवाब की दोढ़ी पर बेठा रहो, नवाब कांम करदे सु ही सही ई बात सु राजा सुख पायो अर साहो ईजाफा को दीयो थो सु खानाजाद पास फेर लीयो अर कही अब काई करणो । तब खांनाजाद कही सजावल भेज बकसीयां का सुं तसदीक याददासत कराय मंगावो सु सजावलां नै साहो दीयो ज बकसी का सुं सनद कराय ल्यावै जी ।

महाराजा सलांमत । अठै महाराजा अजीतसिघ जी की तरफ सुं ऐक नवीसंदो दस रुपयां को महीनदार आयो है सु ईनै दरवार मे कोण पेठण दे तीसुं जहां तहां अजीतसिघ जी को जवाब सुवाल खांनांजाद पास मांगे तब खाहनाखाह जवाब कीयो चाहे जे तीसु नवाब व राजा पुछे हे सु कहो जाय है जी ।

फुरमांन केसर का कोलपंजा सुं व अमीरल उमराव जी को खत कोल पंजा सुं श्री महाराजा के नाव व महाराजा अजीतसिघ जी के नांव व दुरगदास राठोड़ के नांव तयार हुवा उजक मोहर होय चुकी, केसर सुं पंजो फुरमान पर होय चुको, खत भी नवाब को होय चुको, अब आसफदोला[1] का मीलण उपर रही थी सु अमीरल उमराव नारेला की सराय सुं वड़ा नवाब का मीलण ने गया सु मीला, बादली मे सालेमार बाग मे आसफदोला मुलाज्मत करसी पछे असाढ वदि ५ गुरुवार कीला दाखल पातिसाह होसी । अब दीन दोय चार मै फुरमान श्री जी हजुरी चलसी जी ।

साह बेग नवाब को वकील फुरमान ले श्री जी हजुर आवसी जी । मीरजा कादरी महमद सलाह को बेटो श्री जी सुं वंदगी भी राखे हे । नवाब चाहे हे ईने भी भेजे सु देखजे यो भी कलेक साह बेग ही चले । दीन दोय चार का चला फुर-मान आवे हे जी । अब फुरमान पहुचत सवां श्री जी हजुर पधारजो जी, ढील मत करो जी । नवाब कहे हे महाराजा को तुं लिख—वतन, खीताब दादे का मनसब जो बात असल थी सु तो कर दी चाहो थे जीस सुं जादा कीया अर मुलाज्मत के लगे और ईजाफा होवगा । अब अनाहक वसवास मत करो, खातर जमां सुं

1. वकील-ए-मुतलक असद खां=वजीर जुल्फिकार खां का पिता, जिसे 12000/12000 का मनसब प्राप्त था ।

सीताब हजुर आवो जु ओर भांत भांत की रीयायत पर दाखत होय दोर दोर तुम्हारा है ।

श्री महाराजा सलामत । ईखलास खां तन का दीवान की जागीर मे हवेली अजमेर का गांव है सु याकै गुमासते लिखो हे ज सब जागीर खां की व ओर सब जागीरदारां की जागीर श्री जी के मुतसदीयां तहसील करली, हर चंद लोगां फीरयाद करी पण ज्मानी ईखलास खां के मुतसदी लिखो है, जागीर छोड़ दीजो के मीरजा राजा का वकील पास केद कर रूपया लेजो, तीपर आपका मुतसदी कौ खत अमीरल उमराव पास भेज दीयो । नवाब राजा नै खत दीयो ज वकील को पढ़ावो, ताकीद करौ । तीपर राजा बजनस खत पढायो अर कहौ श्री जी नै अरजदासत करो ज अब तांई भी ठोड़ ठोड़ सुं आदमी थांणां उठाया नही सु मसल्हत सुं या बात दुर है हुई सु गुजरी, अब भी सब जायगा का थांणां उठावो, जागीर-दारां ने अमल दौ, पाछली फसल की नीसा कर लोगां का राजी नांवां भेज दौ । अर ईखलास खां तन को दीवान हे सब जागीर ई पास लेणी है, ई की तो भांत भांत मुदारात करी चाहजे तठे उलटी ईकी जागीर लुटो हो सु या कोण सलाह है । भांत भांत की नरम गरम कही अर ईखलास खां ने कह भेजो अव वकील मीरजा राजा जी को लिखे है जो तुम्हारे टके भेंजें हे तो भला है न्ही तो वकील को केद कर रूपये लीजो ।

तीसुं श्री जी ताकीद फुरमावे ज जागीरदारा की जागीर मे कोई हाथ न डाले अर पाछली फसल का रूपया लीया होय सु फेर दै अर जागीरदारां का लोग झुठ लीखे हे तो दीवान की मोहर सुं महजर[1] कराय भेजजौ जी । काजी की, चोधरी कानुगो की मोहर दसखत को तुमार मंजुर नही कहे हे । चोधरी कानुगो ने केद कर चाहे सु लिखाय ले, तीसुं दीवान सुबा को तीको मोहर सुं महजर भेजजौ जी । ओर जागीरदारां सु झगड़ झगड़ाय चार दीन थांभा जाय है पण ईखलास खां तो तन को दीवान है, रात दीन ईसुं काम रजु है जागीरा तो यो दे हे, अेसी ठोड़ का मुतसदी सु रीयायत की चाहजे जी ।

महमद सायब मनसबदार हे । वे की जागीर मअजाबाद मे हे, ऐक लाख केताक हजार दांम सु दास जी वाकफ है सु ऐक वरस का हासल को दावो करे हे । रात दीन छुरी कटारी काढतो फीरे हे । सादक महमद खां आसफदोला को नायब हे मोहर साद परवांनां उपर जरे हे सु ई को हीमायती है । श्री जी का परवांनां उपर ईकी जागीर का मतलबा घणा झगड़ा कीया तब नवाव सुं कही तब नवाब मोहर कर दी अर खांनांजाद सुं कही सब जागीरदारां की जागीर मे अमल न करे, सब का हासल की नीसा करै, अब मसल्हत न्हे ज लोगां की जागीर

1. महजर (मेहज़र)=तसदीक, प्रमाणित ।

मे दखल करी। सारा का राजीनावां फरखती सीताव भेज जु। पातिसाह जी की नजर गुजरानां।

आसफदोला की नवाव अमीरल उमराव वादली मे ही मुलाजमत की, हजार मोहर नजर की। बड़े नवाव सरपाव दीयो, चार पहर रात साथ रहा। असाढ वदि २ पातिसाह जी वादली आया। अमीरल उमराव आसफदोला की मुलाजमत कराई, वड़े नवाव हजार मोहर नजर की, हजार मोहर नीसार की। पातिसाह जी बोहत महरवांनगी की, चार काव[1] को सरपाव दीयो, वगलगीरी की खीलवत मे वेठाया, फेर रुकसत कीया। रात ने फेर वुलाया, घड़ी चार रह खीलवत कर रुकसत कीया। असाढ वदि ३ आसफदोला ने स्हर मे रूकसत कीया। पातिसाह जी मुकाम कीयो, चोथ[2] को भी मुकाम कीया। असाढ वदि ५ गुरवार पातिसाह जी सहर मे दाखल हुवा सु पहली तो वेगम साहव पास गया, फेर कीला में दाखल हुवा, कीला को तोपखांनो छुटो। एक खवर हे चार महीना अठे कीला में रहै अर ऐक खवर है दस दीन रह कुच करै। पछे ठीक पड़सी सु अरजदासत कर सुं जी।

परवांनो श्री जी को आयो तीमे हुकम आयो दस हजार रुपया, चालीस हजार की हुंडी मध दीराया है सु साहुकार दे न्है सु साहुकारा सुं रदवदल होय है, पाछां सु हुंडी भेजा हां जीतने[3] अढाई हजार की हुंडी भेजी हे तीमे देढ हजार रोजगार ईनाम मै दीराया है सु लीजो अर एक हजार जो जरूर होय तठै दरवार का कांम ने खरज कीजो अर साह नेनसुख जी लिखो अबार जागीर वहाली की सनद मत करावो, महाराजा अजीतसिंघ जी को कांम अर सरकार को कांम ऐकठो ही होसी। सु महाराजा सलांमत। दस हजार की हुंडी मै साढ़ा पांच हजार साहुकारा नु ले परवांनां क लिखाया, श्री जी को परवांनो चलायां ही दस दीन हुवा। अर चौमां साहव को परवांनो दफतरां मे दोड़ मोहर दसखत होय आयां पाछै हजुर ने परवांनो चलाउ थो क यो हुकम आयो। सु खांनाजाद तो जाणतो थो ज परवांनां सीताव कराय हजुर भेज सुं तो मुजरो होसी। सु पातिसाह जी को तो आठ आठ नो नो कोस को कुच सारै दीन राह चलतो अर रात नै लसकर मे फीरतो, घर घर ढुंढ ढुंढ नीसानी करावतो रात दीन दोड़ दोड़ मुजरा के वासते परवांनां कराय हजुर चलाउ थो ज श्री को यो परवानो आयो सु अब तो खांनाजाद तकसीरवार[4] है ज हजुर का हुकम मवाफक दोड़ा दोड़ा कर परवांनां कराया सु परवाना हजुर भेज्या हे सु नजर गुजरसी। अर सारा पुरा

1. काव—मान की बढ़ाई।
2. असाढ़ वदी 4।
3. इसी भांत।
4. तकसीरवार=दोषी।

का परवांनां कराये हे सु पाछा सु भेज सुं जी । साढा पांच हजार सराफां पास लीया है तीमे पांच हजार तो खगड़ सेन बाजुराम की दुकान सुं लिया तीमे देढ हजार खांनाजाद ने ईनाम व रोजगार में दीराया सु लीया अर चार हजार मे सब परवांनां कराया मोताद पयादा ने दी, सु तफसील जमां खरच सु मालुम होसी जी। खांनाजाद तकसीर तो की हे ज हुकम मवाफक परवांनो करायो अर दस हजार की ढोड़ चार हजार मे कांम कीयो। उमेदवार हुं तकसीर माफ होय अर साहुकारां ने रूपया मुजरा दीजे । अर महाराजा अजीतसिघ जी भी अब परवांनां करावसी ही जी। वांको दसतुर है रसमे काम न करै । भंडारी जी ने व गुलालचंद ने पहल के भेजा तब यां दोनो वां यां सोहरत दी ज लसकर मे कही मुतसदी के जांण को हुकम न्ही । ऐक महाबत खां के ही रहसो दीन दस बीस तो बेठा रहा फेर घर घर फीरता फीरा, सवार का बेठा पहर रात नै मुतसदीयां के घर घर फीरता फीरै सु ही अबकै हीसी जीतनै यै मीनत मया करै हे जीतने टेढी टेढी बातां करता रहेला । अर जद ये पुछेला न्ही तब घर घर फीरता फीरेला । ये ईरानी है पहली आपकी तरफ सुं सब सलुक करे है जद यांको सलुक न मानसी तब श्री जी देखेला। ज घर घर आजजी करता फीरसी अर कोई बात न पूछसी बेअदबी कर खांनाजाद अरजदासत की है सु माफ होय। अर महाराजा अजीतसिघ जी नै समझाय कहजो सीताब हजुर आवे, सनदां ले । अब चाहुं काई है, हफत हजारी काया, वतन दीयो, खीताब दीयो ।

नुसरतयार खाँ ने हजुर बुलायो ।

सां० १७६६, असाढ वदि ५, गुरवार, ६ पहर दीन ।

क्रम संख्या ८३

वकील रिपोर्ट संख्या १४६

असाढ सुदी ११, संवत १७६६

॥ श्री गोपाल जी सहाय छै जी

॥ श्री महाराजाधिराज महाराजा जी
॥ श्री मीरजाराजा जैसिंघ जी

॥ सिंधि श्री महाराजाधिराज महाराजा जी श्री......चरण कमलानु खानांजाद खाकपाय पंचोली जगजीवनदास लिखतं तसलीम बंदगी अवधारजो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी का तेज प्रताप कर भला है। श्री महाराजा जी का सीख समाचार सासता परसाद करावजो जी। श्री महाराजा जी माईत है, धणी है, श्री परमेसूर जी री जायगा है। म्हे श्री महाराजा जी रा खानांजाद बंदा हां। श्री पातसाह जी श्री महाराजा जी सुं महरबान है। श्री महाराजा जी सुख पावजो जी। पान गंगाजल आरोगण रा घणा जतन फुरमावजो जी।

श्री महाराजा जी सलामत। आगै श्री महाराज कवार चीमां साहब जी का दसतुर साबक बहाली जागीर का परवाना की नकल व पुरा लाहोर का परवानां की नकल काजी की मोहर सू व वाजबल अरज माफ(क) ईरसाद हजुर[1] कै नवाब अमीरल उमराव जी को खत श्री महाराजा जी हजुर भेजा है सु नजर मुबारक गुजरा होसी जी।

श्री महाराजा जी सलामत। ता० ४ जमादी अलसानि श्री पातसाह जी जसन फुरमायो। पातसाह आलमगीर का बैठ्या की ठोड थी तठै ईमतयाज महल बेगम[2] तखत बैठा अर बैंके नीचै अमीरां का खड़ा होबा की जायगा थी जठै

1. माफ ईरसाद हजुर (माफिक-ए-इरशाद-ए-हुजूर)—बादशाह के कथनानुसार।
2. लाल कुंवर—जहांदारशाह ने बादशाह बनने के पश्चात लाल कुंवर को इम्तीयाज महल की पदवी से सम्मानित किया।

कलांवत लोग खड़ा रह्या, अर हजरत सो थंभो दालान दीवान आम को है तठै जरबफत[1] को सामयानो मोतंरा की झालरीदार खड़ो कीयो, ती नीचै नो करोड़ को तखत जड़ाऊ साहजहाँ पातसाह[2] बणांयो थो ती उपर बैठा। नवाब आसफदोला जी व नवाब अमीरल उमराव जी व सारा उमरावां नजर करी। नवाब अमीरल उमराव जी सोना रूपा का फुल व मोहरां व छोटा मोती चुनी पनां नोछावर कीया। पातसाह जी नवाब आसफदोला जी व नवाब अमीरल उमराव जी नै खासा सरोपाव ड़ेरै भेजा अर नवाब अमीरल जी नै मोत्या की माला व सूमरणी मोत्या की हजरत पहरां था सू दसत मुबारक सु नवाब नै पहराई अर नवाव आसफदोला जी नै फुरमायो जु तुमारा बेटा[3] खुब काबिल है, जंग सुलतानी मै खुब तरदुद कीया है। ओर खानजहा बहादर नै सरोपाव खासो ईनायत कीयो अर मोत्या की माला ईनायत फुरमाई जी।

श्री महाराजा जी सलामत। नवाब अमीरल उमराव जी साहबेग नै पालकी बखसी, मीरजा कादरी व साहबेग नै कोल पंजा का फुरमान दे हजुर सू रूखसत कीया सु दीन दोय चार मै चलसी जी।

श्री महाराजा जी सलामत। कही हरामजादै जोसघपुरा मै झुठी खबर ऊड़ाई जु पातसाह जी जैसिघपुरा का लुटवा वासतै हुकम कीयो है सु सारा पुरा का लोग भाग गया। या खबर पुरा कै हवालदार खांनाजाद नै कहै भेजी। तद खानांजाद राजा सभाचंद सु जाहर करी तद राजा सभाचंद कहो जु यह हुकम कद हुवा, यह खबर कनहीनै झुठ ऊड़ाई है। तद खानाजाद पुरा का लोगां की तसली कर पुरा मै आवादान कीया जी।

श्री महाराजा जी सलामत। नवाव अमीरल उमराव जी नै लिख दीया तांकै वासतै खानाजाद राजा सभाचंद सु वजदैराना कहो मै व मतालव नवाव कु दीये है सु नवाव आसफदोला जी के अर नवाव कै रदवदल दरमयान है सु जैसा होयगा तैसा जुवाव देगे सु ईकी हकीकत पाछा सु अरजदासत करसु जी।

श्री महाराजा जी सलामत। मोहनदास नटवो आगै श्री महाराजा वैकुंठवासी मीरजा राजा जैसिघ जी कै चाकर थो। तीका वेटा पोता महमद अजीम के चाकर था अर साह कुदरतला के मुसाहब था सु यांकै वासतै दीवन वीखारी दास जी अरज करसी जी, अवार पातसाह जी यानै कैद कर फुरमायो जु खाहमखाह चाकर रहो सु यां कवुल न करी, अर खानांजाद कनै आय कहो जु म्हे कदीन श्री महाराजा जी का खानाजाद हा सु ईरादो बंदगी सरकार को है तीसु

1. जरबफत—सोने के धागो से बुना हुआ।
2 बादशाह शाहजहाँ द्वारा बनवाया गया, जो करोड़ रुपये की लागत का हीरे-मोतियों से जड़ा तख्त था, जिसे तख्त-ए-ताऊस कहा जाता है।
3. दीवान जुल्फिकार खाँ।

उमेदवार हु जु खातर मुबारक मैं आवै तो यांनै परवानो ईनायत फुरमाव जे जुं यांनै हजुर भेजु जी ।

श्री महाराजा जी सलामत । महाराजा अजीतसिंघ जी को व भंडारी जी को खत नवाब अमीरल उमराव जी नैं व राजा सभाचंद नैं व लाला लाभोगनी मल नैं आया था सु गुजरान्या । अर भंडारी जी का खत की नकल हजुर भेजी है सु नजर मुबारक गुजरसी जी । ओर मतालब महाराजा अजीतसिंघ जी का आगै दुलीचंद नैं जुबा मुबारक सु ईरसाद हुवा था सु तो नवाब अमीरल उमराव जी नैं लिख दीया ओर मतालब जु भंडारी जी लिखैला सु नवाब नैं गुजरानु लो जी, जितनैं गुलालचंद आवै ईतनै खानाजाद महाराजा अजीतसिंघ की का कांमा सु खबरदार हुं जी ।

मी० असाढ सुदी ११, सवत १७६६ ।

क्रम संख्या ८४

वकील रिपोर्ट संख्या १५०

श्रावण वदी २, संवत १७६९

॥ श्री गोपाल जी सहाय छै जी

॥ श्री महाराजाधिराज महाराजा जी
॥ श्री मीरजाराजा जैसिघ जी

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजाजी श्री चरण कमलानु खानाजाद खाकपाय पंचोली जगजीवनदास लिखतं तसलीम बंदगी अवधारी जो जी। अठा का समाचार श्री महाराजाजी का तेज प्रताप कर भला है। श्री महाराजा जी का सीख समाचार सासता परसाद कराव जो जी। श्री महाराजा जी माईत है, धणी है, श्री परमेसूर जी री जायगा है। म्हे महाराजा जी रा खानांजाद बंदा हां। श्री पातसाह जी श्री महाराजा जी सुं महरबान है। श्री महाराजा जी सुख पाव जो जी, पान गंगाजल अरोगबाका घणा जतन फुरमाव जो जी।

श्री महाराजा जी सलामत। सावण बदी २ राजा सभाचंद, खांनाजाद सू कही जु सांभर मै सुं थाणा तुम्हारा अबताई उठा नही, मेवात अकबराबाद अजमेर के जागीरदारो कुं अमल देते नही हो, अर वाजबलअरज भी करते हो; मनसब की सनद चाहते हो, ईजाफे की जागीरै चाहते हो, भांत भांत मतलब खातर मै आवै सुं लिख देते हो सू क्या समझे हो? तीन साहजादे ऐक घड़ी मैं मार डाले तुम किस नीद सुते हो। अर कान मैं कहण लागो—अजीतसिघ तो थल है तहां भागा फरैगा, तूम तो जहानांबाद सू असी कोस हो चार महीना पातसाह आंबैर बैठैगे तब तुम कहां जावोगे। अनाहक कुं फीसाद उठाय वतन खराब करते हो। नवाब कहते है—राजा रामसिघ जी सुं अर नवाब आसफदोला जीसुं पघडी बदली थी अर हमनै कंवर कीसनसिंघजी सु पघड़ी बदली थी उस बात पर नजर कर मनसब खीताब[1] दिये है। पोते की जायगा कहते है, तुम

1. पदवी।

नाहक का फीसाद करते हो तो अब तयार है फीर हमें दुसन[1] न है। चार महीने हुवे तुम्हारी मिनतै करते है जुं जुं तुम सोखी[2] करते हो। अब भी ईस काम सुं बाज आवो, सांभर सू थाणां उठावो, सब जागीरदारो कुं अमल दो, खातर जमां सु हजुर आवो. जीस भांत वड़े मिरजा राजा[3] की, राजा रामसिघ जी की राहरवस थी सु करो, चाकरी करो, पातसाह सूं चाहो सु लो। अजीत सिघ कुं समझावो जु महाराजा की चाल पकड़ै लुटेरो की राह छोड़ दै। अर अब भी सांभर न छोड़ोगे, जागीरदारी कु कमल न दोगे तो ईस का जुबाब आयै पीछे हम भी तुम्हारे काम मैं तन न देगे, तुम्होरे हाथ सू होय सू तूम करो हमारे हाथ सू होयगा सू हम करेंगे। फेर अरज करोगे सु मनजुर (मंजूर) न करेंगे। अब पातसाह नै तुम सू क्या बुरा कीया, घर बैठे मनसब दीये, खीताब दीये, जागीर लो चाकरी करो। अनाहक[4] बसवास मे कुं पड़े हो जोररावरी पातसाह सु बीगाड़ करते हो तो तुम जाणो।

श्री महाराजा जी सलामत। राय खुसालचंद[5] खानांजाद सु कही सरबुलन्द खां गुजरात को सूबैदार हुवो। हुकम हुवो—जालोर कै राह जाय। सू सरबलंद खां म्हारै हाथ थानै कहायो है—जु म्हारो ईखलास अर श्री जी को ईखलास थे जाणो हो, थे श्री जी नै अरजदासत करो जु हुं वतन के पास आय नीकल सू, श्री जी सु मिलो चाहु हुं। जो श्री जी की खातर मै या बात अवै तो हु पातसाह जी सूं अरज करुं, हुकम होय तो मिलतो जावु। अर महाराजा अजीतसिघजी नै भी लिखी जो वै लिखे तो वांनू भी मिलु। अर कहो—सीरदार नै जमयत दे सरहद उपर भेजै जु श्री जी की सरहद ताई साथ चाले आगै अजीतसीघ जी की सरहद सुं वाका लोग पहोचावै।

पांच हजार सूवार घर का चाकर है—

। श्री महाराजा जी सलाम। नवाब अमीरल उमराव साहबेग नै व मीरजा कादरी नै कोल पंजा का फुरमान दे श्री जी हजुर भेजा है सु पहोचा होसी जी। श्री जी हजुर होय महाराजा[6] पास जासी। मतलब बाजबलअरज का सारा नवाब पछा ईनगा मै सांभर को लिखो आयो—चारो तरफ का जागीरदारां की नालस आई, तीनू बहोत बेदनाम[7] हुवा है; तीनू साह बेग की दीलासा दिलवरी

---

1. दोस्त।
2. सेखी=घमण्ड।
3. मीर्जा राजा जयसिंह।
4. बिना बात।
5. खान दौरान का भाई, जिसे 5000/5000 का मंसब प्राप्त था।
6. महाराजा अजीतसिंह।
7. बदनाम।

बहोत फुरमावजो जी। अर सारा मतालब दोनु सरकार का लिख देवै का खता मै भेज जो जी। अर नवाब नै व राजा[1] नै लिखजो—जो वकील नै जुबानी कही थी सू सब लिखी मालुम हुई अर ई बात को जुवाब लिखणो होय सू लिख जो जी।

।। श्री महाराजा जी सलामत। साह् नैन सुख जी लिखी थी जु महाराजा अजीतसिंघ जी का भी बदमूर साबिका परवाना थे ही कराय भेज जो, हजार पांच सै खरच लागै सु आपणी सरकार सु कीजो। सु हुकम मावाफक जागीर वहाली की ईलतमास दी वहाली का दसखत कराया, खरची आवै तो परवानां कराय भेजू। अर पांच सै हजार मै तो होय नही, तीन हजार सरकार का परवाना नै लागा सू वाकै तो कंवरां सुधा बहोत लागसी जो खरची आवै तौ वाको भी परवानो कराय भेजू जी।

।। श्री महाराजा जी सलामत। ईजारां को मुकदमो दुलीचंद साह नैन सुख जी नै खत लिखो ती सू अरज पहोचसी जी।

।। श्री महाराजा जी सलामत। अंचलेसुरदास परगनां गुवालदार को कानुगो सु खानाजाद सु सगपणा राखै है सु जीतमल संघी वाको बाग कदीम वड़ा को है तीनै काटे है। सु वां खांनाजाद नैं लिखौ है, उमेदवार हु जु संघी मजकुर कै नाव अदममुजाहमत[2] को परवानो खानांजाद नै ईनायत होय जु बेवाजबी वांको बाग काटै नही जी। मी० सावन बदी २, संवत १७६६।

श्री रामजी

।। श्री महाराजा जी सलामत। मयाराम राणा जी की तरफ सूं मतसदी होय आयो, ती नवाब अमीरंल उमराव जी की मुलांजमत करी नवाब सरोपाव बखसो जी।

।। श्री जी सलामत। मी० सावण बदी ३ पातसाह जी नबाब आसफदोला जी के डेरै पधारा जु कुछ नजर करैला तीकी हकीकत पाछा सू अरजदासत कर सू जी।

।। श्री महाराजा जी सलामत। रु० दोढ़ हजार खांनाजाद नै ईनाम व राजगार[3] मै ईनायत हुवा था सु तो खानांजाद कै लाहोर सू अब तक खरच हुवा उमेदवार हु जु कुछ खरची ईनायत होय जी।

---

1. राजा सभाचंद।
2. अदम मुजाहमत=झगड़ा बन्द करना।
3. रोजगार।

क्रम संख्या ८५

वकील रिपोर्ट संख्या १५१

श्रावण वद १०, संवत १७६६

॥ श्री गोपालजी सहाय छै जी

॥ श्री महाराजाधिराज महाराजा जी
श्री मीरजा राजा जैसिंघ जी

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा जी श्री चरण कमलानु खानांजाद खाकपाय पंचोली जगजीवनदास लिखतं, तसलीम वंदगी अवधार जो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी का तेज प्रताप कर,भला है श्री महाराजा जी का सीख समाचार सासता परसाद कराव जो जी। श्री महाराजा जी माईत है धणी है। श्री परमेसुरजी री जायगा है म्है श्री महाराजा जी रा खांनाजाद वन्दा हां। श्री पातसाह जी श्री महाराजा जी सु महरवान है। श्री महाराजा जी सुख पावजो जी, पान गंगाजल आरोगण रा घणा जतन फुरमाव जो जी।

श्री महाराजा जी सलामत। मयाराम वकील राणाजी को नवाव आसफ-दोला जी कनै थो सू राजा सभाचन्द की मारफत नवाव अमीरल उमराव जी की मुलाजमत करी। राणा जी की तरफ सु कुछ नवाव की नजर गुजरानो। नवाव सरोपाव दीयो ओर अरजदासत व ऐक सो मोहर ऐक हजार रुपया श्री पातसाह जी की नजर गुजरानी ओर राणा जी की तरफ सुं राजा सभाचन्द नै टीको दे है। केसर कुंकु को तिलक, ती पर ऐक ईस[1] मोती चावलां की जायगा ओर सरपेच मुरगा को व पारचो व ओर जिनस तयार कीयो है। सू आछो महुरत देख टीको कर सी जी। कहै है जीनै पातसाह जी राजगी को खीताव दे है तीनै राणांजी टीको भैजै है। सारा हिंदुसतान का राजां नै टीको भैजै है सु थानै भी

1. इस्नीन।

भेजो है ओर परगनां पुर मांडल वगैरह[1] की वहाली कै वासतै नवाब सू व राजा राजा सभाचन्द सुं कारसाजी कर है जी ।

।। श्री महाराजा जी सलामत । तसदीक याददासत ईजाफा की कै वासतै तथा महाराजा अजीतसिघजी की सनदा वासतै हुकम आयो थो । सु नवाव की व राजा सभाचन्द की हकीकत तो आगै अरजदासत मैं लिखी है जु सांभर वगैरह परगनां का थाणा उठाकर आपकी नीसां खातर खाह कारसाजी की कराया पाछै तसदीक याददारात देला जी ।

।। श्री महाराजा जी सलामत । भंडारी जी का दोय तीन खत राजा सभाचंद नै आया तांको जुवाब राजा न लिखै थो । कह्यो, जु नवाव नै महाराजा कुं व मीरजा राजा जी कुं खत लिख हमैसा क्या जुवाव लिखुं, तद नरायणदास मोहर २ महाराजा अजीतसिघ की तरफ सूं अठै है सू वो खांनाजान सू वजद हुवो जू खत को जुवाब ले दो, भंडारी जी बूरो मानसी, तद खानाजाद राजा सू वजद होय खत को जुवाब ले वैकै हवालै कीयो है जी ।

।। श्री महाराजा जी सलामत । आपो पंडत[2] कीतनाक दीन हुवा अठा सू भाग गयो है सु अब अठै हरकारा जाहर करै है जु आपो मजकुर श्री महाराजा जी या महाराजा अजीतसिघ जी कनै है सू अबार तो खानांजाद या वात हरकारां सु कह मौकुफ रखाई है । पण जो वो श्री महाराजा जी कनै होय तो रुखसत कर दी जो जी, और जो महाराजा अजीतसिंघ जी पास होय तो लिख जे जू वै नै रुखसत कर दें । नवाब अमीरल उमरावजी वैमू आयतराज है जी ।

।। श्री महाराजा जी सलामत । हरकारां अरज की जु महाराजा अजीतसिंघ जी मैड़तै आया सु पोहकर[3] आवसी अर आंमेर सू श्री जी भी कुच कर सी ओर पोहकर पधारसी । राव राजा जी भी अजमेर कै नजदीक है सु पोहकर जा सी । राजा वहादर भी पोहकर जासी । उठै सब ऐकठा होय मसलहत कर सी । जो ठहर सी सु करसी । ई वात सूं नवाब खानांजाद नै फुरमायो—जु सब राजो पोहकर मैं सामिल होते है सु क्या ईरादा रखते है ? कुछ फीसाद कीया[4] चाहते हैं सु श्री महाराजा जी साहबेग कना लिखाय भेज जै जू श्री महाराजा जी व महाराजा अजीतसिघ जी हजुर आवतै है ।

---

1. पुर मांडल आदि परगने शाही नियंत्रण में थे । यद्यपि बहादुर शाह के शासनकाल के अन्तिम दिनों में महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय ने इन पर अपना अधिकार कर लिया था, तथापि इस अधिकार को शाही स्वीकृति प्राप्त नहीं थी ।
2. मराठा सरदार ।
3. पुष्कर जी ।
4 किया=करना ।

॥ श्री महाराजा जी सलामत । अनंदराम वांकावत पातसाहजादा अयजुदी[1] की साथ है सु वैंका वकील नै दवाव वासतै कैंद कीयो थो सू वैं मूचलको दीयो जू महारा खांवन्द[2] नै लिखुं हुं उठा सूं काई जुवाव आवै ती पर अनंदराम लिखो जु म्हारी जागीर श्री महाराज का मुतसदी मुतसरफ[3] है हु दवाव कठा सूं सरंजाम करु । तद राजा सभाचन्द खांनांजाद नै ओलंभो[4] दीयो जु तुम्हारी तरफ सुं नालस होती है ।

॥ श्री महाराजा जी सलामत । जसवंत सिंघ कावली सिंघ को बेटो अकबरा-वाद मैं श्री महाराजा जी की साथ थो सु श्री जी फुरमायो थो जु यांको मनसव व वतन लो सू अव कावु है जो वैंकी मोहमसाजी की नीसां आव तो मनसव व वतन की वहाली को तलास करु जी ।

॥ श्री महाराजा जी सलामत । खानांजाद नै आगै खरची ईनायत हुई थी सू तो लाहोर सू अठा तक[5] खरच हुई अर अव खानांजाद पाचास वरस सू सहर मैं कवीला मैं आयो सू हर हवुव[6] को खरच है । ती सू उमेदवार हुं जु पाछला जमां खरच की वाकी ईनायत होय तो अठा का खर्च का ओघा सुवर आवुजी ।

श्री जी सलामत । ईजारा को मुकदमो साह नैंन सुख जी का खत सु अरज पहोचसी जी ।

मिती सावण वद १०, संवत् १७६६ ।

---

1. शाहजादा अज्जुद्दीन=जहांदारशाह का पुत्र ।
2. मालिक ।
3. मुतसरफ (मुतसरिफ)=अधिकारयुक्त ।
4. उलाहना ।
5. यहाँ तक ।
6. हर हबुब=हर तरह का ।

क्रम संख्या ८६

वकील रिपोर्ट संख्या १५२

श्रावण सुद १५, संवत १७६९

श्री गोपालजी सहाय छै जी

॥ श्री महाराजाधिराज महाराजा जी
मीरजा राजा श्री जैसिंघ जी

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा जी श्री चरण कमलानु खानांजाद खाकपाय पंचोली जगजीवनदास लिखतं तसलीम बन्दगी अवधार जो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी का तेज प्रताप कर भला है श्री महाराजा जी का सीख समाचार सासता परसाद करावजो जी। श्री महाराजा जी माईत है, धणी है, श्री परमेसुर जी की जायगा है, म्हे श्री महाराजा जी का खानांजाद बंदा हां। श्री पातसाह जी श्री महाराजा जी सु महरबान है। श्री महाराजा जी सुख पाव जो जी पान गंगाजल आरोगबा का घणा जतना फ़रमाव जो जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। परवानो खानाजाद नवाजी को ईनायत हुवो थो सु बजनस नवाब अमीरल उमराव जी नै व राजा सभा चन्द नै दिलायो। नवाब व राजा बहोत रजामन्द हुआ। अर नवाब ख़ानांजाद नै कहो जु मीरजा राजाजी कुं व महाराजा जी कुं लिखो जुं सांभर के थाणा उठाय मंगावै अर जागीरदारों कुं अमल दे।

सु श्री जी सलामत। अब सांभर को थाणो उठाय मंगावणो मसलहत है। नवाब बहोत कहते है सु अबै सांभर को थाणो राखणो मनासब नही। महाराजा अजोतसिघ जी नै भी ई बात कै वासतै लिख जे जी। अर साह बेग सु श्री जी महरबानी फुरमाई सु बहोत भली की अबै जो मतालब सरकार का दुलीचन्द की साथ ईरसाद हुवा था सु तथा ओर मतालब सकार का व महाराजा अजीतसिंघ जी का वाजवलअरज मै लिख साह बेग कै हवाले कीजे जु आपकी अरजदासत

मैं नवाब पास भेजै, अर नकल खानांजाद नैं ईनायत होय जु नवाब मु वजद होय अरज करावु जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। गाजीकाथाणा को ईजारो मुकरर हुवो है सु गुजसता का तीन गांवा का ईजारा का रुपया ईखलासखां का भीजवाजे अर आगा सु सब दामां की जामनी भीजवावजे जु गाजीकाथाणो इजारे ले चुकां जी।

श्री महाराजा जी सलामत। परगना टोक वगेरा का ईजारा की रदवदल राय नोनध मुं है सीताव ठीक पाउ भेजुलो जी पण साहुकार मातवर जामन भेज जो जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। जीतपुरा को ईजारो आगै ठहरो थो सू अबै फेर वोही ईजारो ठहरो। जामनी आवे तो वैको पटो भेजुजी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। ईखलास खां दीवान तनको व दारोगो अरज मुकरर[1] को तीकी जागीर सुबै अजमेर का हवेली का गांवा मैं है सु महाराजा श्री अजीतसिघ जी का मुतसदी वैंकी जागीर को हासल श्री महाराजा अजीतसिघ की सरकार मैं दाखल कीयो है। सु महाराजा अजीतसिघजी नैं लिख जे जु वाकी जागीर को हासल याको आमल उठै है तीकैं हवालैं करैं जी। अर राजीनामो वैंकी मोहर सु भिजवावैं जी। आगा सु जागीर मैं अमल दे जी ईखलासखां सु रात दीन काम है जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। सुजाअत खां पातसाही तोवखानां को दारोगो तीकी जागीर परगनां नगीनां सरकार तीजारैं सुबै साहजहांनावाद मैं है। सु उठा की रयत सुजाअत खां कनै आण फीरयाद करी जु अनोप सिघ व साह चरतभुज मुतसदी सरकार श्री जी का है सुवां सात हजार ऐ सो पहचतर रुपया परगनां मजकुर सु मुतसरफ हुआ अर सेखु वगैरैह पांच नफर[2] जमीदार उठा कनै कैद कीया तीमैं तीन हजार रुपया नवाव को नांव सुण फेर दीया। सु सुजाअत खां खानांजाद नैं बुलाय या हकीकत कही अर मुचलको लिखाय लियो जु पंदरा दीन मैं श्री जी हजुर सु जुवाव मंगाय हुं......। आगे अरजदासत मैं लिखी है सु नजर-मुबारक गुजरो हो सी जी। उमेदवार हु जु वैंका अमल की नीसा कराय दी हो तो राजीनामो वैंकी मोहर सुं भी जवाव जे जी वैं खानांजाद सु हमेसा ताकीद करैं है जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। जो मुकदमो ऐक बार अरजदासत करुं तीनै दूसरी बार अरज लिखणो बेअदवी है। उमेदवार हुं जु जो मुकदमो अरज लिखु तीको पहली मरतबैं ही जुवाव ईनायत हुवा करैं जी।

---

1. दारोगो घर्ज मुकरर (दरोगा-ए-घर्ज-ए-मुकर्रर)—घर्ज-ए-मुकर्रर कार्यालय का दारोगा।
2. नफर=लोग (संख्या के संदर्भ में)।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। खानांजाद नै अठै आया पाछै सारा कबीला को व और दुणो खरच है। अर जुर सुं आगे ईनाम व रोजगार मै ईनायत हुवो थो सु लाहोर सु दिली पहोचता तक तमाम हुवो। साहुकार अठै कही नै[1] ऐक दाम करज दे नही। ती सू हजुर सु ईनायत होय तब ही खानजादा को कारबार चालै। उमेदवार हु जु आगै जमा खरच श्री जी हजुर भेजो थो तीकी बाकी व यो रोजगार चढो है सु ईनायत होय तो साहुकार का तगादा सु छुटु। अर अठै का खरच का ओघा सु बरआवु जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। मीरधो सुन्दर कदीम सुं सरकार को खानांजाद है अर हमेसा खांनाजाद पास हाजर रहे है। अब यो कहै है जु म्हारी ऐवज हजुर सु ओर मीरधो मुकरर होय है। श्री जी सलामत यो बेतकसीर[2] है अर कदीम खानांजाद है, उमेदवार हु जु यो वेतकसीर तगीर न होय जी।

मी० सावण सुदी ऽऽ, संवत १७६९।

1. किसी को भी।
2. वेतकसीर=निर्दोष।

क्रम संख्या ८७

वकील रिपोर्ट संख्या १५३

भाद्रपद वद ७, संवत १७६६

॥ : ॥ श्री गोपालजी सहाय छै जी

॥ श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री
मीरजा राजा जैसिंघ जी

॥ : ॥ सिध श्री महाराजाधिराज महाराजा जी श्री चरण कमलानुं खानांजाद खाकपाय पंचोली जग जीवनदास लिखतं तसलीम वंदगी अवधार जो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी का तेज परताप कर भला है। श्री महाराजा जी का सीख समाचार सासता परसाद कराव जो जी। श्री महाराजा जी माईत है, धणी है, श्री परमेसुरजी की जायगा है। म्हे श्री म्हाराजा जी का खानाजांद बंदा हां। श्री पातसाह जी श्री महाराजा जी सुं महरवान है। श्री महाराजा जी सुख पावजो जी। पान गंगाजल आरोगवा का घणा जतना फुरमावजो जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। मुजाअत खां पातसाही तोदखाना को दारोगो नीको जागीर मैं मअजावाद वगैरे है सु यां की नकल हजुर भेजी है। सु नजर मुबारक गुजर सी। जीं या परगनां का ईजारा कै वासते खानांजाद सुं सुजाअत खां कही—जु ईजारै ल्यौ, सु करलायां, छह माहो[1] देणो कर गयो है सु थेद्रो। तव खानांजाद कही मोअजावाद तो चोमाहो[2] अर ओर परगनां ती माहा[3] द्यो तो ल्यां। मुजाअत खां कही, जु मुकरलायां अजमेर को सुबैदार यां परगना को ससमहि[4]

---

1. छह माही।
2. चार माही।
3. तीन माही।
4. ससमाही=छहमाही।

चुकायो है थांनै चो माहा ती माहा नै ईजारै क्युंकर द्यां । तीपर खांनाजाद कही. सुकरला खां भी म्हानै ही तीमाहानै ईजारै दे लो ससमाहो उठै पैदा होय नही । तीपर सुजाअत खां सुकरलाखां नै लिख्यो है, जु मीरजा राजा का वकील ईन परगनों का चोमाहा तीमाहा ईजारा मांगै है, अर तुम ससमाहा मुकर कीया है जो तुम सै वहां अमल होय सकै तो बिहतर, नही ईन कुं ईजारै दे । खांनाजाद सुजाअत खां का मुतसध्यां नै नीममाहो[1] देणो कीयो है जुं ऐ परगना म्हानै ईजारै लेद्यो, वै कहै है सुकरलाखां को जुवाब आयां ठीक पड़सी । सु सुकरलाखां का मुतसदी उठै सरकार का मुतसदयां सुं यां परगनां का ईजारा की रदवदल करता होसी जो उठै याको ईजारो ठहर जाय छै तो भलां छै, नही तो साहुकार मातवर की जामनी आवै जुं ऐ परगनां सरकार मै ईजारै ल्यांजी । मअजावाद तो चो माहो और तीन माह नै मांगां हां अर खरच जुदो ।

।। श्री महाराजा जी सलामत । सुजाअत खां पातसाही तोबखाना को दारोगो तीकी जागीर परगनां नगीनां सरकार तिजारै सुबै साहजहानावाद मे है । सु अनोप सिंघ व साह चत्रभुज मुतसदी सरकार का सात हजार ऐक सो पचहतर रुपया परगनां मजकुर सुं मुतसरफ हुवा । अर पांच आदमी जिमीदार उठा का कैद मै कीया तीमै तीन हजार रुपया फैर दीया । खानांजाद आगै ई मुकदमां की अरज लिखी है । सु नजर मुबारक गुजरी होसी जी । खांनांजाद कनां मुचलको लिखाय लीयो थो जु पंदरा दिन मै श्री जी हजुर सुं जुवाब मंगाय दुं सुं वो वादो आखर हुवो । अब खानांजाद पाछै वैका आदमी है अक वो दरबार मै खानांजाद सु तकीद करै है । तीसुं उमेदवार हुं जु वेका आमिल की नीसां कराय दी होय तो राजनीनामो वैकी मोहर सुं ईनायत होय जी नही तो वो खानाजाद नै वतंग करसी जी के रुपया आदमी अठे भेज जे अर झूठ होय तो काजी की मोहर सुं मजहर[2] कराय भेजजे । अर फारसी परवानो भेजजे जी ।

।। श्री महाराजा जी सलामत । महमदावाद का ईजारा की ईखलास खां का मुतसदयां सु रदवदल हुई । वै कहै है म्हाका तीन गावां का गुजसता का रुपया थ्यो तो खां सुं कह्यां जु मीरजा राजा जी की सरकार मै द्यो अर खानै वली महमद पास आदमी भेज्या है । जो वली महमद की नीमां आई तो सरकार मै ईजारो देता आघा पाछा होयला । अर वलीमहमद लिख्यो जु अठै सरकार का लोग है मै कनै रुपया देवा नै नही, तो यां का मुतसदी कहै है थानै ही ईजारै दीवा वास्ता सु जाणजै है । जु वलीमहमद को तो जुवाब ही आवैलो तीसु उमेदवार हु जु यांका पाछला ईजारा का रुपया ईनायत होय अर आगां सु सब दामां की जामनी आवै जु काम होय जी ।

---

1. नीम माहो (नीम माही)=अर्धमाह ।
2. मजहर=मेहर ।

श्री महाराजा जी सलामत। अँतकाद खां नवाब अमीरल उमराव जी को भतीजो नवाब आसफदोलाजी को पोतो तीनै नारनोल की फोजदारी है। सु यो उठी नै आवै है ई की जागीर का च्यार परगना मै सरकार का लोग है सुं अब ईनै अमल दीजै जी। अर नारनोल आंवैर मुं नजदीक है खबरदारी सु रहणो जरुर है जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। खानांजाद आगै खरची कै वासतै तीन च्यार वार अरज लिखी वार-वार लिखणो गुसताखी है। खानांजाद की हकीकत श्री जी नु रोसन है। आगै जु कुछ ईनाम व रोजगार मै मरहमत हुवो[1] थो सु तो खरच हुवो। अर साहुकार अठै कही नै ऐक दाम करज दे नही। तीसु खानाजाद नै खरच की तरफ मु बहोत कसालो है। अर मंगसर का महीना मै खानाजाद का बेटा को ब्याव है। आगै वैसाख मै ब्याह मुकरर हुवो थो सु पातसाहगरदी[2] के सबब मोकुफ रह्यो। उमेदवार हु जु आगै जमा खरच हजुर भेजो थो तीकी बाकी अर यो सात महीना को रोजगार चढो सु अर मसाअदो[3] ईनायत होय सु साहुकार का तगादा सु छुटु अर रोज खरज का कसाला सु छुट अर लड़का को ब्याह करु जी। आगै तो श्री जी का परताप सु ब्याहा नै चालीस चालीस हजार रुपया लगाया है अर अबै दिली सहर मै श्री जी की दसतगीरी सु सरम रहसी जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। अरजदासत लिखतां ही साह नैनसुख जी को कागद तीन दिन के वादैं आयो सु थे सरबलंद खां कै वासतै लिख्यो थो सु श्री जी को हुकम है जु सरबलंद खां नै जुवाब दीजो जु ई राह न आवै पर बाहरो ही जाय। सु श्री महाराजा जी सलामत। खानांजाद हुकम आयां पहली ही सरबलंद खां नै यो जुवाब दीयो सु वो अकबराबाद कै राह गयो जी।

श्री महाराजा जी सलामत। धनेसुर गुजराती की साढ़ा बारा हजार रुपयां की हुंडी वसुल कराय देवा वासतै परवानो ईनासत हुवो थो। सु किसनदास बिरजभुखन तो दीवालो काढ्यो परवानो सादर हुवो ती दिन मुं वैके सुवार पयादा[4] कोतवाली चबुतरा का बैठाया है। सु अबार[5] तो वो एक दाम देतो दीसे नही। सुवार पयादा बैठा है पाछां सु जीसी होसी तीसो अरज लिखसुंजी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। परगना टोंक व लालसोठ की माफक ईरसाद

1. मरहमत हुवो=दिया गया।
2. पातसाहगरदी=गद्दी के लिए युद्ध।
3. मसाअदो (नगददान)=अग्रिम धन।
4 घुड़सवार एवं पैदल सैनिक।
5. अभी तो।

हजुर के रदवदल ठहराई छै जो साहुकार की जामनी ईनायत होय तो कबुलीयत पटो लिखांवा जी ।

।। श्री महाराजा जी सलामत । आजम खां[1], कोकल तास खां[2] को भाई खोहो[3] वगैरेह परगना आपकी जागीर कां मै अमल करवा आवै सु ईनै अमल दीजे जी ।

।। श्री महाराजा जी सलामत । सालह खां, अेतकाद खां को बेटो सायसत खां को पोतो ती फरखसेर[4] नै अरजदासत लिखी थी सु म आ लिखां वैकै काकै नवाव अमीरल उमराव जी सु अरज करवा अरजदासत वजनस पकड़ाई, ती पर सालह खां नै कैद कीयो जी ।

।। श्री महाराजा जी सलामत । खबर है जु साईवान की वाईसवी तारीख श्री पातसाह जी को अकबरावाद की तरफ कुच होय जी सु स्योहरत है ठीक नहीं जी ।

मी० भादवा वद ७, सवत १७६९ ।

1. आजम खां को 8000/8000 का मंसब तथा आगरा की फौजदारी प्राप्त थी ।
2. बादशाह जहाँदारशाह का कृपापात्र, जिसे 9000/9000 मंसब तथा मीर बख्शी का पद प्राप्त था ।
3. खोहरी ।
4. शाहजादा अजिम्मुशां का द्वितीय पुत्र तथा पूर्व में अपने पिता का नायब ।

क्रम संख्या ८८

वकील रिपोर्ट संख्या १५४

आश्विन वद ४, संवत १७६६

॥ श्री गोपाल जी सहाय छैः जी

॥ श्री महाराजाधिराज महाराजा जी
श्री मिरजा राजा जयसिहजी

सिद्धी श्री महाराजाधिराज महाराजा जी श्री चरण कमलाय नूं खानाजाद खाकपांय पंचोली जगजीवनदास लिखतम तसलीम वन्दगी अवधार जो जी। अठा का समाचार श्री महाराजाजी का तेज परताप कर भला है। श्री महाराजा जी का सीख समाचार सासता प्रसाद करावयजो जी। श्री महाराजा जी माईत है, धनी है, श्री परमेश्वरजी की जायगा है। म्है श्री महाराजा जी का खानांजाद वन्दा हां। श्री पातसाहजी श्री महाराजाजी सुं मिहरवांन है। श्री महाराजा जी सुख पावजोजी पांन गंगाजल आरोगवा का घणा जतन फरमावजो जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। परवानो खानाजाद नवाजी को इनायत हुवो। तसलीमात वजाय लाय सर चढाय जीयो। तमाम सरफराजी व खानाजाद हुई। हुकम आयो जूं एक पैलवी में समाचार लिखा था सू मालूम हुआ। इह वात मूं खातर जमां राख जो असो वसवास कदेई मत करो। श्री जी सलामत। खानाजाद की तो ई वात सूं भांत भांत का खातर जमां है। पण अेठै सोहरत[1] उठी थी तिमुं अरज लिखनी पड़ी है।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। हुकम आयो जुं ओर समाचार साह नैन सुख का लिखना गूं जाहर होसी सूं सारा मुकदमा साहजी का लिख्या सूं जाहर हुआ जी।

---

1. सोहरत (शोहरत)—प्रीति।

।। श्री महाराजा जी सलामत । जागीरां ईजारै लेबा के वासते साह नैन सुख जी लिख्यो थो सूं श्री जी का हुकम माफक ऐ जागीर तो ईजारै ली सूँ तिकी नकल श्री जी हजूर भेजी है । सु नजर मुबारक गुजर सी जी । ये तो पट्टो कबूलियत अबार[1] लिख देता था पण जामनी बिना पट्टो दियो नही तिसु जामन मातबर की जामनी आवै जीही दिन पट्टो लिखाय लां । अर जामिनी सोपां पण सराफां मै पानीपथयां की दुकान है तिकी जामनी मांगै है ।[2]

।। श्री महाराजा जी सलामत । खोहरी वगैरह महाल आजम खां की जागीर की लाला हरदे राम वांका दीवान सु रदबदल अब तांई तो अमरसिगपुरा को मुतसदो करै थो अब अमरसिंघ खानांजाद नै साफ जवाब दीयो जु हरदेराम सूं रदबदल घणी ही करी पण आजम खां मानै नही कहै है, ईजारै न दूं, खाहमखाह अमल ही करूं सूं इतरा मै खानाजाद ने हुकम आयो जु ईजारे ले जो। तिसु अब खानाजाद रुबरु[3] खानजहां बहादुर सुं ही रदबदल ईतरी करै है ।

सहजादा अयजुदी की जागीर उर का पेरोजपुर वगेहर मेवात का महाल होय सु दे ।	खांनाजहा बहादर की जागीर पाटोधी वगैरह होय सु दे ।
आजम खां की जागीर खोहरी वगेरह मै है सुं दे ।	खांनदौरा बहादर की जागीर । जहां होय तहा ईजारे दे ।

।। श्री महाराजा जी सलामत । खानजहां बहादुर नीम रजामंद सो हुवो है पण साहूकार मातबर पाणी पथयां की दूकान जामन मांगै है तिसूं श्री जी जामन मातबर भेज जै जूं यांसु[4] भी ठहरावां यांका मुतसदयां नै भी रजामन्द किया है नीम माहो[5] खर्च देनो कियो है जी ।

।। श्री महाराजा जी सलामत । हामद खां बाहादर[6] गाजुदी खां[7] को छोटो भाई बाहादरसाह का अमल मै बीजापुर को सूबेदार होय गयो थो । फेर बागी हुवो थो । अब मुदत सुं हजुर मै है । ती खानांखाद नै बुलाय कही जुं दोनुं राजो की सुलह म्हारी मारफत करो, तो खानजहां बहादुर ने समझाय थांका मुकदमा सब

1. अभी ।
2. गोबिन्दराम पानीपथियाँ की दुकान की जमानत मांगते हैं ।
3. उपस्थिति में ।
4. इनसे भी ।
5. नीम माहो—अर्धमाहा ।
6. हमीद खाँ बहादुर ।
7. गाजीउद्दीन खाँ फ़ीरोज़ जंग ।

फ़ैसल करां अर वहोत अपनायत इखलास जाहर कीयो। तब खानांजाद कही ज हमारी वातो मैं अमीरल उमराव है। अब खानजहां वहादुर कुं हम वातो मैं डालै अर अमीरल उमराव मुदई होय तो खानजहां वहादुर सू क्या होयती, पर वां कही—मतालब होय गुं लिख दो मैं खानजहां वाहादुर सुं कहूंगा अमीरल उमराव मुदई होयगा जो कुवत रखो हो जू हम करेंगे सुं होयगा तो वात मैं पड़ो नु मतलब हजूर सू लिख्या आया था सो लिख दिया। या सिवाय ईजाफा माकूल होय श्री जी नै उज्जैण की सूवेदारी होय महाराजा नैं गुजरात को सूवो होय नं अब हामद खां खांनजहां वहादुर नैं मतलब दिखा सी जो कवूल करसी। तब खानांजाद लिखवत मैं रदवदल करसी जो पकी निसां कर देसी तो हजूर नै अरजदासत कर सुं। हजुर मै श्री जी की खातर मुवारक मैं पसन्द आसी तो मुकदमां वांसू रजू करस्यां अर जो खानाजाद की ही खातर जमां न हुई तो वैसी ही अरजदासत कर सूं जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। राय घासीराम हीदायत केस खां वाका नीगार कुल को पेसदसती......मोजपुर सरकार अकवरावाद मै ३,५५,००० दाम है। सो आगै तो किसनसिंघ नरूका कै ईजारै थो सो वैकी कवूलीयत की नकल हजूर भेजी है। सो नजर मुवारक गुजारसी अवै खानाजाद सो म्हाने[1] सरकार मैं इजारे लियो है सो कसवा मजकूर मै सरकार को अमल ही है। उमीदवार हु जु वैकी नीसां इनायत होय जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। गाजी को थानो सरकार मैं ईजारे लीयो है। ये गोवन्दराम सराफ पाणीपथयां की जामनी मागै है सुं उमैदवार हु जु गोवन्द-राय की जामनी इनायत होय जी जुं पट्टो लिखायलां जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। परवानो खानाजाद नवाजी को पांच सावान को लिखो मिती भादवा सुदी १० मै इनायत हुवो। तमाम सरफराजी व खानां-जाद नवाजी हुई जी तसलीमात वजाय लाय सीर चढ़ाय लिया जी। हुकम आयो जुं पूरा जात[2] की सनद अब तक तैयार कराय हजुर न भेजी सुं अवै तैयार कर हजुर भेजजो। सुं श्री महाराजा जी सलामत। पुरा जात का परवाना दफतर सूं तयार कराया पण राजा सभा चंद अटकाया है कहे हैं तुम सांभर सूं थाणो उठावोगे तब परवाना देगे सुं अब तो यांनूं सांभर का ईजारा की रदवदल डाली है जो या रदवदल ठहरी तो परवाना सीताब हजुर भेजु हूं जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। राह खानाजाद नवाजी कै हुंडी रुपया दोय हजार की इनायत हुई थी मूं पहुंची। तमाम सरफराजी व खानाजादनवाजी हुई

1. थीन गाह री जमा दर।
2. सम्पूर्ण श्रीरादरी।

जी । श्री महाराजा जी सलामत । या हुंडी इनायत हुई सुं सिर चढाय ली पण मिगसर का महीना मैं खानाजादा का बेटा को व्याह छ सुं उमेदवार हु जु मसाअदो ईनायत होय अर दस हजार रुपीया खानाजाद का सरकार मैं है सूं इनायत होय जूं श्री महाराजा जी का तेज परताप कर भली भांत बेटा को व्याह करूंजी ।

मी आसोज बद ४, सवत् १७६९ ॥

क्रम संख्या ८९

वकील रिपोर्ट संख्या १५५

आश्विन वदी ५, संवत १७६९

श्री गोपालजी सहाय

श्री महाराजाधिराज सलामत । अरजदासत चलाय दरबार मे सुवार होय अमीरल उमराव को मुजरो कर राजा सभाचन्द के डेरे आयो । राजा सुं मिलता ही राजा कही एक कागज हमारे पास आया है सु देखो, आप पास ले बठो कागद लपेटो ही मोहर दिखाई । कहो पढ़ो सु महाराजा अजीतसिंह जी की मोहर थी सूं आगली मोहर सूं भी वड़ी मोहर असुर थी तिमें लिख्यो थो "श्री हिंगालाज साहय । छैतरपती महाराजाधिराज महाराजा श्री अजीतसिंहजी देव सरवोजइत सिंघारा" अर मोहर के कीनारे कूडालो खेच दस कूडाला आसपास ओर खेचा तीमे एक कूडाले मे तो श्री गणेशायनमः ओर नो कूडालां मे नव ग्रह लिखा है । खांनांजाद पढ़तो गयो, राजा लिखतो गयो । राजा कही, "जी भांत फुरमान उपर सारा पातसाही की मोहर होय है जी भांत मोहर वनाई है, सूं क्या समझा है अब भी ईवांता सू बाज आवे अर सिताब हजूर आवे" । इतरा में नारायण दास नांमे गुलाल चंद को पेसदसत हे सूं खानाजाद की साथ थो वैंसु कही थे अजीतसिघ को लिखाजे मोहकमसिघ सु राजा ने खिलवत की, सुं हमने मोकमसिघ को कद खिलवत मे बुलाया । वह तो हमेस खांनजहां के रहे हे । हमारे कद आंवे हे । तुम झुठ कु लिखा ? तब नारायण दास कही—मे न्ही लिखा । तब राजा कही—कद आवेगे ? तब ई कही—पहलो भंडारी ने कोलपंजो भेज सो तब पहलो भंडारी अठे आसी, भंडारी लीखसी तब राजा आसी । तब राजा बोल उठो—हम तो भंडारी को हरगज न लिखे । हमने दोनो सरकारा कु लिखना था सु लिखा; मनसब, खीताब, वतन देणा था सु दिया ओर मतलब होय सु करदे अर यह चाहो ज अमीरल उमराव भंडारी कुं लिखे सु हरगज न लिखे; वह महावत खां ही पाजी था सु इन पाजीयो कुं मोह लगावे था । अमीरल उमराव हरगज मोह न

मतलब राजी लगावेगा । मतलब राजों सुं है, उनके बेटे पोती की ठोड़ है । नवाब कहे है हम जो करेगे सो हम आप कू करेंगे अर राजा चाहे जे मोहबत खां छोकरे कू फुसलाया ईस भात हमे फुसलावे सू कु कर बणे । अर नारायण दास ने उठा पाछै खानाजाद सुं कही—तुम तो साभर की इजारे की रदबदल करो हो अर मोहर मे तो छतरपती लिखे है । तब खानाजाद कही—रीकाब मे तरबीयत हुवै न्ह अर ये किसी रजपूत को लिखा होयगा, रजपूत ने साहब पास भेजा है । तब सीरनामो पढ़ायो, चूड़ामण जाट को नाव थो अर मतलब तो पढ़ायो नही अब अमीरल उमराव ने मोहर पढ़ाय सो पातसाह जी पढ़ासी ।

।। श्री महाराजा सलामत । साहबेग व मिरजा कादरी लिख्यो है—भंडारी तैयार हुवो है सू म्हांकी साथ हजूर आवसी यांके हुजूर आयां पाछे जो ठहरसी सु राजा कर सी । तीपर राजा कही, ईहा आय क्या करेगा मतलब थे कर दिए और होय सुं कर दे, आवे है तो आवो ।

।। श्री महाराजा सलांमत । अब के भंडारी जी आसी तो महीमण रस एक खिमयाही रहे । भंडारी जी जाने ज जी भात महावत खां जी बुलायता ती भात ये करैं सू हरगज नही, देखजै काई बनै । मिती भादवा वदी १३ को पहुंची ।

।। श्री महाराजा सलामत । आज सोहरत हुई है ज सरबलंद खां चाटसु आयो । नूसरतयार खां नै रणथंभोर सु बुलायो है सुं या तहकीक होय तो तो खबरदारी फुरमायजो जी । समत् १७६६, आसोज वदी ५, भौम ।

क्रम संख्या ९०

वकील रिपोर्ट संख्या १५६

आश्विन सुदी १४, संवत १७६६

श्री गोपालजी सत छै जी

श्री महाराजा जी सलामत । अरजदासत रवान कीया पाछै परवानो खांनाजाद नवाजी को मी० आसोज सुदी ९ को लिखो मीती आसोज सुदी १३ ईनायत हुयो । तमाम सरफराजी व खांनांजाद नवाजी हुई जी ।

॥ श्री महाराजा जी सलामत । आगै परवानो हिंडोण को मुकदमां मै ईनायत हुवो थो सू नवाव अमीरल उमराव जी नै दीखायो । नवाव कह्यो जू हजरत नै रह्‌नवाजस[1] कै मीरजाराजगी का खीताव ईनायत कीया । अर अव मोहर मै मीरजाराजगी का नांव दाखल कुं न[2] करते अर थैलीया व वन्द व लीफाफा रजाई का नाव की मोहर सूं हाल मै ईनायत हुई, सु अर आगे व वाह्‌न दी पर वहादरसाह पातसाह का नाव की मोहर की थैलीयां ईनायत हुई थीं सु हजुर भेजी है । उमेंदवार हु जु मीरजाराजगी का नाव की मोहर खुदाई है सु मिरजाराजगी की मोहर सू थैलीयां व वन्द व लीफाफा ईनायत होय जी । अर मोहर न खुदाई होय तो अव मीरजाराजगी का नाव की मोहर खुदाय ईनायत कराव जे जी । महाराजा अजीतसिंघ जी खत भेज्या था तीमैं जहांदार साह की मोहर मैं महाराजाई को खीताव दाखल थो जी । मी० आसोज सुदी १४, सवत १७६६ ।

1. रह्‌नावजत (मूल रह्‌-ए-नवाजिश) = प्रतिष्ठित करने हेतु ।
2. करो नहीं ।

क्रम संख्या ६१

वकील रिपोर्ट संख्या १५७

आश्विन सुदी १४, संवत १७६६

श्री गोपालजी सहाय छै जी

श्री महाराजाधिराज महाराजा जी श्री मीरजा राजा जै सिघ जी

॥ सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा जी श्री चरण कमलानु खानाजाद खाक पाय पंचोली जगजीवनदास लिखतं तसलीम वन्दगी अवधार जो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी का तेज प्रताप कर भला छै श्री महाराजा जी का सीख समाचार सासता प्रसाद कराव जो जी। श्री महाराजा जी माईत है, धणी है, श्री परमेसुर जी की जायगा है। म्हे श्री महाराजा जी का खानाजाद वंदा हां। श्री पातसाह जी श्री महाराजा जी सु मेहरवान है। श्री महाराजा जी सुख पाव जो जी पान गंगाजल आरोगवा का घणा जतन फुरमाव जो जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। हिंडोण अजमखां सु तगीर कराय खालसै कराई। अर गेसुखां सु फोजदारी तगीर कराई। तीकी पै दर पै अरजदासतां की है सु नजरमुवारक गुजरी होसी जी। अर राजा सभाचन्द कनां सु शाहवेग व मीरजा कादरी नै लिखाय भेजी है। सु वां श्री महाराजा जी मु अरज पहोचाई होसी जी। दौसा सु ठाकुर स्यामसिघजी व साह श्री चन्दजी को आदमी आयो थो तीकी साथ वानै ये समाचार लिख भेजा है जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। आजमखां पातसाह जी मु अरजी की जु गेंसुखां नै हिडोण मै खुब अमल कीया। दोय हजार रजपूतां का कवीला वन्द कीया। अर हजरत नै उमकुं तगीर कीया। हिडोण खालसै करी ईम वात मै मेरी खीफत[1] होती है। तीस सू हिडोण दसतुर सावक वहाल होय नही तो

---

1 खीफत==बदनामी, शर्मिंदगी।

खांनाजाद मनसब का ईसतीफा कीया । सु हजरत कुछ जुवाव न दीयो अर अरजी ईमतयाज महल[1] नै सोपी । ईमतयाज महल नवाव अमीरल उमराव जी नै दे भेजी । खानांजाद या वात सुणी जद नवाव अमीरल उमराव जी पास गयो । अर हजुर सू हिंडोण का मुकदमां मै परवानों सादर हुवो थो सु सलाहदोलत जाण राजा सभा चन्द की मारफत नवाव अमीरल उमराव जी नै दीयो । नवाव परवांनो पढो अर आप कनै राख्यो । कह्यो जु मै यह परवानां आजमखां की अरजी हजरत कु दीखावुंगा । श्री महाराजा जी सलामत। ईमतीयाज महल बेगम दरमीयान है अर नवाव अमीरल उमरावजी भी दोनु सरकारां का मतालव सरंजाम करवा नै जीव सुंपा है । सु श्री महाराजा जी खातर मुवारक जमा राखै ओर वात होण की नहीं जी ।

॥ श्री महाराजा जी सलामत । जी की मारफत खानांजाद ईमतीयाज महल वेगम सुं गेसुखा का तगीर करावा की कारसाजी करी थी सु वै ही की मारफत या ठहराई छै । जु जब भंडारीजी व दीवान भीखारी दास जी अठै आवै तव ईमतीयाज महल वेगम नवाव अमीरल उमराव जी नै कह भेजै जु राजों के मुतसदीयों कु हमारी मुलाजमत करावो जु मतालव राजों के होय सु हम तुम पातसाहजी मुं अरज कर भली भांत सरंजाम करावै जी ।

॥ श्री महाराजा जी सलामत । जीकी मारफत खांनांजाद गेसुखां का तगीर करावा वासतै ईमतीयाज महल सु कारसाजी की थी सु वो खांनांजाद सु मोहमसाजी का रुपया दस हजार मुकररकीया था । त्यां कै वासतै ताकीद करै है उमेदवार हुं जु वैंका रुपया सीताव ईनायत होय जी ।

॥ श्री महाराजा जी सलामत । ईमतीयाज महल वेगम रथ व चीता व हरनां कै वासतै फुरमायस की थी । तीकी हकीकत आगै अरजदासत की है सु नजर मुवारक गुजरी होसी जी । उमेदवार हुं जु वाकी फरमायस माफक दोय रथ घोड़ा का व दोय रथ गुजराती वैलां का व नागोरी वैलां का अवल पातसाहां की नजर गुजरावालायक व चीता आछवासा व हरन डेलीया व लड़ाचा का सीताव भेज जे जी ।

॥ श्री महाराजा जी सलामत । आसोज सुदी २ सांझ की वीरया खांनजहां बहादर चान्द की मुवारकी के वासतै श्री पातसाह जी का मुजरा नै जाय था । सु राह मै वकसरया[2] बंदुकां छोड़ता था ईतरा मै वदुंक को गोलो खांनजहां बहादर की पालकी कनै खीदमतगार चल्यो जाय थो तीकै आय लागी सु वो मर गयो । खानजहां बहादर या वात श्री पातसाह जी सु अरज पहोचाई जु राजेखां

---

1. लालकुंवर ।
2. बकसरया=सैनिक ।

तोबखांने के दारोगे नै बन्दुक छुड़ाई होयगी नहीं बकसरये को मजाल क्या है जु वह छोडे। सु नवाब अमीरल उमराव जी भी श्री पातसाह जी की हजुर था या अरज की। सु हजरत सलामत। बकसरये की मजाल क्या जु ईस तरह बंदुक छोडे बंदुक तीरबन्द[1] होयगी उन नै भोलैं छोडी है।

*।। श्री महाराजा जी सलामत। आसोज सुदी १२ सु श्री पातसाहजी साल-*गीरे है को जसन मुकरर हुवो छै। आसोज सुदी १३ नवाब आसफदोलाजी नै सरोपाव डेरे दे भेजो सु नवाब सरोपाव पहर पालकी मैं सुवार होय बार आया। श्री पातसाह जी बहोत मेहरबानी फरमाई दसतुर पातसाहजादां के तखत कै दसत रास बैठाया। श्री महाराजा जी सलामत। आगैं फतै हुवा पाछै अमीरल उमराव जी नैं तोग तुमन ईनायत हुई थी अब खानजहां बहादर नै तोग तुमन हाथी की ईनायत हुई। मीती आसोज सूदी १४, सबत १७६९।

1. तीरबन्द=भरी हुई।

क्रम संख्या ६२

वकील रिपोर्ट संख्या १५८

कार्तिक वदी ४, संवत १७६६

॥ : ॥ श्री गोपालजी सहाय छै जी

॥ श्री महाराजाधिराज महाराजाजी मीरजा राजा जैसिंघजी

॥ : ॥ सिध श्री महाराजाधिराज महाराजा जी श्री चरण कमलानु खानांजाद खाकपाय पचोली जगजीवनदास लिखतं तसलीम वंदगी अवधार जो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी का तेज परताप कर भला छै। श्री महाराजा जी का सीख समाचार सासता परसाद कराव जो जी। महाराजा जी माईत है, धणी है, श्री परमेसरजी की जायगा है म्हें श्री महाराजा जी का खानजाद वंदा हां। श्री पातसाह जी श्री महाराजा जी सुं मेहरवान हैं। श्री महाराजा जी सुख पावजो जी पांन गंगाजल आरोगवा का घणा जतन फरमाव जो जी।

॥ श्री महाराजाजी सलामत आजम खां सुं हिंडोण की फोजदारी तगीर हुई। अर हिंडोण खालसै हुई। तिको स्याहो नवाव अमीरल उमराव जी की मोहर को आजम खां कनै भेज दीयो। आजम खां मनसब को व सूवैदारी अकबराबाद की को व फोजदारी मथुरा की को असतीफा दीयो थो। सु पातसाहजी ईमतयाज महल नै कह्यो। अर ईमतयाज महल आपका आदमी कै हाथ वो ईसतीफो नवाव अमीरल उमराव जी कनै भेज दीयो। वैंही वीरयां परवानो खानांजाद नै ईनायत हुवो थो। सु या खबर सुण नवाव अमीरल उमराव जी नै राजा सभाचंद की मारफत गुजरान्यो। सु नवाव वै ईसतीफा की साथही वो परवानो लगाय राख्यो जु यां दोन्यां की साथ ही अरज करांला। सु या हकीकत तो आगै अरजदासत मैं छै सु अरज पहोची होसी जी। सैर दीवान जठै खानजहां वहादर व आजम खां भी हाजर था तव अमीरल उमरावजी ईसतीफो व परवानो पातसाहजी नै गुजरान्यो अर अर(ज) की जु हजार दिलासा व

दीलबरी सू महाराजा अजीतसिघजी व मीरजाराजा जैसिघजी नै बंदगी मैलाऊं छूं। अर ओर बंदा चाहै छै जु मुलक मै फीसाद राखजे जो हजरत नै अमनीयत राखणी छै तो खालसे कीयो सु राखजे । ईतरा मै आजम खां अरज करी जु उन राजों में कुछ नहीं जो अजमेर की सूबैदारी, अकबराबाद की सुबैदारी कै जमी मै मैरै नाम होय तो मैं उनकुं तंबीह करुं। तद पातसाह जी नवाब अमीरल उमराव जी नै फुरमायो जु तुमनै खालसै कीया सू रहणे दो। अर आजमखां की अरज मनजुर न करी।

अर आसोज सुदी १४ च्यार घड़ी दिन रहयां साह नैनसुखजी को कागद आयो वा रुपया दस हजार मोहमसाजी गीसुखां का तगीर कराबा की मधे रुपया पांच हजार की हुंडी भेजी थी सु पहोची। अर लिख्यो थो जु हीडोण खालसै करबा को परवानो चलो छै तो भलां छै नही तो अब चलाजो। सु खानाजाद राजा सभाचंद कनै गयो अर कहो जु हिडोण खालसै करी छै तो परवानो भेजो। तद राजा कह्यो परवानां अकबराबाद का दीवान कै नांव तयार होय है, दफतर मै खबर लो। सु दफतर मै सु परवानां की नकल ले हजुर भेजी है। सू नजर मुबारक गुजरसी जी। अर परवानो भी चलै है। अर गैसुखां की तगीरी को स्याहो आजम खां नै पहोच्यायो।

श्री महाराजा जी सलामत। उठा की फोजदारी आजमखां कै नाव छै अर गेसूखां नायब छै। आजमखां की तगीरी हुवौ तो नायब कठा सूं रह्यो। अर राजा सभाचंद कह्यो, जु फोजदारी तगीरी को स्याहो आजमखां नै भेज्यो अर अकबराबाद का दीवान नै खालसै करबा को परवानो चलै है। ईस सीवाय भी न माने तो जीस भांत उठै तीस भांत उठावो[1]। तद खानाजाद कही जु वैसू म्हे घणो ही समझस्यां पण या बात नवाब कनां सुं कहावो तद राजा सभाचंद खानांजाद नै नवाब कनै ले गयो न वा भी या ही फूरमाई जी।

श्री महाराजा जी सलामत। मी० काती बदी सादूदी खां तहवर खां को बेटो ती खानाजाद नै बुलाय कही—जू म्हारो बाप साहजादा अकबर कै समै थांका सबब कर पातसाह औरंगजेब अजमेर मै वैनै मरोतीं सबब कर आजम खां जाणै है जु यांकै अर वांकै ईखलास है अर हुं पण श्री महाराजा जी सुं जालोर मै मील्यो थो सु मैसुं श्री महाराजा अजीतसिघजी वहोत प्यार करै है। अर श्री महाराजा जी की हजूर का लोग सारा मैसूं[2] वाकफ छै। म्हारी आजमखां कै वहोत आमदरफत[3] है। आजम खां कनै हूं वैठो थो सु हिडोण की लड़ाई को मजकुर चलो,

1. तो जीस भांत उठै तीस भांत उठावो=जिस तरह वह निकले उस तरह उसे निकालो।
2 मुझसे।
3. आमदरफत (आमद-ओ-रफ्त)=आना-जाना।

तद हूं वोल्यो जु नवाव राजा का कांमा मैं आवो अर फेसल करो तो वडी जस है मेरै अर राजों के ईखलास है फूरमावो तो राजों के वकील कुं बुलाय मोकलुं। तद कह्यो वहोत खूब, बुलावो; तीस सू तुम चलो। तद खानाजाद वैकी साथ रातिनै खीलवत मैं गयो। गुलाल चंद को भी गुमासतो साथ थो, नवाव की मुलाजमत करी पांच रुपया नजर कीया। नवाव मेहरवानगी कर नजदीक वैठायो, पूछ्यो जु दोनूं राजा कहां है? खानजादा कही—जु सांभर मैं है। नवाव कह्यो, जु क्या ईरादा रखते है? तव खानांजाद कही, जु ईरादा वंदगी का है। तद नवाव कह्यो, जु साफ ईरादा सूं वदगी का ईरादा होय तो पातसाह साहजहां व औरंगजेव के अहद मैं वैकुंठवासी महाराजाजी व मीरजा राजा जी को मरातव थो वैही मरातव पहोचाय दे अर भांत-भांत की नवाजसैं होय अर सव मतालव सरंजाम पावैं। पण जिस भांत तूमारे वडे वंदगी करते थे वैसी वंदगी तुम मैं कहां है? तव खानाजाद कही—जु हममैं तो वही वंदगी है पण पातसाह औरंगजेव जी व वहादरसाहजी नै जु हम सू करी सु सव आलम उपर जाहर है, अर हम कु मुफसद कहे है। तव आजम खां कही—हिडोण तुमारी फोजदारी नही, जागीर नही, जिमीदारी नही, तुम मुझसै अवस कुं लड़ते हो। तव खानाजाद कही—हिडोण मैं लड़ाई हो ता भली हुई जु नवाव नै हमकुं सात महीने पीछे बुलाय बुझा[1] जु थे कांई करो छो, अव तकी ही वात पूछी नही, जु सांभर मैं की ईरादै वैठा छो अर ईतरो मुलक पातसाही कुं खावो हो? अव नवाव हमसूं मूतवजे हुवै हो तो श्री परमेसुरजी सव भली करैंगे। हमनैं वंदगी कवूल की, जहां पीछे कीसही की मजाल नही जु हिंदुसतान मैं सिर उठाय सकै। तव नवाव कही—जु वंदगी कवूल करो तो सव भला होयगा मैं लोगों की तरह झूठ वोल जाणता नहीं, जो वंदगी कवूल करो तो सव मतालव मनमानते सरंजाम होवैं। तद खानांजाद कह्यो, —वंदगी की तरहे होय है? तद नवाव कह्यो--जु हिरदै सांच होय तो वंदगी होय। तद खानांजाद कही—जु नवाव सलामत—पहली म्हाका मतालवां सुं वाकफ होवो मुकदमो वडो छै जो सरजाम कर सको अर थांका मुदई की वात पेस न जाय तो यां वाता मैं आवो, ईसो न होय थांको मुदई था पर गालव अरवै। अर मुकदमो व रहम होय तो ई वात मैं म्हाको तो नुखसान कुछ नहीं जो कोई पातसाही को वंदवसत कीया चाहसी सु म्हाका मतालव सरंजाम कर देसी, अर जो नवाव सु सरंजाम न हुवा तो सारा आलम मैं कहण नै हो सी जु नवाव चाह्यो अर मतालव सरंजाम न हुवा। जद नवाव कह्यो जु अैसी होव तो हम हमारा भाई मनसव का व खीदमतो का ईसतीफ दै। पण जो राजा वंदगी कवूल करै तो मतालव सव सरंजाम होय। तद खानांजाद कह्यो—जु हजुर

---

1. पूछ्या।

आया सीवाय जु कुछ नवाब कहो सु सब कबुल छै। अर जीभांत पातसाह औरंगजेब जी तख्त बैठतां ही महाराजा श्री जसवंतसिंघजी नै सूबैदार गुजरात की दी थी वैही भांत महाराजा जी नै सूबैदारी गुजरात की होय अर मीरजा राजा जी नै सूबैदारी मालवा की होय, चंद रोज पाछै मनोस रदूद कर हजूर आवैला। अर खानाजाद कही—जु पातसाह स्याहजहां महाराजा जी नै व मीरजा राजा जी नै पातसाही का थंभ[1] जाणै था जो काम मीरजा राजा जी व महाराजा जी कीयो सो काम कदी वर्तै न हुवो। अर पातसाह तैमुर का अहद सु ले अवार तक कितना ही हफत हजारी हुवा पण कदी एक भी काम उमदो न कीयो। राजा मानसिंघ अकबर पातसाह का अहद मै तमाम मुलक पातसाहजी का तसरफ मै लाया अर वैकुंठवासी बडा मीरजा राजा जी एक दिन मै छान कुंची दखण का कीलां की ली अर सेवा[2] सरीसा[3] मूफसदां नै बांध कर भेज दिया। अर राजा रामसिंघ जी आसाम नै की भांत तसरफ मै लाया। अर रावलपंडी मै महाराजा जसवंतसिंघ जी हजुर आया तब अरज हुई जु महाराजा का जीव मै वसवास है तद पातसाह औरंगजेब जी कह्यो—जु कांई मुजायको[4] छै, खास आम का सब पड़दा डाल दो, अर कहो, जु सब लोगों सू आवै। अर पातसाही अहतमाम[5] सारो मोकुफ होय महाराजा पधारा तद पातसाहजी नीमकद[6] उठ बगलगीरी करी, सारो जवाहर पहराया, सु महाराजा जी नै पहरायो तीसूं अबार या मसलहत छै। जु कोई दीन हजूर को आवणो मोकुफ होय; तद नवाब कह्यो थे जायगा कुं भटकता फीरो छो ऐक नै वसीली करो। तद खानाजाद कही जु हजरत नै तखत बैठा सात महीना हुवा कधी म्हे नवाब कै डेर आया। आज नवाब मेहरवानी कर याद कीया छै तो आण हाजर हुवा। नवाब कह्यो—जु थे भावै[7] जठै जावो काम जठी सु होणो छ उठी सूं ही होसी। खानांजाद कही—म्हानै तो काम सूं काम छै जो नवाब खांनखांना की व महावत खां की मीसाल तवजे फरमावै तो कोई मजायको छै ओर कठे ही न जांवा।

श्री महाराजा जी सलामत। खांनाजाद आजम खां नै कह्यो—जु नवाब सलामत हीडोण खालसै हुई अर फोजदारी गेसुखां सु तगीर हुई अर दीवान आला तगीरी फोजदारी का स्याहो नवाब नै पहोच्यो अर अब ताई भी गेसुखां

1. स्थम्भ।
2. शिवाजी।
3. जैसे।
4. मुजायको=हरज, ऐतराज।
5. अहतमाम=दरबारी कामकाज।
6. नीमकद=आधा उठा हुआ।
7. अच्छा लगे।

हीडोण सु न गयो, नवाब उस कु लिखै जु उठ जाय अवसे कु मार्‍या जाय है,-अैसे सीपाह कु कोई ओर काम फूरमाव जे जु करै, अब वीस हजार सूवार रजपूत आपको वैर लेवा गया दोय तीन दिन मै वैका मार्‍यो की खबर आवैली फेर म्हारै पर एतराज न होवजो, जु खवर कु न करी, जरुर जाण खवर करी छै। तीसूं गेसूखां नै लीखो जु उठां सु उठ जाय, वैका मार्‍या पाछै सुलह की रदवदल नवाब की मारफत छै। सु कुंकर रहसी। नवाब कह्यो—जो कुछ होय सु होवो यह बात हरगीज न लिखु वो सीपाही छै, मरमीट सी। फेर खानांजाद कही—मै ईस वासतै ही अरज करता हुं जु वह सिपाही अछा है अवस कु मारा जाय। वीस हजार सूवार रजपूत गये हैं सु राजों नै कहा है जु गेसुखां नै मारो या मरो। नवाब वीचारै जु अबै गेसुखां कुंकर जीवतो रहसी। नवाब कह्यो—जु एक दोय हजार आदमी मार्‍या गया तो सलतनत की कुछ कमी न छै, वैका मार्‍या जावा कै वासतै सुवैदारी को जवत खोवु वोपड़ो मारो जावो। खानाजाद कही—जु नवाब सलामत, अजब ईनसाफ छै जु म्है खानाजाद कदीम छां अर म्हानै मुफसद करार दीया छै। अर जाट खेती का करवा वाला अर चोरजां नै खाना-जाद जाणो छो, आगै पातसाह औरंगजेब का अहद मै वेदारवखत साहजादो व खानजहां वहादर जाटां की तबीह कै वासतै बीदा हुवा था, वांवतै कुछ न हुवो। अर राजा विसनसि जी सारां ने नेसनाबुद कीया था सु या भी अरज करूं छूं जू गेसूखां नै हुकम होय जु राजा का गुमासतां का ईतफाक सुं जाटां नै नेसतनाबूद करै तो भली भांत करसी। अर गेसूखां नै हीडोण मै अवस कु मारजै। अर अब हिडोण खालसै हुई असहक खां, अकवरावाद का दीवान, नै खालसै करवा को हुकम गयो अब भी गेसुखां उठै रहसी तो वेफुरमानी पातसाहजी की छै। उठ जाय तो कुछ मुजायको नही, जो फोजदारी वहाल रहती अर उठी जातो तो वेजा छी। अब ईसा सीपाही नै अवस कु मराजे। नवाब कह्यो—जु थे ई रदवदल की दोनु राजा नै अरजदासत करो अर जुवाव मंगाय दो जो म्हाकी मारफत सूलह करसी तो गेसूखां का मारां की वलाय जाणै। अर म्हारी मारफत सूलाह न ठहरसी तो गेसूखा का मारां पछै हु जासूं, म्हारा मारां पाछै खानजहां वहादर जासी पण थाणो अवार उठा वुं नही।

श्री महाराजा जी सलामत। खानांजाद ईमतयाज महल का मुसाहव सूं रदवदल ठहराय राखी छै अर मी० काती वदी १ परवानां खानांजाद नवाजी का ईनायत हुवा तसलीमात वजाय लाय सिर चढ़ाय लीया जी। तमाम सरफराजी व खानांजाद नवाजी हुई जी। ईमतीयाज महल की फरमायस का मुकदमां मै प्रवानो सादर हुवो थो। सुं ईमतयाज महल नै गुजरान्यो, वहोत खूस्याल हुवा। अर कह्यां—जु वाजवलअरज लावो, तद खानांजाद वाजवलअरज वानै दी। ईमतीयाज महल पछ कहाय भेजो जु अब ही ये मतालव अरज मत करो, पहली

हिडोण का थाणा कायम कर चुकोगे तव मै अरज करुंगी । जु खानजहां नै आजम खां नै कहा मान्या नही तीसका यह हंगामा हुवा । अव दोनुं राजो के मतालव मै अरज करूं हुं सु कर दीजै उन कु वंदगी मै मै लाऊंगी ।

।। श्री महाराजाजी सलामत । हिंडोण ऊपर अमीरल उमराव कै अर खानजहां वहादर कै तो खुलकर गुफतगो होण लागी, सरै कचहरी राजा सभाचंद खानजहां वहादर की मारफत का लोगां सू वद जुवानी वोलण लागो वै यां का लोगां सु बोलण लागा ।

।। श्री म्हाराजा जी सलामत । अमीरल उमराव का घर की तो या सूरत है । आप घर मै बैठो रहै कोई आवण जाण पावै नही । ऐक राजा[1] दरवार कर बैठे सु तूंदत बै कोई कुं कह सकै नही अर खानजहां कै अंधेर आही तुंदत वै पातसाही की बात परमेसुर आधीन है जी ।

।। श्री महाराजा जी सलामत । साहवेग व मीरजा कादरी लीखो जु राजां नै वकीलां लिख्यो जो राजा सभाचंद केहे है जु मूतसदी न आवै ती पर राजा कादरी नै लिख्यो है—जु वकीलां झूठ लिख्यो है, म्हान कह्यो अर खानाजाद सूं कही थे क्युं लिखी । तद खानांजाद कही हूं ई बात सूं वाकफ नही तव गुलालचंद कै गुमासतै कही मै दस बार अरज की थी साहिव न मानी तव मै लिख भेज्यो तब खड़ बड़ाय बैठ रह्यो जी ।

।। श्री महाराजा जी सलामत । आजम खां गेसुखां नै लिख्यो है—थाणो कायम राखजे थारी मदद नै सुबेदार अकबरावाद को व फोजदार बीदाराबाड़ी को व मथुरा को आसी ओर भी नीगाहदासत करजे ।

।। श्री महाराजा जी सलामत । अमीरल उमराव तो काम मै ही है । ईमतीयाज महल नै भी बातां मै लायो हु, खानजहां बहादर कै अब आजम खां ई काम नै चाहै है । पलो बांध्यां कहै है जु हर कहीं के दरवाजै जावो कुछ होण को नही, म्हां सु रजु होस्यो तब ही काम होसी । खानांजाद तीनुं राहयां की सलतनत का आपकै हाथ राख्या जाय है । अब भंडारी जीवदासजी आवै है जी की मारफत जाण जे तीकी मारफत काम कीजे जी ।

।। श्री महाराजा जी सलामत । जो खातर मुबारक मै आवै तो आजम खां का मुकदमा का जुवाब मै खत भेजजे जी । काम सुं काम छै । खानाजाद राति दिन नवाब अमीरल उमराव जी कनै व राजा सभाचंद कनै हजार रहै छै । अर ईमतीयाज महल का मुसाहब मुं मिलतो रहै छै जी । अर आजम खां सु करार कीयो छै जु जब तक म्हाका मतालब सरंजाम न होय तब तक म्हाको आवणो कही पर जाहर न होय ।

---

1. राजा सभाचंद ।

।। श्री महाराजा जी सलामत । गेसुखां हिडोण सुं वीजैसिघजी का हरन व चीता व वाज जुररा वगैरहै सीकार का जीनावर आजमखां कनै भेज्या छै जी ।

।। श्री महाराजा जी सलामत । बाल किसन महाजन मोजै धौल परगने मनोहरपुर को वासी कितना ऐक दिनां सु मौजे राजसर तालकै आंवेर को तठै जाय रह्यो छ । सु ठाकुर निरभैसिघ राजावत आंतीला व पीरागपुरा को थाणादार महाजन मजकुर नै दोसा मै कैद कर राखो है । सु ईको भाई राजेखां तोवखांना को दारोगो को चाकर छै । अर राजा सभाचंद कह्यो है जु ऐ राजेखां के चाकर है तूम श्री महाराजा जी कुं अरजदासत करो जु निरभैसिघ कुं लिखै जु ईनकै भाई कुं छोड़ दे । सु ई मुकदमां की आगै अरजदासत की है सू नजर मुवारक गुजरी होसी जी । उमेदवार हुं जु निरभैसिघ नै हुकम होय जु महाजन मजकुर नै छोड़ दे जी ।

मीती काती वदि ४ संवत १७६६ रा ।

क्रम संख्या ९३

वकील रिपोर्ट संख्या १५९

कार्तिक वदी ११, संवत १७६९

श्री गोपाल जी सहाय छै जी

श्री महाराजाधिराज महाराजाजी
श्री मीरजा राजा जैसिघजी

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजाजी श्री जी चरण कमलानु खानांजाद खाकपाय पंचोली जगजीवनदास लिखतं तसलीम वन्दगी अवधारजो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी का तेज प्रताप कर भला छै। श्री महाराजा जी का सीख समाचार सासता परसाद कराव जो जी। श्री महाराजा माईत है, धणी है, श्री परमेसुरजी की जायगा है। म्हे श्री महाराजा जी का खानाजाद बन्दा हां। श्री पातसाह जी श्री महाराजा जी सू मेहरवान हैं। श्री महाराजा जी सुख पाव जो जी। पान गंगाजल आरोगबा का घणा जतन फरमाव जो जी।

।। श्री महाराजा जी सलामत। सारा समाचार दरबार का आगै अरजदासत कीया है। सू नजर मुबारक गुजरा होसी जी।

।। श्री महाराजा जी सलामत। मी० काती बद ८ साह श्री चन्द को कागद आयो तीमै लिख्या थो जू गेसुखां कै अर सरकार की फोज कै मुकाबलो थो सू काती बदी ५ नै लडाई हुई सू श्री महाराजा जी का तेज परताप कर सरकार की फौज फते हुई। अर गेसुखां की फोज भागी। अर गेसूखां की खबर नहीं जु मारो गयो न जाणा जे भाग गयो। अर वे ही दीन दोय पहरां साह नैनसुख जी को कागद आयो तीमै लिखो थो जु सरकार की फोज फते हुई। अर खबर है जु गेसुखां मारो गयो सु खानाजाद श्री चन्द को खत को तरजमो कर अरजी राजा सभाचन्द नै दी अर साह नैनसुख जी को खत बजनस राजा नै दीखायो। राजा कह्यो, जु खुव कीया खातर जमा राखो, कुछ वसवास मत करो। वैही बीरया

राजा या हकीकत नवाव अमीर उमराव जी नै जैयंती का महला पातसाह जी सीकार नै पधारया तठे लिख भेजी जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। साह नैनसुख जी का खत की हकीकत ईमतीयाज महल बेगम का मुसाहव नै लिख दी जु गुजरानै ईमतीयाज महल बेगम श्री पातसाह जी की साथ है। सु आज उठै जाय गुजरानै लो जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। आजम खां अजमेर का सुबा को तलास करै है। अर खांनांजाद साकर खां जी नै कह्यो जु थे अकवरावाद की सुबैदारी को तलास करो सु साकर खां अकवरावाद का सुबा का तलास मै लागो है। देख जे कांई चुकै, जु चुकसी सू पाछां सु अरजदासत कर सू जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। राजा सभाचन्द नवाव अमीरल उमराव जी की तरफ सु शाहवेग व मीरजा कादरी नै लिख्यो जु गेसुखां के मारणे का जु हुवा नु भला हुवा। अव मीरजा राजा जी व महाराजा जी के मुतसदीया कुं लेकर सीताव आवो अर खानांजाद के तसली दीलासा की जु हुवा सु भला हुवा। खातर जमा राखो, कुछ वसवास मत करो।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। खानाजाद तो राजा सभाचन्द पास है। अर श्री पातसाह जी जैयती का महला सीकार नै पधारया छा सु परवाहरा खूवाज कुतवन्दी की दरगाह पधारया छै। सु नवाव अमीरल उमराव जी श्री पातसाह जी की साथ छै। सू दीन आठ सात नै आवैला। खानजाद नै जो कुछ जवाव सूवाल नवाव जी सू करणो होय छै सु राजा लिख भेजै छै। अर जुवाव मंगाय दे छै। अर खानांजाद का भाई वन्द आस नाव जो कोई पातसाह जी कना सु आया त्यां कही जु खानाजहां वहादर व आजम खां, गेसुखां का मारां की सुण श्री पातसाहजी कनै सोर वहोत्त करै है। कहै छै, जु खाहमखाह अजमेर को सूबो पावा जु म्हे जोधपुर आंवेर मै जाय वैठा। सव रजपूता नै इखराज करदां कै म्हानै वरतरफ करो। म्हे फकीर होय वैठ रहस्या ई सीवाय जो जो वाका मन मै तरंग उपजै है सु सव कहै है। तीसु भंडारी जीवदास जी नै हुकम होवै जु दीन दस वीस हजुर आवा मै ढील कर राह मै मुकाम कर रहै। ईतरा मै खानजहां वहादर को व आजम खां को रंग देखली जे। जु ऐकाई कर चुकै अर नवाव अमीरल उमराव जी कांई करै। पछै जु खातर मुवारक मै आवै सु फूरमाव जे जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। गेसुखां का तगीर करावाकी मोहमसाजी का रुपया दस हजार वार दोय कर इनायत हुवा था। सु हजार रुपया खानाजाद नै साह नैनसुख जी का लिख्या माफ रोजगार मै लीया। अर नो हजार रुपया उठै भरा अर कह्यो जूं एक हजार रूपया म्हे दहकीका रा राख्या सु वा कह्यो जू

दहकनदां म्हा का बाकी रुपया भर दो । सु वै बाकी रुपया कै वासतै ताकीद करै है। उमेदवार हुं जु बाकी का रुपया ऐक हजार सीताब इनायत होय जी ।

।। श्री महाराजा जी सलामत । नवाब साकर खां जी खत आयो थो । तीका जुवाब मै साकरखां जी श्री महाराजाजी नै खत लिख्यो है । सू श्री महाराजा जी हजुर मोकलो है सु नजर मुबारक गुजरसी जी ।

।। श्री महाराजा जी सलामत । साकरखां जी की बेटी को व्याह है । अर बड़ा आकलखां जी का बेटा को भी व्याह है । सु आगै वैंकुठवासी राज बीसन-सिघ जी बडो सुकरला खां नारनोल को फौजदार तीकै बेटा को या बेटी को व्याह थो सु तो खानाजाद नै याद नही । सु मुथरा सु मेघराज खानाजाद को छोटो भाई थो तीकै हाथ नोतो[1] दीवाय भेजो थो । सु श्री महाराजा जी के अर यांकै घराणे कदीम व्योहर छै । सु जु कुछ खातर मुबारक मै आवै तो या कनै नोतो भेजजे जी । खानाजाद नै अरज लिखणी जरुर थी पछै जु खातर मुबारक मै आवै सु फरमाव जे जी ।

।। श्री महाराजा जी सलामत । ईसरदास खानाजाद को भाई दोय बरस सू हजुर मै साह नैनसुख जी की साथ है । सु उमेदवार हु जे साह नैनसुख जी नै हुकम होय जु वै नै सरकार मै चाकर राखै जी ।

।। श्री महाराजा जी सलामत । साकर खां जी कै ऐक हाथी मकनो छै । सु ये तो वैको मोल तीस हजार रुपया कहै है पण रुपया पचीस हजार नै चुको बतावै छै । सु जो खातर मुबारक मै आवै जु सरकार मै मोल लीजे, तो दीवान भीखारीदास जी अठै आवै है सू वानै हुकम आवै अर महावत आवै जु आछो देख पसंद आवै अर लेणो होय तो ये बेचेहै लीजे । न लेणो होय तो महाराजा श्री अजीतसिघजी नै मोल लेणो होय तो पुछ देख जे जी ।

मी० काती बदी ११, बुधवार संवत, १७६९ ।

1. निमन्त्रण ।

क्रम संख्या ९४

वकील रिपोर्ट संख्या १६०

कार्तिक वदी १४, संवत १७६६

श्री गोपाल जी सहाय छै जी
श्री महाराजाधिराज महाराजाजी श्री मीरजा राजा जैसिघजी

॥ सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा जी श्री चरण कमलानु खानांजाद खाकपाय पंचोली जग जीवनदास लिखतं तसलीम वंदगी अवधार जो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी का तेज परताप कर भला छै। श्री महाराजा जी का सीख समाचार सासता परसाद कराव जो जी। श्री महाराजा जी माईत है, धणी है, श्री परमेसुर जी की जायगा है। म्हे श्री महाराजा जी का खानांजाद वन्दा हां। श्री पातसाह जी श्री महाराजा जी सू मेहरवान हैं। श्री महाराजा जी सुख पात्रजो जी पान गंगाजल आरोगवा का घणा जतन फरमाव जो जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। बाल कीसन महाजन मोजै धोलो परगनै मनोहरपुर को वासी कीतना ऐक दीना सू मौजे राजसर तालकै आंवैर को वासीय रह्यो छो। सु नीरभैसिघ आंतीला व पीरागपुर को थाणेदार महाजन मजकूर नै उठा सु पकड़ ले जाय कैद कीयो। सु वैका छुड़ावा कै वासतै राजा सभाचन्द आगे खाना-जाद ने कह्यो थो जु श्री महाराजा जी ने अरजदासत करो जु निरभैसिघ नै लिखै जु महाजन मजकुर नै छोड़ दे। सु ई मुकदमां की आगै अरज लिखी है सु नजर मुबारक गुजरी होसी जी। अबै महाजन मजकुर को भाई कहै छै जु सरकार का मुतसदीयां वैपर[1] आठ हजार रुपया ठहराया छै। सु ई कै वासतै राजा सभाचन्द भी खानांजाद नै कह्यो छै, जु श्री महाराला जी कु अरजदासत करो जु उसके बाव रीयायत करै अर छोड़ दे। सु उमेदवार हुं जु वैकै बाव रीयायत फूरमाव जै अर खलास कीजे जी। मी० काती वदी १४, संवत १७६६।

---

1. उस पर।

क्रम संख्या ६५

वकील रिपोर्ट संख्या १६१

कार्तिक सुदी ६, संवत १७६६

॥ श्री गोपालजी सहाय छै जी

श्री महाराजाधिराज महाराजा जी श्री मीरजा राजा जैसिंघ जी

॥ सिध श्री महाराजाधिराज महाराजाजी श्री चरण कमलानु खानांजाद खाकपाय पंचोली जग जीवनदास लिखतं तसलीम वंदगी अवधार जो जी। अठै का समाचार श्री महाराजाजी का तेज प्रताप कर भला छै। श्री महाराजा जी का सीख समाचार सासता परसाद कराव जो जी। श्री महाराजा जी माईत है, धणी है, श्री परमेश्वरजी की जायगा है। म्हे श्री महाराजा जी का खानाजाद वन्दा हां श्री पातसाहजी श्री महाराजा जी सूं मेहरवान है श्री महाराजा जी मुखपावजो जी पान गंगाजल आरोगवा की घणा जतन फरमाव जो जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। सारा समाचार दरवार का आगे तफसील-वार पैं दरपै अरजदासत कीया है सू नजर मुवारक होसी जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। साह नैणसुख जी को खत मीती काती सुदी ३ को लिख्यो काती सुदी ७ नै आयो, लिख्यो थो जु थे सारा समाचार की नवाब अमीरल उमराव जी सूं ठीक पाड़ सीताब व्योरो लिखजो। सू श्री महाराजा जी सलामत। खानाजाद सूं व नवाब अमीरल उमराव जी सूं रदबदल हुई तिका समाचार तो पै दरपै अरजदासत किया है सूं नजर मुवारक गुजरा होसी जी। नवाब जी भांत भांत खातर, हरभांत जमा राखो, म्हे श्री पातशाहजी सूं पूछ आपकी खातर भांत भांत निसा करी है,...कुं बुलाओ जूं आण कर अपणे मतलब सरजाम करै सुं तुम सिताव राजों के मुतसदीयों कु बुलावो अर आजम खां अकबराबाद के सूबे के वन्दवसत कु जाता है ओर जो कुछ ओर इरादा रखता होय तो खजाना कहां जू सिपाह रखै और सिवाय इसके जो कोई इसके साथ

जायेगा तिसको जागीर देनी तो हमारे अखतीयार है कीसही कु एकदम जागीर न दें। तुम हरभांत खातर अपनी जमा रखो। सूं श्री महाराजा जी सलामत। नवाबजी व राजा सभाचंद खानाजाद की तरह तरह कर खांतर जमां करी और खानाजाद हिरदैराम आजम खां का दिया म्हाने फोडो सूं वो कहे छै हूं वैनै समझाऊं छूं जो......।

श्री महाराजा जी सलामत। नवाब जी हरभांत खातर निसा करी ओर नवाबजी का खत मीरजा कादरी नै लिखाय भेजा छै: जूं महाराजा जी व मिरजा राजा जी के मुतसदीयों कु सिताब हजूर ले आवो और राजा सभाचंद को खत श्री महाराजा जी हजूर भेजो हे सूं नजर मुबारक गुजरसी जी ओर राजा सभाचंद का खत राय रुघनाथजी[1] ने व दीवान भिखारीदास जी ने भिजवाया छै: जू खातिर जमा नूं हजूर आवो सू खत पहुंचा हुसी अरवे चाला हुसी जी।

॥ श्री महाराजा जी सलाममत। ईमतीयाज महल बेगम की हकीकत खानां-जाद आगै अरजदासत की है अर साकर खांजी को खत आगै श्री महाराजाजी हजूर भेजो छै तीसूं अरज पहोची होसी जी अब भी भांत भांत नीसां खानांजाद की करी छै जी।

श्री महाराजा जी सलामत। श्री पातसाह जी मी० काती सुदी ६ नै तीसरा पहर का खीजराबाद की तरफ सिकार नै पधारा छै नवाब अमीरल उमराव जी साथ पधारा छै और राजा सभाचंद अठै ही रहियो छै जी। मी० काति सुदी ७ सनीवार संवत् १७६६।

श्री जी सलामत। अमीरल उमराव तो भांत भांत निसांकरी अर बोहत सुख पायो अबताई तो इतनी सी की है सो अब दीवान भिखारीदासजी आसी सूं वाकफ होय अरजदासत कर सी जी। ललोपतो करे था अब जीणो जू म्हे कहो सूं करो तीसूं मन की गांठ खुल गई अब ताई तो खानाजाद मूं ऊपर के दिलमिलो थो अब दिल खोल मिलन लागो अर राजा भी दिल खोल मिलन लागो सूं अब दिन दो चार मे आये सू देख अरजदासत करसी जी। आजम खां तो सोर सराबो करवा ठहरो। पातसाह जी ने इमतयाज महल समझायो अमीरल उमराव समझायो ती पर समझ कर बैठ रहा अर खानजहां बहादुर व आजम खां भी छाती तोड़ बैठ रहा पण खबरदारी राखणी। श्री जी सलामत। अमीरल उमराव तो साफ जवाब दीयो जैसे ख्रबमारो म्हे चाह मुं करसां थे खातर जमा राखो।

1. भण्डारी रघुनाथ=जोधपुर राज्य का देश दीवान। देखिये, जी० डी० शर्मा, राजपूत पॉलिटी, पृ० 202

क्रम संख्या ९६,

वकील रिपोर्ट संख्या १६२

कार्तिक सुदी ११, संवत १७६९

श्री राम जी
श्री महाराजाधिराज सलामती

।। मिती काती सुदी ९ सोमवार खानाजाद का व भंडारी रांई रुघनाथ दास का डेरा खोजा वसंत खां की सराई हुवो अर मिरजा कादरि जो आगै गयां था सो नवाव साहीव सौ रदवदल करि। नवाव वहोत महेरवानगि फुरमाई अर आवणै सौ वहोत रजां वंद हुवां। तव मिरजा कादरि मीती काती सुदी ११ वुधवार नवाब का जमायत दारवै पाडे विके कां पोता सुवार सैं, तिन सौ आगु लेवा आये। अर राई गजस्यंघ को नवाव फुरमाई जो राजों के मुतसदी आवैं है तुम उनको आगु जाय ले आवो। अर मिरजा कादरि आय ताकीद करि जो नवाव कि ताकीद वहोत है तुम अवारू कूच करो। सो वावरदारी ऊट वागी० सारी चरवा गई थी अर जोतीगो[1] कहां, जो आजि कूच करणां मनासव नहि। मिती काति सुदी १२ विसपतीवार घड़ी आठ दिन चढ्या आछ्या मुहरत है वैं साईत तुम कुच करी नवाब कि जाई मुलाजमती करो। सो मीती सदर मुलाजमती नवाव की करि। बहोत म्हेरवानगि फुरमाई, सिरोपाव ईनाइत किया। अर भाति भाति खात्री जंमा करि। अर पहैलि तो फुरमाई थि जो राजा सभाचंद का बेटा आगु लेणै को जाय, फेरि अरज पहुचि जो राजा मजकुर का बेटा गंगाजी न्हावा गया है। तब राई गजस्यंघ को भेज्यां सो रांई गजस्यंघ वा मिरजा कादरी स्हांमा[2] लेवा गयां सो काजिकि साराई सो कोस येक परैताई जाय मीले। सो उठै राई गजस्यंघ भंडारी रुघनाथ सौ वा वंदा सौ मीलया। अर राई गजस्यंघ कही जो मुनै राजा सोभाचंद

---

1. ज्योतिष लोगों ने।
2. सामने।

फुरमाई है जो तुम राजों के मुतसद्यो को सीताव ले आवो। मेरै ताई नवाव नै गंगाजी को रुखसद कीया है। तव राई गजस्यंघ को विदां किया अर कही जो ग्हां का आवा कि हकिकती राजा सभाचंद सौ जाय मालुम करो।

दोय पहर का अमल मै राजा सभाचंद सौ सव साथ सौं मिले। राजा सभाचंद मसनंद सौ उठि खड़े रहे अर सव ठाकुरों सौ मिल्या अर खानाजाद को वा भंडारी को मसनंद पासी लेवैडांयां अर वहोत भाति ज्यौ वड़े आदम्यौ सौ वतलावै है तीस भाती वतलायां। अर हर भांति खात्रि निसा करि अर या कहि जों[1] दोन्यों राजां हिंदुसतान का सिन्हन है। अर हमारा वड़ा भाग है जो हम सौ कोई भांति चाकरि वणि आवै, अर डेरो कै वासतै राज सभाचंद फुरमाई जो तुम्हांरा स्यौव होय अर आछि जायगा जाणों जिठे हि करो। तव भंडारी जी अरज करि जो नवाव का हुकम होय तो जसवंत पुरै डेरा करै। तव राजा सभाचंद मिरजा कादरि को फुरमाया जो तुम ईनका डेरा जसवंतपुरै डेरा करावो। अर राजा सभाचंद फुरमाई जो तुम्हांरै वासतै मुलाजमति कै वेठै है, मै जाय अरज करता हुं तुम सीताव आवो। तव राजा सभाचंद तो नवाव की हजुरि गये अर अरज कराई जो राजों के मुतसदि आवै है। तव नवाव अनंदर खाणा खाते थे सो हुकम आया जो राजों के मुतसद्यो को व राजपुत लोगो को, जो वैल्यावै तीनको[2] दीवान खाने वारो वेठावो। तव राई गजस्यंघ वा मिरजा कादरि सवको दीवान खाने वेठाये जी। अर घड़ि येक पाछै अंदर सौ नवाव निकस्या अर दिवान खानै मै मसनंद उपरी आय वैठे। तव भंडारी राई रुघनाथ व वंदे नजरि गुजरानी सो जुदि फरद सौं अरज पहुंचैलि जी। तव नवाव वहोत भाति दिलासा करि अर फुरमाया जो तुम हर भांति जंमां खात्री राखो, दोन्यों राजों के मुतालिव सव सरंजाम देहगे। फेरि नवाव साहिव फुरमाई जो वड़ो नवाव पासी आगै कुण आया था। तव मया राम उकिल महाराणां जी कैवा वंदे अरज करि जो हम आयां था तव नवाव फुरमाई जो तुम सौ नवाव साहीव राजी होय तुम्हांरि तारिफ वहोत लिखि थी। सो हम भि तुम सौ वहोत रजावंद है। तव नवाव मिरजा कादरि सौ फुरमाया जो तोसाखाने[3] के दारोगा को वुलाई राजों के मुतसदि वागो॰ को सिरोपाव दिलावो। तव मिरजा कादरि सव को ले अर वाग जो नवाव की हवैली के मुतसलि है तीस जायगा ले जाय सव को सिरोपाव पहैराया सो तपसीलवार दुसरी फरद सौ मालुम होय ली जी। फेरी सीरोपाव पहैरि नवाव सौं तसलिमात करी, तव अपणै हाथ सौं खान वकसी अर विदा किया जी। फेरी राजा सभाचंद कहांय भेज्या जो तुम सौ

1. यह नहीं है।
2. इनको।
3. तोसाखाना (तोशाखाना)—बहुमूल्य वस्तुओं का भण्डार।

कुछ मुनै रदबदल करणि है । तुम येक जाईगै बैठो । तब भंडारी वा बंदा नवाब के दूसरे चौक मै जाय खड़े रहे । अर पाछैहि राजा सभाचंद जी भि आया सो पेह्ली तो वहोत भांति तसलै अपणी त्रफ वा नवाब कि त्रफ सौ करी अर कही जो पातसाहजी वीसपतीवार कै रोज मीरन जो मुरतजा वांका कीताब पायां है तीसमै पधार्‌या छै । सो सुक्रवार कै रोज उठैहि रहैसी । अर सनिसरवार खिदराबाद जाहिगे । अर दीतवार उहा रहैगे । सो सोमवार को तथा मंगलवार को कोट दाखिल होहिगे । सो तब ताई कहो तो गंगाजी सनान करि आउ । नही त्र हमारै ताई तो राजो का काम करणा हजार सनान बरोबर छै । तब भंडारि जी वा बंदै कहि जो आप सनान करणै पधारै आप आवैगे तब सारि रदुबदल करैगे । तब राजा सभाचंद कहा जो मै एकादसी कुं गंगा जी जातुं था सो तुम्हारै ही वासतै रह्‌या हुं राह मै मैड़ाक सुवार व कहाए राखे है । सो मै सीताब ही आउगां । तब या रदबदल करि राजा सभाचंद गंगाजी को नवाब सौ रूखसद होणै गया । अर भंडारि रुघनाथ, दास वां बंदा सब साथ सौ जसवंतपुरै आय डेरा कियां । अर खानजिहा बहादर वा आजम खां का लोग पुरा मै थे सो सब जाई रेति मै डेरा कीया जी । अर पुरा खाली होतां जाय है जि सौ हकिकती अरज पहुंचै जी । श्री महाराजाधिराज सलामती । जाफर खां दीवान की हवैली खानजीहा बहादर को वकसी है सो जसवंतपुरा कै नीपट मुतसली है । अर आजम खां भी उस ही हवेली मै रहै है सो उनोनै चोकि पहैरां वा राहवाट कि वहोत खबरदारी कराई है । सो हकीकती अरज पहुचै जी । मीती काति सुदि १३, वार सुक्रवार प्रभाती चलांई, सवत १७६६ ।

क्रम संख्या ६७

वकील रिपोर्ट संख्या १६४

मार्गशीर्ष वदी ५, संवत १७६६

श्री रामजी

श्री महाराजाधिराज सलामती

अरजदासती करार मीती काती सुदी १३ कि लीखि उमीरल उमराव सौ मुलाजमती कीवा की आगै हजुरी भेजी छै तीसौ सारि हकीकती अरज पहुची होयली जी। श्री महाराजाधिराज सलामती। राजा सोभा चन्द जी गंगाजी न्हावा गयो थो सो मीती मगसर वदी ३ मंगवलवार दोपहरा आयो। आवता ही राम राम कहाय भेजी। मीती मगसर वदी ४ बुधवार भंडारी वा वन्दा कै मैह-मानि भेजी सो हम तो वहुतेरा चाहां जी फेरि भेजै पणी भंडारी वा वन्दै सलाह करी रखाई है जी। अर मह्मानी ले आया था आनै दोन्या सरकारां सो रुपया ५० पचास दीया जी अर अव तांई तो राजा सोभाचन्दजी अैसा रवैया ईकलास का कीया है सो अरज पहुचावा मै आवै नहीं जी।

श्री महाराजाधीराज सलामती। मगसर वदी ४ विसपतिवार सवांराही भंडारी जी नै गुलालचंद व गोकलदास को वां सरकार की त्रफ सो पंचोली जग-जीवनदास व नीत्यानन्द राजा सभाचन्द जी के भेज्या वा दोन्या सरकारा की त्रफ मिजमांनी भेजी सो मिजमानी कि फरद अलाहदी भेजी छै सो नजरी गुजरै ली जी। घड़ि दोय दिन चढ्या राजा सभाचन्द जी कहाव भेज्या जो नवाव साहीव फुरमावते है जो अरजी साईतखुब[1] है सो मुनसदि राजों के आवै हम अरजी पात-साह जी की मुलाजमती करावैगे तव भंडारी रुघनाथ वा वन्दा नवाव के डेरै गये अर राजा सोभाचन्द जी को खवरी करी, तव नवाव फुरमाया जो सीताव वुला-

1. साईतखुब (साअत-ए-खूब)—शुभ घड़ी।

वल्योह तब जाई मुजरा नबाव सौ कीया। नवाब बैठने का हुकम कियां अर फुरमाया—जो तुम अरजी पातसाहजी कि मुलाजमती करो तब अरज करी जो हुकम करैगे सो करैगे। तब नवाब सुवार होय भंडारी जी को वा बन्दा को फुरमाया जो तुम हमारे दिवान खानै बैठो अै पातसाही सो अरज करि, अेटकी प्रवांनगी आवनै की भेजै[1] तब सीताब आज्यौ। सौ नवाब हजुरि पातसाह जी की जाय प्रवांनगी ले भेजी। पातसाही दीवान आव[2] किया था तब भंडारी वा बन्दा सुवार हुवा अर जेता ठाकुर लोगा उमिरल उमराव के सीरोपाव पाया था तिन को साथि ले गये। अर हमारे पहुचते पहैली पातसाह जी दीवांन आव सौं उठि खड़े रहे। तब राजा सोभाचन्द जी कही जो तुम गुसल खाने की ध्यौठि चली बैठो[3], पातसाहजी दीवांन खास करैगे। तब माफिक कहे राजा के गुसलखाने की ध्यौढि की कोटड्यौ मैं जाय बैठे। तब पातसाहजी हाजरी खांव गुसलखाना कीया तब राजा सभाचन्द जी नै भंडारी कि वा बन्दा की वा ठाकुर लोगों कि मुलाजमति कराई। पातसाह जी सिरोपाव इनायित करबा वेई हुकम कियो। सो सिरोपाव सारा पेरी[4] तसलीमात करी। तब भंडारी जी अरजदासती महाराजा अजीतस्यंघ जी कि ले आये थे सो हाथ परीले खड़े हुए। तब पातसाहजी फुरमायो जो आगे बुलावो, तब भंडारी जी नजदीक आगै आय अरजदासति ले खड़े हुये। तब राजा सोभाचन्द जी अरजदासती ले नवाब अमीरल उमराव को दीई। नवाब पातसाहजी सौं अरज पहुंचाई अर बन्दै पासितो हजूरी सूं अरजदासती कोई आई नही जो पातसाहजी की नजरी गुजरांनता जी अर थैली भी खास अरजदासत त्यार लाई क खास महोर सौ कोई इनायत हुई नही त्या ही[5] में लिखी गुजरांनतो। अर वा जै थैली खास मुहर सौ आई थी सो अरजदासत त्यालावकं न थी जी। अर इम्तयाज महैल को महाराज अजीतस्यंघ जी की अरजदासती आई अर बन्दा पासी कोई आई नही। तब भंडारी जी कही जो अजरदासती जरूरी गुजरांनी चाहिजे सो जौ थैली हजूरी सौ खास मुहोर सौ आई है त्रा में लिखी गुजरांनूगाजी। बन्दा उमेदवार है, जो अरजदासती वार थैलि खास मुहोर सौ सिताब इनायत होय जी। फेरी पातसाहजी भंडारी जी को पद कनाहर का चहरा को वा बन्दा को घुकघुकी इनायत करी अर डेरे को रुखसद किया। तब भंडारी जी वा बन्दा नवाब कै डेरै जाय वेठै। तब नवाब दरबार सौ आये तब नवाब को तसलीमात करी। तब नवाब वहोत तसलैह करी अर फुरमाया जो तुम अपने मतालिव लिख ल्यावो सो अवै

1. दरवार में उपस्थित होने का आदेश भेजने पर।
2. दीवान-ए-आम।
3. गुसलखाने की ड्योढ़ी पर चलकर वैठो।
4. पहनकर।
5. उसी में।

सारां मतालिव लिखी राजा सोभाचन्द जी की मारफती गुजराना ला जी । सो रदवदल होयली सो पाछा छै अरज पहुचाईलो जी ।

श्री माहाराजाधिराज सलामती । कोलार सब अेकठे होय वन्दै पासी आवै सो रदवदल तो वहोत हुई या वात ठहरि जो तुम नवाव सौ अरज करो जो नवाव फुरमावेंगे सो कीजेगा । सो इनका तकादा वहोत सकत है सो उमेदवार हुं जो इसका जवाव सिताव इनाईत होयजी ।

श्री महाराजाधिराज सलामती । पातसाहजी के अकवरावाद जावै की वहोत ताकीद है अर हुकम हुवा है जो तारीख १९ सावाल पेशखानो चलै ता० २५ सहर मजकूर को आय कूच करे । सो पेसखानो चाल्या की खवरी आय अरज लिखूं लो जी ।

श्री महाराजाधिराज सलामती । भंडारी वन्दे सो कहाव भेज्या जो मिरजा कादरी वेग की रूराईत कीई चाहिजै वा का कह्या माफिक रुपया १०० सो व दोन्यूं सरकारा सूं दिया जी वांका वेटा की सादी[1] के वासते दिया जी ।

श्री महाराजाधिराज सलामती । रामानन्द वा प्रेमराज काईथ हिडौनी की राडी मै सरकार मैं कैदी आया कहैजे छै । तिनके वासते राजा सभाचन्द नै कहाव भेज्या जो वे हमारे कायथों के सगे है सो तुम इनके वास्ते श्री जी की खिदमती में अरजदासती करी छुड़ाई मंगावो । तव वन्दै जवाव दिया जो हिडोण की कैद मैं आया होयला तो मैं हजूरी को अरज दासती करी छुड़ाय मंगाई दयौंहगा । उम्मीदवार हुं जो मुतसदो को हुकम होय जो कायथ कैद मै होय तो खलास करि जीहानावाद पहुचावैजी अर कदाचि कैद मैं न आया होय तो प्रवाना फारसी वंदा के नाव सादर होयजो वे कायथ कैद मैं कोई आया नही, अरज करवा वाले खिलाफ करी छै, जो परवाना वजनस्य राजा सभाचन्द ने दिखाउं जी । अर छवील राम कि खवरी अवताई पातसाहजी मै मिल्या की आई नहीं जी । अर केहै वति पाछै जो कोई तो कहै छै जो मिल्या अर कोई कहै छै मिली करी उठि गया, सौ करार वाकी खवरी आवै ली सो पाछा थे अरज पहुचाउलो जी । मिती मिगसर वदी ५, गुरुवार, समत् १७६९ ।

1. शादी ।

क्रम संख्या ९८

वकील रिपोर्ट संख्या १६५

मार्गशीर्ष बदी ६, संवत १७६६

श्री गोपालजी सहाय छै जी

श्री महाराजाधिराज महाराजाजी श्री मिरजा राजा जैसिंघजी

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा जो श्री चरण कमलानू खानांजाद खाक पाय पंचोली जगजीवन दास लिखतं तसलीम बंदगी अवधार जो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी का तेज परताप कर भला छै। श्री महाराजा जी का सीख समाचार सासता परसाद कराव जो जी। श्री महाराजा जी माईत छै, धणी छै, श्री परमेसुर जी री जायगा है। म्हे श्री महाराजा जी का खानांजाद बन्दा हां। श्री पातसाहजी श्री महाराजाजी सु मेहरबान है। श्री महाराजाजी सुख पाव जो जी। पान गंगाजल आरोगबा का घणां जतन फरमाव जो जी।

॥ श्री महाराजाजी सलामत। सारा समाचार दरबार का तफसील वार आगै अरजदासत कीया है सु नजर मुबारक गुजरा होसी जी।

॥ श्री महाराजा जी सलामत। हजुर सु वाजबल अरज राय रुघनाथ जी कै व दासजी कै हवालै हुई थी, ती माफक मतालब नवाब अमीरल उमराव जी नै लिख दीया छै। सु श्री परमेसुर जी की कृपा सुं व श्री महाराजा जी का तेज परताप कर कितनाक मतालब सरंजाम हुवा और मतालब बाकी रदबदल दरमीयान छै। जु कुछ चुकसी सु पाछा सूं अरजदासत करसुं जी। ओर समाचार सारा तफसील-वार दीवान भीखारी दासजी की अरजदासत सुं अरज पहोचसीजी।

॥ श्री महाराजाजी सलामत। मी० मागसर बदि ५ सुकरवार आधी रात नै पेसखानों अकबराबाद की तरफ चालो ओर पांचवी जी का दिन कुच मुकरर हुवो छै जी। मी० मगसर बदि ६, समीवार, सवत १७६९।

क्रम संख्या ६६

वकील रिपोर्ट संख्या १६६

मार्गशीर्ष वद (?), संवत १७६६

श्री महाराजाधिराज सलामती

राव घासीराम पेसदसत कुत्री वाका नीगारका की जागीर प्रगना मोजपुर मैं है तिनकै वास्तै आगै अरजरासती पंचोली जगजीवनदास श्री जिकी खिदमती मैं पहुचाई है सो अरज पहुंची होवेगी जी। वन्दा उम्मेदवार है जो प्रगना सरकार मैं इजारै लेणा होय तो मुतसदी को हुकम होयजो तीमाहा का पईसा की सबील करी भेजैजी। अर सरकार मै न राखना होय तो घासीराम का मुतसद्या को अमल कराये देहजी। श्री महाराधिराज सलामती। कांईथ दोय हिंडोणी को कैद मैं आये है तिनके वासतै राव गजस्यंघ राजा सभाचन्द सौ कहै अर कहाई जो वै म्हारे सागे है तुम हमारै भाई छुड़ाई मंगाई द्योह। सो राजा सभाचन्द वंदे को कहा जो हम तुम्हार तांई आगे भी कहा था अबै भी कहेतै है जो वै कांईथ सिताब अैठै आवै सो वन्दा उमेदवार है जो राव गजस्यंघ तिनका दीवान है अर उनसो हमेस सरकार का काम जाय पड़ै है अर वे काइथ इनके सगे हैं सो मुतसदी हजूरी का ने हुकम होय जो वा कायथानै हिंडोणी सो सीताब अठै भिजावावै जी। श्री महाराजाधिराज सलामती। रुपीया १०,००० खरची का दीवाया थां सो तो खरची होय गया अबै उमेदवार हुं जो खरची सीताब इनायत होयजी। श्री महाराजाधिराज सलामती। पेसखानो पातसाही मिती मिगसर वदी ६ सनीसरवार चाल्या सो वांरा पुलड़ा खड़ा हुवा जी। अर खबरी है जो पातसा जी अकबराबाद ने सिताब कूच करै सो ठीक पडैलो, सो पाछा थे अरज लिखूं लो जी। मिती मिगसर वदी, समवत १७६६।

क्रम संख्या १००

वकील रिपोर्ट संख्या १६७

मार्गशीर्ष वदी ७, संवत १७६६

श्रीरामजी

अरजदासती आगे करारे मिती मगसर वदी ५ शुक्रवार प्रभाति की लिखी हजुरी हरसाल करी है तीह सौ सारि हकीकत अरज पहुची होयली जी। श्री महाराजाधिराज सलामती। :मीती: सदा राजा सभाचंदजी नै सवाही बुलाव भेज्या सो भंडारी वा वन्दा उनके डेरे गए तब राजा सभाचंद खिलवती करी मतालिब सरकार के माठे जो तुम क्या क्या मतलिब कहेते हो। तब जो मुतालिव हजूरी सौं लिखी लाया थे तीन कि सब की रदबदल भली भांति करी। तब राजा सोभाचंद कही जो मुसौ बनी आवेगी सो मैं मुताली व सरकार के सब सराजाम दिलायेगा। सो मेरे बड़े भाग्य हैं जो हिन्दुसतान के राजों के मौसों काम होव आवे पण वे वड़े काम हैं बिना वड़ी मोहमसाजी काम पेश न जाहीगे। तब हमों यह जवाव दिया जो जिस बात में नवाब साहब राजामन्द होंगे और म्हे मेरवानगी करी फरमावेंगे। अर हम सूं होय आवेगा सो वह जालावेगे। तब इताही में राजा सोभाचंदजी को नवाब साहब सेलवति करी बुलाय भेजा। तब राजा कही जो तुम हमारे डेरे बैठे रहो, म्हें नबाव की हजुरी जाता हूं जे तुमको याद करेगें तो बुलाई भेजूंगा अर जे डेरा को रूखस्द देगे तो मैं कहाव भेजूंगा, तुम डेरे जावो। तब भंडारी व बन्दा राजा सभाचंद के दीवान खाने में बैठे। राजा सभाचंद नवाब की हजूरी गए। नवाब सूं जाय रदुबदल करी। तब नवाब फुरमाया जो इनको बुलाय लाओ। तब नवाव की हजूरी गए। नवाब बोहत मेहरवानगी करी अर फुरमाया जो हम तुम्हारे सब मुतालिब सरंजाम देंगे—तुम अपनी खातरी हर भांति जमा राखो; तब तसलीमात वजाई लावै अरज करी जो दोनू राजो नवाब साहेब के हुकम सूं हमारे तांही हजूरी भेजेहै इसमें नवाब साहिब खूब जाने सो करे। तब नवाब फुरमाया मैं पातसाहजी सूं अरज करी तुमको जवाब दे दूंगा अर फुरमाया तुम

अपने मतालिब सरेजाम दिलावने हो त्यो कुछ हमारा भी काम करो जिसमे हमारी आवरू हो तव हमा अरज करी जो इह हाथ तो हुकम सव नवाव साहव का है। तव फुरमाया जो दोनों राजा हजूरी आवे तथा साहीजादा जी के तैईनात होव, फुरेकशेर[1] को तवीहक है। तव भंडारी व वन्दे आपस में सलाह करी, अरज करी जो राजों को नावा करी ही करणी है पातसाहजी की हजूरी ने आवेगे तो मुनसव कीस भांति खांहीगे। सू हमारे राजों के तो ये चाकरी ही करी इरादा है पर येक वार जव ताही राजों के हाथ सूं खूव चाकरी न होय आये न वे हजूरी आवणे का क्या फायदा है तिसां हम ही उम्मीदवार है जो राजों को सूबे दीजे और चाकरी करवाईये। तव चाकरी करी मुजरा करी दिखावेंगे तव नवाव फुरमावगे सो ही करेंगे। फेरी नवाव फुरमाया जो मैं दरम्यान हूं तुम अपनी जमा खातरी राखि राजों को हजूरी बुलावो अर जे वे हजूरी नहीं आवेगे तो तुम फौज अच्छी लाया ई अर पातसाह जादे सूं जाय सामिल होय अर फरूकशेर को तवी करो। तव फेरी भंडारी सो सलाह पूछी, अरज करी जो दोनूं राजों को गुजरात उजैन का सूवा दीजे। फेरजो नवाव साहव फुरमावेगे तिस माफिक जाय चाकरी वजालोवेगे जी। तव नवाव फेर फरमाया—जो पातसाहजी आगरे जाते है तुम हजार सवारों की फौज नवाव आसफदोला कनै दिल्ली में राखो अर वड़ी फौज ले तुम दोनों मुतसदी साहीजादे की हजुरी जावो तव अरज करी जो जो नवाव हमारे मंतालीख सारे सरंजाम करी देह अर जो नवाव खिदमती फुरमावेगे सो वजाय आवेंगे तव नवाव पान दे बीदा कीए। अर फरमावजो तुम राजा सभाचंद कै डेरे जावे तुम सो कुछ रदवदल करावणी है। तव राजा सभाचंद को भी विदा की वायते ही अंगूर वाठो मेवालायी तराद कासमीर सो आयो थे सो नवाव की नजर गुजरी तव फुरमायो जा रांजों के मुतसदों को बुलावो फेरि हजूरी भंडारी वा वन्दा गए तव फुरमावेजा हमारे आजी काशमीर सो मेवा आये है सो तुम दोनों राजों को पहुचाई दोह। तव तसलिमात वजाई ले आवे मेवा के पिटारे हमारे हवाले हुवे सो हजूरी ईसाल की कीवे है सो सूकरगुजारी का खत नवाव साहव को सिताव इनायत होयगा जी।

श्री महाराजाधिराज सलामती। डेरे आया राजा सोभाचंद कहा जो नवाव को वा हम को मुहमसाजी क्या क्या देते हो? तव आपस में सलाह करि पहैली

---

1. फर्रुखसियर—बादशाह बहादुरशाह के पुत्र शाहजादा अजिम्मुशान का द्वितीय पुत्र। फर्रुखसियर अपने पिता के नायब के रूप में बंगाल सूबा में कार्यरत था। मार्च 15, 1712 में बहादुरशाह की मृत्यु की सूचना मिलने पर उसे अजिम-उस-शान को पटना में रहते हुए बादशाह घोषित किया। नवम्बर 1712 तक उसने सैयद बन्धुओं का सहयोग प्राप्त कर लिया था।

तो या अरज करी जो हमारे राजो के घर में है सो सब नवाब का है रुपये लाख दोय नवाव के पेशकस करेंगे। तव राजा समाचंद ने कहाओ वो कहै हम दावा दला सु वापरी नवाब सर वोलद खां तीन लाख रुपया दे गया है तुम अैसी बात करो कहैते हो तुम्हारे तो वोहोत मतालीव है सो रदबदल पे रहे कै तांही वोहत हुई। तव फेरी भंडारी रदबदल करी। तब बन्दे भंडारी सो कहा जो रदबदल करो सो समझी कीजो मेरे दोइ लाख रुपीया सो अधिक का देना का हुक्म नही। तव भंडारी बन्दे सूं कहि जो मैं दोन्यूँ राजों सो रदबदल करी आया हूं, तुम इस वात का कुछ मन में इस सवाल ल्योवा मती मै ठहराई हूं सो ही तुम कबूल करो। सो म्हुंमसाजी की फरद अहलादी भेजी है सो तिसौं हकीकती अरज पहुचेली जी। बन्दा उम्मेदवार है जो नवाब का परवाना सिताब ईनायत होय ज्यै। बन्दा जमा खातरी सूं सारा काम सरकार सरजाम दहेजी।

श्री महाराजाधिराज सलामतों। मिती मिगसर बदी ६ वार सनीवार सवाही नवाव साहव का चोवदार आया जो तुम्हारे तांही यादो करते हैं। तब भंडारी व वन्दा राजा सोभाचन्द के डेरे गए। तब राजा सोमाचन्द खिलवति में कहा जो तुम्हारे सव मुतालिव सरेजाम हुवे। तब राजा मजूकर नवाब की हजूरी गए अर भंडारी व वन्दा को हजूरी बुलाया, नवाव साहब फुरमायो जो तुम्हारे मुतालिव सारे मंजूर हुवे। सूबा गुजरात का महाराजा अजीतसिंघ जी को वा उज्जैनी का सूबा श्री जी के ताही मुकर्रर हुवा तुम पातसाहजी सूं सूबा का फुरमान तैयार करवाय सिताव रुखस्त होव; राजों पे जावो अर साहीजादे की तैनाती की फौज ले सिताव आवो अर जीहानाबाद फौज जिहानाबाद भेजो सो मालम होयता है जो वन्दा को सिताब विदा करेंगे। फेरो खरची के वास्ते अडवड़ाहट होवेगा सो उम्मेदवार हूं जो रुपया लाख ड्याढ़ तथा दोई सिताव में रहेमती होयजी जो वन्दा का निकास होयजी। मिती मिगसर वदी ७, अदीतवार व भांति चाली सम्वत् १७६६।

क्रम संख्या १०१

वकील रिपोर्ट संख्या १६८

मार्गशीर्ष वदी ११, संवत १७६६

श्री रामजी

श्री महाराजाधीराज सलामती

अरज दासती करांर मीती माग्रश्र वदी १० बुधवार कि लिखी हजुरी ईरसाल करी है। तीसी सारी हकीकती अरज पहुंची होय ली जी। श्री महाराजाधिराज सलामती। प्रगना वहात्र[1] कै वासतै नवाव सौं अरज करी तव नवाव फुरमाया जो किरोड़ी दामों में तनखा है। तव वंदे अरज करी जो अस्सी लाख दामों में तनखाह है। तव नवाव नै फुरमांयां जो तुम ईन वातों परी क्यों अटको हो तुमको तखफीफ सव ही माफ है, हम असी लाख दामों में ही लीखि देहगे, सो असीलाख दामों मैं लीखाया है जी।

श्री महाराजाधिराज सलामती। भंडारी व वंदे दवाव खरच कै वासतै अरज नवाव सौं करी, सो हुकम हुवो जो येक वरस माफ करो सो फरद परी दसफत होय आयो है जी।

श्री महाराजाधिराज सलामती। श्री जी को मनसव आठ हजारी सात हजार सुवार का ठाहरया[2]। तव वंदे भंडारी सौं कही जो आठ हजारी आठ हजार सुवार सौं मनसव कमी करावण मुनासिव नही। तव भंडारी कही जो थे ई वात परी अवो वोलो मती। तव वंदा बोल्या होय वैठी रह्या जी। सो जै हजुरी सौं भंडारी व वंदा व जगजीवन दास कै नाव प्रवानां सादर होय तो आगैपाछै भी हजारां सुवारो का ईजाफा होय जी। अर महाराजा अजीतसिंघजी व श्री जी का खत नवाव नै वा राजा सभाचन्द नै आवे तो अलवतै सुवारो का ईजाफा

1. वहातरी परगना।
2. 8000/7000 मंसब।

होयगा जी । सो खात्र मुबारक मै पसंद आवै तो खत दोन्यौ व प्रवाना भंडारी व बंदा को नाव सादर होय जी, अर भंडारी का प्रवाना बंदे कि थैली मैं आवैजी ।

श्री महाराजाधिराज सलामती । मीती माग्रश्न वदी १० बुधवार नवाब भंडारी व बंदा को बुलाई फुरमाई जो तुम वदी ११ बीसपतिवार पातसाह सौ विदा हौं अर सुकरवार नै कुच करो, अर तुम्हारे कामों मै जो वाकी रहैगे सो उकिल करावैगे । तब बंदो अरज क री जो माफीक हुकम जो नवाब फुरमावैगे सो करैगे ईस वासतै जो राह मै भी खत व प्रवाना पहुचैला तो जगजीवन दास पासी बंदा पहुंचाय देहला जी ।

श्री महाराजाधिराज सलामती । भंडारी बंदे सो कहां जो तुम मेरी चाकरी कि हकिकती श्री महाराजा जी नै लीखी दयोह सो अरज दासती करार मिती माग्रश्न वदी १० कि लिखी भंडारी को सोपी है सो हजुरी पहुचे ली जी । बंदा उम्मेदवार है जो प्रवानां दीलासा का भंडारी को ईनायत होय जी ।

श्री महाराजाधिराज सलामती । अव ताई डोल[1] जागीर का की हकीकती मालुम नही हुई कुण मंजुर हुवा कुण नामंजुर हुवा, पातसाह जी कीयां सो जगजीवन दास को ईस काम परी मुकियद किहौजी जो सीताव तौजी[2] की नकल ले आवै सो सीताब ही तपसीलवार हकिकती अरज पहुंचाउलो जी ।

श्री महाराजाधीराज सलामती—हीड़ोणी व खोहरी, मालपुरा वागी० प्रगना की बंदे आगे अरज पहुंचाई है सो अरज पहुंची होयली जी । उम्मेदवार हुं जो जवाब सीताब ईनाईत होयजी ।

श्री महाराजाधिराज सलामती । जो सनदी हुई है सो सगली राजा सभाचंद अटकी है, सो हुंडी रुपया लाख दोय कि आवैली तो सनदी हाथी आवैली जी न ही त्र सनदी कोई हाथी आवै नही जी । आजी ईहा सब अखतीयार राजा सभाचंद का है जी अर भंडारी वा बंदा को विदा करैगे तो रहैणा मालुम है जी, गुरजवरदार सुकरवार को कूच करावैगे जी सो भंडारी भी अरज लिखी होयली जी । बंदा उम्मेदवार है जो जवाब सीताव ईनाईत होयजी जी माफीक बंदा अमल करै जी ।

श्री महाराजाधिराज सलामती । भंडारी बंदे सों कहाय भेज्या जो थे अरजदासती सीताब हजुरी नै करो जो जीह भाती म्हांका रुपया आवै तीही भांति थाका भी रुपये आवै । तव बंदे जवाब दीया जो मै तो आगै ही अरज दासती करी है जो

---

1. डोल—मूल्यांकन, क्षेत्र विशेष के राजस्व के मूल्यांकन से सम्बन्धित परिपत्र ।
2. तौजी=दीवान कार्यालय में सुरक्षित वह रजिस्टर अथवा परिपत्र जिसमें राजस्व ईकाइयों का जमा, राजस्व देने वाले का नाम, भुगतान की माँग तथा बकाया दर्ज होता था ।

रुपये भेजणे की ढील न हो। तदी भंडारी कही जो म्हाकै जोधपुर सीं रूपया दिन छ में आवैला अर थे लिखो जो तीसरै दिन आवै सो साड्या म्हाको अर थाकै सीताव ऊटा परी रुपया लै आवै, सो अरज पहुंचे जी। मीती माग्रश्र वदी ११, वीसपतीवार प्रभाती चलाई, सवत् १७६६।

क्रम संख्या १०२

वकील रिपोर्ट संख्या १६३

मार्गशीर्ष सुदी १, संवत १७६६

श्रीरामजी

श्री महाराजाधीराज सलामती

भंडारी नै अवकै चालती वार नवाव अमीरल उमरावजी वा राजा सोभाचन्द जी वा सारा ही मुतसदयौ सौ अैसा रस राख्या जो सव मुतसदी वहोत रजाबन्द रहे। नवाव साहीव नै चालती वार भंडारी व बन्दे को फुरमाया जो तुम दोन्यों मुनसदी फोज ले सीताव अकवरावाद सीताव आवों फोज ले अकवरावाद आवोगे तब तुम्हारा सारा मुतालीब तुम्हारे कहे माफीक सरंजाम देहगे। तव भंडारी अरज करी, जो मुझै श्री महाराजा जी सीख देहगे तो मै नवाब साहीब की हजुरी फोज ले सीताव आउगा जी, नही मे मैरा भाई भतीजा नवाब साहीब की रकाव मै अैसा भेजुगा तीसौ नवाब वहोत रजाबंद होयगे अर भीखारीदास के चाकरी के दीन नही, दीनो बड़ा हुआ है अब कै महाराजा जी नवाब साहीब की हजुरी जोरावरी भेजे थे ईनका भी भाई भतीजा ईनसौ ज्यादा ल्याउगा जी। तव नवाब साहीब फुरमाया जो हम तुम दोन्यो सो वहोत रजाबंद है जेते तुम सीताब आवोगे जेता ही हम भला मानैगे। तब नवाब पान दे बींदा कीयां, तव सवार हुये राजा सभाचन्द कै डेरै आये तब सरै दरबारी उठी खड़ा रह्या अर गदी परी ले बैठां अर बहोत महानंरी करि। कही, जो मेरे बड़े भाग है जो दोन्यो हिन्दुस्तान का राजा की सरकार का काम मुसौ वणी आये अर भांती भांती कि बडाई डी की, मनहारी करी, सो लीखबा मै न आवै जी, सो बन्दा तपसीलवार अरज पहुचावैला जी।

श्री महाराजाधीराज सलामती। भंडारी का सलुक सौ बन्दा बहोत रजाबन्द रह्या जो अब कै इन्होंने बहोत भला सुलक राख्या। नवाब साहीब के सारे मुतसदी अेसे रजाबन्द राखे जो जीह काम वैई जाय कहे सो करी दीये जी। अर

खत दोन्यो महाराजा नै राजा सभाचन्द लीखी वन्दो को सोपे है अर रुखसद होय डेरे आयै तब घोड़ा २ महाराजा अजीतस्यंघ जी वा श्री......जी की नजरी नै भेजे जी। अर वहोत ईकलास जीताया जी अर घड़ी घड़ी मै याही कहैवा कहाय भेजे जो मेरे बड़े भाग है जो मै राजों की चाकरी मै पहुची आउ हु अर तुम अव हजुरी को जाते हो अवै दोन्यो राजों का उकील मै हुं। अव जगजीवनदास व गुलाल चन्द जो काम वई मुसौं कहेगै सो मे सरजाम धोहगानु म ईहाकी त्रफ हर भाती खात्री जमा राखीयो। फेरी राजा सभाचन्द कही जो नीत्यानन्द तुम्हारा वसे है सो तुम इनको कोई दीन फोज आवता ताई राखी जावो। जो कुच मुझे लीखावण पढावणा होयगा सो ई पासी तुमको लीखाउगा। तुम उसका जवाव लीख्या कीज्यो। तव वन्दे कही जो मै अव ताई इनको सलाहदा कीया नही है सो अवार तो रुखसद करै पाछै आवैरी सो श्री जी भेजेगै तो फैरी आवैगे। तव फेरि कही जो तुम मेरा कहा माफीक करो—सो माफीक कहै राजा सभाचन्द कैवीजी नीत्यानन्द को राखी आया हू जी।

श्री महाराजाधीराज सलामती। रुपया १४०० खरच करी गुलाल चन्द हाथी महाराजा अजीतस्यंघ को ले आया सो हाथी कै ठोर ठोर जेहैरे फुटी नकस्यो है। तव पचोली जगजीवनदास वंदे सो कही जो हाथी तीन ओर काढ़े है सो हाथी दोय तो नीपट छोटे है अर हाथी येक अवली सो अवली है। तीस के खरच के रुपया २५०० लागे है। तव वन्दे उस ही घड़ी पचोली जगजीवनदास व गजस्यंघ खगारोत व रावत स्योस्यंघ व डुगरसी वोदली ने साथी दे रान्यो, राती पचोली जगजीवनदास ने चालायो जो तुम हाथी रात्यो राती ले आवो हमारा ईस ही काम के वासतै मुकाम है। अर ग्यारासै रुपीया लाग्या, हाथी आछ्या आवे तो क्या मुजाईका है रुपीया ओरठे लागै छै सो वाकी पवे जतो सरकार मै आछा माल आवे है।

श्री महाराजाधिराज सलामती। रुको वजनस्यंघ पचोली जगजीवनदास को वन्दे के नाव आया था सो हजुरी भेज्या है तिसो अरज पहुचैली जी।

श्री महाराजाधिराज सलामती। वन्दा कनै तो खरची मामुर[1] हुई थी सो वन्दो आगे अरज पहुंचाई थी जी जरूरी जाणी भंडारी की मारफती साहूकारा का रुपीया २५०० करज ले जगजीवनदास पासी हाथी का खरच ले भैज्या है। जी भरवा करार किया है, जी खरची सरकार की जोसी स्येभुराम हाथी आवै है तिसमै पहलो कढि देहगे जी। सो मिती मिगसर सुदी २ वुधवार ने डेरा नुरमपुर होवेगे जी अर तीज वीसपतिवार ने डेरा रेवाडी होवेगे जी।

श्री महाराजा सलामती। चालती वैर मथुरा की फौजदारी के वास्ते राजा

---

1 खरची मामूर—खर्च के लिए सौंपा हुआ धन।

सभाचंद से रदबदल करी। तब राजा सभाचंद कही जो तुम आगरे फौज ले सिताब आवै मै मथुरा जी की फौजदारी महाराजकुमार कानी कै नाम कराई दोहगा। उम्मीदवार हूं जी भंडारी रुघनाथ के नाम व पंचोली जगजीवनदास के नाम परवाना सिताब करे है। मती होय जी, पंचोली जगजीवनदास भला चाकर है सो हमेशा चाकरी में है सरगम रहै है जी सो हजुरी पहुचा सारी अरज पहुंचाई जो जी। मिती मिगसर सुद १ संवत १७६६ सरे असवारी अरजदासती हजुरी चलाई छै जी, जै कोई गौर जावे से लिख्ये होय तो कर सी माहीं।

क्रम संख्या १०३

वकील रिपोर्ट संख्या १६६

मार्गशीर्ष सुदी २, सं० १७६६

श्रीरामजी

श्री महाराजाधिराज सलामती

महाराजा अजीतस्यंघ जी का लसकर सौ वाजे जायगा। कागद आये तिनमैं लिखा था आप जो किसु के लिखे सो श्री जी सो अरज पहुची जो भंडारी नवाव की हजूरी कही जो राजा जयस्यंघ जी महाराजा अजीतस्यंघ जी के साथी जो इदरस्यंघजी व राजस्यंघजी है तिस भांति ये भी है। सो ईस वात सौ खांतरी मुवारक मैं गीरा आई। अर महाराजा अजीतस्यंघजी सौ कहाय भेजी जो महाराजा का मुतसदी इस भांत दरवारो मैं जाहरी करै सो मुनासव नहीं। तौ परी महाराजा अजीतस्यंघ जी भंडारी सो वहुत दुःख पायो।

श्री महाराजाधिराज सलामती। वन्दा तो ऐसा चाकर नही जो भंडारी इस भाती नवाव को हजूरी अरज करै अर वन्दा चुपका होय वै ठीन है, ज्या वात कहेगे मै आई होय तो मुने श्री महाराजा जी का कदमां की सौगन्द है जी इस वात का तो कही मजकूर ही नही जीठै रदवदल हुई जीठै दोनों महाराजा जी की हुई जी जीनै यह अरज लिखी है, सो वड़ा हरामखोर सरकार का है ऐसा मुतसद्यौ को वेमुनासव वदनाम करै तो या वात वहोत हरामखोरी है जी। भंडारी वहोत भला मुतसदी है जी।

श्री महाराजाधिराज सलामती। वन्दा अर भंडारी ऐता[1] दिन सामील रहेवा नवाव की हजूरी व राजा सभाचन्द कै डेरै रहे सो या वात ईनकी जीभ सौ कदै सुणी नही जी। वन्दा उमेदवार है जो इनकी तसलै का प्रवानां महाराजा

1. इतने।

अजीतस्यंघजी व श्री जी का सीताब क रहैमती होय जी, अर खात्री मुबारक मैय सनद आवै तो बन्दा की अरजदासती माहाराजा अजीतस्यंघजी की नजरी गुजरा नै जी जीन इस भांती अरज लीखी है तीनै खीलाई सनदा लीखी है जी। मीती मगसर सुदी २, संवत १७६६ ।

क्रम संख्या १०४

वकील रिपोर्ट संख्या १७०

पोष वदी ८, संवत १७६६

श्री गोपालजी सहाय छै जी

श्री महाराजाधिराज महाराजा जी
श्री मीरजा राजा जैसिंघजी

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा जो श्री चरण कमलानु खानांजाद खाक पाय पंचोली जगजीवनदास लिखतं तसलीम वन्दगी अवधार जो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी का तेज प्रताप कर भला छै। श्री महाराजा जी का सीख समाचार सासता परसाद करावं जो जी। श्री महाराजा जी माईत है, धणी है, श्री परमेसुरजी की जायगा है, म्हे श्री महाराजा जी का खानाजाद बन्दा हां, श्री पातसाह जी श्री महाराजा जी सूं महरवान हैं, श्री महाराजा जी सुख पाव जो जी, पान गंगाजल आरोगवा का घणा जतन फरमाव जो जी।

श्री महाराजा जी सलामत। सारा समाचार दरबार का आगै अरजदासत कीया छै सु नजर मुवारक गुजरा होसी जी।

श्री महाराजा जी सलामत। रुपया चालीस हजार की हुंडी मोहमसाजी की ईनायत हुई सु पहोची। साहुकार सहर मैं रहया था सु खानांजाद व दुलीचन्द हुंडीया सकरावा[1] वासतै दोय दिन सहर मैं रह्या अर परवानो खानांजाद नवाजी को हिंदवी जमयत हजुर भेजवानै तयार हुई, तीको ईनायत हुवो सु दजनस राजा पास भेज दीयो। राजा नवाव नै दिखायो वैही दीन गुलालचन्द लसकर नै चलो थो सु जोसी सिभुराम नै गुलालचन्द की साथ भेजो सु गुलालचन्द व जोसी राजा पास गया था, सु राजा कह्यो जु तुमारै पास हजुर सूं

1. भुनाने।

रुपया आया सु लावो जमयत सीताब बुलावो, अर नवाब पास ले गयो, नवाब जमयत भीजवाबा की ताकीद वासतै फुरमाई तीकी हकीकति जोसी आगै श्री महाराजा जी हजुर अरजदासत करी है सू नजर मुबारक गुजरी होसी जी। मी० पोस बदि ६ मंगलवार खानाजाद हुंडीया सकराय लसकर मैं आयो अर राजा सूं मिलो, राजा कही जु जमयत चलो का परवानां श्री महाराजा जी हजुर सुं ओर भी आया है तो पातसाह हैं ईन के तो जमयत बहोत जमां होयगी, पण जमयत न आई तो नवाब कुं लोग पातसाह जी हजुर नाव धरैगे, तुम सुं नवाब ने खुब करी है तीस सू तुम श्री महाराजा जी हजुर कुं अरजदासत करो जु जमयत सीताब भेजैं, यह वकत काम का है इस वकत जमयत आवै तो बड़ा मुजरा है। अर श्री पातसाह जी हजुर नवाब का बोलबाला होय है। तब खानांजाद कही जू नवाब नै सब मतलब कबुल कीये जोसी कूं कोल दीया, तब हम नै श्री महाराजा जी कुं अरजदासत करी जु मतालब सब मनजुर कीया, जी घडी जमयत चला की खबर आवै वैही घड़ी सनदं लां तीस उपर जमयत रुखसत करी सु परवानां बजनस भेज दिया था, अब सनंद दीजे जु जमयत खुस वकत होय हम जला कर आवै। तब राजा कही—तुम कुं तो नवाब कोल दे चुके मतलब कबुल कीये पण कही जमयत भी है, जीस घड़ी जमयत आवै उस घडी सब सनदै लो। भांत भांति का कोल करै है अर कादरीयां ने लिख भेजी, जु लाख रुपया वकील पास पहोच्या थे लीजो। सु रुपया की ताकीद हदसुजादा है।

सु श्री महाराजा जी सलामत—मतालब तो सब कबुल कीया अर गरजमन्द है जो कहस्या सु करसी, पण जमयत सीतावी आवै तो यांसु सांचा उतरां, जद जमयत चल चुकसी अर दोय तीन मजल आयां की खबर आसी तद सब सनदां कराय लेस्या, अर गरजमन्द थका कर देसी ती सु जमयत सीताव भिजवाय जो जी, ढील न होय जी।

श्री महाराजा जी सलामत। महाराजा जी श्री अजीत सिघ जी का रुपया की नीसां दाम दाम की होय चुकी अर म्हे अब तक टाला टोली कर आधो काढो, पण ज्यां की नजर रुपयां पर छै त्यांनै पातसाही काम की तथा आपणा काम की पीड़[1] नही, तीसु हजुर सु हुकम आयो थो जु गुलालचन्द का ईतफाक सू दोनुं सरकारां का काम सरंजाम कीजो सु गुलालचन्द की सलाह माफक करु लो, अर पाछा सु अरजदासत करु लो जी।

। श्री महाराजा जी सलामत। हुकम आयो थो जु विजैसिघ जी को मनसव फराजो अर म्हा का तईनात करा जो।

सु श्री महाराजा जी सलामत। खानांजाद पास श्री महाराजा जी की मोहर

---

1. चिन्ता।

खास की थैलीयां न छै तीसु मोहर खास की थैलीयां ईनायत होय जुई मुकदमा को खत लिख गुजरा नु जीया हजुर सू ही ई मुकदमा को खत ईनायत होय जी।

। श्री महाराजा जी सलामत। नुसरतयार खां कै नाव अदम मुजाहमत को परवानो भेजो छै सु नजर मुवारक गुजरसी जी और समाचार जोसी सिभुराम की अरजदासत सुं अरज पहोचसी जी। मी० पौस वदि ८, बुधवार, सवत १७६६।

क्रम संख्या १०५

वकील रिपोर्ट संख्या १७१

पोष वदी ११, सं० १७६६

श्री गौपालजी सहाय छै जी

श्री महाराजाधिराज महाराजा जी
श्री मीरजा राजा जैसिघ जी

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा जी श्री चरण कमलानु खानांजाद खाक पाय पंचोली जगजीवनदास लिखतं तसलीम बन्दगी अवधार जो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी का तेज प्रताप कर भला छै। श्री महाराजा जी का सीख समाचार सासता परसाद कराव जो जी। श्री महाराजा जी माईत है, धणी है, श्री परमेसुर जी की जायगा है, म्हे श्री महाराजा जी का खानांजाद बन्दा हां। श्री पातसाहजी श्री महाराजा जी सू महरबान है। श्री महाराजा जी सुख पाव जो जी, पांन गंगाजल अरोगबा का घणा जतन फुरमाव जो जी।

। श्री महाराजा जी सलामत। सारा समाचार दरबार का आगै अरजदासत कीया छै सु नजर मुबारक गुजर्‌या होसी जी।

। श्री महाराजा जी सलामत—खानांजाद मी० पोस बदि ९ राजा सभाचन्द पास गयो। राजा कही, जु जमयत कहां? तब खानांजाद कही जु जमय(त) रुखसत हुई दिन पांच सात मै हजुर आसी। फेर खानांजाद व गुलालचन्द व जोसी सिभुराम नवाब अमीरल उमरावजी पास गया। नवाब सलाम करता ही फरमाई जु तुम नै श्री महाराजा जी का परवानां हिन्दवी जमयत तयार करणे का तुम कुं आंया था सु तुम तो नै दिखाया पण तुम श्री महाराजा जी कुं अरजदासत करो जु जमयत रुखसत करी होय तो वहतर, नहीं तो अव सीताव रुखसत करैं, ईस वकत मै ज्मयत आय पहोचै तो वडा मुजरा है, श्री पातसाह जी हजुर हमारा बोल वाला होय।

सु श्री महाराजा जी सलामत । यांकै भी जमयत चला का समाचार साहवेग लिख्या पण यांकै जमयत की ईनतजारी घणी छै । जमयत आयां खातर जमां होसी । सु नवाव व राजा सीवाय जमयत मंगावा कै और वात न करै छै । मथुरा जी पहोचता तक जमयत आय पहोचै तो यांकी भांत भांत खातर जमां होय जी । तीसूं उमेदवार छूं जू जमयत चली त्यानै घणी ताकीद सूं हुकम जाय जुं सीताव हजुर आय पहोचै । जमयत आयां पाछै यांकी हर भांत खातर जमां होसी जी । याकै तो लगन जमयत की लग रही छै तीसुं सीताव जमयत आवै जी ।

। श्री महाराजा जी सलामत । महाराजा श्री अजीतसिंघ जी का मोहम-माजी का रुपया राज[1] का व ओर मुतसदीयां का दाम पहोच चुका अर सरकार को कही नै दाम ऐक न पहोच्यो अर हुकम ई भात सादर हुवो जु सरकार का मतालव सरंजाम हु वा रुपया दीजो । सु सरकार का मतालव को तो राजा नवाव पास सु कोल दीवायो अर अवैं रुपया मांगै अर नवाव जमयत आयां दसखत करसी सो अव तक तो सहुलीयत सुं आधो काढो छै जी । मी० पोस वदि १० वीसपतवार नै राजा कै डेरै गया । सु राजा आपके घर खीलवत मैं ले जाय कही जु नवाव पास सुं तुमारी नीसां तो सव कराई, जमयत आवै तव सनदें लो, अर महाराजा अजीतसिंघ जी का जु देणा कीया था सु तो हम कुं पहोच्या अर तुम वातों ही मे आधा काढते हो सु नवाव का व हमारा तुम कुं अँतवार होय तो हमारे रुपयों की निसां करो अर हमसूं कावू देखते हो तो हम सुं कुछ कहो मत, हम तुम सूं कुछ मांगते न है जिसमैं अपणो फायदा जाणो सु करो । सु पातसाही को तो काम तमाम ईसु अर यो मतलवी सु दरवार की तो या सुरत छै । रुपया पहली लीयां विना राजा वात सुणै नहीं तीसुं उमेदवार छू जु सीताव हुकम आवै जुं रुपया दे राजा की रजामंदी हासल करां अर नवाव जू कोल दीया छै त्या कै वासतै वजद होवां जी, जो जुवाव आवा मै ढील हुई तो अव तक तो आधो काढो छै पण ढील हुवां म जोरहतो दीसै नही जी अर ईसी मालूम होय छै जु ईतना रुपया सीवाय भी भंडारीजी रजामंदी करी छै अर महाराजा जी का खत तो आवै ही छै पण आप ही खत लिख जुवाव मंगावै छै । सु अठै तो सारी वात दीयां की छै अर सरकार की तरफ सुं कुछ पोहचो नही सु यांसुं की भांत दवाय कर कहजे जी ।

। श्री महाराजा जी सलामत । खानांजाद नै तो हुकम आयो जु वाकी मतालव रह्या हैं सु सरंजाम दे तव सनदां ले रुपया दीजो । सु खानांजाद तो चाहै जु वाकी मतालव सरंजाम हुवा सनद कराय पहली सनदां लू पछै रुपया दुं ।

1. राजा सभाचंद ।

अर राजा चाहै जु महाराजा श्री अजीतसिंघ जी का रुपया पहोच्या, अर यांकै टका आया सु यां दाब राखा सु रुपया पहली लूं, जमयत आया काम कर देस्या सुं ई झगड़ा मै खानांजाद ससद रहै जो श्री महाराजा जी की खातर मुबारक मै आवै जु लाख रुपया राजा नै पहली ही दीजे रस[1] राखजे, आपणो कर लीजे जमयत भेजी ही छै मतालब छै कोल माफक कर देसी तो सीताब हुकम आवै जु रुपया दा रस राखां अर राजा तो बिना टका आखा तोता कीसी फेर गयो[2], जमयत को मतलब नवाब कै छै ईकै तो टका की लग रही छै। सु श्री महाराजा जी सलामत। अबार तो नवाब नै घणा ही टका देणा छै राजा नै तो दे चुकजे अर सब मतलब कीया नवाब नै देस्या जी।

। श्री महाराजा जी सलामत। हुकम आयो जु जु काम करो सु गुलाल चंद का ईतफाक सुं कीजो सु ओर ईतफाक ऐक ही छै पण दरबार मै यां टका दीया सु हमगीरी जादा अर म्हे आधो ही कांढां छां सु दरबार की बात तो टकां की छै ओर ईतफाक ऐक ही छै जी। मी० पोस बदी ११, सबत १७६९।

श्री रामजी

श्री जी सलामत। अरजदासत खाम चुका था ईतरा मै जोडी श्री महाराजा अजीतसिघजी की आई तीमै लिखो छै जु जमयत रुकसत करी तीमै सवा सै ठाकुर तो ईसा रुखसत किया छै तांकी महाराजा आय ताजीम करे सु यांकी जमयत की तो खबर आई चुकी छै, अर श्री जी भी जमयत रुखसत करी ही होसी जी, कदाच ढील करी छै तो अब श्री जी सीताब जमयत रुखसत कीजो जी, ईसो न होय जु यांकी जमयत सीताब आण पोहचे पेहली ही आपको मनसब लीयो पहीसा पहली भरा अर जमयत भी आण पोहचे तो भला नहीं तीसु जमयत सीताब भेज जो जी। अर वीजैसिघजी का मनसब कै वासतै लीखो थो सु थैली मोहर की खानांजाद कनै नहीं तीसु नवाब नै खत जी भांत खातर मुबारक मै आवै ती भांति हजूर सु ही लीख भेजी जे, अर थैली चार-पांच और भेज जे जरूरीयात होसी तो खानांजाद मतलब लीख गुजरान सी जी।

---

1. रस—प्रेम भाव।
2. तोते की तरह आंखें फेर गया।

क्रम संख्या १०६

वकील रिपोर्ट संख्या १७२

'पोष सुदी ११, संवत १७६६

श्री गोपालजी सहाय छै जी

श्री महाराजाधिराज महाराजा जी
श्री मीरजा राजा जैसिघजी

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा जी श्री चरण कमलांनु खानांजाद खाक पाय पंचोली जगजीवनदास लिखतं तसलीम वंदगी अवधार जो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी का तेज परताप कर भला छै श्री महाराजा जी का सीख समाचार सासता परसाद राख जो जी। श्री महाराजा जी माईत है, धणी है, श्री परमेसुर जी की जायगा है, म्हे श्री महाराजा जी का खानाजाद वंदा हां, श्री पातसाहजी श्री महाराजा जी सुं महरबान है, श्री महाराजा जी सुख पाव जो जी पान व गंगाजल आरोगवा का घणा जतन फरमाव जो जी।

। श्री महाराजा जी सलामत। सारा समाचार दरबार का आगैं अरजदासत कीया छै सु नजर मुबारक गुजरा होसी जी।

। श्री महाराजा जी सलामत। मी० पोस सुदि ११ परवांना खानाजाद नवाजी का ईनायत हुवा तमाम सरफराजी व खानांजाद नवाजी हुई जी। तसलीमात बजाय लाय सिर चढाय लीयो जी। मजमुन सुं भली भांत वाकफ हुवो जी। हुकम आयो जू सरकार का मतालब राजा सुं वजद होय सरंजाम कराय लीजो।

सु श्री महाराजा जी सलामत। नवाब तो यो कोल दीयो छै जू जमयत आया मतालबा की सनदां देस्या सु जमयत तो अब तक न आई वर यांकै तो जमयत मंगावा सीवाय कुछ बात नही तीसुं राजा सभाचंद नै नवाब कही तीका व खानां-जाद सु व राजा सुं रदवदल हुई तीका समाचार तो आगैं दीवान नैनसुखजी का

खत मे लिख्या छा सु अरज पहोच्या होसी जी सुं ती वार तो खानांजाद यां नै कह्यो जु जमयत कै साम्हा आदमी मेल सीताब बुलाय हजुर ले आवां छां जै आबा की ढील होयली तो ही जु खातर मै आवै सु कीजी । सुं वैं वार तो जु वणी जु नकस[1] आगरे आया अर नजर ईसी आई वैही बिरयां सागं निकसै ।

सु श्री महाराजा जी सलामत । अठा की हकीकत तो पै दर पै अरजदासत करी छै सु अरज पहोची होसी जी । अर अब हुकम सादर हुवो जु उठै ही जमयत राख लीजो, सुं ईतना दीन तो जमयत की उमेद पर आधो काढो अब माफक हुकम कै तलास कीजै छै सु सवार मेला होसी तो भला ही छै पण श्री महाराजाजी नै थोडी बात कै वासतै यां सु रस राखणो मसलहत थो पछै जो बिचारी होसी सु भली ही बिचारी होसी जी । चाकर को काम अरज लिखबा को, अखतीयार खांवद को छै। ओजुं भी कुछ न गयो छै जो ताकीद फरमाय जमयत सीताब भिजवावजे तो भली छै ।

श्री जी महाराजा जी सलामत । चुडामण जाट खानजहां बहादर की तरफ थो सु सात हजार सुवार सु महलो दीयो, तीन लाख रुपया खरच का ईनै दीया, अर खानजहां बहादर को मुजरो हुवो अर आपणी जमयत न आय पहोची तीसु नवाब को बोल खाम आयो जी ।

। श्री महाराजा जी सलामत । गुलालचंद नै परवानो व दीवान नैनसुख जी को खत आयो थो सु दियो, अर खानांजाद नै परवानो सादर हुवो सु दिखायो तीपर गुलालचंद कही जु मनै महाराजा जी को कुछ हुकम आयो नही सु जमयत राख जो अर महलो दी जो अर थांनै तो श्री महाराजा जी को हुकम आयौ छै सु माफक हुकम कै जमयत राखो थे जमयत राख सो तो भली बात छै। दोनु साहबां की तरफ सुं सधसी सु मुकंदराम बाकावत नै व अनोपसिघ नै दीवान नैनसुख जी का खत जमयत भिजवाबा कै वासतै आया था सु भेजा अर हिंदुसिघ जी नै दीवान नैनसुखं जी की तरफ सुं ईही मुकदमा मै खत लिख भेजो, अर खानांजाद आपकी तरफ सुं भी लिख भेज्या जु सीताब जमयत भेजै अर माफक हुकम कै अठै भी नीगाहदासत करै छै सु जमयत जमा होसी तब ले जाय महलो दे मतालब सरंजाम कराय ले सुंजी ।

। श्री महाराजा जी सलामत । दुसरो परवानो सादर हुवो तीमै हुकम आयौ जु खीलवत में पछै सु माफक हुकम कै पढ़ खाम कर राखो छै जी ।

। श्री महाराजा जी सलामत । जमना जी पार का साहदरा मै फरखसेर[1] का लोग आय बैठा जी ।

मी० पोस सुदी ११, संवत १७६९ ।

---

1. निकल ।
2. फर्रुखसियर ।

क्रम संख्या १०७

वकील रिपोर्ट संख्या १७३

पोप सुदी १५, संवत १७६९

श्री गोपालजी सहाय छै जी

श्री महाराजाधिराज महाराजा जी
श्री मीरजा राजा जैसिंघ जी

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा जी श्री चरण कमलानु खांनांजाद खाक पाय पंचोली जग जीवनदास लिखतं तसलीम वंदगी अवधार जो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी का तेज परताप कर भला छै श्री महाराजा जी का सीख समाचार सासता परसाद कराव जो जी। श्री महाराजा जी माईत है, धणी है, श्री परमेसुर जी की जायगा है, म्हे श्री महाराजा जी का खानांजाद वंदा हां। श्री पातसाह जी श्री महाराजा जी सू महरवान है। श्री महाराजा जी सुख पाव जो जी पान गंगाजल आरोगवा का घणा जतन फरमाव जो जी।

। श्री महाराजा जी सलामत। मी० पोस सुदी १५ अरजदासत हजूर भेजी है सु नजर मुवारक गुजरी होसी जी।

। श्री महाराजा जी सलामत। पोस सुदी १५ तीसरा पहर पछै मेह खूल गयो[1]। धूप नीकसी तव फरुखसेर जी सुवार हुवा तद हरकारै मौजदीन[2] नै खवर दी जु फरुखसेर जी सुवार हुवा तद मोजदीन भी सुवार हुवो। दोनु तरफ सु मुकावलो हुवो अर तोवखानां की लड़ाई हुवा लागी ईतरा मै फरुखसेरजी की फोजां दसतरास दसतचप[3] सु कोता हथयारां फोज मै पैठ गया, अर मोजदीन की फोज

1. वरसात के बादल हट गये।
2. बादशाह जहांदारशाह की पराजय (दिसम्बर 31, 1712) के पश्चात लिखे गये पत्रों में जहांदारशाह को मुईज्जुद्दीन के नाम से सम्बोधित किया गया है।
3. दसतरास दसतचप (दस्त-ए-रास्त दस्त-ए-चप)—दायें एवं बायें हाथ की ओर।

भागी, मोजदीन न मार लीयो अर ऐजुदी[1] नै पकड़ लीयो। लाल कुंवर की व अमीरल उमराव की व खानजहां वहादर की खवर छै जु मारा गया, अर कोई कहै छै जु पकड़ लीया। अर फरुखसेरजी की फतै हुई सु मुबारकवादी की अरजदासत व नजर सीताव भेज जे जी ओर समाचार पाछा सु अरजदासत कर सू जी। मी० पोस सुदी ऽऽ सवत् १७६९।

। श्री महाराजा जी सलामत। महाराजा श्री अजीतसिघ जी की तरफ सूं तो वां लाख रुपया भर दीया अर खानांजाद सरकार का लाख रुपया न भरा अर सरकार की कीफायत की, सु मालूम होयजी।

श्री रामजी

। श्री महाराजा जी सलामत। फरुखसेरजी की फते हुई अर सांझा की वीरया छै सु या खवर नही जु मोजदीन भागो या कठै ही छीप रह्यो या मारो गयो सु सवार[2] तहकीक होसी सु अरजदासत कर सू जी।

1. शाहजादा अजुद्दीन।
2. सुबह।

क्रम संख्या १०८

वकील रिपोर्ट संख्या १७४

माघ वदी २, संवत १७६९

श्री गोपाल जी सहाय छै जी

श्री महाराजधिराज महाराजा जी श्री मीरजा राजा
जै सिंघजी

सिधि श्री महाराजाधिराज महाराजा जी श्री चरण कमलानु खानांजाद खाक पाय पंचोली जगजीवनदास लिखतं तसलीम वंदगी अवधारजो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी का तेज परताप कर भला छै श्री महाराजा जी का सीख समाचार सासता परसाद करावं जो जी। श्री महाराजा जी माईत है, धणी है, श्री परमेसुर की जायगा है, म्हे श्री महाराजा जी का खानाजाद बन्दा हां, श्री पातसाह जी श्री महाराजा जी सुं महरवान है श्री महाराजा जी सुख पावं जो जी पान गंगाजल आरोगवा का घणा जतन फरमावं जो जी।

। श्री महाराजा जी सलामत। माह वद २ रववार साझने अरजदासत चलाई सु नजर मुवारक गुजरी होसी जी। अर जुल्फकारखां का कैद कीया का समाचार मालुम हुवा होसी।

। श्री जी सलामत—माह वद २ पहर रात गया जुल्फकार खां नै तोड़ मारो[1] अर नगार खाना के आगे धड़ जुदो पड़ो है सीर जुदो पड़ो है जी।

। श्री जी सलामत। मअजुदी[2] ने जहानावाद सु हाथी का खुला होदा उपर कैद कर ले आया गला मे तोक, हाथां मे हथकड़ी, पावां में वेड़ी, ई भांत सहर मै सु लीयां आया। हजुर मे ले आया तव गुसलखांना में जीवह कीयो सु नगार

---

1. दो टुकड़े कर दिये।
2. जहांदारशाह।

खाना आगे हाथी उपर मअजुदी की लोथ[1] पड़ी है, पातिसाहजी मअजुदी ने जीबह कर हुकम हुवो नौबत बजावो सु नोबत बाजै है जी। देखजे अब असफदोला को कांई करै अयजूदी ने कांई करे सो अरजदासत कर सू जी।

। श्री जी सलामत—आज्मसाही बाजखां चेलो पातिसाहजी के मसालखाना को दारोगो कीयो है, तीने हुकम हुवो मअयजुदी ने व अमीरल उमराव नैं जीबह करै सु हुकम मवाफक वे दोनू वांनै जीबह कीया जी।

सं० १७६९ माह बदि २ आधी रात गया बीदा कैया।

ठाकुर सामसिघजी हसन अली खां ने साझनै मीला बहोत दीलासा करी रद-बदल हुई नही वै दरबार सुवार होय गया मअजुदी ने जुल्फकार खां ने मारण के वासतै तीसू ठाकुरा ने रुकसत कर दीया अब सवार रदबदल होय सी सु अरज-दासत कर सूं जी।

---

1. निर्जीव शरीर।

Annotations

No. 1 (Vakil Report No. 2) *Magha Vadi 13, 1748*
January 6, 1692

Arzdasht from Vakil Pancholi Megharaj to Maharaja Bishan Singh. After compliments,.the writer records the displeasure of the Emperor (Aurangzeb) with the Maharaja on account of his rehabilitating the Jats (in the area controlled by the Maharaja). The Emperor had ordered a reduction of 500 *zat* (unconditional) and 500 *sawars* (conditional) from Maharaja's *mansab* and also that of 65 lakhs *dams* of the *inam*. The *parganas* of Toda Bhim and Chatsu were resumed and subsequently granted to other Mughal *mansabdars* (names given). The Vakil, further, records that the explanation given by the Maharaja about the issue (of rehabilitation of the Jats) has caused more annoyance to the Emperor who has ordered a further reduction in the rank by 500 *sawars*. However, an explanation submitted by the Vakil on the Maharaja's behalf helped in seeking the Emperor's pleasure who has ordered the restoration of the former rank as well as the *inam* on the Maharaja. The Vakil, further, records the favour shown by the Emperor to the Maharaja by granting him *khidmat* (service of *faujdari*) of Mathura and Bayana. Mention is also made of the rebellion raised by Prince Kambakhsh.

No. 2 (Vakil Report No. 3) *Vaishakha Sudi 8, 1750*
May 3, 1693

Arzdasht from Pancholi Megbraj to Maharaja Bishan Singh. It informs that his (the Maharaja's) victory over Baroda fort (Mewat) has been received favourably by the Emperor and that

the Emperor has come to form a good opinion of the Maharaja. On a recommendation made by Muhammad Khan, the Emperor has granted an additional *mansab* to the Maharaja. The writer is hopeful of the grant of the entire region of Mewat and its *faujdari* to the Maharaja.

No. 3 (Vakil Report No. 4) *Ashadha Vadi 8, 1750*
June 16, 1693

Arzdasht from Vakil Meghraj to Maharaja Bishan Singh. Acknowledging the receipt of the Maharaja's *parwana*, the writer informs him of the restoration of Bayana and 500 *zat* and 500 *sawar* in his rank. Referring to the dispatch of the *parganas* of Hindaun, Toda, Udai, etc., has also been made to the Maharaja and that the order of the assignment of these *jagirs* may reach the Maharaja soon. The writer, further, informs that regarding the grant of the *faujdari* of Mathura and Agra, the Amirul Umara had asked the writer to keep the news a secret. The writer requests the Maharaja to meet the Amirul Umara in order to clarify the misunderstanding and also to secure the grant of a *mansab* for the prince. The writer also furnishes information on the movements of the army of Amber in Hindaun and Bayana and the arrival of Nausheri Khan, the son of Bahadur Khan, at the court and his enrolment in the Mughal service.

No. 4 (Vakil Report No. 5) *Magha Vadi 4, 1750*
January 5, 1694

Arzdasht from Pancholi Meghraj to Maharaja Bishan Singh. Acknowledging the receipt of two of the Maharaja's *parwanas*, the writer informs about the Emperor's reaction on the question of the assignment of Chatsu to the Maharaja in *jagir* Reporting his discussion with Shukrullah Khan, the writer mentions his assurance of winning the favour of the Emperor for the Maharaja.

No. 5 (Vakil Report No. 6) *Jyeshtha Vadi 5, 1753*
May 11, 1696

Arzdasht from Vakil Pancholi Meghraj to Maharaja Bishan

Singh. Acknowledging the receipt of the *parwanas* along with a letter of the Maharaja addressed to the Nawab, the writer notes down the enquiries made by the Nawab regarding the arrival of the Maharaja and the prince (Jai Singh) to the court. The writer requests the Maharaja to attend the court of the Emperor before the onset of the monsoon as it may help the Maharaja to gain fav ours from the Emperor.

No. 6 (Vakil Report No. 7) *Bhadrapada Sudi 6, 1753*
August 23, 1696

Arzdasht from Vakil Meghraj to Maharaja Bishan Singh. The writer records his conversation with Nawab Aqil Khan on the question of the Maharaja's march to the Deccan from Mathura. The writer mentions that the Nawab has advised him to convey to the Maharaja the necessity of evacuating Mathura (fort) and of proceeding to the Deccan to attend upon the Emperor.

No. 7 (Vakil Report No. 8) *Phalguna Vadi 7, 1761*
February 5, 1705

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh. The writer records his surprise at Maharaja's lack-lustre attitude in getting the *naubat* (kettle-drum) from the Emperor. He offers his services in securing the *saranjam* (*jagir*) for the Maharaja. He, further, records his sincerity in seeking favour for the Maharaja. To establish his loyalty and sincerity he mentions that he declined the *mansab* offered to him by the Emperor. Mention is also made to the influence enjoyed by Khoja Muhammad Khan, Hafiz Ambar and Masood over the Emperor.

No. 8 (Vakil Report No. 9) *Phalguna Vadi 9, 1761*
February 7, 1705

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh. Recording the favourable attitude of Mirza Yar Ali Beg towards the problems of the Maharaja, the writer requests the Maharaja to write a letter to him. He, further, informs the Maharaja about the power wielded by Mahram Khan, Hafiz Ambar, and

Miyan Masood at the Emperor's court and that for this reason the writer attends them regularly. He also furnishes information on the nature of conflicts between the Mughal army and the Marathas, etc.

No. 9 (Vakil Report No. 10) *Shravana Vadi 5, 1762*
June 30, 1705

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh. Revealing the misdeeds of Vakil Keshodas, who was appointed Vakil by the Maharaja four years ago, and the inability of his son to secure any favour for the Maharaja from the Mughal court, the writer reports that the *diwan* and the *bakhshi* have been reduced to an insignificant position and the actual power at the court is now wielded by Khoja Khidmatgar. Further, recording the examples of the power and influence enjoyed by Khoja, the writer highlights his close association with him and assures the Maharaja of the court's favour. The writer requests the Maharaja to give him a chance to prove his ability and appoint him his Vakil at the court if he finds his work satisfactory.

No. 10 (Vakil Report No. 11) *Margashirsha Sudi 7, 1763*
December 1, 1706

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh. Acknowledging the receipt of the *parwana,* dated *Kartik Sudi* 4, and expressing his gratitude to the Maharaja for appointing him the Vakil, the writer assures him of his devotion to Maharaja's cause at the Mughal court, etc. Regarding the affairs of the court, the writer informs about the receipt of Maharaja's letters for Mirza Sarfuddin and Mirza Yar Ali Beg and requests the Maharaja to put his seal on such letters in future. Further, he informs about the arrival of the Marathas in Gujarat and the dispatch of the imperial army. The writer also states that *pargana* Chatsu has been assigned to the Maharaja. Regarding the request of the Maharaja for the *pal-baqi* of Ajmer, the writer infroms the Maharaja about the confirmation of its grants, though a conditional one.

No. 11 (Vakil Report No. 12) *Phalguna Sudi 1, 1763*
February 20, 1707

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh. Informing about the death of the Emperor (Aurangzeb) on Friday, *Phalguna Sudi 1*, and the activities at the Mughal eamp, the writer requests the Maharaja to send him more money. He acknowledges the receipt of a *hundi* sent to him by the Maharaja.

No. 12 (Vakil Report No. 13) *Vaishakha Sudi 10, 1764*
April 11, 1707

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Mirza Raja Jai Singh. Mentioning the dispatch of his earlier *arzdasht* in which his meeting with Nursrat Jung was recorded, the writer congratulates the Maharaja on the grant of the title of *Mirza Raja* and the *mansab* of seven thousand *zat* and *sawar* which was procured through the Amirul Umara on the promise of paying him Rs. 50,000. Regarding the request for the grant of *watan*, the writer says that the same would be done within two days. Expressing the problem in securing credits, the writer requests the Maharaja to send money. Stating that an *arzdasht* containing detailed account would be sent later, the writer records the grant of five thousand *zat* and *sawar* to the son of Maharaja Ajit Singh. The title of Maharaja along with the rank of seven thousand *zat* and *sawar* has been granted to Ajit Singh after giving an assurance of paying one lakh of rupees to the Amirul Umara.

No. 13 (Vakil Report No. 15) *Chaitra Sudi 1, 1767*
March 20, 1710.

Arzdasht from Bhandari Khivsi, the Vakil of Maharaja Ajit Singh, to Maharaja Jai Singh. Referring to the dispatch of the two *nishans* written in Persian—one to Maharaja Jai Singh and another to Maharaja Ajit Singh, the writer informs that the Emperor desires that the Maharajas should reach the court to attend upon him.

He informs that the letter of Nawab Mahabat Khan and the *arzdasht* of Mahammad Yar Khan have been sent to the Maharaja and that Bijay Singh with his *harem* was invited at Diwan Dayaram's palace for a meeting. The writer records the details of the presents given to Dayaram by Bijay Singh. Further, he records the writing of an agreement of Rs. 5000 to Rai Bhagwant in order to meet the expenese of the *biradari,* writing of a letter to Nawab Mahabat Khan for Rs. 75,000, the writer's demand of an *hundi* amounting to Rs. 25,000, the issuing of the Padshah's *hasbulhukm* and the departure of the messengers to the rulers of hilly regions in order to capture the Guru (Banda Bahadur) and the reply of the Rajas in this regard, etc.

No. 19 (Vakil Report No. 22) *Magha Sudi 7, 1767*
January 15, 1711

Arzdasht from Bhikharidas to Maharaja Jai Singh. The writer informs that the Badashah's two *hasbulhukms* relating to Mulpura and Sarwad have been issued to Maharaja Jai Singh and Maharaja Ajit Singh through Hakim Saleemji and that prince Azimush Shan has also informed the writer and Bhandari about them The *mutasaddis* have been asked to act according to the order of the Prince. He informs the Maharaja of his (writer's) duty to present the letter of agreement of the *mutasaddis* of Raja Raj Singh to the Prince.

No. 20 (Vakil Report No. 35) *Magha Sudi 7, 1767*
January 15, 1711

Arzdasht from Bhandari Khivsi to Maharaja Jai Singh. Referring to his earlier *arzdasht* informing about their meeting with the Khan-i-Khanan and Mahabat Khan, the writer records about their (Bhikharidas and the writer) meeting with Prince Azimush Shan through Nawab Mahabat Khan and the submission to him (the Prince) the *arzdashts* (on behalf of their Rajas) with the request of confirming the obedience of their Rajas to the Emperor. Further, the writer informs the Maharaja of the enquiries made by Azimush Shan and Mahabat Khan about

the arrival of the Rajas at the court if the assignment of Kabul is kept in abeyance. In response to this the writer mentions about the assurance given to the Prince by them for the arrival of the Rajas at their earliest. The writer submits that the Maharaja should not be worried at this end as they are doing their best to safeguard the interest of the Maharaja.

No. 21 (Vakil Report No. 36) *Magha Sudi 11, 1767*
January 19, 1711

Arzdasht from Diwan Bhikharidas to Maharaja Jai Singh. Acknowledging with gratitude the receipt of the *parwanas* sent by the Maharaja and referring to the orders therein, the writer informs that he is doing his best to appease Rai Bhagwant and that he shall pay him (Rai Bhagwant) the same amount as it is paid by Maharaja Ajit Singh. He also reports that he will get a letter of Rs. 75,000 from *vyapari* Tamsukh in favour of a person as desired by Nawab Mahabat Khan. Mention is also made of the matter relating to the employment of a relative of Rai Bhagwant in the service of the Maharaja, the request to send Rs. 25,000 of Mahabat Khan, the problems pertaining to the appointment of the Maharaja at Kabul and Maharaja's instructions about the dispatch of the *arzdasht* written in Persian and Hindvi.

No. 22 (Vakil Report No. 23) *Magha Sudi 11, 1767*
January 19, 1711

Arzdasht from Diwan Bhikharidas to Maharaja Jai Singh. Referring to the dispatch of his earlier *arzdasht* dated *Magha Sudi 3* (January 10), the writer records the affairs of the departure of the family of Bijai Singh to Hindaun and the trouble caused to the entourage of the Maharaja due to incessant rains. Regarding the affairs of the Guru (Banda), the writer states that he has left the territory of the Raja of Nahan and has gone to the territory of other Rajas, and that on the pleading made by the mother of the Raja of Nahan the followers of the Raja of Nahan and the Raja Saraja went in his persuit who was staying at *guru-ke-khohal* where a battle was fought and as the background area was surrounded by the snow-hills the Guru

would not be able to escape. There were rumours of his capture though others contradict the news. Further, mention is made of the position of Rustam Dil Khan at the court, the matters relating to Raja Raj Singh of Roopanagar and the issues of Mahaja Jai Singh and Ajit Singh in relation to *nishans* and *hasbul hukms* issued from the court, the affairs of the *pargana* of Mauzabad, the appointment of Nawab Khan-i-Jahan Bahadur as *subedar* of Bengal, etc.

No. 23 (Vakil Report No. 24) *Magha Sudi 15, 1767*
January 23, 1711

Arzdasht from Bhandari Khivsi, the Vakil of Maharaja Ajit Singh, to Maharaja Jai Singh. Recording his meeting with the Emperor, the writer informs the Maharaja of the queries made by the Emperor about the arrival of the Maharajas at the camp and requests him (Jai Singh) to reach the court immediately. Further, referring to his (Maharaja Jai Singh's) letter written to the Nawab Khan-i-Khanan, the writer submits that the Maharaja should have written about his arrival only and should not have implicated Maharaja Ajit Singh in explaining his delay in appearing at the court.

No. 24 (Vakil Report No. 25) *Phalgura Vadi 4, 1767*
January 27, 1711

Arzdasht from Diwan Bhikharidas to Maharaja Jai Singh. Referring to the *arzdasht* of *Magha Sudi 11*, the writer records the nature of destruction caused to the Maharaja's entourage due to rains. Regarding his visit along with Bhandri Khivsi to the Nawab Khan-i-Khanan, the writer mentions their meeting with Khawas Khan (Miyan Maroof) who showed his unhappiness by passing the remark that their rulers have gone away from the path of their respective fathers & grand-fathers. Further, he adds that on *Magha Sudi 14*, the Emperor was informed that the mother of the Raja of Nahan accompained by the Guru was stationed at a distance of 12 *kos* from the imperial camp & that the Emperor has asked Mahabat Khan to bring the Guru to the court. Regarding the issue of *sanads* to Maharaja Ajit

Singh and Maharaja Jai Singh, the writer mentions the efforts of Bhandari and that he himself had reported that it was promised to pay Rs. 75,000 in the name of the expenses of the office, Rs. 25,000 to the Nawab and the outstanding dues of Bhagwant Rao to secure the *sanads* of the *biradari*. Without this the *sanads* would not be issued. The writer requests that since no *vohra* is ready to lend money, the Maharaja should send money through *hundi*. Further, mention is made of the affairs of *pargana* Mauzabad and the order of the Emperor to make an ornament worth rupees one lakh for the mother of the Raja of Nahan.

No. 25 (Vakil Report No. 26) *Phalguna Vadi 4, 1767*
January 27, 1711

In continuation of the earlier report, Bhikharidas records the account of the presents made to Nawab Khan-i-Khanan and Mahabat Khan by Bhandari and the writer. Further, he gives a detailed account of the activities of Bhandari, the Vakil of Ajit Singh, at the court for protecting the interests of the Maharajas including the grant of the *subas* of Malwa and Gujarat to them, and the issuing of the *sanadas* as well as the arrangement of Rs. one Lakh for the Nawab.

No. 26 (Vakil Report No. 27) *Phalguna Vadi 13, 1767*
February 4, 1711

Arzdasht from Diwan Bhikharidas to Maharaja Jai Singh. Referring the dispatch of his earlier *arzdasht* of *Phalguna Vadi* 4, the writer records the progress of the Emperor's movement the appointment of Shah Nawaz Khan as *bakhshi*, the suspension of the court of Nawab Khan-i-Khanan and Mahabat Khan for last three days due to ill-health, the demand of the money by Nawab Mahabat Khan and Rai Bhagwant & the affairs of the *ijara* of Mauzabad. Further, the writer informs that his request for the *kotwali* of Pura Shahjahanabad has been accepted. Mentioning about his illness, the writer informs that as per the *arzdasht* of the mother of the ruler of Nahan, the Guru was yet to be imprisoned and that he has been surrounded by the army of Nahan but nothing could be done due to snow-fall. It

is said that he (the Guru) is well equipped and therefore his capture is out of question. It is also being said that he has already escaped and his followers are making false pretention. The writer adds that nothing is definite about the direction of the Emperor's campaign as his movements are uncertain. Further, mention is made of the writer's association with Bhandari in the court activities, the request of the writer to issue *sanad* for the writer's garden in Amber, the movement of the Emperor, etc.

No. 27 (Vakil Report No. 29) *Phalguna Sudi 2, 1767*
February 8, 1711

Arzdasht from Diwan Bhikharidas to Maharaja Jai Singh. Recording the dispatch of an *arzdasht* dated *Phalguna Vadi 13*, containing the details of the political affairs, the *diwan* informs about the departure of prince Jahandar Shah for hunting, the rumour about the possibility of Jahandar Shah's visit to Panipat, the *jagir* of Kokaltash, the march of the Emperor on *Phalguna Vadi 14*, the illness of Nawab Khan-i-Khanan, the grant of *siropao* and a horse to Chudaman Jat who was called through Bijai Singh, the recommendation made by Chudaman Jat about Kisan Singh Naruka, the acquisition of *pargana* Khohri on *ijara* by Bijai Singh and Rustam Dil Khan jointly and the adjoining *pargana* of Agra on *ijara* by Chudaman Jat, etc. It is added that the affairs of the Jats have been managed so badly which can hardly be described. Regarding the news about the Guru at the court, it is informed that he has escaped to the hills of Bhunttar after giving a fight to the followers of the Raja of Nahan and the Emperor is also moving in the same direction. Also records the visit of prince Azimush Shan to the camp of the Khan-i-Khanan and the visit of Bhandari and his own to the Khan-i-Khanan.

No. 28 (Vakil Report No. 28) *Phalguna Sudi 2, 1767*
February 8, 1711

Arzdasht from Diwan Bhikharidas to Maharaja Jai Singh. Informs that Bhandari and other Rathors had told that they, of their own, would take over by force Gujarat and Malwa for

Maharaja Ajit Singh and Maharaja Jai Singh respectively, and that they had called the writer (Diwan Bhikharidas) and wanted his consent. The writer after recording the details of his conversation with Bhandari Khivsi, mentions that although Bhandari has stopped talking in that kind of language yet the Rathors keep on talking about their strength and weaknesses of the Emperor. The writer requests the Maharaja to inform him about the movements of Maharaja Ajit Singh. Mention is also made of the grant of *mansab* to Mohkam Singh, the conversation that took place between Mirza Rustam and Rao Sakat Singh of Manoharpur, reminds the Maharaja about the money to be paid to Mahabat Khan and Rai Bhagwant, etc.

No. 29 (Vakil Report No. 37) *Phalguna Sudi 2, 1767*
February 8, 1711

Arzdasht from Vakil Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh. Informing about the delivery of the Maharaja's letter to Amirul Umara through Diwan Bhikharidas, the writer requests the Maharaja to attend the court without any further delay as the Nawab Khan-i-Khanan was very insistent about it. States that the health of the Nawab Khan-i-Khan is better and that no definite news is available of the where, abouts of the Guru. A *pinjra* (an iron cage) has been made to keep the Guru in it. The writer, further, requests the Maharaja to reach the court immediately & if there is delay in the arrival of Ajit Singh he should come alone. The writer requests the Maharaja to send him money as he is facing financial problems due to the non-receipt of his salary for the last eight months.

No. 30 (Vakil Report No. 38) *Phalguna Sudi 3, 1767*
Februrary 9, 1711

Arzdasht from Diwan Bhikharidas to Maharaja Jai Singh. Informs the Maharaja about the visit of Bhandari and of his own to Nawab Khan-i-Khanan and their meeting with Nawab Mahabat Khan. The latter had made an enquiry from Bhandari

about the progress of Maharaja Ajit Singh's march towards the Mughal court. On hearing the reply of Bhandari that his Maharaja shall reach soon, the Nawab got angry (as such assurances are quite common) and went to meet the Khan-i-Khanan (Munim Khan). Later, both Bhandari and the writer went to see Hakim Salim who asked them to see him the next day to receive the *nishans*. The writer records their meeting with the Prince (Azimush Shan) about the withdrawal of the order of the appointment of the Rajas to Kabul and informs that the Prince has agreed to do so, a *nishan* to that effect would be sent to the Maharaja as soon as it is issued. The writer also informs about the appointment of Rustam Dil Khan as the *daroga* of the Deccan and the grant of Sambhar and Merta to him as *jagir*, and also the efforts made by the writer in cancelling the orders issued in favour of Rustam Dil Khan.

No. 31 (Vakil Report No. 30) *Phalguna Sudi 4, 1767*
February 10, 1711

Arzdasht from Diwan Bhikharidas to Maharaja Jai Singh. Informs about the visit of Bhandari and his own to the camp of Nawab Mahabat Khan and the deliberations that took place with Shah Qudratullah Khan and Nawab Mahabat Khan about the possibility of the arrival of the Rajas at the court. Recording the demand made by Rai Bhagwant about the money, the Diwan requests the Maharaja to arrange an early dispatch of *hundi* and also mentions the suggestions of the Nawab that the writer should get the money from the traders after pawning the ornaments for which the writer needs the permission of the Maharaja.

No. 32 (Vakil Report No. 39) *Phalguna Sudi 5, 1767*
Februry 11, 1711

Arzdasht from Diwan Bhikharidas to Maharaja Jai Singh. Referring to his earlier *arzdashts* and acknowledging the receipt of the four *parwanas* in Persian, reached him on *Phalguna Sudi 3*, he records in details the actions taken as per orders in each *parwana* on payment of money to *khahawats*, request for the dispatch of *hundis* for the money which is to be paid to the

Nawab and Bhagwant Rai as the Nawab is persistantly demanding the money. Further, reports that when the *parwanas* were showed to him he said that such *parwanas* had no meaning and his money has to be paid before the *sanad* to the *biradari* is issued, the false reporting made by the messenger to Mahabat Khan, and the payment of Rs. 60 to Muhammad Saleh as instructed by Shah Qudaratullah. The writer mentions the departure of the Prince Rafiul Qadar for hunting, his visit to Nawab Khan-i-Khanan, the visit of Bhandari and the writer to Mahabat Khan, where they got the news about the recent orders issued to Mahabat Khan by the Emperor to attend upon Munim Khan, the state of health of the Nawab Munim Khan.

No. 33 (Vakil Report No. 40) *Phalguna Sudi 12, 1767*
February 19, 1711

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to the Maharaja. After expressing his gratitude to the Maharaja, the writer records the state of Khan-i-Khanan's health and the appointment of Mahabat Khan to look after Khan-i-Khanan. Records the grant of Didwana and Sambhar to Rustam Dil Khan, the summon to Bhandari and Diwan Bhikharidas by Mahabat Khan, warning them about the consequences if the Rajas fail to attend the court; reports that for this Mahabat Khan had taken *muchalka* (bond) from Bhandari and Diwan Bhikharidas. Further, informing the Maharaja about the dispatch of the *nishan* of Azimush Shan and a letter of the Nawab, requests the Maharaja to reach the court without further delay reminding him that Ajit Singh on account of his strength can afford to ignore the call for personal attendance in the court, but the same is not applicable to the Maharaja (Jai Singh). Recordings are made of the grant of *pargana* Idar to Rathor Durgadas, the reduction of 500 *zat* (in the *mansab*) of Indra Singh and an increase of 500 *zat* and 500 *sawars* (in the *mansab*) of Kunwar Mohkam Singh, the restrictions imposed upon the Hindus, the state of affairs of *pargana* Mauzabad which is to be acquired on *ijara* etc. Further, explaining his pitiable financial condition, the writer requests the Maharaja to send money due against his services performed at Lahore and Peshawar.

No. 34 (Vakil Report No. 32) *Chaitra Vadi 8, 1767*

March 1, 1711

Arzdasht from Vakil Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh. Acknowledging the receipt of the Maharaja's *parwana*, the Vakil records that he (the Vakil) would dispatch the *hasbul hukm* and a letter from the Amirul Umara to Daud Khan about handing over the possession of the *pura* of Aurangabad (to the agents of the Maharaja) as per the *parwana* issued to Diwan Bhikharidas. Mention is also made of the meeting with Azimush Shan. The writer informs that the *farman* in under preparation and its details would be given in the letters of Diwan Bhikharidas and requests the Maharaja to send letters of congratulations to Hidayatullah Khan and his father Inayatullah Khan. Furnishing details of the two groups of the princes favouring their own candidates for the past of *wazir*, the writer informs that there is little possibility of appointment to this office in near future. The Vakil reminds the Maharaja for the payment due to the Mughal state and requests him to give a kind consideration to the same.

No. 35 (Vakil Report No. 34) *Chaitra Vadi 13, 1767*

March 6, 1711

Arzdasht from Vakil Pancholi Jagjiwands to Maharaja Jai Singh. Acknowledging with gratitude the receipt of Maharaja's *parwana* according to which Panapur is to be taken on *ijara*. the Vakil informs that the contents of the *parwana* were read before Nawab Mahabat Khan who said that it was an inopportune time for such request and the same could be made to the Emperor when the Rajas reach close to the imperial court. Further. the reporting is made about the instructions issued by Hidayatullah to the *mutasaddis* of *dawwab* on *Chaitra Vadi 11* and informs the Maharaja about the effects of such instructions if they are carried out without making any consideration to the traditions and the reactions of the vakils of the *mansabdars*, etc.

No. 36 (Vakil Report No. 41) *Chaitra Sudi 5, 1768*
March 13, 1711

Arzdasht from Diwan Bhikharidas to Maharaja Jai Singh. Informing that the Emperor had ordered Mahabat Khan on *Chaitra Sudi 5* to present *siropao* to the *mutasaddis* of the Rajas and asked them to call their Rajas immediately. He adds that they have assured the Emperor about the arrival of the Rajas. Recordings are made of the Emperor's march towards Lahore after hearing the news of the rebellion of the Sikhs, advises the Maharaja to reach the court at this opportune time, communicates the feeling of the nobles that the Rajas should not delay their arrival at the court, etc. The complaint of Mahabat Khan is recorded about the delay in the payment by the Rajas with the request to send money immediately so that the purpose of the *biradari* is served and grant of villages in *pargana* Naraina to Bhagwant Singh Khangarot, etc. is also mentioned.

No. 37 (Vakil Report No. 45) *Chaitra Sudi 9, 1768*
March 17, 1711

Arzdasht from Diwan Bhikharidas to Maharaja Jai Singh. Informs that the Emperor has asked prince Rafiush Shan to inform Prince Jahandar Shah of getting himself ready to march towards Lahore to destroy the Guru. The final decision has yet to be taken on this subject. The writer records the Emperor's decision to keep Bhauvpati, the Raja of Nahan, in the iron cage prepared for the Guru. Mention is also made of the uncertainty about the programme of the Emperor's movements, problems relating to the Maharaja's letter to Mahabat Khan, the affairs of Merta, etc.

No. 38 (Vakil Report No. 43) *Chaitra Sudi 15, 1768*
March 23, 1711

Arzdasht from Diwan Bhikharidas to Maharaja Jai Singh. Referring to the dispatch of an *arzdasht* of *Chaitra Sudi 12*, the writer informs about the departure of the Emperor to Lahore taking the route of Sirhind on *Chaitra Sudi 14*. Further, he informs about the dispatch of the Emperor's *farman* to the

Maharaja, the problems relating to Shujat Khan, the details of the conversation that took place between Mahabat Khan and the writer on the submission of the Maharaja's demands before the Emperor. Mentioning the Emperor's order about the departure of the Raja of Nahan to Delhi, the writer submits that the Maharaja's should take the advantage of the situation caused by the Guru and reach the Mughal court immmediately.

No. 39 (Vakil Report No. 49) *Vaishakha Vadi 11, 1768*
April 2, 1711

Arzdasht from Diwan Bhikharidas to Maharaja Jai Singh. Acknowledging the receipt of four *parwanas*—three in Persian and one in *Hindvi*, the writer informs about the following up actions taken by him as per orders given in the *parwanas* relating to the payment of *dawwab*, dispatch of the *nishan* and *hasbul amar*, possibility of Maharaja Ajit Singh's arrival at the court and the problems of taking *pargana* Mauzabad on *ijara* by providing the security of the *sahukar*. He mentions about the receipt of two *parwanas* written in Persian, and records progress of his work in respect of the orders contained in the two *parwanas* concerning the departure of Maharaja Ajit Singh and Jai Singh towards the imperial court. Information is also given regarding the movements of the Emperor, grant of *siropao* to the writer by the Emperor, etc.

No. 40 (Vakil Report No. 48) *Vaishakha Sudi 1, 1768*
April 7, 1711

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh. Stating that he has not received the Maharaja's *parwana* for sometime, the writer informs the Maharaja that Inayatullah Khan, the *Khan-i-saman*, and his son Hidyatullah Khan, the *Diwan-i-Khalisa-o-Jagir*, enjoy the position next to the Khan-i Khanan at the Emperor's presence, and that they had called the writer and convinced him that their Rajas could depend on them to seek favour from the Emperor instead of Mahabat Khan who has proved himself undependable by betraying the Raja of Nahan. Giving a detailed description of the conversation with them, the writer informs that no positive change would be

made in their association at the court till they receive the order from the Maharaja. Further, he records the recommendation made by the Amirul Umara regarding the *puras* of Aurangabad and the objection raised by the vakils of all the *umara* jointly regarding the imposition of *dawwab* and the action taken by Hidayatullah Khan, etc.

No. 41 (Vakil Report No. 51) *Vaishakha Sudi 11, 1768*
April 18, 1711

Arzdasht from Diwan Bhikharidas to Maharaja Jai Singh. Informing about the dispatch of his *arzdasht* dated *Vaishakha Vadi 13*, and the receipt of the two *parwanas* of the office of *diwan*, the writer records that as per order given in the first *parwana* the amount of *dawwab* was to be deducted from the revenue of *pargana* Bahatri and Mauzabad. He informs the Maharaja about the reactions at the court and as a result of this order the situation faced by the vakils of the *umara*. Regarding the order given in the second *parwana* about the grant of *pargana* Bahatri as six monthly *jagir*, the writer reports that he had represented his case before Mahabat Khan requesting him that *pargana* Bahatri be given as four monthly *jagir* as it was done in case of Merta of Ajit Singh and he confirms that Merta has also been granted as six monthly *jagir*. Recordings are also made of the arrival of the Raja of Nahan at Delhi, the receipt of a *hundi* amounting Rs. 950, the rumours about the appointment of *wazir*, activities of Bijay Singhji, movement of the Emperor, the prominence gained by Hidyatullah Khan at the court, request to arrange the payment to Nawab Mahabat Khan, departure of Raja Chhatrasal against the Marathas, the enquiries made at the court about the arrival of the Rajas, the assurance by the Emperor to award them (Rajas) high honours if they appear at the court, problems relating to the settlement of *dawwab*, etc.

No. 42 (Vakil Report No. 52) *Jyeshtha Vadi 5, 1768*
April 26, 1711

Arzdasht from Diwan Bhikharidas to Maharaja Jai Singh. Informs about the departure of the Emperor towards the river Sut-

laj. Mention is made of the event caused due to the madness of Amin Khan's elephant in which Amin Khan was injured, the favour shown by the Emperor to Mahabat Khan, the establishment of a *chhawani* (military camp) named Jahangirpur which was of strategic importance as it was close to Shahjahanbad and from there movements of the Guru could be checked effectively who was active in the regions of Lahore, the arrangement to be made for the payment of the *dawwab*. The writer requests the Maharaja to entertain the receipt of *jama-khurch*. It is also stated that Bhandari and the writer visited Nawab Bahadur Khan and submitted the request of Ajit Singh about the withdrawal of the *nishan* relating to Kabul and that with the help of Bahadur Khan the *nishan* and *hasbul amar* have been prepared and handed over to Bhandari. The writer makes a request that the Maharajas should present themselves at the court as this was a right time to get favour from the Emperor and to establish their reputation at the court.

No. 43 (Vakil Report No. 59) *Ashadha Vadi 8, 1768*
May 28, 1711

Arzdasht from Diwan Bhikharidas to Maharaja Jai Singh. Recording the dispatch of his earlier *arzdasht* dated *Jyeshtha Sudi* 11, the writer gives on account of the encounter of Hamid Khan Bahadur with the Guru and reaction of the Emperor to the defeat of Hamid Khan, the Emperor's march against the Guru, and the Emperor's order to grant the *tika* to Maharana Sangram Singh as per tradition. He, further, states the affairs relating to *pargana* Mauzabad, the problems relating to the settlement with *raiyat* at the garden of Peshawar, the problems of recovering the articles of Nawab Mahabat Khan taken away by some one at Mauza Dhegaria of *pargana* Dausa, problems of *dawwab*, etc.

No. 44 (Vakil Report No. 66) *Shravana Vadi 5, 1768*
June 24, 1711

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh. Referring to the receipt of the *parwana* and the instructions contained therein about the dispatch of *arzdashts* only

in *Hindvi*, the writer expresses his compliance to the order. Further, mention is made about the willingness of Hidayatullah Khan to liaison work for the Maharaja. The writer reports that Hidayatullah and his father play very important role in the decision making at the court, he (the Vakil) has started attending upon them regularly and that he also discusses with Bhandari and Diwan Bhikharidas such matters. Further, recordings are made about the settlement of *dawwab*—which is also looked after by Hidayatullah Khan, the events leading to the degradation of Mahabat Khan, the disturbance raised by the people employed in the artillary of *Kambakshashia* due to the non-payment of their salary, the increment made in the *mansab* of Hidayatullah Khan, the assignment of Sambhar, Bairath and Singhana in *jagir* to the Khan-i-Khanan, the departure of Raja Udat Singh to his *desh*, the grant of *faujdari* of Busawar, Hindaun and Toda Bhim to Firozmand Khan, the brother of Firoz Khan Mewati, the grant of seventy lakh *dams* from *Pargana* Lalsot formerly held by Dildar Khan, etc. made in favour of the *biradari* of Abdullah Khan. The writer requests the Maharaja to wait for a few days at Kurukshetra on his way to the court which would help him to get *jagir* for the *biradari*.

No. 45 (Vakil Report No. 63) *Shravana Sudi 3, 1768*

July 7, 1711

Arzdasht from Vakil Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh. Recording the details of crossing the river Vyas by the Emperor's army as well as the contingents of the princes, the writer informs that the Emperor has desired that the Rajas could move slowly due to rain. The writer explains the motives of the Emperor in issuing this order. Further, the information is provided about the activities of the Marathas in Malwa, the problems faced by Raja Udat Singh, the affairs of the grant of *jagir* to Cheemaji with a request that sufficient money may be provided to meet the expenses of the court, the movement of the Guru, etc.

No. 46 (Vakil Report No. 69) *Shravana Sudi 13, 1768*
July 16, 1711

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh. States that Diwan Bhikharidas and he himself had a meeting with the Nawab on *Shravana Vadi* 11, the proceedings of which would be conveyed by the former. Mention is made of his (the writer's) meeting with Hidayatullah Khan who showed his willingness to favour the Maharajas, the reservations of Bhandari and Bhikharidas about following the advise of Hidayatullah Khan till they receive orders from the Rajas, the suggestion of the writer to the Maharaja to establish contacts and cultivate relations with Hidayatullah as he wielded tremendous influence in the imperial court and that he has been given the office of *diwan*, the personal financial problems the writer is facing at present with the request that the Maharaja would be kind enough to do the needful.

No. 47 (Vakil Report No. 77) *Bhadrapada Vadi 5, 1768*
July 23, 1711

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh. Acknowledging the receipt of the *parwana* delivered through Gaj Singh Khangarot and Sindhi Manohardas regarding the procurement of *parganas* on *ijara*, he informs that the progress made in this respect would be conveyed to you by them. Mention is made of the conversation that took place between Bhandari Khivsi and Nawab Bahadur Khan, the problems regarding the meeting with Hidayatullah, the matter relating *sanad* issued for the *mansab* of the *biradari* which have already been prepared in case of Maharaja Ajit Singh. The writer requests to clear his dues of Rs. 2000 which was to be paid from the revenue of the *puras* of Lahore and Peshawar.

No. 48 (Vakil Report No. 72) *Bhadrapada Vadi 11, 1768*
July 29, 1711

Arzdasht from Diwan Bhikharidas to Maharaja Jai Singh. Acknowledging three *hundis* amounting to Rupees 450, the writer informs about the situation which led the Emperor to

he Rajas to proceed to Sadhaura stka directly instead of appea ing before the Emperor. The writer shows his satisfaction about the Emperor's order as they (the Rajas), particularly aharaja Ajit Singh, were not willing to appear in person-before the Emperor. Further, requesting the Maharaja to reach Sadhaura, he records the departure of Raja Udat Singh to his *desh*, the *jagirs* of Cheemaji & Bharat Singh of Shahpura, the problems faced by the Rajas's officials at the court due to non-payment of money to the court officials—which may have caused great damage to the interests of the Raja, the affairs of *pargana* Chatsu and Jai Singhpura of Delhi, etc.

No. 49 (Vakil Report No. 83) *Bhadrapada Vadi 13, 1768*
August 1, 1711

Arzdasht from Pancholi Jagjiwanads informing about their meeting along with Shah Qudratullah with prince Azimush Shan who was requested to ask the Rajas to proceed towards the Deccan. Giving details about the conversation with the Prince, the writer suggests that their demand would be considered favourably only after they reach Dabar.

No. 50 (Vakil Report No. 80) *Bhadrapada Sudi 9, 1768*
August 11, 1711

Ardasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh znforming that Ghazi Khan Bahadur entitled Rustam Dil Khan Bahadur, who was imprisoned and kept at Lahore Fort on *Bhadrapada Sudi 8.* Earlier he was ordered by the Emperor to proceed against the Guru along with ten thousand *sawars.* Muhammad Amin Khan, many *faujdars* and *zamindars* were also instructed to get ready for the action against the Guru. Recording the escape of the Guru towards Dabar & the failure on the part of Amin Khan and the defeat and imprisonment of Ghazi Khan, the writer informs that Amin Khan is in persuit of the Guru. He suggests that if the Maharaja wishes he could capture the Guru and if he does so at this juncture he will get high reward. Further, mention is made of the deliberations that took place at Hidayatullah's camp, the affairs of Lahore, the application made by Gaj Singh and Shah Manohardas for procurement of *parganas* on *ijara.*

No 51 (Vakil Report No. 81)

Bhadrapada Sudi 11, 1768
August 13, 1711

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh. Reporting their meetings with Nawab Bahadur Khan and the Prince and their deliberations, the writer informs that nothing could be achieved unless the Rajas reach Dabar from Jahanabad and that only after reaching there they could win the favour of the Emperor and get *izafa*, *jagir* and other profitable favours. The writer hopes the *faujdari* of the frontier region from Delhi to Lahore may also be granted to the Maharaja. Mention is also made of the affairs of Ghazi Khan, the outcome of the application for the procurement of the *parganas* of Gazi-katthana, Tejpur and Lalsot on *ijara*, the tradition of payment to the *chobdar* working at the court and its importance to the Maharaja, etc.

No. 52 (Vakil Report No. 90)

Ashwina Vadi 8, 1768
September 24, 1711

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh, stating about the dispatch of a *nishan* of Prince Azimush Shan informing that they (the Rajas) could directly proceed (to the Deccan) from Sadhaura without attending the court. In this light the writer advises that they should reach Sadhaura. Mention is also made of the grant of Chatsu, Dausa and that the *taqfif* would be considered only after the Rajas proceed from Narela, the reporting about the confiscation of the *jagir* from Cheemaji as a result of the report received from *vaqia-navis* and the grant of *pargana* Toda Bhim, etc. to others in *jagir*, the affairs of reading the Emperor's *khutba* at Lahore, etc.

No 53 (Vakil Report No. 92)

Ashwina Vadi 11, 1768
September 27, 1711

Pandit by Bahadur Khan and Prince Azimush Shan, the dispatch of *Hindvi nishan* to Raja Shiv through him and his programme to go back to the Deccan and an account of the financial problems of the writer himself.

No. 54 (Vakil Report No. 94) *Ashwina Vadi 14, 1768*
September 30, 1711

Arzdasht from Bhandari Khivsi to Maharaja Jai Singh stating that *pargana* Roshanpur is held by Al'ahband Khan in his *jagir* and since it fell under the *taluqa* of Khangarot Bhagwan Singh, he was unable to get its revenue and that he had made a complaint about it to the Prince who had issued a *hasbul hukm* and *hasbul amar* to this effect which would reach the Maharaja soon. The writer requests an early compliance of the order.

No. 55 (Vakil Report No. 100) *Kartika Vadi 9, 1768*
October 24, 1711

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh, informing about Mahabat Khan's meeting with the Emperor regarding the appointment of the Rajas, details of the deliberations and the order of the Emperor, the objection of the Amirul Umara in granting *subedari* of Barar to Ajit Singh, the ensuing discussion between Prince Azimush Shan and the Emperor on the appointment of the Rajas which led to the differences between the two. Further, he informs about the insistence of Bhandari Khivsi for getting particular *subas* granted and the approaches made to Mahabat Khan and others with the same object which would be presented before the Emperor.

No. 56 (Vakil Report No. 102) *Kartika Vadi 14, 1768*
October 29, 1711

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh informing about the receipt of *parwana* by Diwan Bhikharidas which records that Shaikh Sadullah would plead the case of the Maharaja, states that the said Shakih has started from Jahanabad but his arrival at the imperial camp is awaited and the writer will attend upon him as soon as he comes to the camp.

Informs that the report on the discussion between Mahabat Khan and Shah Qudratullah on matters relating to *dawwab*, has already been conveyed by the *arzdasht* dated *Kartika Vadi 12*. It further notes responses and reactions on Bhandari's persistent demand to get *subedaris* of the particular *subas* (names given) for Maharaja Ajit Singh and Jai Singh. Mention is also made of the undertaking given by Bhandari to Shah Qudratullah Khan who presented them (Bhandari and Jagjiwandas) to Prince Azimush Shan who deleted some of the demands of the Rajput Rajas. The writer expresses his opinion on the deal made by Bhandari Khivsi with Shah Qudratullah Khan in term of benefits and disadvantages of a distant posting.

No. 57 (Vakil Report No. 103) *Kartika Sudi 1, 1768*
October 31, 1711

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh, informing about the presentation of an application and an agreement (endorsed by the representatives of the Rajas) before the Emperor on *Kartika Vadi 15*, and his orders on the following matters:

(a) Maharaja Ajit Singh has been granted the *faujdari* of Saurath.
(b) The Maharaja (Jai Singh) has been granted the *faujdari* of Ahmedabad Khora.
(c) The orders regarding the *ijafa* of the Maharajas and their sons are awaited.
(d) Regarding the *talab* of the *biradari*, Hidayatullah was ordered to request for the same.
(e) Regarding *dawwab*, *pargana* Parbastsar and *pargana* Mauzabad held by Maharaja Ajit Singh and Jai Singh respectively are marked for *dawwab*.
(f) Recommendation regarding the grant of *mansab* to Rao Gopal Singh and Sukh Singh etc., has been accepted.

It is informed that the copy of the *kazbal* has been dispatched. Mention is also made of the amount of *peskash* to be paid to the Emperor, the prices of the grain, etc.

No. 58 (Vakil Report No. 106) *Kartika Sudi 6, 1768*
November 4, 1711

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh, informing about their meeting with Shah Qudratullah who ordered that the Rajas should help Amin Khan against the Guru, and that a fresh settlement has been made with the Shah for the payment of the *peshkash* to the Emproer and the Prince. Mention is also made of the acquisition of *pargana* Khohri on *ijara* and the problem of furnishing *zamini* (surety) of *pargana* Jaitpur, settlement of *dawwab* and writer's personal problems, etc.

No. 59 (Vakil Report No. 108) *Kartika Sudi 12, 1768*
November 10, 1711

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh. Stating the need for getting Maharaja's *parwana* regularly, the writer reports about the fresh representation of the Rajas to the Emperor including those which were accepted by him, account of the reporting made by Nawab Mahabat Khan, the affairs of *pargana* Khohri, the financial problems of the Vakil himself, etc.

No. 60 (Vakil Report No. 109) *Kartika Sudi 14, 1768*
November 13, 1711

Arzdasht from Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh, stating that the *farman* and *parwanas* for the appointment of the Maharaja as the *faujdar* of Ahmedabad Khora and Kantak are under preparation in the office of the *diwan*, the *sanad* of the *sawar* for the *biradari* is also under preparation. Mention is also made of the affairs of the *dawwab*, additional grant of *faujdari* of Halar to Maharaja Ajit Singh and problems of *izafa* unconditional. Further, he adds the *farads* (documents) of the payment of Rs. two lakhs have been given—one and half lakh to the Emperor and fifty thousand to the Prince, the affairs of *pargana* Khohri, etc.

No. 61 (Vakil Report No. 112) *Margashirsha Sudi 6, 1768*
December 4, 1711

Arzdasht from Diwan Bhikharidas to Maharaja Jai Singh. Acknowledging with gratitude the receipt of *parwanas* and noting their contents, he informs about the state of affairs of the claim of *jagir* against the salary of the *biradari*, Mahabat Khan's demand about the payment of his dues, the order of Prince Azimush Shan to present *biradari's* horses for the *dagh*, affairs of *pargana* Bahatri, *pargana* Toda Bhim, Malarna, etc., the fixation of *har-sala* and obtaining security, dispatch of the *farman* and *siropao* to the Maharaja, the report of Harchain —the *mutasaddi* of Mathura for the Maharaja, appointment of Rustam Dil Khan as a *qiledar* of Kangra, presentation of the title of *Bahadur Zafar Jang Vafadar Padshahi* on Mahabat Khan by the Emperor, etc.

No. 62 (Vakil Report No. 115) *Pausha Vadi 1, 1768*
December 15, 1711

Arzdasht from Bhikharidas to Maharaja Jai Singh. Informs about the problems relating to the payment in *shahjahani* (coins) and the opinion of Bhandari about it, discussion that took place with Hidayatullah Khan about the arrangement of the *jagirs* to both the Maharajas and the adjustment of *paibaqi* of the *biradari*, the nature of approach made to Kriparaj who was *peshdast* of the Nawab and *subanavis* of Ajmer, Akbarbad and Prayag about the payment of money. Further, he informs about the problems of Mir Abdullah's *faujdari* and *amini* of Bairath, the deduction made on account of conversion of the *shahjahani* coins, etc.

No. 63 (Vakil Report No. 118) *Pausha Vadi 1768*
December , 1711

Arzdasht from Diwan Bhikharidas to Maharaja Jai Singh. States in detail the circumstances which led to the annoyance of Shah Qudratullah, the order of Prince Azimush Shan to Bhandari to bring Shah Qudratullah, the attempts made by Mahabat Khan and Bhandari to bring him back to the Prince's

court, the appreciation by the Prince for Bhandari's success in getting Shah Qudratullah Khan back to the court, etc.

No. 64 (Vakil Report No. 116) *Pausha Sudi 3, 1768*
December 31, 1711

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh, informing that the *daul* of the *jagir* has been written, the details of which were sent earlier and that attempts are made to get *izafa* and the *jagir* against it in *suba* Prayag. Further, recordings are made about the appeasement of Shah Qudratullah by Mahabat Khan and his presence with Bhandari at the court of Azimush Shan, the problem of getting surety for the *pargana* of Khohri, information about the dispatch of the statement of income and expenditure with the expectation that the money taken from the *sahukars* be paid, the importance of seeking favour of the *mutasaddis* and therefore request is made to send money for them, etc.

No. 65 (Vakil Report No. 120) *Pausha Sudi 9, 1768*
January 6, 1712

Arzdasht from Diwan Bhikharidas to Maharaja Jai Singh. Stating about the agreement on the *ijara* of Dewati Sanchaur, the writer requests that the surety may be arranged from a *sahukar* who should not be like Syam Ram's representative who was given the surety of *pargana* Toda but failed to fulfill his commitment.

Reporting about the receipt of money for *durbar-kharch* and the dispatch of its *jama-kharch* to the Maharaja, the writer requests the Maharaja to send more money for the *durbar-kharch*. Further, he refers to the demand of Kalol and the affairs of *dawwab*.

No. 66 (Vakil Report No. 121) *Pausha Sudi 10, 1768*
January 7, 1712

Arzdasht from Diwan Bhikharidas to Maharaja Jai Singh. Acknowledging with gratitude the *parwana* of the Maharaja, he states that he would soon apply for getting exemption from

No. 71 (Vakil Report No. 127) *Magha Sudi 1, 1768*
January 27, 1712

Arzdasht from Diwan Bhikharidas to Maharaja Jai Singh. Informing the developments at the court after the receipt of the news of the murder of Hatim Beg, the writer records that this accident has caused great damage to the reputation of both the *sarkars* (Amber and Jodhpur) and advises that the Maharaja should leave Amber immediately so that he could make an excuse of his absence from Amber. Regarding the affairs of the *biradari*, he records that the *yaddasht* has yet to come from Amirul Umara. He adds that Bhandari is unhappy as he has not received any response to his letters written to the Maharaja and Shah Nainsukh.

No. 72 (Vakil Report No. 128) *Magha Sudi 9, 1768*
February 5, 1712

the three princes, the activities of Prince Azimush Shan have been given in detail.

Information is also given about the service of Khangarot Bhagwan Singh with the request that he may be helped in establishing his control over *pargana* Pohkaran so that other *umara* get confidence.

No. 74 (Vakil Report No. 136) *Phalguna Sudi 10, 1768* March 7, 1712

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh, informing in detail the happenings at the court after the death of Bahadur Shah, the combined attack of Jahandar Shah, Jahan Shah and Rafiush Shah on Azimush Shan who finally faced defeat, the fate of the followers of Prince Azimush Shan and the proclamation of victory by Jahandar Shah. Informs that the writer would meet Amirul Umara in the morning, mentions about the dispatch of documents to the Maharaja whose instructions would be awaited, reminds to send money, etc.

No. 75 (Vakil Report No. 137) *Phalguna Sudi 11, 1768* March 8, 1712

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh informing about the battle that took place between Azimush Shan and his three brothers, the defeat and death of Azimush Shan and the celebration of victory by Jahandar Shah.

He adds that Jahandar Shah has exhibited his power and the future would tell about what arrangements are made among the three princes. The Maharaja has been advised to send the *arzdasht* of congratulations to Jahandar Shah and a letter to the Amirul Umara

Mention is made of the fate of various *umara* who supported Azimush Shan, the financial problems faced by the writer as the *vohras* refused to advance money on credit due to uncertain political situation, etc.

No. 76 (Vakil Report No. 139)

Chaitra Vadi 9, 1768
March 20, 1712

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh, informing about his visit to the Amirul Umara and presentation of *wajibul arz*, the copy of which was sent to the Maharaja. Later the writer waited upon the Emperor on *Chaitra Vadi 3*, through the Amirul Umara. The Emperor showed favour to the Maharaja and granted the following requests :

Granted the title of Mirza Raja, the *mansab* of seven thousand *zat* and seven thousand *sawar* along with the *dastur* to which the late Mirza Raja (Jai Singh) was entitled. Further, the writer records that the Emperor had ordered to deliver the *farman* to the writer which has been sent to the Maharaja along with the *arzdasht*. The writer extends his congratulations to the Maharaja for the favour he has received from the Emperor, informs about the accession of Jahandar Shah.

Further, mention is made of the battle that took place on *Chaitra Vadi 6*, between Jahandar Shah along with Rafiush Shah and prince Jahan Shah in which the latter was killed along with one of his sons, the attempt to make division of Empire between Jahandar Shah and Rafiush Shah for which the latter refused on the ground that the kingship could not be given as charity and a battle be fought for the right of kingship, the account of the battle between Jahandar Shah and Rafiush Shah on *Chaitra Vadi* 7, in which the latter was killed along with his son Ibrahim. The writer requests for the money for *durbar kharch* and provides information pertaining to the award of *mansab* to Maharaja Ajit Singh, etc.

No. 77 (Vakil Report No. 141)

Chaitra Sudi 6, 1769
April 1, 1712

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh. Referring to his earlier *arzdasht* in which detailed reporting was made, it is recorded that the request was made to the Amirul Umara to get another *farman* issued from the Emperor regarding the title and *mansab* of the Maharaja as he has duly as-

sumed the kingship after the murder of Rafiush Shah, and the Emperor has kindly agreed to order the issue of another *farman*. The Maharaja has been requested to acknowledge the receipt of the *farman* and send the *arzdasht* congratulating the Emperor on his accession.

Further, the writer informs that he had submitted the papers for retaining the traditional *jagir* with the Maharaja which was duly accepted and requests the Maharaja to send the money so that the *parwanas* could be issued.

No. 78 (Vakil Report No. 143) *Chaitra Sudi 13, 1769*
April 8, 1712

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh. Referring to the dispatch of his earlier two *arzdashts* and the contents recorded in them, the writer records his visit to the Amirul Umara on *Chaitra Sudi 13*, the enquiry of the Amirul Umara about the *arzdasht* of the Maharaja and his reply that it may reach any time. The writer also records that the Amirul Umara has also agreed to issue another *farman* which would reach the Maharaja soon.

Further, he requests the Maharaja to send the *arzdasht* conveying his thanks, congratulations and the *nazra* for the Emperor on his accession to the throne and also to send letters to the Amirul Umara and Raja Sabha Chand. Informs that the *parwanas* relating to the *mansab* and *jagir* are not being issued for want of money for expenses and thus requests for more money.

Mention is made of the complaint of Muhammad Quli, the Vakil of the *zamindar* of Mahammadabad to Ikhlas Khan, the *tan-diwan* (*diwan-i-tan*) about the interference by the Maharaja in his *jagir* and requests the Maharaja to clear the account of the same. Mention is also made of the affairs of Lalsot, Toda Bhim, Devati Sanchaur, the order issued to Sarbarah Khan—the *daroga diwan-i-kacheri*, the orders issued to Ajit Singh, Rao Budh Singh, etc.

Extending the information to the original letter, the writer speaks about the increment, bestowal of the *siropao* and a horse on him (the writer), the appointment of Ghanram as the vakil of the Cheema Saheb (Bijai Singh), nature of the work done by the writer for the Maharaja and his expectation of being suitably rewarded, the state of affairs of the *hundi* amouuting Rs. 5000 sent by the Maharaja, etc.

No. 79 (Vakil Report No. 144) *Vaishakha Vadi 13, 1769*
April 22, 1712

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh, submitting that the latter should consider an increment in the salary of the Vakil (the writer) and expresses the wish to get the same (salary) as was received by the Vakil of late Mirza Raja. Further, the writer pleads for getting more honour as Maharaja Jai Singh has been granted the title of Mirza Raja.

Regarding the receipt of a *hundi* of Rs. 2000 in favour of the shop of Dhansukh Gujarati, the Vakil writes that the said firm does not have its branch but an *arhat* at the *sarrafa* which has been removed and therefore the Maharaja should send the *hundi* in the name of another *sahukar*. The writer adds that Fakhruddin Khan has got for himself the *diwani* of the *suba* of Ajmer and *faujdari* of Sambhar, replacing Muhammad Muqim and Nusarat Yar Khan respectively, after paying Rs. 70 000 to Sabha Chand. The writer requests the Maharaja to send Rs. 5,000 which were collected from Prince Azimush Shan by Diwan Bhikharidas.

No. 80 (Vakil Report No. 145) *Vaishakha Sudi 8, 1769*
May 3, 1712

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh. Acknowledging with gratitude the receipt of the *parwana* of the Maharaja, he informs him (the Maharaja) that he is attending upon the Nawab and Raja Sabha Chand regularly as ordered in the *parwana*. Informing about the deliberation that took place at the court in the presence of the Emperor who spoke highly about the Maharaja, the writer complains that the Maharaja

has not yet responded to the *farman*, nor has he sent letter of congratulations and money for various expenses of the court, which have caused concern among the officials of the court and thus requests the Maharaja to do so immediately.

Further, mention is made of the departure of Prince Azzuddin against Farrukh Siyar and progress of the march of the Emperor towards Shahjahanabad, the affairs relating to the *hundi* of Rs. 10,000 drawn upon Diwan Bhikharidas and the complaint of the *jagirdars* of Lalsot and Toda Bhim, etc.

No. 81 (Vakil Report No. 146) *Jyeshtha Vadi 1, 1769*
May 10, 1712

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh. Informing about the receipt of the *arzdasht* and *nazr* to the Emperor and letters to the Nawab Amirul Umara, Khan-i-Jahan Bahadur, Raja Sabha Chand, etc., the writer adds the contents of Shah Nainsukh's letter about the settlement of *muhamsazi* with Nawab Asifuddaula regarding the *faujdari* of Mathura to Cheema Saheb and records that as per his discussion with Sabha Chand nothing could be achieved without settling the *muhamasazi* with the Nawab Amirul Umara for which he cites examples. For the compliance of the Maharaja's request, the writer informs that additional amount of the *muhamsazi* has to be made available. He requests the Maharaja to quote the amount which would be paid as *muhamasazi* against each *pargana* Mention is made of the money due to Bhikharidas, the affairs of the *pargana* of Lalsot and Toda Bhim. The writer repeats his request for money, etc.

No. 82 (Vakil Report No 148) *Ashadha Sudi 5, 1769*
June 28, 1712

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh. Acknowledging with gratitude the *parwana* of the Maharaja, note is made of the dispatch of the *parwana* of the grant of former *jagirs* to the Maharaja and Cheema Saheb, the grant of the former *puras* of Lahore for which the *parwanas* would be dispatched soon, the affairs of *muhamsazi* for issuing the letter

regarding the bestowal of the rank of seven thousand *zat* and seven thousand *sawar* and also the affairs of Maharaja Ajit Singh at the court.

Informs that the *farmans* for Maharaja Jai Singh, Maharaja Ajit Singh and Rathor Durgadas are almost ready which would be dispatched in four or five days. The Maharaja has been requested to respond to the kindness of the Emperor favourably and attend upon him without further delay.

Mention is also made of the Maharaja's activities in the *jagirs* of Ikhalas Khan in Ajmer, The *jagirs* of Muhammad Saiyed in Mauzabad and their reaction at the court with the request that the *hasil* collected from those areas may be retunded to the respective *jagirdars*. the progress of the Emperor's march towards Shahjahanabad, the problems of the collection of cash against the *hundi* and the payments due to the *sahukars*, etc.

No. 83 (Vakil Report No. 149) *Ashadha Sudi 11, 1769*
July 3, 1712

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh, informing the dispatch of the copies of the *parwanas* relating to the grant of former *jagirs* to Prince Cheemaji and the *puras* of Lahore. Writing about the celebrations on 4th *Jamadi-us-sani* and arrangements at the *durbar*, he identifies the seat occupied by Begam Imtiaz Mahal and the Emperor who adorned the *takht-i-taus* of Shahjahan.

Further, mention is made of the rumours of the Emperor's order for looting Jaisinghpura, information of the conversation between the writer and Raja Sabha Chand, recommendation sent to the Maharaja for the employment of Mohandas Natwo, the receipt of the letters of Maharaja Ajit Singh and Bhandari to the Amirul Umara with the note that a copy of Bhandari's letter has been dispatched to the Maharaja, etc.

No. 84 (Vakil Report No. 150) *Shravana Vadi 2, 1769*
July 9, 1712

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Jai Singh, informing about the displeasure of Raja Sabha Chand because of the delay in complying with the order of the Mughal court by him (Jai Singh). The writer records the attitude of Raja Sabha Chand towards Raja Jai Singh and also the threats made out if further delay is made in abolition of the *thana* of Sambhar, if *jagirdars* are not allowed to take possession over their *jagirs*, and if he does not present himself before the Emperor, etc. The writer further adds that hearty welcome should be accorded to the Amirul Umara at Amber. The writer informs Maharaja Jai Singh that he is taking an initiative in the issue of the *parwana* to Maharaja Ajit Singh as per request made to him by Shah Nain Sukh but this could be done only if an amount of more than Rs. 5000 is sent by the latter to him in order to meet the expenses. The writer also requests the Maharaja to send him his salary.

No. 85 (Vakil Report No. 151) *Shravana Vadi 10, 1769*
July 17, 1712

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh, informing that Maya Ram, the Vakil of Mewar attended upon Nawab Asifuddaula through Raja Sabha Chand and offered him the presents on behalf of the Rana in order to reclaim Rana's control over the *parganas* of Pur and Mandal. Further, the writ-r records the issues relating to the grant of *izafa* and *sanads* to Maharaja Jai Singh and Maharaja Ajit Singh respectively, and other issues showing the involvement of these Rajas in the activities detrimental to the interests of the Mughal Empire.

No. 86 (Vakil Report No. 152) *Shravana Sudi 15, 1769*
August 5, 1712

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Sawai Jai Singh, advising the disbandment of the *thanas* of Sambhar and Maharaja Ajit Singh should also follow the same and that

their *arzdashts* be sent through Shah Beg in order to present them before the Nawab. The writer informs the Maharaja that the *pargana* Gazi-ka-Thana, *pargana* Tonk, etc., and Jaitpur have been granted in *ijara* to the Maharaja who should send the surety of the *sahukars* immediately. Further, he states that the problems pertaining to the villages of *hawali pargana* Ajmer and *pargana* Nagina of *sarkar* Tijara of *suba* Shahjahanabad be settled by Ajit Singh and Jai Singh and the letters of agreement be sent along with their seals (to the *diwan*). The writer requests the Maharaja to send him money which is due to meet his personal and family expenditure as no *sahukar* was ready to give him money on credit over there, etc.

No. 87 (Vakil Report No. 153)

Bhadrapada Vadi 7, 1769
August 12, 1712

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Mirza Raja (Sawai) Jai Singh, informing that Shujat Khan, *daroga-i topkhana*, had approached the writer for letting out his *jagir* of Mauzabad, etc., on *ijara* to the Maharaja as the six monthly *jagir*. The writer had informed Shujat Khan that Mauzabad was held as four monthly and other *parganas* as three monthly *jagirs* and not as six monthly *jagir* as stated by him and recommends that the Maharaja should accept it on four and three monthly basis. Further, Pancholi records the affairs of *paragana* Nagina of *sarkar* Tijara and of Mahammadabad. The writer further informs that the Maharaja should keep an eye on Narnol as Aitqad Khan, the nephew of the Amirul Umara, has been taking charge as *faujdar* of Narnol. The Maharaja is requested to comply with the request of the writer for payment of his dues and salary which are due for the last seven months and also because he has fixed the marriage of his son in the month of *Margashirsha*. The writer informs that Sarbuland Khan has been advised not to follow the route via Amber as per the Maharaja's instructions, etc.

No. 88 (Vakil Report No. 154)

Ashwina Vadi 4, 1769
September 8, 1721

Arzadasht from Pancholi Jagjiwands to Mirza Raja (Sawai) Jai

Singh. Acknowledging the receipt of *parwana* sent to the Nawab and the letter written by Shah Nainsukh, the writer informs that the *patta* of the *ijara* of the *jagirs* of Shahzada Azzuddin, Khan-i-Jahan, etc., could not be acquired due to the absence of surety particularly that of the shop of Panipathia situated in *sarrafa*. Further, the writer states the progress made by him regarding the grant of the *subedari* of Malwa and Gujarat to Maharaja Jai Singh and Ajit Singh respectively. He adds that the surety from Govind Ram Sarraf Panipathia wiil be required for getting the *ijara* of the *jagir* territories and the Emperor will issue the *parwana* of conferring the total *zat* rank only after the evacuation of Sambhar by the Maharaja's army.

In the end the writer acknowledges the receipt of a *hundi* of Rs. 2000 from the Maharaja and requests the Maharaja to send him Rs. 10,000 in view of the marriage of his son.

No. 89 (Vakil Report No 155) *Ashwina Vadi 5, 1769*
September 9, 1712

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh informing the letter about his meeting with the Raja (Sabha Chand) who had showed him a letter written by Maharaja Ajit Singh. The letter of Ajit Singh carried the seal similar to the one used by the Emperor which had annoyed Sabha Chand who wanted Ajit Singh to present himself immediately. The writer adds other causes also which were responsible for Raja Sabha Chand's annoyance.

No. 90 (Vakil Report No. 156) *Ashwina Sudi 14, 1769*
October 2, 1712

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Sawai Jai Singh. Acknowledging the receipt of the *parwana* dated *Ashwina Sudi 9*, he records that the grant of Hindaun to the Maharaja has been brought to the notice of the Nawab Amirul Umara. He adds that since the Maharaja has been honoured with the title of Mirza Raja, and the right of striking the seal of Mirza Raja, he should strike this title on his seal. The writer

adds that in a letter sent to Ajit Singh, the title of the Maharaja figured in the seal similar to Jahandar Shah.

No. 91 (Vakil Report No. 157)

Ashwina Sudi 14, 1769
October 2, 1712

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Mirza Raja Jai Singh. The writer informs that he has already sent the information about his efforts regarding the resumption of Hindaun which was in the *jagir* of Azam Khan to the *khalisa* and the termination of the *faujdari* of the said place from Gaisu Khan. The writer adds the details about the representation and objection made by Azam Khan before the Emperor and the intervention of queen Imtiaz Mahal and states that the (chance of the) grant of *paragana* to the Maharaja is now very bright. Further, he states that for the transfer of Gaisu Khan and deal with Imitiaz Mahal Rs. 10,000 was fixed; thus the said amount and other demands made by Imtiaz Mahal be complied with immediately. Further, recording the death of a servant of Bahadur Khan by the gun of a *baksre* (gunmen who orginally belonged to Baksar) and the blame put on the Maharaja, the writer informs that the birth-day celebration of the Emperor was fixed on *Ashwina Sudi 12.*

No. 92 (Vakil Report No. 158)

Kartika Vadi 4, 1769
October 7, 1712

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh. Informing the Maharaja about the submission of resgination by Azam Khan, the writer records the proceedings at the court following his resignation. The case of Azam Khan and the request of the Maharaja for the grant of Hindaun was presented before the Emperor by the Amirul Umara. The writer informs that the request of Azam Khan was turned down by the Emperor.

Further, the writer acknowledges the receipt of Rs. 1,000 and an *hundi* of Rs. 5,000 for expediting the work at the court. Regarding the order of the resumption of *pargana* Hindaun in *khalisa* and the dealings at the court in this matter, a detailed report has been sent separately.

The writer, further, submits the details of his meeting along with the representative of Maharaja Ajit Singh with Nawab Amirul Umara through Sadruddin Khan, son of Tahwar Khan and records the advice of the Nawab to the Rajas regarding their conduct and submission to the Emperor. The writer states that he submitted to the Nawab that except for the physical presence of the Maharaja, all the conditions are acceptable and that the *subedari* of Malwa and Gujarat be granted to Maharaja Jai Singh and Ajit Singh without attending the court as it was done in case of Maharaja Jaswant Singh by Padshah Aurangzeb. The writer also records detailed discussion with the Nawab Amirul Umara on establishment of Amber's control over Hindaun and the favour shown by Imtiaz Mahal towards the Maharaja. Further, mention is also made of the affairs of Hindaun and the involvement of Maharaja Jai Singh in it and the happening of *mauza* Dhol of *paragana* Amber.

No. 93 (Vakil Report No. 159) *Kartika Vadi 11, 1769*
October 15, 1769

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh, mentioning the dispatch of his earlier report, he expresses his happiness over the Maharaja's victory over Gaisu Khan and informs him that he (the writer) had reported this news to Raja Sabha Chand & Imitaz Mahal and that the former showed his happiness on this event. Further, the writer reports that Azam Khan is trying for the *subedari* of Ajmer and Shakur Khan for Akbarabad and that Raja Sabha Chand has written to Shah Beg and Mirza Qadar Khan on behalf of the Nawab Amirul Umara showing his satisfaction on the defeat of Gaisu Khan and that they should bring Mirza Raja and Maharaja (Ajit Singh) to the court immediately along with their *mutsaddis*. The writer adds that Azam Khan and Khan Jahan Bahadur are making great hew and cry before the Emperor on the death of Gaisu Khan; in such circumstances the writer requests that the Maharaja should delay his presence at the court for 10-20 days to watch the situation. Further, he requests the Maharaja to send the money and presents for the marrage of the daughters of Shakur Khan and Akar Khan.

No. 94 (Vakil Report No. 160) *Kartika Vadi 14, 1769*
October 18, 1712.

Arzdasht from Pancholi Jagjiwands to Maharaja Jai Singh, informing that Nirbhe Singh, the *thanedar* of Antela and Piragpur of *pargana* Manoharpur had arrested Balkisan Mahajan and that Raja Sabha Chand has asked the writer to secure the release of that Mahajan and therefore he requests the Maharaja to ask the *thanedar* to release the said Mahajan.

No. 95 (Vakil Report No. 161) *Kartika Sudi 7, 1769*
October 25, 1712

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Mirza Raja Jai Singh. Referring to his earlier despatch and the letter of Shah Nainsukh, the writer informs the Maharaja about the reminders of Khan-i-Jahan and Raja Sabha Chand for the presence of the Maharaja at the court. The writer requests the Maharaja to reach the court along with Maharaja Ajit Singh and their *mutsaddis*. Further, he reports about the favourable attitudes of the Emperor, Khan-i-Jahan and Raja Sabha Chand towards the Maharaja which has been achieved through the help of Imtiaz Mahal (Lal Kunwar).

No. 96 (Vakil Report No. 162) *Kartika Sudi 13, 1769*
October 31, 1712.

Arzdasht from Diwan Bhikharidas to Maharaja Jai Singh. Informs that after the receipt of the news of the arrival of the *mutsaddis* of the Rajas (Ajit Singh and Jai Singh) the Nawab Amirul Umara sent Rai Gaj Singh to receive Bhandari Rai Raghunath and others at Qazi-ki-Sarai. Rai Raghunath met them at the distance of one *kos* from the *sarai* and conveyed the message of Sabha Chand to Bhandari to meet him immediately. The writer, further, records that all the persons met Raja Sabha Chand on the same day who welcomed them warmly and instructed Mirza Qadir to arrange their camp at Jaswantpura as desired by Bhandari. When Raja Sabha Chand informed the Nawab (Zulfiqar Khan) about the arrival of the officials of the Rajput Rajas, he immediately called them for the meeting at

the *diwan khana*. The writer records that the Nawab Amirul Umara welcomed their arrival and assured them about the royal favour. The *siropaos* were bestowed on the *mutsaddis*. Raja Sabha Chand asked Bhandari Raghunath and the writer to wait for few days for an audience with the Emperor.

No. 97 (Vakil Report No. 164) *Margashirsha Vadi 5, 1769*
November 7, 1712

Arzdasht from Diwan Bhikharidas to Mirza Raja Sawai Jai Singh. Mentioning the dispatch of his *arzdasht* dated *Kartika Sudi* 13, the writer records the arrival of Raja Sabha Chand after taking bath at the Gangaji, his invitation to the *mutsaddis* of Rajas and later on meeting with the Amirul Umara. The Amirul Umara asks them to submit their *arzis* to the Emperor. The writer records their audience with the Emperor at *gusalkhana* which was arranged by the Amirul Umara & that Rai Bhandari & the writer along with other officials offered their services to the Emperor who granted them the *siropaos*. Further, the writer records the proceedings of their audience with the Emperor mentioning the submission of Ajit Singh's *arzdasht* by Bhandari through the Amirul Umara and that since the writer did not receive any such *arzdasht* from the Maharaja (Jai Singh) nor any special *muhar* to be presented to the Emperor, he could not present *arzdasht* and requests the Maharaja to send the same along with the 12 bags of *khas muhar*. Further, mentioning the Emperor's movements, the writer requests the Maharaja to release Ramanand and Permanand Kayasth who were imprisoned in the battle of Hindaun as it is recommended by Raja Sabha Chand for their being *Kayasth* (Kaistha).

No. 98 (Vakil Report No. 165) *Margashirsha Vadi 6, 1769*
November 8, 1712

Arzdasht from Pancholi Jagjiwandas to Maharaja Jai Singh. Mentioning the dispatch of his earlier *arzdasht*, the writer briefly records the deliberations that took place between the Amirul Umara and Rai Raghunath and states that other information would be conveyed to him through Diwan Bhikharidas's *arzdasht*.

No. 99 (Vakil Report No. 166) *Margashirsha Vadi* , *1769*
November , 1712

Arzdasht from Bhikharidas to Maharaja Jai Singh. Informs that Pancholi Jagjiwandas had already written about the affairs of the *jagir* of Malpura held by *vaqia-nigar* Rao Ghasiram, and requests that if the Maharaja desires to acquire that *pargana* on *ijara* he should send the money amounting to (the *jama* of) three months. The writer adds that Raja Sabha Chand had asked him to request the Maharaja to release two Kayasthas who were imprisoned at Hindaun.

No. 100 (Vakil Report No. 167) *Margashirsha Vadi 7, 1769*
November 7, 1712

Arzdasht from Diwan Bhikharidas to Mirza Raja Jai Singh. Referring to the dispatch of *Marghshirsha Vadi 5*, the writer informs Raja Jai Singh that Bhandari and he himself went to see Raja Sabha Chand on his invitation who asked them to present their demands. He has promised to do his best to get these demands fulfilled from the Emperor. Later they were called in the presence of the Nawab Amirul Umara who promised to plead their case before the Emperor but demanded the presence of the Rajas against Farrukh Siyar. The writer records the content of their representation to the Nawab pleading that the Rajas be granted *subedari* of Malwa and Gujarat and assuring that they would sincerely serve the cause of the Emperor, instruction of the Nawab asking them to proceed to Delhi with a large contingent and keep one thousand *sawar* under Nawab Asifuddaulla and to submit their demand over there and the vakils of the Rajas to attend Raja Sabha Chand for an exchange of views. The writer, further, records that the discussion with Raja Sabha Chand revolved on the question of fixing the amount to be paid to the Nawab for his favour and that the information regarding the amount has been dispatched separately and its reply is awaited. The writer adds that Bhandari and he himself were called by Raja Sabha Chand and later the Nawab Amirul Umara informed them that their demands were accepted by the Emperor and that the *farmans* would be issued for the same.

No. 101 (Vakil Report No. 168) *Margashirsha Vadi 11, 1769* November 13, 1712

Arzdasht from Diwan Bhikharidas to Mirza Raja Jai Singh. Referring to the dispatch of the report dated *Margashirsha Vadi* 10, the writer reports that the Nawab (Zulfiqar Khan) has agreed to his request to grant *pargana* Bahatri against the salary amounting to 80 lakh *dam* and that Bhandari has accorded his consent to the award of the *mansab* of 8000/7000 to the Maharaja. The writer requests the Maharaja that an increment of one thousand *sawar* may be made to the *mansab* of the writer, Bhandari and Jagjiwandas for which their letters (that is of Mirza Raja Jai Singh and Maharaja Ajit Singh) may kindly be sent to the Nawab (Amirul Umara). He informs that no information has so far been received about the details of the *jagirs* granted to the Maharaja and that whatever *sanads* have been issued are lying with Raja Sabha Chand which would be available after the receipt of the *hundi* of Rupees two lakh from the Maharaja and that Bhandari had already requested Maharaja Ajit Singh to send him money. He, further, adds that they shall leave the court on Friday and thus the amount be sent before that.

No. 102 (Vakil Report No. 163) *Margashirsha Sudi 1, 1769* November, 18, 1712

Arzdasht from Diwan Bhikharidas to Mirza Raja Jai Singh. In continuation of information recorded in the *arzdasht* dated above, the writer adds that the Nawab had asked Bhandari and the writer to come to Akbarabad where their demands would be considered favourably and that after the departure of the Nawab (Zulfiqar Khan) they went to Raja Sabha Chand who expressed his appreciation for their arrival. Appreciating the role of Bhandari in advancing the cause of the Rajas, the writer records that Raja Sabha Chand was happy at the presence of the Vakils of the Rajas in the court which would help him in pleading their case strongly. The writer reminds about the presents to be offered and for that he requests for the arrangement of money informing that at present he has arranegd an amount ofs R. 2500 from *sahukars*. Further, he adds

to Farrukh Siyar for his victory and records that it is not certain whether Azzudin is hiding or killed or taken to flight, and that information about him would be conveyed later.

No. 108 (Vakil Report No. 174) *Magha Vadi 2, 1769*
January 2, 1713

Arzdasht from Jagjiwandas to Mirza Raja Jai Singh, informing that Zulfiqar Khan has been killed on *Magha Vadi 2* and his severed body and head were lying near *naqarkhana* and that Azzuddin (prince) was captured from Jahanabad and was killed. What happened to Asifuddaulla is to be seen. Further, Thakur Syam Singh had a meeting with Husain Ali Khan but no conclusive discussion took place between the two.

क्रम संख्या ४७

वकील रिपोर्ट संख्या ७७

भाद्रपद बदी ५, संवत १७६८

श्री गोपालजी सहाय

श्री महाराजाधिराज महाराजा
श्री जैसिघ जी

स्वस्ति श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री......चरण कमलां नु खांनांजाद खाकपाय पां० जगजीवनदास लिखतं तसलीम वंदगी अवधारजो जी। अठा का समाचार श्री महाराजा जी रा तेज प्रताप थे भला छै श्री महाराजा जी रा सीग समाचार सासता प्रसाद कराव जो जी। श्री महाराजा माईत है धणी है श्री परमेसुर जी री जायगा है। म्हे श्री महाराजा जी रा खांनाजाद वंदा हां। श्री पातिसाह जी श्री महाराजा जी सु महरवांन है। श्री महाराजा जी गुण पाव जो जी। पांन गंगाजल आरोगण रा जतन फुरमाव जो जी।

अप्रच खांनांजाद नवाजी रा परवांनां आयां बोहत दीन हुवा सु वद नवाजी रा परवाना सासता पै दर पै ईनायत होय जी। अरजदासता पै दर पै भेजी है त्यां सु समाचार मालुम हुवा होसी जी।

गजसिघ खंगारोत व मिर्धा मनोहरदास की माफ परवानो परगनां ईजारा लेण वेई ईनायत हुवो सु ईजारां री तदबदल हुई सु बाकी अरजदासत मालुम होसी जी।

भादवा वदि ३ सोम भंडारी खीवसी महाबत खां जी सु कही म्हाका मतलब होय तो जहानाबाद सु डेरै आनां तद नवाब कही—तद थांन उरा आवोगे तद अरज करोंगे अर घर बैठे ही मतलब चोहो सु अब अरज कोई करे नही। तदबदल बोहत हुई पण नवाब ज्वाब दीयो नही।

खांनाजाद तो चार महीना सु सैदाबदुल्ला खां का मोतमद है अरजदास्त

केरी अर अठे भंडारी जी नै व दीवान जी सुं कही हजुर सुं तो ई वात को जवाव ही आयो नही अर दीवान जी वोहतेरो कहो पण भंडारी जी कहै महाराजा अजीत सिघ जी का हुकम वीना नही मीलां । आखर साहजादै जी ही कहो तुम हीदायतुला खां सु मीलो, शाह कुदरतुला जी ने फुरमायो थे जाय मीलावो। सु अव कुदरतुला जी हीदायतुला खां जी सु कही ज अमर हुवो है ज राजां का मुतसदीय, राणाजी का व छत्रसाल बुंदेला का मीलावो, तव सुण कही—भला । ये समाचार महावत खां जी सु कहा सु दीज मे तो दुख पायो, जाहर कही—भलां। फेर कुदरतुला जी सु कही मे ईनायतुला खां हीदायतुला खां की मीज्मानी करूगां । तव ईहांही सव मुतसदी उनसुं मीलाय देगे। सु ये समाचार तो पै दर पै हजुर को लिखे हे। अव भादवा वद ३ वेर कुदरतुला जी नवाव सुं कही—मुझे ताकीद है सव के मुतसदी हीदायतुलाखां सुं मीलावो । तव नवाव कही—अव दीन दोय तीन मे मीज्मानी करता हुं सु अव मीज्मानी करसी तव मीलासी । हीदायतुला जी सरपाव तयार कीया है अर खांनाजाद सुं कहे था—हम कहे थे तव न आये अव आवेगे, पण खांनाजाद रोज हाजर रहौ । श्री जी को ईखलास सदा जाहर करतो रहो हुं जी । सु अव सव मीलसी जो रदवदल होसी सु अरजदासत करसुं जी ।

जैंसिघ पुरो जहानावाद को तीकी जमीन को शाह आजमशां जी का लोग मुजाहम[1] था तीको हसवल अमर से फेरवां खांनसामां की मोहर सु तयार कराय दीवानजी के हवाले कीयो । नकल हजुर भेजी है ।

जैंतसिघजी व भट प्रभाकरजी का नाव की दसतग मगाई थी सु अव हीदायतुला खां जी सु दीन दोय चार मे दीवानजी मील चुकै अर वा दसतक कराय भेजु हुं जी ।

श्री जी सलांमत । वीरादरी का मनसवदारां की याददासतां अव ताई तो मोकुफ थी ज हजूर आयां पछै कर देसां । अव साढोरा की तईनाती हुई । महाराजा अजीत सिघजी कै वीरादरी के लोगा की सनद करावे है जो दफतर को खरच ईनायत होय तो खांनाजाद भी श्री जी की वीरादरी की सनद कराउं जी ।

दोय तीन महीना तो पातिसाह अठै है फेर देखजे कहां चले । अर अजमेर का महलां की सुफेदी करावा को हुकम हुवो है ।

खांनाजाद हमेस अरजदासत पै दर पै महाराजा अजीत सिघजी की जोडी की साथ व सरकार की जोडी दीवान जी चलावै है तीके साथ चलावा हां पण जवाव ईनायत कदही-कदही होय है सु उमेदवार हुं खांनांजाद नवाजी का परवाना पै दर पै ईनायत होयजी ।

---

1. मुजाहम (मुज़ाहिम)—रुकावट ।